भूमिका

सबवैद्यविद्यानुरागियोंको विदितहोकि आजकलइसवैद्य विद्या कोप्रचारसर्वत्रबढाहुआदृष्टगोचरहोताहै तथापि आजतक कोईऐसी लाभदायक पुस्तक जिसमें आद्योपांतयथाक्रमरोगोंका निदान चिकित्सा आदिहो नछपी इसकारण मेरे चित्तमें अभिलाषाहुई और विचारनेलगाकि अबऐसीकौनसीपुस्तक यूनानीमेंहैजिसकीउल्था हिंदीभाषामेंहोकर प्रचलितहो औरजिस्से सबमनुष्योंकोलाभहो इसबातकोसोचते एकबात निश्चैहुईकि (तीज़ानुतिब्ब) नामग्रंथजिसको मुहम्मद अकबर नामी यूनानी वैद्यने अपने सुहृदोंके निमित्त बनायाथा और उसका उल्था उर्दूभाषामें हकीम मुहम्मद हुसैन साहिबने मुहम्मद अब्दुलरहमान की आज्ञासे कियाथा उसपुस्तक को अत्यंत लोकोपकारी समझकर मेरी इच्छाहुई कि इसका उल्था हिन्दीभाषामें करवाकर अपने स्वदेशीय भाइयोंको फ़ायदः पहुंचानाचाहिये-इसहेतु अपने परमप्यारे मित्र हकीम वारिस अली साहिबसे जोमेरेऊपर सदैव बड़ीकृपादृष्टिरखतेहैं और किसीसमयकामपै लोभीथे उनसे उल्थाकीप्रार्थनाकीगई उन्होंनेभीप्रसन्नतापूर्वक इसश्रमको स्वीकारकिया-यहएकहीग्रंथहै जिसके पढने औरयादकरनेसे मनुष्य अच्छीतरह रोगियोंसे प्रतिष्ठा आदि पासक्ताहै-क्योंकिइसग्रंथकोग्रंथकर्त्ताने ऐसी उत्तमतासे निर्माणकियाहै कि प्रथमरोगका निदान (शनाख़्त) पीछेउसरोगकी चिकित्सा अरुकसेलगायपैरोंके रोग तककी वर्णनकीहै-इसी कारण सबहकीमोंने प्रथम पढनेमें इसीका प्रचारकर रक्खाहै।

इसपुस्तकका उल्था सन् १८७१ ईसवीमें मुन्शी कन्हैयालाल वैकुंठवासीके लघुभ्राता बन्शीधरने वारिसअली की सहायतासेकिया और अपने निज शिलायंत्रालय मथुरामें छपवाया-

ठिकाना पुस्तकके मिलनेकायहहै-बन्शीधर-रामदासकीमंडीमें स्वैउल अलूमनामछापाखाना मथुरा

श्रीगणेशाय नमः

अथ मीज़ानुत्तिबहिंदी

पहिलाखण्ड

गरमी सरदी तरी और खुशकी की पहचान औ रूह के विषयमें

गरमीकीपहचान

अधिक प्यासहोनी, जलन, बदन परज़र्दी यासुर्खी, ठंढक का अच्छा मालूम होना, जो गरमी रुधिरकी अधिकता से होती सिर बोझल होगा, और अंगड़ाई तथा जमाई और नींद बहुत आवेगी, और सुस्ती और मुंह मीठाहोगा, बदन और ज़बानपर लाली होगी, फुन्सियां और फोड़े बहुत निकलेंगे, मसूड़े से खूनका बहना, नक्सीर बहना, हाथ पांव गिरना, और बदन का दुखना। जो गरमी पित्तसे होगी उसकी पहचान यह है, बदन ज़बान और आंख इन तीनों में ज़र्दी होगी-मुंह कड़वा और ज़बान खुश्क होगी, ज़बान में कांटे पड़ेंगे; नाक में खुश्की का होना, प्यासका होना, भूख की कमी, जी मिचलाना, रोमांच का खड़ा होना, इतने लक्षण से गरमी की पहचान है॥

सरदी की पहचान

प्यास और जलन का न होना, बदन का रंग सफेद या काला होना, जो सरदी बलगम से हो पहचान उसकी यह है- बदन की सफेदी और नरमी सुस्ती होना, बदन ठंडा होना- दबाव न होना, खबीड बार आनी नींद बहुत आनी, इन्द्रियों का सिथल होना, थूक का पतला और बेजल न होना, नाक से पतला पानी बहना, जो सरदी सोदा सेहो पहचान उस्की यह है बदन का काला होना, फ़स्दसे काला और गाढा रुधिर निकलना बदन का दुबला होना सोच में व्यथा बैठा रहना कोड़ी की जगह ऐंठा होना और झूंठी भूख होनी ॥

तरी की पहचान

नरम और ढीला होना बदन का, अधिकमूल होना, नींद ज्याद: होना, जो तरी गर्मी के साथ हो उसकी पहचान ऊपर हो चुकी है ॥

खुश्की की पहचान

बदन की सख्ती और दुबला और कुरूप होना जो गर्मी पित्त और सोदा के साथ हो पहचान उसकी ऊपर हो चुकी है ॥ इति पहचान ॥



अब जानना चाहिये रुधिर, कफ, सोदा और पित्त से आदमी का बदन स्थिर है, जो कोई इनमें से घट बढ जाता है तो रोग उत्पन्न होजाता है- रुधिर गर्म और तर है- पित्त गर्म और खुश्क है- कफ सर्द और तर है- सोदा सर्द और खुश्क है- इनही चारों खिल्तसे एक ठंढा धूआं प्रगट होता है- उस्से गर्मी नहीं रहती- और न मनुष्य के बदन की स्थिरता होती है- उसे वायु कहते हैं- और यह बहुधा कफ और सोदा से उत्पन्न होती है- और इनही चारों से जो धूआं उत्पन्न होता है- और बदन की स्थिरता और जान जिस्से होती है उसको रूह कहते हैं- इति प्रथम खण्ड ॥

दूसरा खण्ड

१-खिल्त अर्थात रुधिर, कफ, सोदा, और पित्त ॥

दवाओर खानेके बिषय में

अध्याय पहिला

उन दवाओंके बिषयमें जो इन चारोंके बिगाड़को खोवें- जानना चाहिये कि रुधिर चार प्रकार से बिगड़ता है- एक यह कि अधिक होजाय- दूसरे पतला पड़जाय- तीसरे गाढ़ा होजाय- चौथे सड़जाय॥ वह दवा जो रुधिरके जोश को थामें यह हैं- कासनी, काहूके बीज, धनियां, गुलाबके फूल, नींबूकारस सिकञ्जबीन, शर्बतउन्नाव, शर्बतसन्दल, शर्बतकेवड़ा और जोइनके बराबरकी हों॥ औरदवा गाढ़े रुधिर को अच्छा करें वे दवा यहहैं- आलूबुखारेकापानी सोंफका पानी, शाहतरेका पानी, सिकंजबीन, और शहद, अपनेसे दूने पानी में औटाया हुआ॥ और जो दवाईयें सौदा को निकालेंगी वे गाढ़े रुधिरको भी अच्छा करेंगी, क्योंकि सौदाके मिलने से रुधिर गाढ़ा होजाताहै- और गाढ़े बलग़म अर्थात कफ़के मिलने से भी रुधिर गाढ़ा होजाताहै, और इसरूपमें कफ़का जुल्लाब और खट्टी दवाईयें दे- कि गाढ़े कफ़ को काटें- और कफ़ और सौदा के पतले होने के पीछे खून लाने वाली दवाईयां दे- और जब रुधिरमें बलग़म मिला होगा तो फस्द में रुधिर सफ़ेद निकलेगा- और जो सौदा मिला होगा तो रुधिर काला होगा॥

वे उपाय और दवाईयां कि जो पतले रुधिर को अच्छा करें- जब रुधिर बलग़म के मिलने से पतला हो तो बादरंजबोया, रेहा के बीज, हंसराज और जो दवाईयां खुश्क गर्म हों और बलग़म को निकालें- काबली हड़ बलग़म के निकालने को बहुत अच्छी है- और पहचान इस बलग़म जो रुधिर में मिलने की यही है कि रुधिर का रंग सफ़ेदी मिला हुआ होगा- बदन का मलना और महनत करना, कसरत करना, कफ़ को फायदा देता है- जो रुधिर पित्त के मिलने से पतला होजाय पहचान उसकी यह है- कि फ़स्द से पीला कफ़ रुधिर पर दिखलाई देगा- उपाय इसका निकालना पित्त का है और पीली

हड़ इसलिये बहुत अच्छी है मसूर का पानी, शर्बत उन्नाव और कासनी का पानी फाड़ा हुआ॥ और जो दवा रुधिर के जोश को फ़ायदा करेंगी वेही दवा इसको भी फ़ायदा करेंगी - अब जानना चाहिये कि कभी गर्मी पहुंचने से रिल्त सड़ जाताहै। और बुखार ज़रूर होजाताहै और बिना गर्मी के कोई रिल्त नहीं सड़ता - इलाज उसका सर्द और खुश्क दवासे उचितहैं जो दवा रुधिर के जोश में लिखी गई हैं - रुधिर के गरम होने को जोश रुधिर कहतेहैं बिना सड़ने के॥

बिगाड़ पित्त का पाँच प्रकार करके है

एक यह कि पतला बलग़म उस्में मिले - दूसरे गाढ़ा बलग़म मिले - तीसरे थोड़ासा सौदा उस्में मिलजाय - चौथे पहिला और तीसरा प्रकार दोनों मिलजायँ - पाँचवे पहिला और तीसरा प्रकार बहुत जल्द के उस्में मिले॥ चौथे और पाँचवे प्रकार में यह भेदहै - कि चौथे में गरमी कमहोतीहै - और पाँचवे में ज्यादा - नहीं तो दोनों एक हैं॥

वे दवायें जो पित्त को अच्छा करतीहैं - जहां गरमी अधिक हो वहां ठंडी दवादें - या एक दिन में दो तीन बारदें - और जहां गरमी कमहो वहां कम ठंडी दें - वे यहहैं - ईसबगोल, खीरा, कुलफा, कासनी, खीरे ककड़ी के बीज, खस, धनियां, चंदन, कद्दू के बीज, कपूर, ईसबगोल का लुआब, निकाल कर दें - या फंका दें कूटें नहीं कूटने से ज़हर होजाताहै - और बीदाने काभी लुआब निकालें - खांसी में खट्टी बिही को बीदाना न दें - कुलफे और कासनी के बीजों का शीरा निकालें - और इनके पत्तों को कूटकर रस निकाललें - कासनी के पत्तों को धोना न चाहिये - कि उसका असर जाता रहताहै - जो कासनी के पत्तों का पानी फाड़लें और अकेला या कुछ मिठाई या खटाई मिलाकर पीवें तो रुधिर के साफ़ करने में इसके बराबर कोई दवा नहीं है, कुलफे के बीज को पीसकर बहुत छानना काल के दूर करने के लिये - कुछ अच्छा नहीं है - खीरा ककड़ी के बीज और धनिये का शीरा निकाललें - या पानी में भिगोकर

कूटके पीदें-और यही भिगोयाहुआ बहुत जल्दी असर करताहै ॥

चन्दन पानीमें घिसकर देना बड़ी भारी गरमी को बुझाताहै-और चंदन सुफेद लालसे अच्छा होताहै-कपूर बदन की गरमी को दूर करता है-और जोकि यह बहुत ठंडा है-इस लिये सिवाय जवान आदमी और गरम मिज़ाज वाले के और को न दे-और ठंडे मेवे जैसे खरबूज आदि और सब खटाईयां पित्त को अच्छीहैं-और स्त्री और लड़कों और खोजों को बहुत ठंडी दवाईयां न देनी चाहियें ॥

बनी हुई दवाईयां जो पित्तको फायदा करती हैं वे यह हैं

कुर्स तबाशीर मुलय्यन १ कुर्स तबाशीर काबिज़ २ कुर्स काफ़ूर ३ शर्बत चंदन शर्बत आलूबुखारा, शर्बत बनफ़शा, शर्बत नीलोफ़र, और सूंघना और लगानाभी ठंडी दवाओं का पित्त के लिये अच्छाहै-और गर्मी को बुझाताहै

कफ़का बिगाड भी पांच प्रकार का है

एक यह कि थोड़ा सा रुधिर कफ़ में मिल जाय और उसके असर को बदलदे-उसको मीठा बलग़म कहतेहैं ॥ दूसरे जलाहुआ पित्त थोड़ासा बलगम में मिलजाय उसको खारी कफ़ कहतेहैं-और स्वभाव पित्तके बराबर होताहै ॥ तीसरे बलग़म गरम होजाय तो उसको खट्टा कफ़ कहते हैं ॥ चौथे थोड़ा सा सौदा बलग़म में मिलजाय तो कसीला कफ़ कहलायगा ॥ पांचवें कफ़ पतला पड़जाय उसको फीका कफ कहतेहैं और ये सब कफ़ोंसे अधिक ठंडा होताहै ॥

दवायें जो कफ़को अच्छा करें वे यह हैं ॥

सौंफ, अनीसून, मुल्हैटी, ज़ीरा, दालचीनी, इलायची, बालछड़, मुनक्का, बिर्न्जआसिफ़, इनके देने की रीति हकीम की राय पर है-कफ़में दवा को औटाकर देना अच्छाहै ॥ और जब बलग़म सड़जाय तो बहुत गरम दवा न देनी चाहिये खासकर खारी बलगम में क्योंकि उसमें तप

बहुत होती है। और इन्द्रस के बीज जहाँ कहीं रगों के भीतर बलगम सड़जा य बहुत अच्छे हैं। और काफ़ के सड़ने में जो देखें तो कुछ दवायें जो पित्त में बयान हुई हैं मिलाकर दे ॥

बनी हुई दवाई जो काफ़ के लिये दीजाती हैं वेयह हैं ॥

मजमून फ़िलासफ़ा, सोंठ की मअजून, मजून सीर, नवारिश जालीनूस, इनदवाओं को उस समय में दे जब कि काफ़ सड़ा नहो और बुखार नहो और तपमें कुर्सगुल-कुर्स गाफ़िस-सिकंजबीन बजूरी मोतदिल-बजूरी मेंशर्बत बजूरी मोतदिल-और गर्म-और गुलकंद देना चाहिये॥

बिगाड़ सौदा काभी पांच प्रकार का है॥

एक यह कि सौदा अधिक बढ़जाय-दूसरे यह कि सौदा जलकर बिगड़ जाय-तीसरा यह कि रुधिर जलकर सौदा बनजाय-चौथा यह कि काफ़ जलकर सौदा होजाय-पाँचवाँ यह कि पित्त जलकर सौदा होजाय-

जान लो कि कोई खिल्त जब जल जाता है तो बिगड़ाहुआ सौदा होजाता है और मतलब जलने से यहहै कि तरी उसकी गरमी से उड़कर गाढ़ा रहजाता है॥ और उसकी असल नहीं रहती-और जलने से यह मतलब नहीं है कि जलकर राख होजाय और अगर कोई खिल्त सर्दी से गाढ़ा होकर जमजाय तो वह सौदा न कहलावेगा॥

वह दवाऐं जो सौदा को अच्छा करती हैं सो यह हैं

लहसोड़े, गावज़ुबाँ, खरबूज़े के बीज, मुल्हेठी, कनोचे के बीज, इंजीर मुनक्का, आदि जो गर्म और तर हों-जो सौदा गर्म खिल्त से पैदा होतो दवा ठंडी और तर देनी चाहिये-जैसे कुलफ़ा, चौदाना, खीरे ककड़ी के बीज, आदि और नहीं तो गर्म और तर या वह दवा जो गरमी और सरदी में बराबर और तर हो॥

बनी हुई दवाऐं सौदा के वास्ते यह हैं

सिकंजबीन इस्फ़ूली, नौशदारू, माजून सुख़रात, याक़ूती बूअली, मुफ़र्रह दिलकुशा, शर्बत गावज़बाँ, शर्बत बादरंजबोया, आदि और उचित है कि हर जगह गर्मी और सर्दी कीभी ध्यान रक्खें जो सौदा सड़जाय और तप होय तो ये दवायें औंटाकर दें - कासनी के बीज, कशूस के बीज तीन तीन दिरम (१ दिरम ३॥ माशे का होता है) मुल्हेटी - ज़रश्क हर एक दो दो दिरम, गावज़बाँ ५ दिरम, क़न्द या सिकंजबीन के साथ और इस से पहिले चाहिये कि मुनज़्ज़िज देकर जुल्लाब दे लिया हो - तो जल्दी गुण करैगा - सौदावी रोगों में बहुत दिनों दवा देनी चाहिये इस लिये कि सौदा दवा को देर में गुण करने देता है - सड़े हुये सौदा की दवाई या और उपाय तप में लिखेंगे॥

अथ वह उपाय लिखे जाते हैं जिनमें सिवाय खिलाने पिलाने के दवा बाहर लगाने और सूंघने आदि से बदन में असर करें॥

शमूम - उस ख़ुश्क या तर दवा को कहते हैं जो सूंघी जाय॥

लख़लख़ा - उसको कहते हैं कि पतली ख़ुशबूदार दवायें सीसी या किसी बरतन में डालकर सूंघे॥

सऊत - उस दवा को कहते हैं जो नाक में डाली जाय॥

नफ़ूख़ - वह ख़ुश्क दवा है जो नाक में डाली जावे॥

वजूर - अर्थात तर दवा को गले में चुआना॥

सनून - अर्थात मंजन॥

क़तूर - अर्थात् किसी दवा को बदन के किसी सुराख़ में टपकायें॥

नतूल - अर्थात धारना॥

सकूब - अर्थात बहती हुई दवा को दूर से रह रह कर बदन पर डालना॥

इंकाबाब—अर्थात भपारा लेना

कुमाद—अर्थात कोई दवा गरम करके बदन को सेक दें चाहे वह दवा खुश्क हो या तर ॥

बुखूर—अर्थात दवाओं को जलाकर धूनी उसकी पहुंचाना॥

आबज़न—अर्थात दवाओं को औटाकर बीमार को उसमें बिठाना॥

पाशोया—अर्थात गरम पानी में या औटी हुई दवा में बीमार के पांव रक्खें-भूसी गुलखैरू, बनफशा के फूल, बाबूने के फूल, बेद के पत्ते, और बेरी के पत्ते औटावें-यह उपाय सिरदर्द और बुखार के लिये बहुत अच्छा है, पाशोये के समय बीमार को तकिया लगादे, और सिर पीछे झुका रहे, और मुखके आगे परदा डाल दे कि भाप सिर को न पहुंचे इससे नुकसान होजाता है ॥

तमरीख—अर्थात् तर दवा को बदन पर मलना ॥

तदहीन—अर्थात् बदन पर कोई तेल मलना ॥

क़तूर—अर्थात् ठंडी दवा में मिलाकर आंख में लगावें ॥

ज़रूर—अर्थात् खुश्क दवायें पीस कर छिड़कना ॥

ज़िमाद—अर्थात् गाढ़ी और तर दवा को बदन पर लगावें ॥

तिला—अर्थात् तर और पतली दवा को बदन पर लगावें ॥

कुहल—अर्थात् अंजन ॥

हुक्ना—अर्थात् किसी पतली दवा को पाखाने या मूत्र की राह से भीतर पहुंचावें ॥

शाफा—अर्थात् दवा की बत्ती बनाकर बदन के किसी सूराख में रक्खें

फ़तीला—अर्थात् कपड़े में दवा लगाकर और बत्ती बनाकर बदन के किसी सूराख में रक्खें ॥

ल़ख़लखा—अर्थात कपड़ा दवा में भिगोकर के किसी जगह रक्खें॥

फ़रज़जा—अर्थात कपड़े में दवा लगाकर गद्दी की तरह औरतों के

सावकाने की जगह रक्खें ॥

शमूस-गर्मबीमारियों को फ़ायदा करताहै-सफ़ेद चन्दन घिसकर सिरका और धनिये के पत्तों का रस-और गुलाब मिलाकर सूंघें और जो लख़लख़ा बनालें तो बहुत अच्छा है और जो नींद न आतीहोतो सिर कान मिलावें-और जो गरमी बहुतहोय तो कापूर भी मिलादें-और खीरे को काट कर और ठंडे मेवे और फूलों का सूंघना फ़ायदा करताहै और जिस्को हरे धनिये की सुगंध अच्छी न लगे तो तरबूज़ का रस या भुने हुए घीया-अर्थात् लौकी का रस मिलादें ॥

शमूम-ठंडी बीमारियों को फ़ायदा करताहै-मुश्क-अंबर-दालचीनी जुन्दबेदस्तर-लौंग-केसर-कलौंजी-थोड़ी२ लें ॥

सऊत-सिरकी गर्मी और खुश्क बीमारियों को फ़ायदा करताहै-काहूका रस-नीलोफ़र का तेल-एक२ हिस्सा, लड़की की मा का दूध दो हिस्से-बादाम का तेल या कद्दू का तेल मिलाकर नाक में डालें और जो नींद कम आती होतो खशखाश का तेल भी उस्में मिलालें ॥

सऊत-सिरके ठंडे और तररोगों को फ़ायदा करताहै-गलुआ सुरंमकी कुंदर-माज़ू-जुंदबेदस्तर-केसर-दौना मरुवा के पानी में पीसलें ॥

नफ़ूख़-मूर्छा वाले को होश में लावें और सिरके सुद्दों को खोलें-और नकछिकनी-कुटकी-कूट छान कर थोड़ी २ नाक में फूंकें ॥

वजूर-लड़कों के पसली चलने के रोगों को फ़ायदा करता है-सातर-जुंदबेदस्तर-ज़ीरा किरमानी सब को बराबर लेकर दूध में घोलकर लड़के के मुख में टपकावें ॥

वजूर-मिरगी वाले को होश में लावें-हींग-जुन्दबेदस्तर-सिकंजबीन, शहद में घोलकर मुख में टपकावें ॥

मंजन-दांतों को मज़बूत करता है-सुरंजान-लौंग-मोथा-माई पीली हड़ का बक्कल-सफ़ेद चंदन-गुलाब के फूल-सब को बर,

बरलेकर मंजन बनावे-जोगरमी होतो लोंग नडालें॥ ६९

कतूर-कान के दर्द को जो गर्मी से हो फ़ायदा करे-रोग़नगुलई दिरम रोग़न बादाम २ दिरम् अंपर कासिरका १० दिरम् मिलाकर मंद आंच पर पकावें जब सिरका जल जाय और तेल रहजाय तो गुनेगुना कानमें टपकावें और जो दर्द बहुत होतो थोड़ी अफ़ीमभी मिलावें॥ ६१

क़तूर-सोज़ाक को फ़ायदा करे- क़ासग़री सफ़ेदा-कुन्दर-ईजरूत-बबूल का गोंद-निशास्ता-दम्मुलअखवैन बराबर लेकर कूट छान्कर लड़की की माके दूधमें घोलकर पेसाव के सूराख़ में टपकावें॥ ६१२

नतूल-नींद लावें और गर्मसरसाम को फ़ायदा देती है-बनफ़शे के फ़ूल-काहू के बीज ५ पांच २ दिरम-पोस्तदाने समेत-गुलेव के फ़ूल-नीलोफर के फ़ूल-हरे चौंया के छिल्के-बाबूने के फ़ूल दस २ दिरम-जौ किस्रेहुए ५० दिरम-इन सब को ७ ५ सेर पानी में पकाकर तरेडादें॥ २ ६१२

नतूल-सिर की ठंडी बीमारयों को फ़ायदा देती है-इकलीलुल्मल्क-नम्मास-मरजंजोस-बिरञ्जासफ़-सातर-बरकुलगार-सब को बराबर लेकर पानी में औटाकर तरेडादें और चद्दर उढ़ाकर भफारा दें॥ १२

सिरकी गर्म बीमारियों में तरेडा न दें जबतक कि जुल्लाब न दियाहो

नतूल-बाई को पचावे-बाबूने के फ़ूल-इकलीलुल्मलक-करपास के बीज और पत्ते रातीयाना-किरमानी ज़ीरा-मरज़न् जोश-सोया-सातर-बराबर लेकर पानी में औटावें और तरेडादें॥ ६

कमाद-फंसी हुई रीह को पचावें-चंजरा-नमक पोटली में बांधकर मंदी आंच पर गरम करके सेकें-रेत या गेहूं की भूसी या गर्मईट से कपड़े में लपेटके सेकना भी फ़ायदा करता है॥

कमाद-बदनको नरम करे और दर्दको आराम दे बनफशे के फूल, बाबूने के फूल - सोये के बीज - पानी में औटा के इस्पंज अर्थात् सराहुआ बादल उसमें भिगोकर सेकें ॥

वस्वूर-अर्थात् **धूनी** सिर और याद को ताकत दे - और खफकान और मूर्च्छा और सुस्ती को दूर करे - अदरक की-मीठाकूठ-सफेद चंदन एक २ दिरम-कपूर-मुश्क-आधे २ दिरम-सबको कूट छानकर गुलाब में सानकर गोलियां बनाकर सुखा रक्खें और आगपर जलाकर धूनी दें ॥

धूनी-जो पसीना लावे और पित्त और कफ के बुखार को दूर करे-पहिले मुन्जिश देना चाहिये-सौंफ की जड की छाल-सौंफ अंगीठी में जलावें और चद्दर ओढकर धूनी लें इससे बहुत पसीना आवेगा ॥

आवजन-बदनकी खुश्की को और तपेदिक को फायदा करता है घीया-ककडी-कुल्फा-काहू-तर्बूज-नीलोफर के फूल-बनफशे के फूल-छिले हुए जौ - इन सबको औटाकर ऐसे बरतन में डालें जिसमें बीमार गले तक बैठजाय-और एक घडी भर उसमें बैठाल कर निकालें-और रोगने बनफशा-और रोगन कद्दू मलें-और पाशोया जो ऊपर लिखागया है करें -और हाथों को भी धोवें-पिंडलियों को बांधना-और तलुओं और हथेलियों को मलना भी बहुत फायदा करता है - जब पिंडलियां बांधें तो रान से अर्थात् घुटनों से बांधने का प्रारम्भ करें और जब खोलें तो टखनों की ओर से खोलें इससे जो मवाद सिरसे उतराहोगा वह फिर सिरको न चढेगा ॥

दूसरा अध्याय २ फस्द के विषयमें

जानना चाहिये कि फस्द से सब प्रकार के मवाद निकलते हैं-अर्थात् रगों ने रुधिर भरा होता है-उसमें पित्त सौदा कफ भी मिला होता है इस

लिये फ़स्द कारने से जोरगोंमें होगा वही निकलेगा - और मकार के जु
ल्लावोंमें यह बातें नहीं होतीहैं - फ़स्द को काई बातों के निमित्त अच्छा
लिखाहै - एक बात तो ऊपर लिखी गईहै - और दूसरी यह कि फ़स्द
में मवाद का निकालना अपने वसमेंहै - और जुल्लाव पीने के पीछे
वह मवाद कि जिस्को निकालना चाहते हैं न निकले तो दस्तों के
बंद कारने में हानि होगी - तीसरे यह कि फ़स्द में मुंज़िश पीने की
आवश्य कता नहीं हैं ॥

जानना चाहिये कि बारह बरस की अवस्था से पहिले फ़स्द खो
लना न चाहिये - और फिर जबतक चाहैं तवतक फस्द खोलें - और
भरी हुई सींगी साठ बरस की अवस्था के पीछे लगानी न चाहिये, क
भी ऐसा होता है कि फ़स्द खोल के रुधिर काम लिया गया और फ़स्द
बंद करदी तो तप होजाती है - ऐसे समय में फिर जल्दी से फ़स्द खो
लना उचित है - ॥

जब किसी ने ज़हर खाया हो या किसी ज़हर वाले जानवरने काटा हो
तो फ़स्द नहीं खोलना चाहिये ॥

जरीरा एक बिच्छू है जो धरती पर दुम घसीटता हुआ चलता है उस
के डंक मारने से रोम २ से रुधिर बहने लगता है - उसके काटने में
फ़स्द खोलना उचित है ॥

ताऊन - एक ज़हरीली सूजन है जोकि ववा के समय में होतीहै
उस्में जलन बहुत होती है - रंग उस्का लाल - पीलोंहियाँ - हरयाली
या कालक लिये हुऐ होता है - उसमेंभी फ़स्द न खोलना चाहिये -
और जो रुधिर अधिक हो और ज़हर ने दिल और जिगर में असर कि
या होतो फ़स्द खोलना उचित है - जिस्को फ़स्द खोलने से मूर्च्छा
आजाती हो - उस्को फ़स्द से पहिले नीबू का शर्बत - या खट्टे अनार
का शरबत आदि गुलाब में घोलकर पिलादेना उचित है - और फ़स्द

के पीछे जब थोड़ासा खून निकलजाय तो अंगूठे से दबादें - इसी प्रकार दो तीन वार ठहर २ के रुधिर निकालें तो मूर्छा न आवैगी - और मूर्छा दूर करने का अच्छा उपाय यह है कि कै अर्थात उलटी करावें - दवा उल मिस्को को पानी में घोलकर मुख में टपकावें - जिस दिन फस्द खोलें उस दिन भारी भोजन न दें पान खिलाना - हरीरा पिलाना और ठंडाई पिलाना फस्द से अच्छा नहीं है जो गरमी की अधिकता हो तो ठंडाई पिलाना उचित है - इसमें वो पित्त जो कि रुधिर के निकलने से जोश में आया होगा वह ठहर जायगा और जो सरदी हो तो गरम दवा देनी उचित है ॥

अब वे रगें जिनकी फ़स्द खोली जाती हैं लिखी जाती हैं

(१) **क़ीफाल** अथवा सरुरू - यह रग हाथ के जोड़ पर पहोंचे के ऊपर अंगूठे के साम्हने है - इसकी फ़स्द सिर और मुख के रोगों को फ़ायदा करती है ॥१॥

(२) **अकहल** अथवा हफ़्त अंदाम - यह रग तर्जनी अंगुली की सीध पर क़ीफाल के नीचे है - फ़स्द इस्की सारे बदन के रोगों को फ़ायदा करती है ॥२॥

(३) **वासलीक़** - यह रग बीच की उंगली के साम्हने अकहल की तरफ़ है - फ़स्द इस्की उन रोगों को फायदा देती है जो बदन में गरदन से नीचे उपस्थित हों ॥ इस रग के नीचे एक रग और है जिस का हलना तथा फड़कना मालूम होता है ऐसा न हो कि इस रग में नश्तर गहरा लग जाय ॥३॥

(४) **हबलुल्ज़िरा** - यह रग किसी के हाथ में वासलीक़ से और किसी के हाथ में अकहल से मिली होती है - अंगूठे के साम्हने कलाई के ऊपर फ़स्द खोलना उचित है - इसकी फ़स्द का फायदा और क़ीफाल का बराबर है - और कभी २ वास

कीच के बराबर भी होजाता है ॥४॥

(५) **इवती**- छुंगलिया अर्थात् कनिष्टका उंगली की सीधपरको हनी के बराबर है-फ़स्द इसकी भीतर की बीमारियों को और नी चेके बदन के रोगों को फायदा देती है ॥५॥

(६) **असैलम**-इवती से मिली हुई है-इस्की फ़स्द घाईमें खो लतेहैं और हाथको गरमगर पानी में रखते हैं-यह फ़स्द दाहिने हाथ से जिगर के रोगों को और बायें हाथ से तिल्ली के रोगों को फायदा देती है और फैंफड़े के रोगों को दोनों ओर से फ़ायदा देती है इसरग से रुधिर दिल और जिगर का निकलता है इस वास्ते खून थोड़ासा ही लेना चाहिये ॥६॥

(७) **साफ़न**-इसरग की फ़स्द टखने के ऊपर पाँवके अंगूठे के सामने खोलते हैं- जो कोई स्त्री कपड़ों से नहोती हो उस्को खोलने केलिये और घाव और खुजली के लिये फायदा देती है और मवाद को शिरसे निकालती है ॥७॥

(८) **माविज़**-वहरग है जिस्की फ़स्द घुटने के नीचे खोली जाती है यह साफ़नसे अधिक फ़ायदा देती है-पीठ और पाखाने और पेशाव की जगह के रोगों को और भीतर के दर्द को फायदा देती है ॥

(९) **इरकुन्निसा**-यहरग गिरहदार पिंडली पर है-पाँवके कसन से दिखाई देती है-और जो यहां न मिले तो पाँव की छिंगुलिया और चौथी उंगली के बीच में खोलें- इसी रग के दर्द के वास्ते इसकी फ़स्द फायदा देती है ॥

(१० **चाररग**-वेचार रगें हैं जो दो ऊपर के होठमें और दो नीचेके होठमें हैं-फास्द इन की गोल नश्तर से होठके भीतर खोलीजा ती है-यह मुख और मसूड़ों के रोगों को फायदा देती है॰

जवनश्तर शिरियान को लग जावे तो उस्की पहिचान यह है किरुधिर

साफ़ और उछलकर निकले और दिल तुरंतही सुस्त होताजाय - जब ऐसा होतो जल्दी सेरगपर अंगुली रखदें - और १ चिप्पी लगाकर और गद्दी रखकर बांधदें - और हाथ गला अंचेतकिये पर रखदें और हिलने नदें - दस दिनतक यूं धरक्खें - ग्यारवें दिन होले से खोलकर फिर बांधे इसी प्रकार से जबतक घावन पुराजावे कियाकरें - चिप्पी की दवायें यहहैं - दम्मुल अरखवैन - इंज़रूत - फिटकरी - किल्किलतार - अकीकिया - जलैनार - एलुऔर कुन्दर - एक २ दिरम - बबूलका गोंद दो दिरम - सब को कूट छानकर अंडे की सफ़ेदी में मिलाकर - खरगोश के रूयें या मकड़ी के जाले में सानकर सलाई से घाव में भरदें और दूसरी तरफ़ के हाथ और पैरों को बँधरक्खें - इससे रुधिर छूट आवैगा ॥

तीसरा अध्याय ३
सींगी और जोंक के विषय में

सरी सींगी और जोंक लड़कों के फ़स्द की जगह लगाते हैं - दो बरस की अबस्था से कम में न चाहिये - और चौधवीं या पंद्रह वीं तारीख़ मुसलमानी महीने की को सींगी न लगानी चाहिये - परंतु सोल्हवीं या सत्रवीं तारीख़ मुसलमानी महीने की को सींगी लगानी चाहिये - स्नान करने के पीछे सींगी लगाना बुरा है - जिस मनुष्य का रुधिर गाढ़ा हो उस्के स्नान से एक घड़ी पीछे सींगी लगानी चाहिये - और जब किसी जगह मवाद बहुत इकट्ठा होतो पहिले फ़स्द खोलकर सींगी लगानी चाहिये - सींगी के पीछे पछने लगाना सरारू फ़स्द की तुल्य है - ज़नूनी चेको लगाना चाहिये और गरदन के मोहरों पर पछने लगाना अकहल की फ़स्द के समान है और दोनों मोलों अर्थात् मुड्डों के बीच में लगाना बासलीक का काम देता है - परंतु पेट को और खफ़कान को बुरा है - चाहिये कि ऊपर चढ़ावाएं पछने लगावें और पिंडली पर पछने लगाना साफ़न की फ़स्द का काम देता है और खाली सींगी बुखार अर्थात् तप और मवाद के निकालने में काम

आतीहै - जो मनुष्य पछने को नसहसके उस्के जोंक लगानी उचितहै ॥

चौथा अध्याय ४
मुञ्जिस के विषय में ॥

मुञ्जिससे काच्चा मवाद पक जाताहै - और मवाद के पकनेसे यह मयो जनहै - कि गाढ़ा मवाद पतला होजाय - और जो पतला होतो गाढ़ा होजाये - जाननां चाहिये कि रुधिर में मुञ्जिस नदेना चाहिये - और जब रुधिर में और मवाद मिले होंतो मुञ्जिस फ़ायदा करैगा ॥

वे औषधें जो पित्तको पकातीहैं यहहैं ॥ उन्नाव ७ दाने - बनफ़शे के फूल - नीलोफर के फूल - सुसौतरा - गुलाब के फूल - हरएकदो २ दिरम् - कासनी के बीज २ दिरम् - पानी या अरक़ में चार पहर या आठ पहर भिगोवें - और खाली या सिकंजबीन या तुरंजबीन या कोई और शर्बत मिलाकर पीवें - जुसांदा इन ही दवाओं को औटानेसे बनजाताहै - दवा औटाने से उस्में गरमी आजातीहै - जिसरोगी को गरमी अधिक हो अब दवा औटा कर न दें - भिगोकर वा शीरा निकालकर या अकेले ठण्डे बीज दें - जो तोल दवाओं की ऊपर लिखी गईहैं वे जवान मनुष्य के वास्ते हैं - जो बच्चा होतो दवाओं को कम करदें - पित्त तीन दिनमें पकता है जो उस्में किसी और दूसरे मवाद का मिलाव नहो नहीं तो पांच या अधिक दिनोंमें पकेगा ॥ ० ×

मुञ्जिस बलग़म का - सुनक्का ५ दाने - सौंफ कुटी हुई दोदिरम - पानी की जगह अनीसून होतो अधिक फायदा करै - मुल्हैटी छिली हुई और कुचली हुई तीनदिरम - अंजीर कुचली २ दिरम - हंसराज ५ दिरम - पीले अंजीर ५ दाने - गुलाब के फूल ३ दिरम - इन सबको औटावे और ७ दिरम् शहद का गुलकंद डाल कर छान के पिलावें - और जो २ तोले सिकंजबीन डालेंतो अच्छा होगा - जो रोगी को खांसी होतो सिकंजबीन न मिलावें - खाली बलग़म में पित्त और क़फ़ दोनों को मिलाके मुञ्जिस दें -

और यह बात सब मिले हुये मवादों में याद रखनी चाहिये–चने का पानी औटा हुआ कफ और सौदा के पकाने को बहुत अच्छा–परंतु तपमें न दें ना चाहिये– और जो तप पुरानी होय तो फायदा करैगा–जो कफ गाढ़ा या पतला नहो वह नौदिन में पकेगा और जो गाढ़ा या पतला होतो पांच दिनसे–या नौसे अधिक दिनों में पकेगा।

मुंजिस सौदा का–लिहसोड़े २० दाने– उन्नाब १० दाने–गाउजुबां–या दरंजबोया–उस्तखुद्दूस–हंसराज–सौंफ़–स्यातरा–दोदो दिरम्–औ यकंदर कंद या तुरंज चीन–या गुलकंद मिलाकर दें–ये दवायें अकेले सौदा की हैं॥

जो सौदा किसी और मवाद के जलने से पैदा हो–तो उसी मवाद के पकाने वाली दवाईयां थोड़ी थोड़ी मिलाकर दें–अकेला सौदा १५ दिन में या एक दोदिन कमबढ़ में पकता है–और मतलब पकने से यहां य ह है– कि मवाद जुल्लाब के जोर में निकल जाय–इस से जाना गया कि मुन्जिसका असर मवाद में होले होले होता है–ऐसे रोगों में कि माद्दा उन का गाढ़ा हो बार बार मुंजिस देकर जुल्लाब दिया जाता है और जब तक मुंजिस का असर अच्छी भांति मालूम नहो–तो दूसरा जुल्लाब न दिया जावे–कभी ऐसा होता है कि विना मुंजिस के मवा द पकजाता है– और रोग बगैर खाने दवा के जाता रहता है–इस से जाना गया कि उपाय से रोगी के दिल को मदद होती है॥

पांचवां अध्याय

जुल्लाब और मुलय्यन के विषयमें

जुल्लाब उसे कहते हैं जो मवाद को रगों और दूर दूर से खेंचला वे॥

मुलय्यन वह है कि केवलयेट और आंतों से मवाद को निकाले- जुल्लाब के देने में मुंजिस पहिले देना जरूर है- मुलय्यन में उसकी जरूरत नहीं- और जो मुलय्यन से पहिले मुंजिस देलें तो अच्छा है।

मुलैयन मुबारिक भीतर और बाहर की बहुत सी बीमारियों को फायदा करता है- गर्भवती स्त्री और बच्चों- और बूढ़ों कोभी पिला सकते हैं सिवाय तपोंके और भीतर की सूजन को फायदा करता है- और सब प्रकारके मवाद को अच्छा है- अमलतास लेकर गुलाब या गरम पानी में मलकर छान लें और जो गरमी बहुत होय तो कासनी का रस या ठण्डे बीजों का शीरा उसमें मिलावें- और जो पेट के अन्दर सूजन होतो हरी मकोय कारस उसमें मिलावें- और वाय गोले के वास्ते सौंफ का शीरा और गुलकंद मिलावें- और जो अमरुतास की बू दूर किया चाहें- तो सौंफ और गुलाब का मिलाना अच्छा है- जो चाहें कि उसमें ज़ोर अधिक होजाय- तो शीर खिश्त ख़सीरेल और तुरंजबीन मिलादें- उन्नाब- लिहसोड़े- बनफशेके फूल- मुनक्का- गाउजुबां आदि को औटाकर अमलतास को उसमें घोलदें तो बहुत अच्छा है-॥

जानना चाहिये कि जिस मनुष्य की अंतड़ियां कमज़ोर हों- और उसे मरोड़ा होसक्ता हो- तो अमरुतास में मिलाने रोगन बादाम के न दे- औरस्पाईगर्भवतस्त्रीयों और बूढ़ों कोभी- दूध पीते बच्चों को रोगन बादाम मिलाने की जरूरत नहीं- उनकी अंतड़ियां दूध पीनेसे ऐसी नर्म होजाती हैं कि अमलतास उनमें चिपट नहीं सक्ता- और अच्छे तरुण आदमी को सोल्ह दिरम अमलतास देते हैं- और एक दिरम साढ़े तीन माषे का होता है- इस से अधिक नुक़सान करेगा-॥

अब जुल्लाब का वरणन होता है- जो बड़ी ज़रूरत के समय

जुल्लाब देना पड़े तो उसके पहिले मुंजिस नहीं दी जाती- जैसे कूलंज के दर्द में रात और बदली और मेह और बहुत हवा का बिचार नहीं करते-जिस जुल्लाब की दवा ओटा कर दी जाय या भिगोकर- उसके ऊपर गरम पानी न देना चाहिये-इस से उसका असर जाता रहता है और जो जुल्लाब पेट में मरोड़ा करे तो उसके ऊपर थोड़ा सा गरम पानी पिलादेते हैं- और जो दवा जुल्लाब की गोलियां या फंकी होती गरम पानी पिलाने से उसे मदद मिलती है- और जो जुल्लाब में प्यास लगे तो उस्डा पानी न पीना चाहिये- ताज़ा पानी थोड़ा सा पीवें- परंतु गर्म मिज़ाज वाले को ठंडे पानी का डर नहीं है- और कुछ दवाइयां ऐसी हैं- कि जिन पर ठंडा पानी पीया जाता है- गर्म पानी के देने से उनका असर जाता रहता है- जैसे शरबत बूर्द- और दवायें जुल्लाब की जिन में- जमाल गोटा या तुरंबुद और नमक मिला हो॥ जिस मनुष्य को दवा अच्छी न लगती हो उस की दोनों बांह कस कर बांध दें- और नाक पकड़ कर दवा पिला दें- और कुल्ली करादें- और दवा पिलाने के पीछे- पोदीनी चबाना और सूंघना या पान और इलायची खाना अच्छा है-॥

और जो डर हो कि इस पर भी क़य होजायगी- तो पहिले से कुरा के जुल्लाब पिलाना चाहिये- और जुल्लाब के बाद सोना न चाहिये- और आबदस्त उस पानी से लेवै- जिस में रेशा खतमी- औटी हुई हो और पानी शुन शुना रहे-॥

जो जुल्लाब अपना असर न करें- तो उसी दिन दूसरा जुल्लाब न दें- और शाफ़ा करें- आलू बुखारे का रस या इमली गुलकंद और तुरंजबीन मिलाकर जुल्लाब पर पिलावें- और अमलतास भी देते हैं- इसी प्रकार मस्तगी को कूट छान कर- डेढ़ दिरम- बूरा या मिश्री मिलाकर गरम पानी में फंकाना बहुत मदद देता है- और जो जुल्लाब

से मूर्छा आजायतो जल्दी से कै करादें- और जो इस्से भी फ़ायदा नहो और कोई हानि न देखें तो फ़स्द वासलीक़ और अकहल की खोल लें-और जो पेट और अंतड़ियों में गरमी लगे तो बीदाने और ईसबगोल का लुआब पिलावें- और जिस मनुष्य का मिज़ाज़-सीत दिल हो उसे तुखम रैहांशरबत में गुलाब के साथदें- और एक घड़ी पीछे नर्म भोजन करावें- जानना चाहिये कि खराब जुल्लाब और फ़स्द से बड़ी हानि होती है - चाहिये कि बीमार का ज़ोर देख कर दूसरा जुल्लाब दें-जिसेजो मवाद निकालना हो निकाल आवे- और जो बीमार कमज़ोर हो उसे थोड़ा थोड़ा जुल्लाब दो दो तीन तीन दिन पीछे दें- जुल्लाब से जो बहुत दस्त आवें और उनको बन्द करना चाहें- और बुखार भी नहोतो चावल छाछ में मिलाकर दें- और जो बुखार होतो तुखम रेहां भुना हुआ भुने हुये जुलफे और चार तंग के रस के साथ पिलावें- और वह उपाय जो दस्तों के बिषय में लिखा जायगा करें-॥

पित्त के जुल्लाब कीदवायेंयेहैं

पीली हड़- इमली- तुरंजबीन- बनफशे के फूल- इफ़्सन्तीन सक़मूनिया भुनी हुई (१) इशक़ पेचा- आलूबुखारा- स्यातरे के पत्ते- सफ़ुआ- गुलाब के फूल- शीरखिश्त- इन में से कुछ दवाई तो ज़ोर दार हैं और कुछ कमज़ोर चाहे अकेली दें या मिलाकर- और सक मूनियां वे भुने नदें-॥

(१) सक़मूनियां के भूनने की रीति यह है- कि सेब या बिही का पेट खाली करके उस में नरमी के साथ सक़मूनियां रक्खें और उसको बन्द करके किनारों पर आटा लगादें जिसमें दरार व द होजाय और मिट्टी की बरतन में रखकर चूल्हे या भाड़ में रख दें जब भुनजाय निकालकर काम में लावें॥

जुल्लाबवास्तेंनिकालनेपित्तके

पीली हड़का बक्कल ६ दिरम काले अंगूर १५ दाने- लिसोड़े २० दाने- सनामक्की- स्यातरा तीन तीन दिरम- उन्नाब ९ दाने- कासनी के बीज २ दिरम- कुसूस के बीज डेढ दिरम- और शिखस्त या तुरंज बीन १० दिरम से १५ दिरम तक भिगोकर या औटाकर पिलावें- और जो दस्त उससे अच्छे न आवें तो अमलतास भी मिलादें- और जब अमलतास मिलाया होतो रोग़न बनफशा या रोग़न बादाम एक दिरम मिलाना चाहिये और कमती बढ़ती दवाकी हकीम की बुद्ध पर है-॥ जुल्लाब की कोई दवा ऐसी नहीं जो एकाही मवाद को निकाले जो जुल्लाब ॥

जिस मवाद को बहुधा निकालता है- उसी मवाद के नाम से मशहूर है- तपमें एक परसवाड़े से पहिले पीली हड़ नदेनी चाहिये- इसे इसहाल कबिदी होजाता है- और जो ज़रूरत होतो रोग़न बादाम में उसे चिकनालें- और बीदाने और ईसब गोल के लुआब में मिलाकर पिलावें तो हानि नकरें ॥

कफकेजुल्लाबकीदवायें

अफ्तीमून के फल का छिलका- कंतूरयून- साहीजु हर्मन- गारीकून- हब्बुलनील- तुर्बुद- इर्मले- फाड़बिल फारोम- बारोंजी शुकाई-॥

जुल्लाबकफका

अयारिज फैकरा तुर्बुद सफेद- हब्बुल नील एक २ दिरम- गारी

१ इसहाल कबिदी कलेजे के दस्त आने को कहते हैं ॥

कून- अनीसून डेढ २ दिरम नमक- और बकापन के छिलके डेढ २ दांग- इन सब दवाओं को कूटे- और सौंफ के अर्क में सानें यह एक पूरी खुराक जवान आदमी की है- गारीकून को कूटना न चाहिये- इसमें एक चीज़ नाखूनसी होती है- वह कूटे से ज़हर होजातीहै इस वास्ते उसे बालोंकी चलनी में छान लेना चाहिये कि महीन महीन उसका निकल आवे॥

२ दूसरा जुल्लाब बलगमका

इस जुल्लाब को तप मेंभी देसकते हैं- और पुरानी खांसी कोभी फायदा देताहै- उन्नाब- लिसोड़े- बीसदाने सूखा हुआ जूफा- नीलोफर- और बनफ़्शे के फूल- हंसराज- गाज़ुबाना कुचला हुआ- तीन तीन दिरम- मुनक्के १५ दाने- इंजीर ७ दाने- मुलहटी छिली हुई और कुचली हुई ४ दिरम- तीन रत्तल पानी में ओटावें जब एक रत्तल रहजाय तब छान लें- और अमलतास- तुरंजबीन- गुलकंद- दस २ दिरम मिलाकर मलें फिर छानकर फिर एक दिरम रोगन बादाम डालकर पीवें॥

फंकी बलगमके जुल्लाबकी

तीन दिरम तुबुर्द सफेद को- रोगन बदाम में चिकना कर कूट छान लें- और सोंठ एक दिरम- सफेद नमक आधा दिरम- पीस कर इसमें मिलाकर ठंडे पानी केसाथ फांके और जो नमक की जगह सफ़ेद बूरा सब दवाईयों के बराबर मिलालें तो अच्छा है- और मस्तगी भी मिलालें तो अच्छा होगा॥

दवायें जो सौदा को निकालती हैं येहैं

काबली हड - कालीहड - सनामक्की - बालंगू अर्थात् बालंग बीया - इस्पी सूल - उस्तखुद्दूस - लाजवर्द धुलाहुआ (१) हजर अरमनी - आंवला - ॥

जुल्लाबसौदाका

अयारिज फीकरा पांच दिरम - ईसी सून दस दिरम - लाजवर्द धुला हुआ सात दिरम - हजर अरमनी नौ दिरम - सकमूनियां भुनी हुई - बकायन का वक्काल - काली खरबक दोदो दिरम - सुम्बुलु तंतीब - अनीसून एक एक दिरम - सब को कूट छानकर करफ्स के पानी में सान कर गोलियां बनारक्खें दाई २॥ दिरम उस में से खावें - ॥

सौदाका दूसरा जुल्लाब

सौदाकी बीमारियों को फायदा देताहै - काली हड २) दो तोले ११ माशे - बिस फायज (अर्थात खपोली) १ तोले ५॥ माशे - इफ्तीसून (अर्थात आकाश बेल) २ तोले ७॥ माशे - सनायमक्की २ तोले ४ रत्ती - उस्त खुद्दूस अर्थात् रुद्राक्षर २ तोले ४ रत्ती - गुलाब के फूल १ तोला २ माशे - गाउजुबां १०॥ माशे - बालंगू १०॥ माशे - अनीसून अर्थात् बादियान रूसी ७ माशे - सौंफ ७ माशे - काली

(१) लाजवर्द के धोने की यह रीतहै कि लाजवर्द को महीन पीस कर पानी में भिगोवें और थोड़ासा जैतून का तेलडालें फिर निथारें इसकेपीछे बहुतसा पानी डालकर होले २ घोलें और रंगीन पानी दूसरे बरतन में निकाल कर उस बरतन को ढककर थोड़ी देर रहने दें जो लाजवर्द निथरकर बैठजावे उसे निकाल कर सुखालें इसी प्रकार सब धोलें - ॥ (१)

कुटकी २ दाँग-सफेद तुर्बुद ३॥ माशे-सोंठ १॥ माशे-इन सबको औटावें और छनी हुई-गारीकून-हजर अरमनी-मिलह निफ़्ती अर्थात् नमक निफ़ती दोदो दाँग कुचल कर पकते में मिलादें-और छान कर पीयें जो अधिक पुष्ट करना चाहे तो-बकायन के बक्कल-और एलुआ-सकोतरी-और बढादें ॥

जिसदवा में आकाश बेल डालें-चाहिये कि दवाओं के औटने में उस्को पोटली में बांध कर डालें-और जल्दी से उतार व छान कर पिलादें-॥

हुकना और शाफ़ा भी मवाद के निकालने के लिये अच्छा है-परंतु हमारे देशों में हुकने का रिवाज़ कम है और जो वह वैद्यकी रीति से नहो तो हानि करता है-इस लिये इसका वर्णन यहां नहीं कीया जाता-और शाफ़ा हुकने की जगह किया जाता है-उसका वर्णन यह है कि जब जुल्लाब दिया जाय और अपना असर नकरे-तो शाफ़ा करना उचित है-और क़ूलंज में जब तक शाफ़े से मुवाद को न निकाल सकें जुल्लाब न पिलावें-और ऐसाही बड़े क़ब्ज़ में जब तक आवश्यकता नहो तब तक शाफ़ा नकरें क्योंकि शाफ़ा बहुत करने से बवासीर उत्पन्न होती है इस जगह बहुधा शाफ़े अच्छे अच्छे लिखे जाते हैं-॥

१शाफ़ा- जो क़ूलंज की बीमारी को अच्छा करता है-और दस्त लाता है इसे तप में भी देसक्ते हैं-बनफ़शा के फूल ७ माशे-सनाय ७॥ माशे-हिन्दुस्तानी नमक (अर्थात खारी नोंन) ३॥ माशे अमलतास का लुआब ३५ माशे-लाल शक्कर ३५ माशे-लेकर शाफ़ा बनावें और चाहिये कि लम्बाई शाफ़े की ६ अंगुल रोगीकी हों-॥

(१) खुलके दस्त नहो उसे क़ब्ज़ कहते हैं ॥

२ शाफ़ा- जो जुल्लाब के बाद दिया जाता है- जबकि उसके असर में देर होजाए- और गर्म मिज़ाज वाले को अच्छा है- तुरंज बीन १७॥ माशे- साबुन इराकी ७ माशे- रूमी ७ माशे- सांभर नमक ७ माशे- लाल शक्कर १७॥ माशे- इन औषधों को कूट छान कर शाफा बनालें-॥-

३ शाफ़ा- जो तुरंत असर करे- एक टुकड़ा साबुन का छुहारे की गुठली की बराबर लेकर पाखाने की जगह में रक्खें- और जो गुल रोगन से चिकना करलें तो अच्छा होगा-॥

४ शाफ़ा- लड़के और बूढ़ों को फ़ायदा करता है- मोम ७॥ माशे- नमक ५। माशे- बूरह अरमनी ५। माशे- इन दोनों को मोम में मिलाकर शाफा बनावें और गुल रोगन में चिकना करके काम में लावें-॥

छठा अध्याय

कै लाने वाली औषधियों के विषय में

पहिले उन उपायों का वर्णन किया जाता है- जो कै (अर्थात उलटी) से पहिले अवश्य है जान लो जब नौका काम पड़े तो उससे एक दिन पहिले नर्म नर्म भोजन करे और जो गरमी या और कोई बात नहोतो सुगंधि वाला तेल मलें और जिस दिन कै करें तो पहिले मूंगकी दाल या चावल पतली करके पीवें और थोड़ी देर पीछे कै लाने वाली दवा पीकर कै करें और जिसके मिज़ाज में तरी हो उस को पहिले दाल चावल खिलाना न चाहिये और जिस को

कठिन तासे कै आती हो उसे तीन तीन दिन गर्म जगह में रक्खें २
ओर बदन पर तेल की मालिश करें ओर भांति २ के भोजन करावें
इसके उपरांत उलटी करें ओर उलटी करने के समय सीधा बैठ औ
र पेट तथा कमर को दाबले बहुधा मनुष्य खड़े होकर कै करते हैं
ओर ऐसी कै पेटकी जड़से मवाद निकाल लाती है ओर चाहिये कि
कै दोबार थोड़ी २ देर के पीछे कीजाय इससे बिलकुल पेटनिर्मल
होजायगा ओर कैके पीछे गरमी में गर्म मिज़ाज वाले को ठंडे
पानी से मुंह हाथ धोना चाहिये ओर गरम पानी में सिकंजबीन
या कांनजी मिलाकर कुल्ली करें इसमें जो मवाद मुखमें होगा व
ह दूर होजायगा ओर जाड़ों के दिनों में ठंडे मिज़ाज वाले को हा
थ मुंह गर्म पानी से धोना चाहिये ओर शहद की सिकंजबीन से
कुल्ली करें ओर कुल्ली के पीछे मस्तगी ३॥ माशे पीसकर श
क्कर के साथ या बिना शक्कर के सेवके अर्क के साथ पीलें ओर
जो मस्तगी की जगह गुलकन्द - इतरी फल सगीर होतो भीडर न
हीं हैं ओर जो ओषधों की तेज़ी से हिचकियां आने लगें तो थोड़ा २
गर्म पानी पिलावें ओर छींके लाने का उपाय करें ओर जो कैके पी
छे छाती ओर पसली में पीड़ा होजाय या पेट फूल जाय तो गुलरोगन
या बाबूने के तेल मलें ओर गर्म पानी से धारें ओर जो कै की तुरंत आ
वश्यकता होतो इन बातों के बिनाही कै करना चाहिये ओर जो बिय
के खानेपर कै कराना पड़े तो उसे पेटसे अच्छी भांति निकालना चाहिये

वह दवायें जो कै से पित्तों को निकालती हैं यह हैं :

सिकंजबीन कन्दी १० मिसकाल - पालक का अर्क ४० मिस
काल जो के औटाये हुए पानी में या खुब्बाज़ी के पानी में घोलकर
गुनगुना पिलावें -॥

१७ मिसकाल ४॥ माशे का होता है ओर बाज़े ३॥ माशे काही मानते हैं ॥

कैमें बलगमको निकालनेवाली औषधयहहै

मूली के बीज ७ माशे– सोये के बीज ३॥ माशे– खारी नमक ३॥ माशे– सब को कूट छान कर शहद में मिलाके खिलावें जो कै आपसे आजाय तो अच्छा है नहींतो ऊपर से गरम पानी पिलादें–॥

वह औषधें जो सौदा को कै में निकालती हैं यह हैं॥

मूली को खाली करके कुटकी उसमें भरदें फिर उसको सिकंजबीन में रात भर डाले रक्खें सवेरे खिलादें और ऊपर से सिकंज बीनलोबिये के पानी में घोल कर पिलावें–॥

वह औषधें जो पित्त और बलगम को कै में निकालती हैं यह हैं॥

शहद की शिकंजबीन २० मिसकाल– खारी नमक २ मिसकाल– मूली का अर्क ४० मिसकाल– मिलाकर गुन गुना करके पिलावें–॥

वह औषधें जो पित्त बलगम और सौदा को कै में निकालती हैं यह हैं॥

मुलहटी ५ मिसकाल– सोंप के बीज ५ मिसकाल– खुब्बाजी केबीज और जौ– हर एक ३ मिसकाल– सब को एक कटोरे पानी में औटावें जब पानी आधा रह जाय तब उसमें आकाशबेल का शरबत २० मिसकाल डाल के और अंगूर का सिरका मिलाके और गुन गुना करके पिलावें और कै करावें–॥

जब तक उलटी कराने की अत्यंत चाहना नहो– तब तक काली कुटकी नदेंना चाहिये– क्योंकि वह विष है– और उससे खून्नाक उत्पन्न

होता है- और इसी प्रकार जिसने के नकी हो उसे बिना जरूरत के कराना न चाहिये-॥

सातवाँ अध्याय

उन औषधों के वर्णन में जो मवाद को पेशाब की राह से निकालती हैं।

इस प्रकार की औषधें मवाद को रगों के अन्दर से निकालने में बहुत काम आती हैं परंतु जब मवाद बहुत होतो जब तक फस्द या जुल्लाब न देलें इन औषधों को काम में न लावें- हकीमोंने कहा है कि जो मवाद जिगर के पीछे होतो उसका निकालना इन औषधों से अच्छा है पेशाब के जारी होने से पसीना- और पाखाना रुक जाता है इसी प्रकार दस्तों के आने से पेशाब कम आता है क्योंकि मवाद दूसरी ओरसे निकल जाता है- इन औषधों से पतला मवाद निकलता है- इस लिये चाहियेकि जब तक तरी का रोग नहो- इन औषधोंको नदें- इस लिये- इस्तिसका-(अर्थात् जलंधर)- फालिज- जोड़ों के दर्द में इन्हीं औषधों को देते हैं और मवाद के पकने से पहिले इनको नदेंना चाहिये-॥

पेशाबलानेवाली दवाइयां जोठण्डीहैंवहयहहैं

कासनी के बीज- खीरे ककड़ीके बीज- शिकंजबीन- लौकी अर्थात घीया का अर्क- कुलफे के बीज- गोखरू- काकनेज- तरबूज का पानी आदि-॥

गर्म औषधें यह हैं

करफ़्स के बीज–सौंफ–ज़ीरा–ख़िशख़ाश–सुरवाहु आज़ू का–अजवायन–गाजरके बीज–सुदाब–कवाबआदि–॥

मोतदिल अर्थात वह औषधें जिनमे सरदी गरमी बराबर है यह है।

हंसराज–खरबूजेके बीज–ठंडी और गरम औषधों को मिलाकर देनेसेभी यही बात होती है–॥

मोतदिल औषध जो पेशाब बहुत लाती है यह है

ज़ीरा–सौंफ–हरएक ७ सातमाशे–कुचल कर एक प्याले पानीमें औटावें जब पीने के अनुमान रहजावे तो उसे छान ले–और खीरेकाकडीके बीज–और खरबूजेके बीज–हरएक १०॥ साढ़े दस माशे–पीस कर इसमें मिलादें–और मिश्री मिलाकर पिलादें–यह दवा मवाद को बहुत निकालती है और बन्द पेशाब को जारी करती है और जो–ज़ीरा और सौंफ को कूट छान कर पहिले फांकले और ऊपरसे खीरे, काकड़ी औरखरबूजे के बीज पीसके पीवें तोभी यही फायदा होगा–॥

औषध जो बन्द हैज को जारी करे॥

तज–कलोंजीदो मिसकाल–अबहल–जुन्दबेदस्तर–हरएक ७ माशे–सबको कूट छान कर दुगुणे शहद में मिलावें–और एकाम सवाक से २ दो मिसकाल की गोली बांधलें औरप्रातकाल एक गोली निगलकर ११ तोले ८ माशे सौंफ का अर्क पीवें जो बन्द होने का कारण रुधिर की कमी या मिजाज की गर्मी न होगी तो यह औषध लाभ करेगी नहीं तो हानि–॥

जोशांदा:जो हेज़को जारी करे और पुरुषकाबी म्म्ज़ीजो ठरड से रुकरहाहो उसेनिकालदे

इफ़सनतीन (अर्थात् सतारू) दुरमनी तुर्की - तुरमस - सुदाब - सौंफ़ - करफ्लके बीज - हरएक ७ माशे - इंजीर ५ गुलकन्द १० मिसकाल - सबको औटाकर और गुलकन्द मिलाकर बराबर ३ तीन दिन पिलावें - और फिर तीनदिन पीछे फिर पिलावें - जिस्सेम वाद अच्छी तरह से निकल जावे और हेज जारी करने वाली औषधों को रजस्वला होने के दिनों में पिलावे इससे बड़ालाभहोगा ॥

आठवां अध्याय

उन औषधोंके वर्णनमेंजो दिल औरसिर और जिगर और मेदेको पुष्ट करती हैं।

सिरकी पुष्ट दाता ठण्डी औषधें यह हैं - मोती - आमला - विही - सेव और अमरूद के हरे फूल - गुलाब के फूल - गुलाब - नारंगी ॥

और गर्म यहहैं - बहौरुर - फन्दक - बालछड़ - सोंठ - नागरमोथा बालछड़ - मुश्क - ऊद - अम्बर - गालिया - लौंग - कुन्दुर - अवहर कोतल - भेड़ीका दूध ॥

दिल की पुष्ट दाता और प्रसन्न करने वाली ठण्डी दवाइयां यह हैं - नाशपाती - मीठाअनार - आमला - इमली - सेव - चन्दन - वंसलोचन - गिलेमखतूम - रेशमखाम - वेसद - कहरुवा - कपूर - गाउजुबां - धनियां - गुलाबके फूल - मोती - नीलोफर - नारंगी हड़ - याक़ूत - चांदीके वरक ॥

गर्म यह हैं- सोनेके वरक़- इतरंज छिलके- उस्तखुद्दूस- अबरेशम- सफेद वह मन- लाल वह मन- विसफायज- वालंगू- जंगली तुलसी- निर विसी- दारचीनी- नरकचूर- दरूनज- आक़रान- मुश्कलि- नागर मोथा- तज- शक़ाकुल उदसालीब- अम्बर- फिरंजन मुशक- उदसलीब- इलायची- पोदीना- लाजवर्द-

जिगर की पुष्टि दाता ठण्डी औषधें यह हैं- कासनी- ज़रिशक- अनार-॥

गर्म यह हैं- छडीला- अजफारुत्तीब- जायफल- हम्मामा- हब्ब बिलसान- दार चीनी- गाफिस- लोंग- तज- कशस- रूमी मस्तगी-॥

जानना चाहिये कि जिगर की कम ज़ोरी बहुधा सरदी और तरी से होती है- इसलिये जिगर की पुष्टि दाता औषधें यह हैं॥

मेदे की पुष्टि कारक ठण्डी औषधें यह हैं- आमला- अनारदाना- समाक- बहेडा- हर्ड- और हर्डका मुरब्बा- बिहीं वंसलोचन- गुल्लाबके फूल-॥

गर्म यह हैं- सरकंडे की जड- नारंगीके छिलके- वालंगू- जायफल- दारचीनी- ज़रम्बाद- नागर मोथा- तज- साज़िज हिन्दी- लोंग- इलायची- कुन्दुर- रूमी मस्तगी- गर्णकरा राम शीह- पोदीना- ऊदगर[illegible]-॥

जानना चाहिये कि जो वस्तु मेदे की पुष्टि कारक है- वह अंतडियों कोभी पुष्टि करती हैं- और जो औषध दस्त लाती है वह मेदे को कम ज़ोर करती हैं- परंतु हड़ दस्त भी लाती है- और मेदे की पुष्टि कारक भी है- और सनाय कोभी बहुतसे लोग मेदे की पुष्टि कारक कहते हैं-॥

तीसरा खण्ड ३

रोगों और उनके उपाय के वर्णन में

पहिला अध्याय

सिरके रोगोंके बर्णन में ।

पहिला पाठ १

सिरके दर्दके बिषयमें

जो दर्द रुधिरकी अधिकता से होतो - फ़स्द सरारू कारें - और सिरके पीछे सीगी लगावें - और थोड़ा ही रुधिर निकाले और नीबू का शरबत पिलावे - और रुधिर लेने के पीछे जो कब्ज होतो - नुकूअ़हालिज - या मुलय्यन मुबारिक और जो चीज़ रुधिर के लिये लाभदायक है - काम में लावें ॥

और जो पित्त की अधिकता से होतो पित्त को पकाने वाली और ठीक करने वाली औषधे पिलावें - इस के पीछे जुल्लाब उसीका दें - और सफेद चन्दन को हरे धनियां के साथ पीस कर सिरमें लगावे ॥ -

और जो बलगम की अधिकता से होतो बलगम को ठीक करें और सौफ को औटाके शहद डाल कर पिलावें और कुस्तका तेल सिर पर मलें और मुन्ज़ास और जुल्लाब बलगम वादें और -

वेद इन्द्रौर की जड़ और सोंठ को पानी में घिस कर लगाना अच्छा है ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होवे सौदा को ठीक करें और उसकी मुञ्जस और जुल्लाबदें बाबूने और बादाम का तेल सिर में मलें ॥

जो दर्द इन मवादों से हो उसमें पाशोया बड़ा लाभ दायक होता है-॥

ऐसी पीड़ा में सिर को दबाना नहीं चाहिये क्योंकि इससे पहिले तो चैन पड़ता है परंतु अंतमें दुखः दायक है इसकी जगह पांव को दबावें और तलुओं को मलें परंतु जो सिरको केवल हाथ से पकड़े तो डर नहीं और जुल्लाब के पीछे होले होले दबाना भी गुण दायक है-॥

जो पीड़ा अकेली गरमी या अकेली सरदी से हो उस में जुल्लाब की आवश्यकता नहीं जो गरमी से हो तो ठंडाई पिलावें और सरदी से होतो गर्म औषधें दें ॥

और जो सिर की पीड़ा किसी और रोग के कारण से होतो पहिले उस रोगका उपाय करें ॥

(आधासीसी की पीड़ा) आधे सिर में होती है और देर में जाती है उसका उपाय वैसेही करना चाहिये जैसेकि ऊपर लिखा गया है॥

और इस औषधका सिर में लगाना गुण दायक है- लम्बूलका गोंद ३॥ माशे- अफीम १॥। माशे- केसर १ रत्ती पीस कर गुलाब में मिलाकर कागज़ पर लगावें- और कनपटी पर चिपटादें और इस रोगका जल्दी उपाय करें नहीं तो दृढ़ होने से कठिनता से दूर होता है ॥

बहुतसे लोग सिर की पीडा में अफ़ीम आदि का लेप करतेहैं इनसे तो पहिले तुरंत चैन पड़ता है–परंतु हकीमों ने इनका लगाना नहीं बतलाया है– और जो अत्यंत आवश्यकता होतो अफ़ीम के साथ केसर या बाबूना मिलादें–॥

सिर की पीडा में जो गुलाब सिर पर डालेंतो इतना डालें कि सिर भीगा रहे नहीं तो हानि करेगा ॥

जो सिर की पीड़ा वाले की नकसीर फूटेतो उसे बन्द नकरें क्योंकि वह उसके लिये अच्छीहै परंतु जब रुधिर अधिक निकले और उस्से कम ज़ोरी बहुत पैदा हो तब बन्द करना चाहिये सिरके रोगों में नाक या कान से पीप का निकलना बहुत अच्छा है–॥

दूसरापाठ२

सरसाम के बिषयमें

सिर के परदों या भेजेकी झिल्ली में सूजन होजाने को सरसाम कहते हैं–॥

जो वह रुधिर की अधिकता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी के मुख पर हंसी सी मालूम होगी॥

और जो पित्त की विशेषता से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी को गुस्सा हट और चिड़ चिड़ा हट होगी ॥

और जो बलग़म से होतो उसका चिन्ह यह है कि रोगी सुस्त और घबराया हुआ होगा–॥

औरजो सौदा से होतो रोगी चोकन्ना मालूम होगा सौदा

बहुत कम होता है- और जो जो चिन्ह हर मवाद के लिये हम पहिले लिख आये हैं वह हर प्रकार के सर साम में पाये जाय गे-॥

सरसाम जो रुधिरसेहो उसे करानी तुस कहते हैं और पित्त वा ले को करानी तुस खालिस और वलग़मी को लीसर गुस कहते हैं-॥

जानना चाहिये कि जो सर साम रुधिर और पित्त सेहो उस में तप अधिकता से होती है और वलग़मी और सौदावी में हल की और बेहोश रहना और बकना सब सरसामों में ज़रूर हैं-॥

उपाय उसका वैसेही करें जैसे सिर की पीड़ा में वर्णन कर चुके हैं- और इस रोगमें तप का उपाय अत्यंत अवश्यक है और खूनी और पित्त के सरसाम में पिंडलियों पर सींगी और पछने ल गाना अच्छा है- और दूसरों में खाली सींगी लगाना गुणदायक है और लख लखा सुघानाभी तुरंत लाभ दायक है सिरसे तप के उ तारने को और सब सिरके रोगों में पाशोया और पांव बांधना औ र मलना अति लाभ दायक है- खूनी सरसाम में फस्द तुरंत कर नी चाहिये जो रातका समय होतो दिन का विचार नकरें उसी समय फ़स्द करादें- पित्तके सरसाम मेंभी फस्द अच्छी है-क्यों कि पित्त रुधिर में मिले रहते हैं- बहुधा मनुष्योंने वलग़मी और सौदावी सरसाम मेंभी फ़स्द को अच्छा लिखाहै परंतु इन दोनों में रुधिर कम निकालना चाहिये-॥

बकना और बहकना सरसाम में अवश्य है परंतु कभी २ बिना सरसाम ऐसा होता है जैसे विवारी के तपमें वारी के समय और किसी पीड़ा या रोग की अधिकता में इसको सर साम गैरह कीकी कहते हैं जब वह रोग जाता रहता है- तो बकना और-

बहकना भी जाता रहता है इस लिये पहिले उस रोग का उपाय करना चाहिये ॥

तीसरा पाठ ३
जुमूदके बिषय में

यह वह रोग है कि मनुष्य बैठा होतो- बैठा रहजाता है, और जो लेटा हुआ हो तो लेटा और सोता होतो सोता और खडा होतो खडा रहजाता है कारण इसका यह है कि सौदा सिरके पीछे गिरता है और वहीं बन्द होके रहजाता है--उपाय इसका यह है कि वेहोशी के समय कोई गरम शाफ़ा या सौदा का निकालने वाला इकना दें- और शब्बो के फूलोंका तेल और बादाम के तेल में सोंठ या- जुन्द वे दस्तर- मिलाकर सिर पर मलें- और जब होश होजाय तो मुन्ज़िश और सौदा का जुल्लाब दें- और गर्म और तर वस्तु खिलावें- और सिरके पीछे मोंम रोगन लगावें जो रुधिर की अधिकता से होतो फ़स्द भी करें- और पिंडलियों पर सीगियां लगावें- फ़स्द का नश्तर तो गहरा दें- परंतु रुधिर काम निकालें-॥

चौथा पाठ ४
सकतेके बिषयमें

यह एक रोग है कि मनुष्य का हिलना झुलना बन्द होजाता है- और मुर्देकी तरह चित्त पडा रहता है- जो सांस न आतीहो तो इसका कारण यह है कि सिरके सब परदे बन्द होगये होंगे जो यह रुधिरकी अधिकता से होतो फ़स्द सरारू करें- नहींतो

वलगम के निकालने वाले झुकाने और शाफे दें- और सिर के बाल काट कर सिरको सेंकें-और नफ़ूस और सऊत कास में लावें-और जो किसी प्रकार उलटी होसके तो बहुत अच्छा है-और हाथ पांव का मलना और जोर से बांधना भी लाभ दायक है-और खोपरीपर पछने लगाकर उसपर पारा मलना या-बछनाग-पीसकर मलना अच्छा है और जब होश आजाय तो मुज्ञिश और जुल्लाव वलगम का दें-॥

इस रोग में जब दम आता जाता मालूम नहो तो चंगा होना असंभव है- परंतु जिस्में दम आता जाता हो उसका अच्छा होना भी अति कठिन है-इस रोग में और मृत्यु में यह अंतर है कि इस रोग वाले की आंख की पुतली में परछांही दिखाई देती है- और मुर्दे की आंख में नहीं दिखाई देती- चाहिये कि रोगी का तीन दिन गति दाह कर्म न करें- किंतु उसके अच्छे होने की आसा नहीं है- परंतु परमेश्वर की कृपा से अच्छा होजाय तो क्या आश्चर्य है- और जो उसकी देह नीली होजाय तो उसका उपाय न करें वह मुर्दा है-॥

पांचवां पाठ५ सबात के बिषयमें

स्वभाव से अधिक अचेत होके सोना रोग है और इसी को सबात कहते हैं- कारण इसका यह है कि सिर में तरी अधिक होजाती है- चाहे अकेली तरी हो या उस्में बलगम और रुधिर का मवाद भी मिला हो इस रोग में जैसा कारण हो वैसाही जुल्लाव दें- और सिरका सुंघायें- खुश्की लाने वाली वस्तु और इतरी फ़ाल खिलाना बहुत लाभ दायक है- और इसका कारण

सेदाका बुखार होतो चिन्ह इसका यह है- कि पिहिले बद हज़्मी हुई होगी- और भूख के समय कमती मालूम होती होगी - उपाय इसका यह है कि पेट को साफ़ करें- और इतरी फल का शीरा खिलावें और सूखा धनियां कूट छानकर खाने के पीछे फंकावें-॥

छठा पाठ ६

सहर के बिषय में

सहर उस रोगका नाम है जिस्में स्वभाव से विशेष मनुष्य जागे और नींद उसे कम आवे कारण इसका सिर में खुशकी- होजाना है- चाहे वह अकेली हो या उसमें सौदा और पित्त और खारी बलगम मिला हो जो यह रोग अकेली खुश्की से होतो सिरको तर रक्खें और खाने पीने और सूंघने में तर वस्तुओं को काम में लावें और जो यह सवाद से होतो उसीका जुल्लाब दें और सिरका कभी न सुंघावें क्योंकि यह नींद को बहुत खोता है- निद्रा लाने वाली औषधें यह हैं-हरा सीया सिर हाने रखना औ खुलरासी सहर में सिर परसी लपेटना और नाज़बू गुलाब में भिगो कर सूंघना और लख लखा हरदम पासरखना अफ़ीम और बनफ़शे के तेलको मिलाकर चंद या पर मलना-॥

जब जागने का कारण तपहोतो पहिले उस्का उपाय करें और सिरपर तेल मलें और पाशोया करके हाथ पांव मलें-॥

सातवां पाठ ७

(सबातसुहरी और सहरसबातीके विषयमें

यह वह रोग है जो सहर और सबात के कारणों के इकट्ठे हो जाने से होता है और बहुत से हकीम यह कहते हैं कि यह पित्त और बलगम से दमाग में सूजन होजाने से होजाता है चिन्ह इस रोगका यह है– कि कभी अचेत और घोर निद्रा बहुत काल तक रहती है और कभी रोगी बहुत देर तक जागा करता है और जो मनुष्य इसे भेजे की सूजन बताते हैं उनकी दलील यह है कि इस रोग में बकना और आंखें पथरा जाना अवश्य है जो निद्रा अधिक होतो इसे सबात सहरी कहेंगे और जो जागना विशेष होतो सहर सुबाती कहेंगे और जागना और सोना बराबर बहुत काम देखा गया है जो ऐसा होतो कहने वाला जिस शब्द को चाहे पहिले, कहे सच्चतो यह है कि इस रोग में भेजे की सूजन जरूर नहीं परन्तु सूजन में यह रोग हो सक्ता है– ऊपर केदो पाठों में जो उपाय लिखे गये हैं उन दोनों को मिला कर करें और जब बलगम की अधिकता होतो कम गर्म वस्तु सुंघावें और जिस समय पित्तकी अधिकता से होतो ठंडी वस्तु सुंघावें ऐसे ही और उपाय जानो–॥

और जब यह रोग भेजे की सूजन से होतो वह उपाय करें जो बलगम और पित्तके सरसाम से ऊपर लिखा गया है–॥

आठवांपाठ८

काबूसकेवर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य ... धु ... कि कोई भारी चीज उसपर गिर पड़ी ... वह घबरा कर बर्राने लगता है– ... फ़स्द सरारू करें– और पिंडलियों ...

कमदें- और जो वलग़म या सौदा की अधिकता से होती उन्हीं का जुल्लाव दें- और इसरोग का उपाय तुरंत करें नहींतो मृगी हो जायगी-॥

नवांपाठ९

मृगी के विषय में शुरूअ

यह वह रोग है जिस्मे मनुष्य अचेत होकर गिर पड़ता है और मुख और हाथ पांव टेढे और खिचे रहजाते हैं- और वह तड़फा करता है- इस रोग में सिरका बोझल होना और जीभ की रगों का हरा होना अवश्य है- कभी यह रोग वारी से होता है- जोइस की वारी बहुत होंतो बुरा है-परंतु बालकों को कभी२ ऐसा देखा गया है- कि एक दिन में आठ२ वार आती है- और फिर ऐसी चली जाती है कि कभी नहीं होती- उपाय इसका यह है- कि वारी के समय वह चिकित्सा करें जो मूर्छा में होती है- और कोई वस्तु या कपड़ा लपेट कर उसके मुखमें रखदें- कि वह्न अपनी जीभ चबा न डालें और हाथ पांव उसके जकड़दें कि चोट न लगे और जब होश में आवेतो जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाव दें- और तर सेवें और दूध दही न खिलावें- और- अदर्सलीव- को गलेमें लटकावें- और-नास- जो दूसरे खण्ड में लिखागया है सुघावें-॥

बच्चों को जो पसली का रोग होता है- वह भी इसी प्रकार से है- उपाय उसका मवाद के अनुसार करना चाहिये- और विना कारण के जाने अधिक गर्म और अधिक ठण्डी ओषध नदें- और दूध पिलाने वाली की हुशियारी रक्खें- कि हानि कारक वस्तु न खावे असस्से भोग न करें- कि दूध विगड जाता है और बच्चे को क़ब्ज़ होतो शाफ़ा करें॥

दसवांपार१०

मालीखोलिया केवर्णनमें

यह वह रोग है कि मनुष्य को अच्छी बातें नहीं सूझती और वह बातें सूझ पड़ती हैं जो केवल बुद्धि के विपरीत हों॥

कुबुद्धि और अहंकार और घमंड और व्यभिचार भी इसी प्रकार के हैं-॥

जैसा मवाद हो उसके अनुसार जुल्लाब दें- और दिलकी खुशवाली वाली वस्तु और नौशदारू खिलायें- औरभोजन में हल्की वस्तु खिलाना और थोड़े२ दिन पीछे कई वार जुल्लाब देना- अधिक लाभ दायक है- और जानना चाहिये कि ऐसे रोगों में उपाय का लाभ बहुत काल के पीछे प्रत्यक्ष होता है घवरावें नहीं॥

ग्यारहवांपार११

जुनून के विषय में

यहरोग कई प्रकार का है-जो इसमें क्रोध और क्रोध पाया जाय तो सानिया कहलावेगा- और जोहंसी और खेल और सतान होती उदाउल कल्व कहेंगे॥

और जो मनुष्यों से न मिले कुले तो कुतरब कहते हैं यह रोग मालीखोलिया से वढ कर है- उपाय इस का वैसाही करेंजो मालीखोलिया का है- और स्त्रियों का दूध सिर पर दुहें- और नाक में डालें- और वनफशे और वादाम का तेल सिर पर मलें और पेट पर गर्म पानी धारें- और मवाद पकजाने के पीछे माजून नुजाह- खिलावें-॥

बारहवाँपाठ१२

सदरऔरदव्वारके विषयमें

जबमनुष्य खडाहोया चले और आंखो के तले अंधेरा आजाय तो उसको सदर कहते हैं ॥

और जब यही बढ़ जाय और सिर घूमने लगे तो वह दव्वार है जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाबदें- जो मवाद सिर में होगा तो सिरमेंभी कोई रोग मालूम होगा- और जो मवाद पेट में होगा- तो जी मचलायगा- और पेट में कोई रोग होगा- जैसा उचितहो वैसाही उपाय करें- और जो कमज़ोरी के कारण सिर घूमे तोभी जन में हल्की और दिल खुश्क करने वाली वस्तु खिलावें-और मोतीयों को पीस कर- नीबू या चन्दन -या अनार के शरबत में मिलाके चटावें और जो सिर में सरदी पहुंच ने से सिर घूमें तो सेकें- और गर्म लेप लगावें और गर्म मसालह पड़ा हुआ भोजन खिलावें॥

तेरहवाँपाठ१३

निसयान अर्थात भूल जानेकेरोगके वर्णनमें

बहुधा इस रोग में सिर में बलगम या सौदा अधिकहोजाता है- या मिज़ाज में अकेली गरमी बहुत हो जाती है- बलगम और सौदा के मवाद से मुनज़िज देकर-हब्ब् कोकाया-आदि खिला कर सिर को साफ़ करें- और मजूनफिलासफा और बज और सोंठ का मुरब्बा- कुन्दर- और शक्कर- मिलाकर खिलावें और ठण्डे पानी से बचतेरहें- और सौदावी में -तेल सिरपर मलें और जो यहरोग अकेली गरमी से होतो ठण्डी औरतरवस्तुकामर्दनकरें

चौदहवांपाठ१४

फालिज़के विषयमें

यह वहरोग है कि आधा बदन लम्बाई में हिलता जुलता नहीं है- बहुधा इसका कारण वलगम की अधिकता है- और कभी रुधिर सेभी हो जाता है- वलगमी में चार दिन तक पुष्ट औषधें नदेवें- और खाना पीना बिलकुल बन्द करदें- और जो भूखन रुक सके तो- ज़ीरा- औरदारचीनी- ओटाके दें- और पानी की जगह- माउर्ले अस्ल- पिलावें- फिर चौथे दिन वलगम की मुन्जिश पिलावें- और ९ दिनया चौदह दिन के पीछे जबकि म वाद पकजाय तो जुल्लाब दें- और जुल्लाब के पीछे कूट का तैल मलें और- जवारिशवलादुर- और तिर्याक़ कबीर- और मसरोदी तूस- खिलाना बहुत लाभ दायक है- औरजुल्लाबके पीछे- मुश्क- और कुन्दश- फ़िलफ़िल- नोशादुर- पीसकार सुघावें- और गर्म पानी बदन पर न डालें- क्योंकि वहइसरोग के लिये ठंडे पानी से अधिक हानि कारक है- जो फालिज के साथ रुधिर की अधिकता होतो- फ़स्द भी खोल सकते हैं- और जो यह रोग गरमी से होतो गर्म औषधें न देना चाहिये पहिले गर्मी को दूर करलें- फिर इसका उपाय करें- और जो फ़ालिज़ रुधिरकी सूजन से होतो पहिले फ़स्द खोलकर उसका उपाय करें ॥

और जो बदन में किसी एक जगह का हिलना जुलना बन्द होगया होतो उसको इस्तिरखा कहते हैं ॥

पन्द्रहवांपाठ१५

खदरके विषय में ॥

मनुष्य की देह में कोई जगह सुन पड़जाय उसे खदर कहते हैं- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो फस्द खोलें- और भो जन कमदें- और जो बलगम की अधिकता से होतो बलगम का जुल्लाब दें- और जो खुश्की से होतो उसका चिन्ह और उपाय आगे लिखा जायगा और जो दबजाने और ज़ोरसे बांधने के कारण सेहो तो उस कारण को दूर करें ॥

सोलहवांपाठ१६

लकवेकेविषयमें

इसरोग में मुख टेढा होजाता है- और कारण इसका खिंचजा ना या ढीला होजाना मुंहकी एक ओर का है- ढीला होजाना बलग मसे होता है- चिन्ह उसका सुस्त होना- और जीभ के स्वाद में फर्क पड़ जाना- और नीचे की पलक और तालूका लटक आनाहै- और खिंचजाने का चिन्ह थूक का कम होना और माथे का खिच जानाहै ढीले होजाने में फालिज का उपाय करें- और खिंच जाने का उपाय आगे लिखा जायगा- जब तक चार दिन या सात दिन न व्यतीतहो जायं- कुछ उपाय न करें- और भोजन बन्द करदें- और जो होसके तो पानी भी नदें- और अंधेरी जगह में बिठावें और चीनी आईना आगे रखदें- कि रोगी हरदम उस्में अपनामुख देखा करें- और जायफल मुख में रख थामें और किब्र की जड़ की छालजो-सौउ ल अस्ल में औटी हुई हो उस्से कुल्ली करवावें- और जो रुधिरकी अधिकता से होतो फस्द भी खोल सक्ते हैं-इसरोग के उपायमें देर करनी न चाहिये- जो तीन महीने व्यतीत होजायंगे तो मुहसीधा न होगा ॥

चीनी आईना चांदी तांम्बे और पीतल को मिलाकर बनाते

हैं- इस्में मुख देखने से ज़ोर पड़ता है- इस कारण मुंह सीधा हो जाता है ॥

सत्तरहवां पाठ १७
तशन्नुज के विषय में।

तशन्नुज किसी जगह के खिंच जाने को कहते हैं- जो कारण उसका बलग़म की अधिकता होतो उसका नाम- तशन्नुज रतब और इमतिलाई कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि अचानक उत्पन्न होजाय- और चिन्ह बलग़म के दृष्टि पड़ें- और जो खुश्की के कारण पैदा हो उसको- तशन्नुज याबिस कहते हैं- चिन्ह उसका यह है कि धीरे धीरे पैदा होगा और उसके पहिले केया दस्त या रुधिर बहुत निकला होगा या तप आई होगी या रोगी बहुत जागा होगा या उसको क्लेश बहुत हुआ होगा- और उसका बदन दुबला होगा-तशन्नुज इमतिलाई का उपाय फालिज के अनुसार करना चाहिये- और तशन्नुज याबिस में बदन को बाहर से और भीतरसे तरी पहुंचाना चाहिये- और मोम को बनफशे या बादाम के तेलमें मिलाकर मलें-औरस्त्री का दूध नाक में डालें ॥

बिच्छू के डंक मारने से और पट्ठेपर घाव लगनेसे या कीड़े पड़ने से जो तशन्नुज हो चाहिये- कि उसकारण को दूर करें और मृगी के समय जो तशन्नुजहोता है वह मृगी के दूर होने से जाता है- और जो नजाय तो रोग़न गुल या कोई और तेल गुनगुना करके मलें- और कभी २ आदमी का मुख जम्हाई लेने में खुला रह जाता है- उस्में किसी तेल का मलना लाभ दायक है- और जो इस्से अच्छा न होतो- तशन्नुज- इमति लाई का उपाय करें ॥

२ रहता

अठारहवाँ पाठ १८

तमद्दुद के विषयमें

अङ्ग-का कोई भाग लम्बाई में तनकर रहजाता है- और समेटने से नहीं सिमटता कारण इसका यह है कि कोई पट्ठा दोनों ओर से खिंच जाता है- उपाय इसका वही करें जो तशन्नुज में लिखा-गया ॥

उन्नीसवाँ पाठ १९

कज़ाज़ के वर्णन में

तशन्नुज जो गरदन में हो और गरदन इधर उधर न फिर सके उसे कज़ाज़ कहते हैं- जैसा कारण हो वैसा उपाय तशन्नुज के अनुसार करें- और यह रोग सब प्रकार के तशन्नुजों से बुरा है- इसका उपाय बहुत जल्दी करना चाहिये ॥

बीसवाँ पाठ २०

राशे के वर्णन में

इस रोग में मनुष्य का शरीर काँपने लगता है- जो यह बलग़म की अधिकता से होतो निसयान और बलग़म के चिन्ह पाये जायंगे- उपाय इसका यह है कि बलग़म को निकालें- औरजो विषय की अधिकतासे होतो- उसको छोड़दें- और ताज़ह दूध पीना और देह पर तेल मलना अति लाभ दायक है ॥

इक्कीसवाँ पाठ २१

इस्तर्ख़ाज के विषय में

शरीरमें किसी जगह के फड़कने को इख्तलाज कहते हैं॥

नितप्रति मुख का फड़कना लकवा आने का चिन्ह है- और पेट का फड़कना मृगी होजाने का-और बगल का फड़कना छाती और बगल की सूजन का चिन्ह है- और सारे शरीर का जगह२ से फड़कना सकता हो जाने का चिन्ह है- पेट की रगों का फड़कना माली खोलिया का चिन्ह है-उपाय इसका यह है- कि जगह को गर्म करके उस जगह सेकें- और जो इस्से अच्छा न होता ब लग़म को निकाले- और जो हेज़ के बन्द होजाने से यह रोग हो तो- फ़स्द खुलवाने से जल्दी जाता रहता है॥

बाईसवां पाठ२२
लर्जी के विषय में

इस रोग में देह भारी होजाती है- और मुंह और आखें लाल होती हैं- और जम्हाई और अंगड़ाई बहुत आती हैं- और ऐसा मालूम होता है कि तप आने वाली है- और थोड़े काल के पीछे यह बात जाती रहती है- या बार बार आती है- जो बार बार आये तो रुधिर और पित्त को कम करें-और भोजन थोड़ासा दें-और गर्म मिज़ाज वाले को ठण्डा पानी पीना और ठण्डे पानी से स्नान करना अति लाभ दायक है- और धनियां को कूट छान कर शक्कर के साथ फांकना-या उसको भिगोकर और मिठाई में मिलाकर पीना लाभ दाता है॥

तेईसवां पाठ२३
हिसके वर्णन में

यह वह रोग है कि भेज़े में खुजली बिना दर्द के होती है-उप

य उसका यह है कि भेजे को ठण्डा और तरी पहुंचावें- क्योंकि यह रोग पित्त के बुखार के कारण से होता है- और जो इस्से भी अच्छा न होतो- पित्तों का जुल्लाब दें- और जो रुधिर की अधिकाता देखें तो फ़स्द भी खोल दें ॥

चौबीसवां पाठ २४
असाबा के वर्णन में

यह वह दर्द है जो भों अर्थात् भृकुटी में होता है- जो अकेली गरमी से होतो उसका चिन्ह यह है कि सूरज के निकलने से उत्पन्न हो- और जों जों दो पहर तक दिन चढ़ता जाय गा त्यों त्यों दर्द भी चढ़ेगा और दोपहर पीछे घटता जायगा- यहां तक कि शाम को बिलकुल न रहेगा- और फिर सवेरे योंही होगा- उपाय इसका यह है कि- कापूर को रोग़न गुल में घोलकर नाक में टपकायें और बाहर से देह को साफ़ रक्खें- और जो देह की गरमी ऊपर चढ़नेके कारण यह रोग होतो चिन्ह उसका यह है कि रोगी औंधा पड़ा रहेगा- और माथे की खाल खिंची हुई होगी- उपाय इसका यह है कि नाक में कोई वस्तु कड़ी और खुरखुरी डाल कर-या नख औ र अंगुल चुभोकर नकसीर फाड़ें और जो इस्से नकसीर न फूटेतो फ़स्द सरारू करें और कापूर सूंघावें और हाथ पांव मलें ॥

पच्चीसवां पाठ २५
जुकाम और नज़ले के विषय में

जानना चाहिये कि भेजे का मल जो नासिका के द्वारा बहे उसे ज़ुकाम कहते हैं- और जो गले पर गिरे तो नज़ला होगा- गरमी का चिन्ह यह है कि यह मल पतला और जलता निकले गा

औरसरदी का चिन्ह इसका गाढा होना या वे जरून होना उपा य इसका यह है- कि मिज़ाज को दुरुस्त करें और जैसामवाद हो वैसे ही उसे निकालें - चाहिये कि जुकाम में मवाद को साफ़ करने से पहिले वह वस्तु न खांय पीवें जो मवाद को निकलने से रोके- और कब्ज़ को दूरकरें- और सिर को ढांके रहें नज़ला चाहें गरम हो या ठंडा बहुत सोने और चित लेटने और बहुत चलने फिरने और सिरझुकाने और खट्टी वस्तु और दूध दही खाने से बचते रहें- और जो जुकाम के साथ खांसी भी होतो उसका उपाय भी अति अवश्यक है ॥

माशरा और खादशनाम सूजन हैं- जो मुख पर होजाती हैं और जुल्लाब से जाती रहती हैं- उनका वर्णन इस पुस्तक के अंतमें आवेगा ॥-

दूसरा अध्याय

आंख के रोगों के बर्णनमें

नेत्रों में सात परदे और तीन रतूबतें और एक असवा है- जो रंग के सदृश बीच में से खाली है- और इसी असवे मेंसे दिखाई देता है- और आंख की पुतली भी इसे कहते हैं- बीचों बीच में आकर- रतूबत जली दीया तक पहुंची है- इस रतूबत जली दीया में सब चीजें दिखाई देती हैं- और असवे से निकलकर दृष्टि की इन्द्री तक पहुंचती हैं- वह इन को पहिचान लेती है- और इसी रतूबत और असवे के बचाव के लिये और सब परदे और रतूबतें आस पास हैं ॥

अब जानलो कि- आंख का परदा जो बाहर की ओर हवा से मिलाहुआ है- और छुवा जाता है वह मुलतहिमा और कारनियां है- अर्थात सफेदी आंखकी जो दिखलाई देती है वह मुलत्तहिमा है- और गोल और काली वस्तु कारनियां है- यह दोनों परदे आपस में मिले हैं- इनके पीछे परदा इनबीया है यह परदा रंगदार है- और कारनिया में जो रंग है वह इसीका है इस परदे के बीचमें एक छिद्र है- रोशनी और चिंबों के निकलने के लिये और आंख में पानी उतरने की जगह भी यही है इस परदे के पीछे रतूवत वैज़िया है- इसका रंग अंडे की सुपेदीके स मान है- इसके पीछेपरदा अनकबूतियाहै यहपरदामकरीकेजालेकासाहै- इसके पीछे रतूवतजलीदीयाहै- औरइसके पीछेरतूवतज़गाजियाहैजो पिघलीहुई काचकीसीहै औरइसके पीछे परदा शबकीयाहैजोजालके अनुसारहै- औरइनदोनों रतूवतोंकोघेरेहुये है- औरइसके पीछेपरदा मशीमियाहै - और उसके पीछे परदासलबियाहै- जो आंखके ढेलेसे लगाहुआहै- हर२ परदों और रतूवतों में अलग२ रोगहोतेहैं- उनका वर्णन आगेकरेंगे ॥

पहिला पाठ १

रमद अर्थात आंख आनेके विषयमें

मुलतहिमा पर सूजन आजाने का नाम रमद है- जो यह रुधिर में होतो चिन्ह उसका यह है- कि आंख लाल और भारी होजायगी और दर्द होगा और चीपड़ उससे बहुत निकलेगी- और जो पित्त से होतो- जलन और पीड़ा बहुत होगी परंतु चीपड़ बहुत न होगा- और जो बलग़म से होतो रंग इसका सफेद होगा और आंखें फूल जायगी और चीपड़ आंसू बहुत बहेंगे- और

जो सौदा से होतो सूजन बहुत होगी और चीपड़ कुछभी न निकलेगी और पलके न चिपकेगी और आंख कोमल होगी और सिरमें दर्द रहेगा- और जो रीह से होतो बोझ न होगा न चीपड़ निकलेगा- उपाय इसका यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ़ करें और फ़स्द और जुल्लाव से पहिले कोई औषध आंखमें न डालें परन्तु जब यह रोग हलका होतो दो तीन दिन पीछे बिना फ़स्द और जुल्लाव के दवा डालनी चाहिये- गर्म रमदमें रसोत को लड़की की मां के दूधमें घोलकर- आंख के अन्दर और ऊपर लगाना अति लाभदायक है- और जब पीड़ा बहुत २ होतो थोड़ी सी अफ़ीम भी उस में मिलालें और चाकसू पीसकर आंख में डालना सब प्रकार की रमद में अच्छा है- परन्तु इसको थोड़े दिन पीछे डालें रोगके होते ही न डालना चाहिये और गर्म वस्तु न खावें ॥

चाकसू के बनानेकीरीत यहहै- कि उसे छील कर पानी में पकावें और जब गलजाय तो सुखादें- उसके दो हिस्से २ लेकर एक एक हिस्सा मिसरी और चीनी मामीरां का मिलाके पीसलें और आंख में डालें- लड़कों की आंखमें कभी २ यह रोग बहुत होजाता है- उसको बरदीनज- कहते हैं- उसका उपाय यह है- कि सिरके पीछे पछने लगावें और चुटकी चाकसू २ की आंख में डालें ॥

दूसरा पाठ २

(नकसीर) तुरफ़ा के वर्णन में

इस्में मुलत हिमायरुधिर की फुटकी पड़ जाती है- उपाय

इसका यह है कि- कबूतर या बतखका काच्यापर उखेड कर उसके रुधिर की बूंद अकेली या गिले अरमनी के साथ आंखमें टपकायें- और कुन्दर को जलाकर उसकी धूनी आंख को दें- और जो उसका कारण अति पुष्ट होतो पहिले फस्द करें और पछने लगायें और जुल्लाब दें॥

तीसरा पाठ ३

जुफ़रा अर्थात् नाखूने के विषयमें

इसका उपाय यह है- कि लाहोरी नमक की सलाई बनाकर कई बार दिन में आंखमें लगायें- और जो मवाद बहुत होतो फ़स्द सरारू करें- और हब्ब अयारिज खिलावें- और बलगम उत्पन्न करने वाली वस्तुसे बचें- और जो नाखूना बहुत उभरा हो तो- किसी अच्छे दस्तकार को बुलाके उसे उठ वालें॥

चौथा पाठ ४

आंखमें जाला पड़ जाने के विषयमें

इसका कारण यह है कि- क़रनिया पर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी- उपाय इसका यह है- कि समंद फेन को पानी में घिसकर आंखमें लगायें- थोड़े दिनों में अच्छा होजायगा- और जो मवाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ़ करें- और उस जाले को नहार मुंह जीभ से चाटना अति लाभदायक है॥

पांचवां पाठ ५

सबल के वर्णन में

इसरोग में आंखकी रगें लाल और मोटी होजाती हैं- और

खुजली होती है जो इससे आंसूभी निकलें– और पलकों में पानी भरा रहेतो उसको सबल रतव कहेंगे और जो ऐसा न होतो सबल याबिस कहेंगे– उपाय इसका यह है कि–फ़स्द सरारू करें इसके पीछे माथे की रग और कोये की रग की फ़स्द खोलें– और जो यह रोग कम होतो–शीयाफ़ दीनार– आंख में लगावें और जो भारी होतो– शियाफ़ अहमर– और वासली कून लगावें और सबल याबिस– में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गर्म पानी से गर्म जगह में बैठकर स्नान करना अवश्यक है– जब रसद और सबल दोनों मिले हुई होंतो दोनों के चिन्ह पाये जायंगे– ऐसे समय में न गर्म औषधें देना चाहिये न ठंडी– परंतु मवाद को निकालें और अंडे की सफेदी आंखपर लगावें–यह दोनों रोगों को लाभ दायक हैं– जो इस उपाय से न जावे तो दस्तकारी से उठालें॥

अखीन की छुआई खुजली पर

छठापाठ ६

मुलतहिमा के फूलजाने के विषयमें

जो फूल जाना मुलतहिमा का रीह के कारण से होतो चिन्ह उसका यह है कि–अचानक उत्पन्न होगा– और पहिले आंख के कोनों में–मक्खी या मच्छर के काटने की सी जलन होगी– और जो बलग़म से होतो होले होले उत्पन्न होगा और पीड़ा बहुत न होगी– और अंगुली के दबाने से चिन्ह रह जायगा– और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देरतक न रहेगा– उपाय इसका यह है कि जैसा मवाद हो वैसाही जुल्लाब दें और ठंडी रसद की औषधें काम में लावें– और जो

यह रोग रीह से होती- तीन दिन तक कुछ उपाय न करें आप से आप जाता रहेगा ॥

सातवां पाठ ७

मुलतहिमा की खुजली के वर्णन में

इस में बहुधा पलक भी घायल या लाल होजाते हैं- उपाय इसका यह है- कि निमकीन और चरपरा भोजन न खावें- और फ़स्द और जुल्लाब लें- और जस्त को नरकुल पर रगड़ कर आंख में लगावें- और गर्म पानी से मुख धोया करें ॥

आठवां पाठ ८

सुसेतुल मुलतहिमा के वर्णन में

इस रोग में आंख की सफ़ेदी पर बड़े कौये की ओर नरम मांस उत्पन्न होजाता है- उपाय इसका यह है कि- कई बार मवाद को साफ़ करें- और फिर दस्तकारी से काट डालें ॥

नवां पाठ ९

दोक़तुल मुलतहिमा के विषय में

यह वह रोग है कि आंख में बहुधा कौये की ओर कड़े और लाल और काले दाने पड़ जाते हैं- उपाय इस का यह है- कि जो मवाद अधिक हो तो उसे साफ़ करें- नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना अच्छा है- और इस से अधिक उपाय की आवश्यकता नहीं ॥



दसवांपाठ १०

दमआ अर्थात् आंसू वहने के विषय में

जो गरमी से होतो सुरमा लगावें- और सरदी से होतो चासली क्रून- और जो आंख की कमज़ोरी से होतो जली हुई पीली हड़ और नमक- और माजू- वरावर वरावर कूट छान कर आंख में सलाई से लगावें- और जो थोडी २ देर आंसू वहकार थम रहा करें तो उसको हिन्दी में मतंना कहते हैं- उपाय उसका यह है- कि पहिले मवाद को निकालें- और इसके पीछे आंसू वहाने वाली दवा लगावें- जैसे चासली क्रून और शियाफ़ अहमर ॥

ग्यारहवांपाठ ११

हिरक़तुल औन अर्थात् आंख में जलन होने के विषय में

जो यह गर्म मवाद के कारण से होतो उस मवाद को निकालें और जो कोई मवाद नहो तो- चूतियाको- कच्चे और खट्टे अंगूर के रसमें भिगो के सलाई से आंख में लगावें- और हरी कासनी के पत्ते कूट कर पानी उसका तेल में मिलाकर लगायें- और जो कापूर भी उसके साथ मिलालें तो अति लाभ दायक होगा ॥

बारहवांपाठ १२

क़ुज़ा अर्थात् आंख में किसी वस्तु के पड़जाने के विषय में

जव आंख में कुछ पड़जाय तो आंख को कभी नमलें- ऐसा न होवे कि कोई कड़ी वस्तु होतो- मलने से आंख में चुभजाय-

आंख को गर्म पानी से धोवें और स्त्री का दूध आंख में डालें- और जो वह दिखाई देती हो तो उसे रुई या नर्म कपड़े से उठालें- और वह भीतर चिपटी हुई हो और छुट नसके तो-निशास्ते को पीसकर आंख में भरदें - और थोडी देर ठैरे रहें- इससे वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी-फिर उसे अलग रुई से उठालें- और जो कोई भुनगा या मच्छर आदि होतो मुलतानी मिट्टी या गेरू आंखमें पीसकर डालें- और थोडी देर आंख मेंबांधदें-वह उसमें लिपट आवेगा- फिरउसको रुईसेउठालें और जो शीशे का चूरा आंखमें आपडे उस समय वह मीचना जो ऐसे कामों के लिये बनाया गया है काम में-लावें- या जिस प्रकार से बनसके निकाल डालें-और निकालने के पीछे स्त्रीका दूध और अंडे की सपेदी मिलाकर आंखमेंडालें-इस से बन्द करनेमे आंख नहीं चिमटेगी ॥

तेरहवांपाठ१३

आंखपर चोट लगने के बिषयमें

जो चोट लगनेसे आंखमे लाली या सूजन होतो उपाय इसका यहहै कि-फस्द खोलें- और मुलय्यन नुकूअ फवाकः-का पिलायें और गुद्दीपर पछने लगायें-इसके पीछे अंडेकी सपेदी रोगन गुलमें मिलाके आंखपर लगायें और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अर्थात् मिलाहट रह जायतो- धनियां-पोदीना-और काला पत्थर जो मिरचों की थैली में निकलता है- और हरताल पीसकर लेप करें-इससे नीलाहट जाती रहैगी- और जो तलवार या पत्थर का घाव मुलतहिमा पर लगा हो - उसका उपाय यहहै कि फ़स्द और जुल्लाब कईबार दें- और अंडे की ज़रदी का आंखपर लेपकरें- इसके पीछे वही उपाय करें जो आंख के घाव

का उपाय आगे लिखा जायगा॥

चौदहवां पाठ १४

आंख के घाव के विषय में

आंख के सब परदों में घाव होसक्ता है- परंतु जो घाव केवल मुलतहिमा पर लगा हो- और २ परदे बचे हों- उसे सालिम कहते हैं- उसमें पीडा कम होती है- मुलतहिमा- करनिया- और अनबीया- का घाव आंख से देख सक्ते हैं- परंतु परदों के घाव में केवल अधिक पीडा मालूम होती है- और जबतक पीप नहीं पडती कोई चिन्ह घाव का नहीं मालूम होती- उपाय इसका यह है- कि फस्द सरोरू तुरंत करें- और ऐसी औषधे देते रहें जिनसे कब्ज़ न होने पावे- और जब पीडा होतो स्त्री का दूध टपकावें और जो वह घाव तुरंत न पकैतो धोई हुई मेथी का लुआव टपकावें १ अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानी में भिगो रक्खें- फिर निकालकर बीस गुने पानी में पकावें जब वह पानी आधा रह जाय उसको हिलाकर निकाल लें- यही धोई होई मेथी का १ लुआव है- जब घाव पककर बहने लगे दूध और शहद मिलाकर आंख से डालें इस से घाव साफ़ होजायगा- इस के पीछे शियाफ कुन्दर काम में लावे- और जो असर घाव भर आने पर भी रहजाय तो जो उपाय सीतला के दानों के घाव दूर करने का है- वही काम में लावें- और इस के लिये पुरानी हड़ैडी १ गुलाव में घिसकर लगाना लाभ दायक है॥



पंद्रहवांपाठ १५

कमना के बर्णन में

यह कई रोगों का नाम है – एक जब पलक रीहसे भारी होजाय और फूल जाय और जागने के पीछे ऐसा मालूम होकि आंखोंमें धूल पडगई है ॥

दूसरे जब कारनिया के पीछे पीप इकट्ठा होजाय॥

तीसरे मुलतहिमा पर लाली होवो इस से कम दिखाई दे और सब वस्तु धुंधली मालूम हों॥

वह जो केवल पलक कारोग है – उपाप उसका पलक के रोगों में लिखा जावेगा – और कारनिया के रोगका उपाय यह है कि मेथी और अलसी का लुआब आंखमें डालेकर मवाद को पकावें – और कईवार गर्म पानी से स्नान करें – इस के पीछे साफ करने के लिये रूपी मुरवी पीसकर आंख में लगावें – और जो इनसे लाभ नहोतो – दस्तकारी करें और नहीं तो इसे छेडे नहीं ऐसा नहोकि कोई औररोग उठखडा हो और जो मुलतहिमा का रोगहै इस्का वही उपाय करें जो सौदावी रमद का है – और मेथी – चावूना – और अकलेल उल मुलक – को औटाके आंखको धोरें

सोलहवांपाठ १६

रतौंदी के विषय में

उपाय इसका यह है कि शहद को सौंफ के पानी में घोलकर आंख में लगायें और पीपल को चकरी या बारह सिंगे की कलेजी में चुभोकर आगपर रखदे इस से जो पानी निकले उसको आंख में लगायें – इस से तुरंतही अच्छा होजायगा – और नीमकंद

अधिकहोतो जुल्लावदें और फ़स्द खोलें॥

सतरहवां पाठ१७

मांद्र्५७ अ.ह्री. राजकोर

दिनोंदी के विषयमें

उपाय इसका यहहै-कि लड़की की माका दूध सिर परमें और नाकमें टपकायें-और ठंडे पानी में गोता लगाकार उसमें आंखें खोलें और उन्नाब का शरबत पीयें॥ अ अ्/पु

मां अ ५२ अठारहवां पाठ१८

सुदाहिदकह: और शकीक: चश्मके विषयमें

यह यहरोग है कि आंख के अन्दर धसक होती है और तक लैसे छिदतेहैं-और ऐसा मालूम होता है-कि आंखकी कोई द वो वता है-और कभी पीड़ाजाती रहती है-और फिर होजाती है जैसे आंधासीसी और रमद का कोई चिन्ह नहीं होता जो उपाय आधासीसी का है वही इसका करें-और कानपटी की रग को काट डालें-ऐसा नहो कि कोई रोग उत्पन्न होजाय॥

उन्नीसवां पाठ१९

हजूज़ उलऔन के विषयमें

इसमें बिना सूजन के आंखबाहर निकल आती है-उपाय इसका यहहै-कि जैसा मवाद हो वैसेही उसे साफ करें-और हड घिस कार आंखमें लगायें-और भोजन कम खांय॥



बीसवां पाठ २०

कारनियाके उभर आनेके वर्णनमें

उपाय इसका यह है - कि मवाद गाढ़ा होतो उसे साफ़ करे - और ज़रूर अस्फरको सलाई से आंखमें लगाये - और गर्म पानी से मुंह धोया करे - और उसकी भाफ आंख को दें - कारनिया के उभर आने का यह चिन्ह है - कि काडी होती है - और सलाई से नहीं दबती - और आंसू नहीं होते और उस्में पीडा नहीं होती - और फुन्सियां जो कारनिया में होजाती हैं - वह नर्म होती है - और दबायें से दब जाती हैं और उनमें पीड़ा भी होती है ॥

इक्कीसवां पाठ २१

कारनियापर फुंसी होजानेके विषयमें

जानना चाहिये कि कारनिया के चार परदे हैं - कभी सब में फुंसी होती है - और कभी एक में - परंतु फुन्सी पड़ने की जगह किसी में सफ़ेद दिखाई देती है और किसी में नहीं - उपाय इसका यह है कि फ़स्द और जुल्लाब दें - और पहिले ऐसी ठंडी औषधें लगायें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें और इसके पीछे - शियाफ़ अहमर लीन लगायें फिर शियाफ़ अबियज़ कुन्दुरी ॥

बाईसवां पाठ २२

मोरसिरचके वर्णनमें

यह वह रोग है कि कारनियाका परदा फट जाय और उस के

तले से अनवीया ऊपर को उभर आये – उपाय इसका उससे पहिले करें – जबकि किनारे करनिया के मोटे न पड़ जांय और ऐसा उपाय करें जो अधिक उभरने को रोकें और अनवीया को अन्दर दवा दें – वह इस प्रकार है कि धोया हुआ शादना और चांदी की बुकनी सीपी या जली हुई सीपी पीस के आंख में डालें और धोये हुये शादने का सुरमा आंख में भरें और ऊपर से गद्दी रख कर बांध दें या सीसे का टुकड़ा आंख की बराबर बनाके या सीसे का बुरादा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रख दें – और पट्टी से कस दें और जो पिसा हुआ सुरमा छोटी सी थैली में भरके आंख पर रखकर पट्टी से कस दें – तो अति लाभदायक है – और जब किनारे करनिया के मोटे हो जायगे तो फिर किसी प्रकार अच्छा न होगा – इस रोग का उपाय तुरंत करना चाहिये॥

तेईसवां पाठ २३
भेंगा होने के विषय में

इसमें एक वस्तु की दो वस्तु दिखाई देती हैं – जो यह रोग जन्म से होतो – अच्छा नहीं हो सकता – परंतु बच्चों को मृगी के रोग से और सक कर बट सुलाने से या भयानक शब्द सुनकर अचानक चौंक पड़ने से भी यह रोग हो जाता है उपाय इसका यह है कि कोई लाल या चमकदार वस्तु आंख के किनारे उस ओर रख दें जिधर कि आंख का फिराना चाहते हैं – बच्चा हरदम उसे देखेगा इससे आंख उसकी सीधी हो जायगी॥

जो यह रोग जवानी में उत्पन्न होतो कारण इसका तशन्नुज इस्तिलाई या याबिस होगा – पहिचान तशन्नुज याबिस की यह है कि इससे पहिले गर्म रोग हुए होंगे – उपाय उसका यह है कि

आंख को तरी पहुंचावें ७५ वीं सिर पर धारे-
और पहिंचान इसतिलाई की यह है कि पहिले सूगी आई होगी और तशन्नुज इसतिलाई के चिन्ह पाये जायंगे उपाय इसका स वाद को साफ़ करना और निकालना है ॥

जो आंख के ढीले होजाने से यह रोग होतो इसके चिन्ह और उपाय वही हैं जो इस्तिरखा में लिखे गये ॥

और जो रीह के कारण आंख का कोई परदा यारतूवत जाती रही होतो आंख फड़केगी उसका उपाय यह है कि भेजे से बलग़म को निकालें - और हब्ब अयारिज़ खिलावें और बदहज़मी को दूर करें ॥

चौबीसवांपाठ२४

इततिसा और इन्तशारके वर्णनमें

असवे के चौड़ा होजाने या अनवीया के छेद के घटजाने को इततिसा कहते हैं - और आंख में रोशनी फैल जाने को इन्तशार कहते हैं ॥

जानना चाहिये कि इततिसा असवे के साथ इंतशार अवश्य होता है - परंतु ऐसा होसक्ता है कि इततिसा अनवीया के साथ इंतशार नहो - और कभी २ इततिसा असवा और इततिसा अनवीया दोनों साथ होते हैं - इततिसा या असवे का अच्छा होना बहुत कठिन है - परंतु इततिसा अनवीया का उपाय कारण के अनुसार होसक्ता है - कारण जान के उपाय करें जैसें चोट लगजाने से होतो फस्द सरारू करें और पिंडलियों पर पछने लगावें ॥

और जो किसी मवाद की अधिकता यारतूबत बैज़िया की

अधिकता से हो-जैसाकि बच्चोंको हुआ करता है-या अनबीया की सूजन से होतो फस्द और दुकाना करें और जो अनबीया की खुश्की से होतो-चिन्ह और उपाय इसका जो फावसर उक्सीके पाठ में लिखा जायगा॥

पच्चीसवां पाठ २५

अनबीया के छेद के सकेड़ा होजाने के विषय में

यह रोग जन्म से होतो बहुत अच्छा है-इससे दृष्टि तीव्र होजाती है-और जो किसी रोग से होतो दृष्टि कम होजाती है-पहिले देखे कि कारण इसका इनबीया की तरी है या खुश्की या रतूबत बैज़िय की कमी खुश्की और तरी के चिन्ह सहज में मालूम होजाय गे और रतूबत बैज़िया की कमी का चिन्ह यह है-कि आंख छोटी होजायगी और वस्तु भली भांति दिखलाई न देगी और के सूस अनबीया के कड़े होजाने और बिगड़ जानेसे भी यह रोग होता है-उसका चिन्ह यह है पुतली न दिखाई दे-जबकि अनबीया की खुश्की या रतूबत बैज़िया की कमी के कारण से यह रोग होतो चाहिये कि आंख को तरी पहुंचावें-और जब रतूबत अनबीया की अधिकता से होतो उस तरी को दूर करें-और केमूस के बिगड़ जाने में मवाद को साफ़ करें और तरी भी पहुंचावें॥

छब्बीसवां पाठ २६

खयालात के बर्णन में

इसमें आंख के आगे भुनगे से उड़ते मालूम होते हैं-य

अट्ठाईसवां पाठ २८

असवे में सुद्दा पड जाने के विषयमें

जो यह विना मोतिया विंदके होतो चिन्ह उसका यह है कि पुत ली पूरी अच्छी दिख लाई देगी और सूजन न होगी परंतु दिखला ई न देगा— उपाय इसका यह है कि भेजे से मवाद को निकालें और कोये की रग की फ़स्द लें और कानपटी की रगपर जोंक लगावें और पिंडली पर पछने लगावें और पांव को मलें ॥

उन्तीसवां पाठ २९

आंख के काना होने के विषयमें

जो यह रोग जन्म से होतो उपाय इसका नहीं होसक्ता और जो किसी रोग से होजाय तो इसको ज़र्रतुल ऐन कहते हैं—उसका उपाय कारण के अनुसार करें ॥

जो तरी की अधिकता से होतो देह को और आंखों को मवाद से साफ़ करें और जो खुश्की से होतो तरी पहुंचावें ।

यह रोग जो खुश्की से होता है— उसमें शूभाई नहीं देता—इस में और मोतिया बिन्द में यह अंतर है कि मोतिया बिन्द में पहिले खयालात का रोग अवश्य होगा और इसमें यह बात नहीं होती है— आंख दुबली होजायगी और दस्तकारी से लाभ न होगा यह रोग जो बच्चों की आंख में होतो अवान होने पर जाता रह ता है ॥

तीसवां पाठ ३०

ज़ोफ बसर अर्थात कमदृष्टी के विषैमें

जो कारण इसका रुधिर की अधिकता होती फ़स्द करें और रुधिर के वदल जाने को रोग कहते हैं और तूतिया को कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिगो कर आंख में लगावें और जो यह वलग़म के कारण से होती उसके पकाने के पीछे वलग़म का जुल्लाब दें और बासलीकून आंख में लगावें और जो इसका कोई और कारण होती उपाय उसका करें बुढ़ापे में यह रोग बहुत होता है उसका उपाय नहीं होसक्ता परंतु बचाव के लिये वलग़म का मवाद निकालें और जवाहरात का सुरमा लगायें ॥

इकत्तीसवां पाठ ३१
वतलान बसारत के विषय में

अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली होजाती है यार तूबत बैज़िया काली पड़जाती है उस्से यह रोग उत्पन्न होता है ॥

आंख में बासलीकून लगायें और हल्की हल्की औषधें और भोजन खांय और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकल आने के कारण से यह रोग उत्पन्न होती नीला अस्मानी रंग का कपड़ा आंखों पर डाले रहें या आस्मानी रंग की ऐनक लगायें और हल्का भोजन खांय और सूखे रहने और मैथुन से बचते रहें और रात को कुछ न खांय ॥

बत्तीसवां पाठ ३२
चुन्धा होने के विषय में ॥

इस रोग में दिन को कम दिखाई देता है यह जन्म से होती इसका उपाय नहीं होसक्ता परंतु पलकों और आंख के परदों

काला करने का उपाय करें- यह इस प्रकार से है कि- बनफ़शे और बादाम के तेल से काजल बनाकर आंखों में लगाया करें- इस्से दृष्टि पुष्ट होजायगी ॥

तेतीसवां पाठ ३३

१ कुमूर अर्थात दृष्टि के थकजाने के वर्णन में

यह रोग सफ़ेद और चमकीली वस्तु ओं पर जैसे सूर्य्य या बरफ़ा दिक है- दृष्टि जमाने के कारण से उत्पन्न होजाता है- उपाय इस का यह है कि काला कपड़ा आंखों पर लपटावें- और पहनने ओ बिछाने के कपड़े भी सब काले रक्खें- और दूध में कपड़ा भिगोक र आंखों पर रक्खें या स्त्री का दूध आंखों पर दुहें- और कड़वे बादाम पीस के या कुचल के आंखों पर बांधें ॥

चौंतीसवां पाठ ३४

आंख के दुबला होने के विषय में

इस रोग में दृष्टि कम होजाती है- उपाय उसका यह है कि आंख को तरी पहुंचावें और जो कोई सुद्दा हो उसे निकालें ॥

पैंतीसवां पाठ ३५

३ बुग़ज़ुल ऐन के वर्णन में

५५ इस में धूप और रोशनी की ओर देखना बुरा लगता है- जो य ह रोग गरमी से होतो- ठंड और तरी पहुंचावें- और जो रमद आ दि के कारण से होतो पहिले उसे दूर करें ॥

आंख के मिज़ाज पहिंचान ने की रीति।

आंखका मिज़ाजगर्म औरतर है - औरजो इसके विपरीतहोतोजानलोकि कोई रोग होगा ॥

ऊपर सेछूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीलेहो और आंखजल्दी २ फड़के - तो यह चिन्ह गरमीका है और सरदीके चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

जो आंखसे चीपड और आंसूबहुतनिकलें - और फूली हुई दिखाई दे - तो यह चिन्ह तरी के हैं - और खुश्की के चिन्ह इससे विपरीत हैं ॥

काली आंखसबप्रकार की आंखों से अधिक गर्म और तर होती है - इसी लिये ऐसी आंखमें मोतिया बिन्द और २ गरमी के रोग बहुधा होते हैं - परंतु बहुत मनुष्य यह कहते हैं - कि कंजी आंख में मोतियाबिन्द बहुत होता है ॥

तीसरा अध्याय

पपोटे और पलक के रोगों के विषयमें

पहिला पाठ १

कमना के विषयमें

कमना उसको कहते हैं - कि मनुष्य जब जागे तो आंखमें खटका होजैसे रेत पड़गई है और थोडी देर पीछे यह खटका जाती रहै - पहिले इससे जुल्लाब दें और - शियाफ़ अहमर लीन - और शियाफ़ अहमर हाद लगावें और गरम पानी से स्नान करना भी लाभदायक है ॥

दूसरा पाठ २

पपोटे के ढीला होजाने के विषय में

पहिले मवाद को निकाले इसके पीछे एलुआ - अक़ाक़िया मुर्र सब की पीसकर पलक और माथे पर लगावें - और जो इससे लाभ न होतो पलक काटनी पड़ेगी - इसकी रीति दस्तकार जानते हैं - और नाक के भीतर की रग की फ़स्द करना बहुत अच्छा है॥

तीसरा पाठ ३

पलकों के आपस में चिमट जाने के विषय में

यह रमद के पीछे या पलक काटने के पीछे या सबल या नाख़ूने में होता है - उपाय इसका यह है - कि सलाई से दोनों पलकों को छुटावें और फिर ज़ीरा और नमक चबाकर पानी उसका आंख में डाले - और रुई रोग़न गुल में भिगोके पलकों के बीच में रक्खें - और अंडे की ज़रदी में रोग़नगुल मिलाकर आंख के ऊपर लगावें॥

चौथा पाठ ४

पलकों के छोटे होजाने के विषय में

इस रोग में ऊपर की पलक सुकड़ जाती है और नीचे की पलक बाहर पलट आती है - और दोनों पलकें बराबर बन्द नहीं होतीं - इस रोग के कारण - पपोटे के ढीला होजाने के कारणों से विपरीत हैं - और अधिक मांस जो पपोटे में होजाता है - उसे काटकर निकालने से भी यह रोग उत्पन्न होता है जो यह किसी मवाद से होतो - पहिले उस मवाद को निकाले फिर कारण के अनुसार इसका उपाय करें और जो दस्तकारी होसके तो उसे भी करें॥

पांचवांपाठ ५

शिर्नाक़केविषयमें

इसमें पलक पर नर्म मास होजाने से पलक मोटी होजाती है-और आंखों में पानी भरा रहता है उपाय इसका यह है कि पहिले सवाद को निकालें और फिर आंसूलाने वाली औषधें आंखमें डालें-और जो इससे लाभ न हो तो दस्तकारी करें और वे वस्तुन खावें जो हानिकरती हैं ॥

छठा पाठ ६

पपोटेके ऊपर गांठ पडजानेके विषयमें

उपाय इसका यह है-पहिले नर्म होने के लिये मोमरोग़न लगावें-और फिर मरहम दाख़ुली यून लगावें-जो काटने के योग्य हो काटे और कोई सवाद निकालना होतो उसे भी निकालें ॥

सातवांपाठ ७

शेरसुनक़ लिब औरशेरज़ायदकेविषयमें

जोबाल पलकके उलटे होकर आंखमें जालगें और चुभाकरें उसे शेर सुनक़ लिब कहते हैं ॥

और जोबाल पलक के सिवाय अपनी जगह को भीतर की ओर निकलें और उनके चुभने से आंख खटका करें उसको शेर ज़ायद कहते हैं ॥

उपाय इसका यह है-कि पहिले सवाद को साफ़ करें

फिर वह बाल जो नये उगेहैं मोचनेसे उखेडें और उस जगह पर नोशादूर रगड दें-और चे टीके अंडे और इन्जीर का दूध और उस कालीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंटके बदन परहोती है या हरे मेंडक का रुधिर या हुदहुद का पित्ता उस जगह पर मलें-और समन्दर फेन इस्मदगोलके लुआब में पीसकर लगाना बाल के उत्पन्न होने की जगह को शून्य करदेता है ॥

और शेर सुनकालब का उपाय यह है कि-दिबक कालमाल गाकर सीधे बाल के साथ चिपटादें फिर बाल न चुभें॥

जब बाल को उखाडें तो बारीक सलाई से उस अस्थान को दाग़ दें और जहां बाल हों उस जगह को काट डालना और सीम देना भी इसका एक बड़ा भारी उपाय है ॥

आठवां पाठ ८

पलकों के झड़ जाने के विषय में

जो यह रोग बुरा भोजन खाने से या पित्त या सौदा के अधिकाहोने से होतो उस मवाद को निकालें - और जो पलक की कमज़ोरी से होतो जैसा-कारनी तप - और गर्म तप के पीछे होता है तो उस जगह को पुष्ट करना और तरी पहुंचाना चाहिये - और खासकर कान और रोशनाई सुरमा आंख में लगावें-और जो यह रोग बलगम के अधिक होने से होतो बलगम को निकालें और पुष्ट करने वाली वस्तु काम में लावें ॥

और जो कोई ऐसा कारण हो कि भोजन उस जगह तक न पहुंच सके तो उस कारण को दूर करें ॥

नवोपाठ ९

॥ पलकोंके सफ़ेद होजानेके विषयमें

उपायइसका यह है – कि पहिले वरलगामको दूरकरें फिर ज गली लाले के पत्ते – जैत के तेल में मिलाकरमले – और सुरमा रोश नाई सफ़ाई से आंखमें लगावें ॥

दसवां पाठ १०

पलकमें खुजली और फ़ुन्सियां होनेके विषयमें

जैसा मवाद हो उसके अनुसार उपाय करना चाहिये – और वरूद कनफ़ाजी – आंख में सुर्मे की जगह लगावें ॥

ग्यारहवांपाठ ११

बरदाके विषयमें

बरदा एक मवाद गाढा और सुफ़ेद ओलेकी सदृश पपोटे केऊ पर उत्पन्न होजाता है उपाय इसका यह है – कि मोमरोगन और दारचली पूनलगाये – इससे नर्म होकर बैठजायगा और नहीं तो काटकर निकाल ले ॥

बारहवां पाठ १२

पलकके मोटे और कड़े होजानेके विषयमें ॥

जब पलक मोटी और कड़ी होजाती है – तो आंख बन्द करना और खोलना कठिन होजाता है – और यह रोग सौदाके मवादसे होता है – इसलिये उपाय उसका यह है – कि पहिले सौदाको प कावें और मवाद निकालें – और उस जगह को नर्म करें – और

अकलील उल मलक - बाबूना - बनफ़शा - खतमी के पत्ते - पानी में औटाके आंख पर भपारा दें ॥

और जो बिना किसी मवाद के इस रोग में खुजली होती उसको यवू सतुल औन चाहते हैं ॥

तेरहवां पाठ १३

पलक के मोटे और लाल होजाने के विषय में

इस रोग में पलक के किनारे बहुधा मोटे होजाते हैं - उपाय इस का यह है कि - पहिले सेवों का नुकूआ पीवें और सगाक को गुलाब में भिगोकर पानी उसका टपकावें - और फ़िटकरी और चुलफ़ा और कासनी के पत्तों को रोगन गुल में मिलाकर लेप करना लाभदायक है ॥

जब यह रोग पुराना होजाय तो पहिले फ़स्द और जुल्लाब दें फिर शियाफ अहमर लीन आंख में लगायें ॥

चौदहवां पाठ १४

पलकों में जूयें पड़ने के विषय में

यह रोग बलग़म से होता है - पहिले बलग़म का मवाद निकालें - फिर पलक में से जूयें चुनें - और जो छोटा होने के कारण चुनना कठिन होतो फिटकरी और नमक को औटाके पलक को धोवें - और थोड़ी देर सलाई को पारे में रूकवकर होले से हाथ से पोंछले और आंख में फेरें - यह जूंये मारने को अति लाभदायक है ॥

पन्द्रहवां पाठ १५

गुहांजनी के विषय में

यह एक सूजन है-जो जौके सदृस पलक पर उत्पन्न होती है
जो अवश्य होतो मवाद निकालें-नहीं तो रसोत, और एलुवा और गिले
अरमनी हरी कासनी के पानी से पीसकर आंख पर लगालें- फिर दस्त
लीयून और मोम गरम करके लगावें- जो इससे लाभ न होतो नाखून से
कुरेद डालें या कैंची से काट डालें-और थोड़ी देर रुधिर बहने दें
जल्दी बंदन करें- फिर ज़रूर अस्फर उसपर छिड़क दें ॥



सोलहवां पाठ १६

तोसतुल अज़फ़ान के विषय में

शहतूत के सदृस एक वस्तु नीचे की पलक के अन्दर उत्प
न्न होती है- उपाय उसका यह है-कि फ़स्द और जुल्लाब के
पीछे दस्तकारी करें- और काट के ज़ीरा और नमक चबाकर
उसपर टपकावें ॥

सतरहवां पाठ १७

तहज्जुर जफ़न के विषय में

इसमें पलक पत्थर के सदृश कड़ी हो जाती है-और यह सो
दा के गाढ़े मवाद के जम जाने से होता है- और इस में बरदे से
अधिक पलक मोटी हो जाती है-उपाय इसका यह है-कि प
हिले मवाद को निकालें- और रोग़न मोम को पिघला के ल
गावें-और कभी यह रोग फोड़े की तुल्य होजाता है ॥

अठारहवांपाठ १८

पलकमेंघाव पड़ने के विषयमें

इसमें मसूर अनार और पिस्ते के छिलके सिरके में पकाकर लेप करें–और जब खुरंड गिरने लगे तो अंडे की ज़रदी केसर में मिलाकर लेप करें॥

उन्नीसवांपाठ १९

पपोटोंके फूल जाने के बिषयमें

जो यह जिगर और मेदे की कमज़ोरी के कारण से होतो पहिले उनको पुष्ट करें॥

और जो बलग़म के अधिक होनेसे होतो इतरीफल खिलायें और फ़स्द का फ़ाल्त करें–और शियाफ मामीरा और चन्दन हरे धनिये के पानीमें पीसकर लेप करें॥

बीसवांपाठ २०

पपोटों में मस्से पड़जानेके विषयमें

इसमें पहिले सौदा का मवाद निकालें और कलौंजी और नमक को पीसकर सिरके में मिलाकर लगायें–जो इससे लाभ न होय तो मोचने से दवा के–नारखून गौरी या नश्तर से काटडालें–और रुधिर बहने दें–फिर घावपर फिटकरी छिड़कदें कि रुधिर बन्द होजाय॥

इक्कीसवांपाठ २१

पपोटोंपर पित्ती उछलने के विषयमें

इसमें खुजली और सूजन होजाती है – जैसा कि भिड़ के डंक से हो है – उपाय इसका यहहै कि फस्द करे और पित्तका जुल्लाव दे और शादने अदसी – धोया हुआ आंखमें लगावें ॥

बाईसवां पाठ २२

निमलय पलक के विषयमें

इसरोगमें पलक पर फुन्सियां होजाती हैं – और थोड़ीसी सूज और जलनभी होती है – और घाव पड़के फैलताजाता है – गिन्न मवाद निकाले – और रसोत और एलुआ घिसकर पलकमें ॥

तेईसवां पाठ २३

पलकपरसे भूसी उड़ने के विषयमें

कभीइसमें घावभी पड़जाता है – जो रंग इस भूसी का मैला होतो सौदा का जुल्लाव दे – और जो सफ़ेद होतो बलराम का फिर शियाफ़ अहमर लगावे – और जो यह रोग पुराना होजायतो पछने शकर मले – और सुरमा रोशनाई आंखमें लगावें ॥

चौबीसवां पाठ २४

सुला के विषय में

यह एक वस्तु चाम और मांस से जुदी पलक पर बढ़जाती है – उपाय इसका यह है – कि मवाद निकालने के पीछे उस को काट कर अलग करले ॥

पच्चीसवां पाठ २५

चोटसे पपोटे का नीला या हरा होजाने के विषयमें

जो घाव भी होजाय तो फ़स्द और जुल्लाव दें- और चन्दन और मुरदासंग को गुलाब में घिसकर मले और जो घाव न होतो कोरी ठीकरी पानी में घिसकर लगावें- यह सब जगह की नीलाहट को दूर कर देती है ॥

छब्बीसवां पाठ २६

कोये के पास नाक की ओर नासूर होजाने के विषयमें ॥

फ़स्द और जुल्लाव के पीछे शियाफ़ गर्म टपकायें- परंतु पहिले घाव को रुई से पोंछलें- और पीप को साफ़ करडालें और औषधके प्रभाव के लिये मुर्दार मास काटडालें- जो इससे लाभ न होतो दागदें- और मरहम अस्फ़ेदाज लगावें ॥

यह नासूर बन्द होकर फूल जाता है- ऐसे समय में कलोंचे के बीज स्त्री के दूधमें या गधय्या के दूधमें पकाके थोडीसी केसर मिलाकर लगायें- इससे फूटकर फिर बहेगा ॥

सत्ताईसवां पाठ २७

कोये और पलक में बिना जलन और दानों के खुजली होने के विषयमें

जो यह रोग रुधिर से होतो फ़स्द करें- और और मवादों में उन्ही मवादों की निकालने वाली औषधी देकर के करावें और कासनी को कूट के गुल रोग़न में मिलाकर लेप करें- और जो कोये को मवाद से साफ़ किया चाहें- तो वासलीकून और कुहल अज़ीज़ी लगायें ॥

अट्ठाईसवांपाठ२८

कोयेमेंनाककी ओर अधिकमांसहोजानेकेविषयमें ॥

उपाय इसका यह है कि पहिले मवाद को निकाले- फिर शियाफ़ ज़ंगार या मरहम ज़ंगार लगायें- कि अधिक मांस कटजाय जो इस से लाभ न होय तो दस्तकारी से काट डालें- और ज़रूर अस्फ़ार छिड़कें और पीडा के दूर होने के लिये- अंडे की ज़रदी रोग़न गुल में मिलाके मलें इसके पीछे भराव की मरहमलगवें ॥

चौथाअध्याय

कानकेरोगोंकेविषयमें

सुनना चाहिये कि कान श्रेष्ठ इन्द्रीहै- और सब इन्द्रीयों से अधिक है- इसकेरोग जो मवाद सेहों उनमें दवा कान में नडालनी चाहिये- और जो डालें भी तो शुनगुनी करके- क्योंकि ठण्डी औषधें हानि देती हैं ॥

पहिलापाठ१

कानकेदर्दके विषयमें

जो यह पीडा या सूजन घाव के कारण से होतो उसका उपाय आगे लिखेंगे- और जो किसी मवाद से या केवल गरमी सेहोवे- फ़स्द आदि से मवाद निकालें- और जो केवल ठंड सेहोवे

उसका उपाय करे और मवाद की पीड़ा में मवाद निकालने के
पीछे उसके अनुसार उपाय करे - और कान में पीड़ा कीड़े के घुस
जाने या पानी की बूंद रह जाने से होतो उसे निकालना चाहिये -
और एक पांव पर खड़े होकर कूदना उस कान पर हाथ धर कर जि
स्में पानी है और सिरको उसी ओर झुकाना पानी को निकाल
देता है और जो इस्फ़ंज़ (अर्थात मराहुआ बादल) की बत्ती ब
नाकर कान में रक्खे और उसी ओर देर तक लेटे रहे तो सब पा
नी निकल आवेगा॥

जो कान में कीड़े उत्पन्न होजाने के कारण से यह पीड़ा
होतो चिन्ह उसका यह है - कि कान में गुद गुदी मालूम होगी
और कभी कीड़ा आपसे आपभी निकल आवेगा - इस्में शफ़
तालू के पत्तों को औटाके या उसका रस निचोड़ कर कान में
टपकावें - या एलवा सिरका में घोलकर टपकावें - इस्से की
ड़े मर जायगे - फिर सूफ़ की बत्ती बनाकर उस्में सरेश मलके
कान में रक्खें - कि कीड़े उसपर चिमट के निकल आवें - फिर ज
ब घाव साफ़ होजाय तो उस घावको उपाय करें॥

दूसरापाठ २

कानकी सूजनके विषयमें

पहिले जुल्लाव दें इसके पीछे देखें - कि सूजन छिद्र के
भीतर है या बाहर - भीतर होनेका चिन्ह यह है - सुनाई कम दे
गा - और पीड़ा अधिक होगी और तप भी होगी इस्में दर्द की औ
षध हरे धनिये के पानी में घिसकर कान के ऊपर और भीतर
लेप करें और लड़की की माता का दूध कान में दुहें और जो इस

सेभीनयंभे-तोमेथीया अलसीका लुआबटपकावें। कि पकजा य और पीपपड़े॥

जोसूजनकानमेंबाहर होतोआंखसे दिखाई देगी नतप हो गी नअधिक पीड़ा-इससमयऐसी ठंडी औषधें जोमवाद निका लने से रोकें- लगानान चाहिये-परंतुऐसी औषधेंलगायें-जो सूजन को पकावें और बिठादें- औरजो पीड़ा अधिक होतो कपड़ा गर्म पानी में भिगोके यानमकगर्म करके सेकें-और दो दिनपी छे वार्मकाल्ले के पत्ते पुराने घी में पकाके सूजन पर बांधें-इससे सूजन बैठजायगी॥

यह उपाय गर्म सूजन का था-परंतु जो बल्गमी सू जनहो छिद्र के भीतर या बाहर उस्में कम सुनाई देगा नतप होगी-औ रनपीड़ा अधिक होगी-केवल बोझ और खिंचाव मालूम हो गा-इस्में मूली या सोये का तेल मवाद निकालने के पीछे टप काना लाभदायक है॥

तीसरापाठ३

कानके घावके विषयमें

चिन्ह उसका यहहै- कि पहले सूजन होगी-फिर पकक र फूटेगी और घाव से पीप बहेगी-शहद में अंजरूत को पीसके बत्ती में लगाकर कान में रक्खें-फिर अंजरूत दम्मुलअखवैन कुन्दर पीसकर छिड़के-यारोगन गुल में मिलाके बत्ती में ल गाके कान में रक्खें- और जो पीड़ा विशेष होतो अफीम जला के राख उसकी कुन्द बेदसतर में मिलाके कान में छिड़कें या कि सी तेल में मिलाकर टपकावें॥

चौथापाठ ४

तरश और वकर और समम के विषय में

जो कम सुनाई दे उसका नाम तरश है - और जो कुछभी न सुनाई दे तो वक़र और जो कान का छिद्र पूरा बन्द होजाय तो समम है - और कभी इन शब्दों को एक दूसरे की जगह भी बोलते हैं - जैसा कारण हो उसी के अनुसार होले होले मवाद को निकालें - और जो बोहरान के दिन ऐसा होतो उसका उपाय करना चाहिये और जो बुढापे से या पैदायश के समय से होतो कभी अच्छा न होगा - परंतु दूधपीते बच्चे को यह रोग होतो सातर और नमक चबावें और एक बूंद उसकी कान में डालें॥

पांचवांपाठ ५

किसी वस्तु के कान में पड़जाने के विषय में

जो कोई कंकर या दाना या पारा कान में पड़जाय तो रोगन गुल कान में डालकर छींक लिवावें और छींक आने के समय मुख और नासिका बन्द करलें तो ज़ोर कान की ओर पड़ेगा और वह वस्तु निकल आवेगी - और जो पानी घुसगया होतो बालिश्त भरकी सोंफ की लकड़ी लेकर एक ओर उसके रुई लपेटें - और तेल में भिगोकर जलावें और दूसरा छोर उसका कान में रक्खें - इससे जितना पानी भीतर होगा निकल आवेगा - और जो कोई छोटा कीड़ा कान में चलागया हो उसका उपाय वही है जो कीड़ों के निकालने का है॥

छठापाठ ६
तिनीन औरदवीके विषयमें

जो आपसे आप कानमें तेज़ और बारीक आवाज़ मक्खी कीसी भिन भिनाहट के अनुसार सुनाई देती है उसे तिनीन कहते हैं॥

औरजो नर्म और भारी आवाज़ होतो वह दवी कहलाती है - अर्थात् चक्की कीसी आवाज़ पहिले इसका कारण मालूम करें और उसीके अनुसार उपाय करें - और जो श्रवणकी इन्द्री तेज़ होने के कारण से यह रोग होतो भारी वस्तु खावें जैसे हरीसा॥

सातवांपाठ ७
कानसेरुधिर निकलनेके विषयमें

जो कारण इसका रुधिरकी अधिकता होतो फ़स्द से बहुतसा रुधिर निकालें - औरजो किसी चोट के लगने से होतो फ़स्द से रुधिर कम निकालें - और फिर माज़ू को सिरके में औटाके कानमें डालें - औरजो बोहरान के दिन कान से रुधिर निकले तो उसे बन्द न करें - जबतक कि रोगी को मूर्च्छा न आजाय॥

जो ज़ुर्रका सांप के काटने से रुधिर निकले उसका उपाय इस किताब के अन्त में लिखा जायगा॥

आठवांपाठ ८
कानके टर्रजानेके विषयमें

पहिले फ़स्द करें - और नर्म करनेवाली औषधें पिलावें - और सेलुवा - मुनक़ा - अक़ाक़ीया - रातीनज - और मेंहदी के सूखे

पत्ते पीसकर उसजगह लगावें ॥

नवां पाठ ९

जड़से कानके उखड़जानेके बिषयमें

पहिले फ़स्द करें फिर नर्म करने वाली ओषधियां दें-और कानको अपने स्थानपर जमाके गद्दी रखकर पट्टी से बांध दें-और जो पीड़ा रहजाय तो-बतख़ की चरबी पिघला के उसमें ख़तमी के पत्ते और घीये के छिलके मिलाके मलें ॥

दसवां पाठ १०

कानकी टीके विषयमें

यह रोग बहुधा बच्चों को होता है ॥

कंधों के बीच में और कान के तले जड़में पछने या जोकें लगायें-और उस जगह को स्त्री के दूध से धोवें-और मुर्दासंग और कतीला पीसकर छिड़कें ॥

ग्यारहवां पाठ ११

कानमें खुजली होनेके विषयमें

इफ़्तसन्तीन को सिरके में औटाके और कड़वे बादाम का तेल उसमें मिलाके कानके अन्दर डालें ॥

बारहवां पाठ १२

कानमें चीखकीसी आवाज़ मालूम होनी

ऐसी औषधें और भोजन खावें और सूंघें जो भेजे को पुष्ट

करें ॥

पांचवां अध्याय ५

नाक के रोगों के विषय में ॥

नाकमें दो रास्ते हैं एक भेजेकी ओर दूसरा गले की - ओर ॥

पहिला पाठ १

खश्म के विषयमें

यह वह रोग है कि सूंघनेकी इन्द्री जाती रहती है- और किसी वस्तुकी वास नहीं आती॥

जो नाक में बुरे मांसके उत्पन्न होजानेसे यह रोग होतो- उसका उपाय तीसरे पाठमें इसी अध्यायकेलिखाजावेगा- और जो सूजन या सुद्दे के कारण से होतो- जानना चाहिये कि किस सवाद से है और जो केवल गरमी या ठंड से होतो उसके चिन्ह सहज से मालूम होजायंगे- कारण के अनुसार इसका उपाय करना चाहिये- और जो यह रोग खुश्की और तशन्नुज के कारण सेहो- और गर्म रोगों के पीछे होतो उपाय बहुत कम होसकेगा॥

दूसरा पाठ २

सूंघनेकी इन्द्री बिगड जाने के विषयमें

इसमें कुछ२ वास मालूम होती है- यह रोग तीन प्रकार काहै पहिली प्रकार सब वस्तों की वास एकसी मालूम हो- दूसरे२

यह कि एकवस्तु से कईप्रकार की बास सूंघी जाय- तीसरे यह कि किसी वस्तु की बास आवे और किसी की न आवे अर्थात् सुगंध मालूम हो और बुरी बास न मालूम हो या बुरी बास मालूम हो और सुगंध न मालूम हो- उपाय इसका यह है- कि भेजे को मवाद से साफ़ करें- और जो नाक के भीतर घाव हो तो उसे अच्छा करें। और जब केवल सुगंध मालूम हो तो जुन्द वे दस्तर की नास लें और जब केवल बुरी बास आवे तो मुश्क की नाक में टपकावें- और जो यह रोग पुराना होजावे तो सुगंध आने से मुश्क और बुरी बास मालूम होने में जुन्द बेदस्तर नाक में डालें।

तीसरा पाठ ३

नाक में बुरा मांस उत्पन्न होने के विषय में

पहिले फ़स्द खोलें और जोंक लगावें और अयारिज का जुल्लाब दें- फिर अशनान और ज़ंगार और सुरेस्क की तीनों बराबर लेकर पीसके मरहम बनावें एक बत्ती में लगाके नाक के भीतर उस मास पर रक्खें कि वह गल जाय- और जो इससे लाभ नहीं तो नश्तर वा चाकू से काट डालें- या घोड़े की दुम के बालों को बटकर और गांठ लगाकर मांस को काटें और फिर मरहम सफ़ेदे का लगावें॥

चौथा पाठ ४

नाक के घाव के विषय में

जो यह तरी से होतो पहिले मुरदासंग- रोगन गुल में मिलाकर लगावें- और जो खुश्की से होतो केवल मोमरोगन

हीसे अच्छा होजायगा ॥

पांचवां पाठ ५

नाक की फुन्सियों के विषयमें

इसमें पहिले फस्द और जुल्लाबदें- और जो वह कडी हो तो नर्म करने के लिये मोमरोगन लगाये- जो इससे भी लाभन हो तो पछने लगावें और मरहम तेजावीसे उन को गलादें- फिर घाव भर आने के लिये मरहम सफेदा लगावें ॥

छठा पाठ ६

नकसीर के विषयमें

बाहें और जांघें और अंडकोश और कान और छातियां और पिंडलियां कसकर बांधे और गुद्दीपर पछने लगावें और जिगर पर सींगी लगाना भी लाभदायक है- जो रुधिर दहने नथने से आवे और तिल्लीके ऊपर बायें नथने से निकलें- तो गधे की लीद को निचोड कर उसके पानी की दो तीन बूंदें नाक में डाले और मकडी का जाला स्याही मे मिलाकर और चक्की की गा डन उसमें डाल कर नाक में टपकावें- और सरेश मुलतानी म द्दी मे मिलाकर सिरपर लेप करें ॥

और जो रुधिरकी अधिकता से हो तो फस्द लें और रुधिर जितना अवश्य हो निकालें- चाहे एक वार में और चाहे कई वार मे- और रुधिर जो पतला पड गया है उसके गाढा करने के लिये उन्नाव का शरबत आदि पिलावें और मसूर की दाल और चावल नीबू निचोड कर खिलावें ॥

जोतपथाभेजे के रोगोंमेंनकसीर फूटेतोदेखना चाहिये कि योहरानसे है या नहीं जो योहरान सेहोतो कभी बन्द नकरें ऐसा नहोकि कोई कड़ा रोग उठ खड़ा हो- परंतु मूर्च्छीका डरहोतो बन्द करदें और जोयोहरान से नहोतो उचित उपाय करें- जब भेजे के रोगों में नकसीर फोड़ने की आवश्यकता होतोभीतर नाक की जड़ में वह औज़ार चुभारें जो इस कामम आताहै- और जो कुंदश - मवीज़ज और फ़रफ़ियून को कूटकर और बत्ती में लगाकर नाक के भीतर रक्खें तो रुधिर निकलने लगेगा ॥

सातवां पाठ ७

नाकमें बुरी गंधआस्ना

जो फुन्सियां घाव के कारण से होतो वही उपाय करें - जो ऊपर लिखागया और जो भेजे के मवाद के सड़जाने से होतो - पहिचान उसकी यहहै कि सिरमें कोई विगाड़ होगा -औरजो मेदे में मवाद के सड़ने सेहो तो मेदे के बिगाड़ से पहिचाना जायगा उपायइसका यहहै कि मेदे और भेजे को मवादसे साफ़ करें-और शिकंजबीन और राई के फेन से कुल्ली करें और कोई सुगंध नाकमें डालें ॥

आठवां पाठ ८

नाककुचल जानेके विषयमें

जो सूजन होने काडर होतो जल्दी से फस्दलें - और नाक को ठीक करें - परंतु इस प्रकार से कि सांस नें मके - इसका

उपाय यह है कि रूई पर मरहम लगाके नथनों में रक्खें- जब वह सीधी होजाय- सत्रूला- अक़ाक़ीया- सुरसक्खी- पीसकर थोर तंगके पानी में मिलाके कागज पर लगाके ऊपर चिपका दें- और जब तक अच्छी न होरूई नाक से न निकालें॥

नवांपाठ ९
बहुतसी छींकें आना

रोग़न गुलसुगंधका नाक में डालें और गुनगुने मीठे पानी से सिरको धोवें और गुनगुना तेल कान में टपकावें- और हाथ पांव आंख कान और तालू मलें- और जो यह रोग लड़के को हो तो- बकरी का गुरदा भूनके उसका पसीना नाक में डालें- प्रभाव के अनुसार छींक आना चंगे होने का चिन्ह है- और अधिक छींकें भेजे के बिगाड़ का चिन्ह है॥

दसवांपाठ १०
नथनों का सूखा रहना

जो केवल गरमी से होतो ठंडी औषधें दें- और जो खुश्की से होतो- तर करनेवाली वस्तु- जैसे बादाम का तेल आदि नाक में डालें और स्त्री का दूध नाक में दुहें- और जो किसी गांद में आद के चिपट जानेसे होतो नर्म करने के लिये रोग़न नाक में डालें॥

ग्यारहवांपाठ ११
नाक में भीतर खुजली होने विषय में

जो ठंडी हवा पहुंचने से होतो- भेजे को ठीक करें और स्त्री

फाल खिलावें- और जो सीतला या जुकाम या नजले का चिन्ह दीख पड़े तो उनका उपाय करें- जो बाहर से कोई वस्तु नाक में पड़ जाय और फंस रहे तो- तेल नाक में टपकाके नाक मलें- और मुंह बन्द करके छींक लिवावें- तो वह चीज निकल पड़ेगी और कभी ऐसा करने से मुंह में होकर भी निकल आती है॥

छठवां अध्याय

मुंह और जीभ के रोगों के विषय में॥

पहिला पाठ १

जीभ की सूजन के वर्णन में

कारण के अनुसार मवाद को निकालें- और जो रुधिर या पित्त से हो तो- तीन दिन के अन्दर काहू कासनी और मकोय के पानी से कुल्ली करें- और तीन दिन पीछे करंभ कल्ली और मकोय के पानी में अलसी के बीजों का लुआब मिलाके कुल्ली करें- और जब सूजन घटने लगे तो- बाबूने नाखूने और बनफशे और असलतास की कुल्ली करें- और चलगमी में शहद से कुल्ली करें या उसमें सातर और अयारिज और मिलालें- और सौदावी में इन और- मेथी के बीज और असलतास को औटाके बनफशे का तेल मिलाके कुल्ली करें- और कभी २ हरा धनियां और हरी कासनी चबाया करें कि संतान का रोग न हो जाय- और जो विष खाने से सूजन हो तो उसका उपाय आगे आवेगा॥

दूसरापाठ २

जीभकाबोझलहोना

इसमें ऐसा होता है कि शब्द- मुंह से भलीभांति नहीं निकलते- और कभी ऐसाभी होता है कि रोगी बोलही नहीं सक्ता है- कारण जानके उसका उपाय करें और फस्द और जुल्लाब आदि दे; और जो जीभ ढीली होगई होतो देखें कि सिर में कोई बिगाड़ है या नहीं जो होतो भेजेको मवादसे साफ करे और वज़ और राई आदि पीसके जीभ पर मलें कि राल बहे- और जो सिरमें कोई बिगाड़ नहोतो फालिज़ का उपाय करें- और ठुड्डी की नीचे पछने लगावे- और जीभकी की रगटूट जाने से या मवाद बहुत सा निकलके नशन्तुज होजाने से यह रोग होतो उपाय नहीं हो सकता- और जो सरसाम के पीछे हो या पुराना होजाय वहभी अच्छा नहोगा- परंतु पुराना पड़ने से पहिले इन्द्रायनी नमक और नौशादर मलें कि राल बहे॥

तीसरापाठ ३

जीभकाबढ़जाना और निकलआना

जो रुधिर की अधिकता से होतो भराह और जीभके नीचे फ़स्द खोलें और खट्टी वस्तु जैसे अनार मलें कि राल बहे और जो बलगम से होतो अयारजें खिलाके बलगम निकालें और नोन सिरके में मिलाके मलें॥

चौथापाठ ४

जीभके ढीले होजानेके विषयमें

इसका उपाय इस अध्याय के दूसरे पाठ में लिख चुके हैं॥

पांचवां पाठ ५

जीभके फटजाने के विषयमें

जो खुश्की की अधिकता से होतो तर औषधें काम में लावें और मोमरोगन और बनफ़शे का तेल मलें और भेजे को ठीक करें-और खीरे के मींग ज़ीरे लगावें-और जो मेदे के धूंयें से यह रोग होतो पहिचान उसकी यह है-कि भेजेमें खुश्की न होगी इससें मेदे का मवाद निकालें और लहसोड़े मुख में रक्खें॥

छठा पाठ ६

जीभकी खुश्की के विषयमें

जो गरमी और खुश्की से होतो ठंडी और तर वस्तु दें-और बीदाने आलु आबनीलोफ़र के पानी में निकालकर शक्कर मिलाकर कुल्ली करें-और देर तक मुख में लिये रहें और जो लसदार कफ़ जीभ पर जमकर सूख गया होतो बेद की लकड़ी सिकंजबीन में भिगोकर जीभ पर मलें उससे वह कफ़ छूट जायगा इसकी पहिचान यह है कि थूक लसदार आया करेगा-और जितनी ठंडी वस्तु देंगे उतना लस अधिक होगा॥

सातवां पाठ ७

जीभकी जलन के वर्णनमें

ठंडी औषधें दें और जो किसी मवाद से होतो जुल्लाब भी दें और कापूर मलें-और इसबगोल आदि ठंडी औषधों का लुआब

मुंह में लेकर जल्दी जल्दी कुल्ली करें और जिसकारण से होतो उसे दूरकरें ॥

आठवां पाठ ८

जीभमें खुजलीहोने केबिषयमें

पहिचानइसकी यहहै- कि जीभलाल होगी और रोगी दांतो से जीभको खुजलाया करेगा उपाय इसकायह है- किपहिले मवाद निकालें- फिर गरमपानी से कुल्ली करें- फिर दूध और शक्कार से कुल्ली करें- इसके पीछे सिरके में कोई तेल मिलाके कुल्ली करें- और पीली हड़ चबाकर जीभपर मलें ॥

नवां पाठ ९

ज़िफ़द उलिसान्केबिषयमें

इस रोगमें गाढ़ा बलगम या रुधिर जीभके नीचे जड़ में जमकर काढ़ा पड़ जाता है- उपाय इसका यह है- किमवाद को निकालें के- नौशादर- फिटकरी- जंगार- मुर्दासंक्खी- सिरके में पीसकर मलें- और जो इससे न जाय तो काटकर निकाललें- परंतु सावधानी से काटें ऐसा नहो कि जीभ के नीचे जो रगें हैं वह कटजांय- कभी मवाद इसरोग का पथरी बनजाता है- जब ऊपर की खाल चीरते हैं तो वह पथरी निकल आती है- और कभी सूजन होजाती है उसके छेदने से गाढ़ा पानी निकलता है- और फिर इकट्ठा होजाता है- उपाय उसका यह है- कि पहिले छेद के पानी निकालें- और फिर चमड़े को कैंची से कतर डालें ॥

दसवांपाठ १०
फ़िसाद ज़ोक़ के बिषयमें ॥

इसरोगमें एक नया स्वाद स्वाभाव के बिपरीति मालूम होता है- चाहे कुछ खावें या न खावें- जिस मवाद से होगा उसका चिन्ह उसके मज़े से मालूम होजायगा- उसी मवाद को फ़स्द और जुल्लाब दे निकाले और शिकंजबीन से कुल्ली करें ॥

ग्यारहवांपाठ ११
बतलान ज़ोक़ में

इसरोगमें जीभ को नतो स्वाद आताहै- और न गरमी नठंड मालूम होतीहै- इसका कारण यहहै कि जीभ में तरी अधिक होतीहै- पहिले मवादको पकाके मेज से निकालें- और अक़रक़रा-मुनक्के-औरराई को औटाके कुल्ली करें- और जो गरमी होतो गुलाब के फूल और ससाक़ औटाके शिकंजबीन मिलाकर कुल्ली करें ॥

बारहवांपाठ १२
तक़शयूर ज़बानके बिषयमें

इसरोगमें जीभ और मुखसे छिलके उतरते हैं-औरमलने मे अधिक हो जाता है- इसमें पहिले फ़स्द और जुल्लाबसे पित्त को निकालें- और आंस और गुलाब के फूल और गुलनार सिरके मे औटाके कुल्ली करें ॥

तेरहवांपाठ १३

मुखके भीतर फुन्सियां होनेके विषयमें

फ़स्द खोलें और जुल्लाब दें- और धनिया-मसूर-मकोयके पत्ते सिरके में औटाके कुल्ली करें ॥

चोदहवां पाठ १४

मुंह आने के विषय में

यह रोग भीतर के मवाद से होताहै- इसका कारण जानकर मवाद निकालें- इसके पीछे जो पित्त या रुधिर अधिक होतो उन औषधों से कुल्ली करें जो तेरहवें पाठ में लिखगये हैं- और वंसलोचन-गुलनार-माजू-कपूर-सब को पीसकर मुंह के भीतर छिडकें- और जो घाव होजाय तो- सिरके और नमक से कुल्ली करें- कि मवाद ऊपरका निकल जाय- और जो सिरके की सहार नहोतो- केसर को पानी में औटालें- और जो यह रोग कफ़ की अधिकता से होतो- सामीरां- हड़- अकरकरा- सिरके में औटाके कुल्ली करें- और जो सोदा से होतो- मेंहदी की पत्ती चबावें- और माजू- धनियां अनार के छिलके- सिरके में औटाके कुल्ली करें ॥

बच्चों के मुंह आने में शीरखिश्त को मकोय के पानी में घोलकर कुल्ली करावें- और गावज़बां जलाके छिडकें ॥

पन्द्रहवां पाठ १५

आकिलतुल्फ़म के विषयमें

यह रोग बहुत ही बुरा है- इसमें घाव सारे मुंह में फैल जाता है- इसका उपाय यह है कि- जले हुये मवाद को निकालें-

और उन औषधों से कुल्ली करें जो चौदहवें पाठ में वर्णन हो चुके हैं - और जब घाव फैलने से ठहर जाय तो - फिल्द फिपून - या सुरतीजान - घाव पर लगावें - और जो इनसे जलन हो तो - लुआबों से या ताज़ह दूध में शक्कर मिलाकर कुल्ली करें ॥

सोलहवां पाठ १६

जागते और सोते में मुंह से बहुत सी राल बहना

इसका कारण यह है कि मेदे में गरमी और तरी होगी - या ठंड और तरी विशेष होगी - पहिचान गरमी और तरी की यह है - कि खाली पेट में राल बहुत बहेगी - और ठंड और तरी की पहिचान यह है - कि पेट भरे पर राल अधिक आवेगी - और मुख का स्वाद खट्टा होगा और भोजन न पचेगा - जो मवाद अधिक हो से निकालें - और गरमी में हरी कासनी को नमक के साथ कूटकर चबावें और रस उसका निगलें - और ठंड में कुन्दुर और मस्तंगी चबावें ॥

सत्तरहवां पाठ १७

मुख से दुर्गन्ध आने के विषय में

जो इसका कारण केवल मुख ही में हो तो उस मवाद से साफ़ करें - और जो भेजे से मवाद गिरता हो या मेदे में गरमी हो तो भेजे और मेदे से मवाद को निकालें - और इव्बुल भिस्क मुख में रक्खें और दंतधावन किया करें - और तिली का तेल या रोगन गुल की कुल्ली कभी २ नहार मुख कर लिया करें ॥

अठारहवांपाठ १८
तालूकी सूजनके विषयमें

यह रोगयातो रुधिरकी अधिकता से होताहै या बलग़म की अधिकता से-जो रुधिर की अधिकता से होगातो-तालू में पीड़ा और लाली होगी- और जो बलग़म से होगा तो-सफेदी होगी-पीड़ा न होगी- पहिले मवादको निकालें और जो कुल्ली ऊपर के पाठ में लिखी गई है मवाद के अनुसार करें॥

सातवांअध्याय
होठोंके रोगों के विषय में

पहिलापाठ १
होठोंपरसफेदीहोजानेके विषयमें

यह रोग कोढ़से अलग है-इसमें बलग़म निकालें और भारी वस्तु न खावें- और चमेली और खैरी का तेल नाक में डालें॥

दूसरापाठ २
होठकी खुश्की और फटने और छिलके उतरने के विषयमें

वह उपाय करें जो मुख के रोगों में लिखा गया है- और होठ को हवा न लगने दें- और माजू- निशास्ता- कतीरा कूट छान कर लगावें- और जो दवा लगावें उसके ऊपर अंडे का पतला

छिलका जो भीतर होता है चिपकादें - कि हवा से फटे नहीं ॥

तीसरा पाठ ३

होठ के फडकने के विषय में

जो रुधिर रगों से होठ में आकर रीह बन जाय और उस से होंठ फड़के तो सरारू फास्द खोलें और भोजन कम खावें - और जो वह रीह बहुतर्ग़ होती सिर के फडकने का जो उपाय है करें और जो मेदे का विगाड़ होतो जी मचलावेगा और हिचकियां आवेंगी और कै आने में नीचे का होठ फडकेगा - इससे कै बहुतसी करा डालें।

और जो भेजे के विगाड़ से होतो - उसके पीछे लकवा और मिरगी होगी - उपाय इसका यह है - कि तरवस्तु न खावें और पानी थोडा पीवें - और ऐसा उपाय करें कि लकवा और मिरगी न होने पावे ॥

चौथा पाठ ४

होठ के छोटा होजाने और सुकड़जाने के विषय में

जो तशन्नुज तरी से हो तो मवाद को निकालें और गर्म तेल मलें - और जो खुश्की से होतो उसका उपाय कठिन है ॥

बच्चों को जो यह रोग होजाता है - वह खेंचने और बांधने से अच्छा होजाता है ॥

पांचवां पाठ ५

नीचे के होठ पर अधिक मांस उत्पन्न होजाने के विषै में

रुधिर और सौदा का मवाद निकालें - और मसूर या शरदांग का मरहम लगावें - और मवाद निकालने के पीछे रंग इस

सांसका कालाहोतो पछने लगावें और सिरका मलें और जो रं गलाल होतो कुछ उपाय नकरें ॥ ऽ।। ५ ५ ३ ०४ ।

छठापाठ ६

होठकी सूजनके विषयमें

जो रुधिर की अधिकता से होतो फ़स्द खोलें और लेपलगावें और रसोत को हरी मकोय के रसमें घोलकर लगावें - यह उपाय गर्म सूजन में बहुत लाभदायक होगा - परंतु यह लेप इसरोग के होते ही लगावें - और अंतमें बादाम के तेल का मरहम लाभदायक है ॥

सातवांपाठ ७

होठपर फुन्सियां होजाने के विषय में

मवाद को निकालें - और जो घाव पड़जाय तो लेप और मरहम लगावें ॥

आठवांपाठ ८

होठमें घाव पड़के पीपबहना

उसीप्रकार से मरहम लगावें ॥

नवांपाठ ९

होठमें घाव पड़के फ[illegible]

इसका यह उपाय करें जो ऊपर के . ॥

जब होठ में

करना चाहिये - इस प्रकार से कि गरमी से होतो नर्म कपड़ा हरे धनियां के पानी से और हरे बारतंग के पानी में और हरी कासनी के पानी में और गुलाब में भिगोकर बर्फ से ठंडा करके होठपर रक्खें - और कपूर और चंदन को ईसबगोल के लुआब और गुलाब में पीसकर लगावें और सूखने न दें ॥

और जो ठंड से होतो - मुश्क - जुन्द बेदस्तर - अक़रकरा - चम्बेली और नरगिस का तेल लगावें ॥

और जो खुश्की से होतो रोगन बादाम - लुआब इसब गोल आशजी शक्कर मिलाकर पिलावें - और रोगन बनफशा - रोगन कदू आदि में मोम पिघलाकर लगाया करें ॥

और जो तरी से यह रोग होतो - ककाचेका उपाय करें और जो मवाद नहीं तौभी फस्द और जुल्लाब दें ॥

आठवां अध्याय

दांतो और मसूड़ों के रोगों में

पहिला पाठ १

दांतों की पीड़ा के बिषय में ॥

जो गरमी से होतो ठंडे पानी से थम जायगा - और जो सरदी से होतो गरम पानी से और जो कोई बिगाड़ मिज़ाज में गरमी से वे मवाद के होतो सिरके और गुलाब से कुल्ली करें और ठंडे बिगाड़ में बायबडंग को औटाके कुल्ली करें - और जो किसी मवाद से होतो उसी के अनुसार उस मवाद को निकालना चाहिये - इस के पीछे उपाय करें और जो पेट भरे पर पीड़ा हुआ करे तो कारण

इसुवा मेदें का विगाड होगा- उससमय मेदे का मवाद निकालें और हज़म करने वाली औषधें दें- और भोजन में धनियां बहुत डालें- इसमें कौ कारत्न नहीं चाहिये- और जो एक जगह से दूसरी जगह फैलता और फिरता होतो वायु से होगा- पहिले इससे मवाद को निकालें फिर सोंफ़- अनीसून और ज़ीरा को औटाके कुल्लीकरें ॥

और जो कीडे पडने से दांतमें पीडा होतो दांत में पहिले छेद पडाहोगा- इसमें गन्दनी के बीज- खुरासानी अजवायन प्याज़ के बीज कूट छानकर मोम में मिलावे आगमें जलावें और धूंआ उसका नरकुल की राह से दांतको पहुंचावें ॥

गन्धक का अर्क पीडामें दांतपर डालना लाभदायक है परंतु और दांतों पर लगने न पावे- ठंडसे जो मिज़ाजमें विगाड हो जाय उसमें कल्ले को सेंकना और सोने या लोहे की सलाई से दाग देना अति लाभदायक है चाहिये कि कईवार इस उपाय को करें- परंतु ऐसा न हो कि दाग़ और किसी दांत पर लगजाय

जो दांतों के हिलने से पीडा हो और दांत थोडे हिलते हों तो- उनको पुष्ट करें- और जो बहुत हिलते हों तो उनको निकलवा डालें- परंतु पहिले जड़को ढीला करलें- नहीं तो आंख को हानिदायक है- और पीडा के थमने के लिये अक़रकरा- अफ़ीम कुन्दरकी भांइन पीस के स्त्री के दूधमें मिलाके दांतपर लगाये

दूसरा पाठ २

दांतों के कुन्द होजाने के विषय में

जो कारण इसका खट्टी या कसैली वस्तु खाना होतो गर्म

—या वीजचवासें और गर्म रोटी दांतों मेंदा
और जो केवल ठंडनी से होतो कडवा वादाम और जोनाहिन्दा
और जो कोई भीतरी कारण हो तो खट्टी डकारें आवेंगी-
और थूक बहुत आवेगा-इसमें ब
लगम या सौदा का मवाद कै से निकालें-क्योंकि मवाद का कै
के साथ निकलना सहज है-और दर्द नहोने से कोई मवा
द भी दांतों पर नहीं गिर सक्ता॥

तीसरा पाठ ३

दांतों की आबजाते रहने के विषयमें

इसरोग में हर प्रकार वस्तु खाई और चबाई नहीं जाती इसमें पहिले मवाद को निकालें-और बकरी की तिल्लीभूनकर गर्म दांतों पर रक्खें-और जो मिज़ाज में कोई बिगाड़ गरमी से होतो रोगनगुल और काफ़ूर की कुल्ली करें॥

चौथा पाठ ४

दांतों के टूटने और खोखले होजाने के विषयमें

इसमें मंजे को मवाद से साफ़ करें-और रसोत-माज़ू-अक़रक़रा-मंजन बनाकर दांत पर मलें॥

और जो दांतों की तरी जाते रहने से होतो दांतों में खुजली होगी और घुलने लगेंगे-इसका उपाय नहीं होसक्ता-परंतु दांतों के थाम्भने के लिये तर औषधें दें॥

पांचवां पाठ ५

हफ़र के विषयमें

इसरोग में दांतकी जड़ में एक कांकड़ सा उत्पन्न होजाता है जो सवाद अधिक हो उसे निकालें - फिर लोहे की नहरनी से उसे काटडालें - और नमक - समुन्दर फेन - दरसेना - जलाकर मलें - इससे रहा सहा जाता रहताहै - और फिर उत्पन्न नहीं होता ॥

छठापाठ ६

दांतके रंगबदलजानेके विषयमें

जोदांत का रङ्ग पीला होतो पित्त की अधिकता होगी और जो नीला होतो सौदाकी और जो चूनेकासा रंग होतो बलगम की अधिकता होगी - सवाद के अनुसार उसे निकालें और पीला होने में मसूर सिरके के साथ मिलाके मलें - और काले रंगमें कि ... की जड रोगन गुलके साथ मिलाकर मलें और सफेदी में म स्तगी का तेल मलें ॥

सातवांपाठ ७

दांतोंकेहिलनेकेविषयमें

जोबच्चों और बूढ़ोंको होतो उसका उपाय नकरें - परंतु इस के सिवाय भीतरी या बाहरी कारण सेहोतो उसका उपाय करना चाहिये ॥

दांततरी की अधिकता और रुधिर के बिगाड से हिलने लगते हैं के बिगाड में फस्द सरारू और चाररगं को खोलें - और ठुड्डी पर पछने लगावें - और मसूढों पर जोंक लगाना अतिलाभ दायक है - और फिर दांतों का पुष्ट करने वाला मंजन मलें - और जो इससे भी फायदा नहो तो - दांतो को उखाड डालना

चाहिये-परंतु पहिले दांतकी जड़को इस प्रकार ढीला करले कि नश्तर से चीरडाले - और उसपर इञ्जीरके पत्ते उसी के दूध में मिलाके दोतीन दिन मले-दांतढीला होजायगा और उखड़ने में सुगमता होगी ॥

आठवांपाठ ८

दांतकालम्बाऔरमोटाहोजाना

जोरुधिरकी अधिकता होती पीडाभी होगी-इससे फस्द खोलें और मवाद को निकालें ॥

जोबलगम की अधिकता होगीतो पीडा न होगी-इस में उसी मवाद को निकालें और उसी के अनुसार कोई उपाय करें ॥

कभी ऐसाभी होता है कि और दांत घिस कर छोटे होजाते हैं और केवल एक दांत लम्बादिखाई देताहै - यह कोई रोगनहीं है - जोइसका उपाय करनाहोतो उस बड़े दांत कोभी सोहन या आरीसे रगड़कर औरदांतों के बराबर करलें ॥

नवांपाठ ९

दांतोंमें खुजलीहोनेकेविषयमें

इसमेंरोगीको दांतरगड़ने या कोई वस्तु चबाये विना चैन नहीं पड़ता-सारे बदन और विशेषकरके सिर से मवाद निकालें औरखट्टी औरतेज और खारीवस्तु न खावें - और चूकेकी जड़ को सिरके में औटाके या शिकंजबीन अन्सली को पानी में घोलकर कुल्लीकरें ॥

दसवां पाठ १०

सोते में दांत रगड़ने के विषय में

जो तरी से हो तो भेजे से मवाद निकालें - और कूटका तेल गरदन पर मलें नहीं तो केवल मिज़ाज के ठीक करने से ही फायदा हो जाता है ॥

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने का उपाय यह है - कि घी काल्हे पर मलें और कड़ी वस्तु न चबाने दें - और हरी मकोय का रस रोग़न गुल में मिलाकर गुन गुना करके मलें - और अंगुली से मसूड़ों पर लगावें इससे जो पीड़ा दांत निकलने में होती है न होगी ॥

ग्यारहवां पाठ ११

मसूड़ों की सूजन के विषय में

जैसा मवाद हो उसीके अनुसार मवाद को निकालें - और वैसीही औषधों से कुल्ली करें - ॥

बारहवां पाठ १२

मसूड़ों से रुधिर बहने के विषय में

जो यह मसूड़ों के नामज़ोर होने के कारण से हो तो माजू और मसूर और वंसलोचन पीसकर मलें और जो रुधिर की अधिकता से हो तो फ़स्द खोलें और ठंडी औषधों से कुल्ली करें ॥

तेरहवांपाठ१३

मसूढ़ों में घाव और नासूर होजाने के विषयमें

मसूढ़ों से पीपनिकले तो घावहोगा॥ और जोऐसे ही चालीस दिन व्यतीत होजायं तो नासूर कहलायगा- मुंह आनेका जो उपाय हैं वही इसकाभीहैं- औरनासूरको सलाई से दागदें॥

चौदहवांपाठ१४

दांतोंकी जड़में कमजोरी होने से दांत हिलने के-विषयमें

इसरोग में दांतकी जड़का मांस कम और सुर्ख होजाता है- गुलाबके फूल- चकृत- गुलनार- हव्वुल आस- हर एक की दह चौदह माशे- स्वरनूर्वनिवती- सिमाक- अकरकुरा- हर एक १४॥माशे पीसकर मसूढ़ों परजमादें॥ ८८७॥ ५

पन्द्रहवांपाठ१५

मसूढ़ों परबुरा मांस उत्पन्न होनेके विषयमें

कभी २ पिछली डाढ़के पास सूजन होके बुरामांस उत्पन्नहो जाता है-सुर्मेमक्खी-फिटकिरीहरी-पीसकर उसमांस पर मलें तो गलजावेगा॥ ४८७५२

नवांअध्याय

गले और कौव्वे और मेरी और कुसंबेरेयाकेरोगों

मरी उस राहको चाहते हैं जिससे खाना और पीना पेट में उतरता है ॥

कुसबैरेया वह राह है, जिससे मनुष्य दम लेता है ॥

पहिलापाठ १

कव्वेकी सूजनके बिषयमें

जो मवाद अधिकहो उसी को निकालें- इसके पीछे रुधिर और पित्तकी अधिकता में सिरके और गुलाब और हरी मकोय आदि से कुल्ली करें और बलगमी में- कान्जी और-शिकंजबीन और राई पानीमें औटाके कुल्लीकरें - और सौदाकी अधिकतामें अमलतास को ताज़े दूधमें घोलकर कुल्लीकरें ॥

दूसरापाठ २

कव्वे के लटक आनेके बिषयमें

जो यह रुधिरकी अधिकता से होतो फस्द खोलें- और सिरके और गुलाब से कुल्ली करें- और गुलाबके फूल-चन्दन-गुलनार-कापूरको पीसकर कव्वे पर मलें ॥

और जो बलगम की अधिकता सेहोतो बलगम को निकालें और शहद को पानी में औटाके कुल्ली करें- और जली हुई फिटकरी- और बारह सिंगा-नौशादर के साथ पीसके किसी पत्ती वस्तु पर रक्खें के कव्वे परजमाके ऊपर को उठावें- और सातू सिरके में पीसके या मुलतानी मिट्टी जली हुई सिरके में गूंद के या सरेश सिरके से पिघलाके और उसमें इसबगोल मिलाके सिरके ऊपर तालूकी जगह लेप करें जब वह सूख-

जायगावो तालूकी खालऊपरको खिंचेगी- इससे कव्वा भी ऊ
परको उठ आयगा- जो इन उपायों से कुछ लाभ न हो- और
गला बन्द होजाने का डर हो तो- दस्तकारी करनी पड़ेगी- अ
र्थात बहुत सावधानी से जितना उचित हो काटलें- परंतु इस
के काटने और गलाने में बहुत डर है- अधिक कट जाने से-
शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसक्ता ॥

तीसरा पाठ ३
खुन्नाक के विषय में

इस रोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और सांस रुक
ती है और खाना पीना बन्द होजाता है- जो रुधिर और पित्त की
अधिकता हो तो- सरारू फास्द खोलें- और जीभ के नीचे जो
रग है उसकी फास्द करें- और रुधिर कई बार थोड़ा २ निका
लें- और जो रोगी कमज़ोर न हो तो एक बार जितना चाहें रु
धिर निकालें- और जो उसके पीछे फिर जरूरत पड़े तो थोड़ा
थोड़ा रुधिर निकालें- और जो कफ़ हो तो मवाद को नर्म करे और निका
लें फिर सिमाक और ठंडी औषधों से कुल्ली करें और गर्मी निकालने के लि
ये ठंडे शर्बत पिलावें और भोजन की जगह आश जो पिलावें और जो खांसी
ठंडी वस्तों से कुल्ली करावें और पिलावें- जो सूजन बाहर ग
र्दन पर हो आवे- तो उसपर पछने या जोकें लगावें- इससे
भीतर का मवाद बाहर निकल आवेगा- और रुधिर की अधि
कता में पिंडली पर पछने लगावें लाभदायक है- जब इस
रोग को तीन दिन व्यतीत होजाय- तो अमलतास गाय के
दूध में घोलकर कुल्ली करावे- जब रोगी बहुत कमज़ोर हो

को

कोइकीमके पास आवेतो वे जरूरत फस्द न खोलना चाहिये- जब यह सूजन पकजाय और आपसें आप न फूटे तो चूरी असस नी- और हींग अर्कवोल की बीट दूधसें घोलकर कुल्ली करा वेइससे फूट जायगा- फिर शहद और दूधको मिलाकर कु ल्ली करें- कि पीप साफ होजाय- और भोजन की जगह यह हरीरी खिलायें गेंहू की भूसी पानीसें भिगोकर छानले- और उसमें रोग़न बादाम डालकर औटावें- और थोडीसी शक्कर मिलाकर हरीरा बनालें ॥ ३८२-३०३-५३०

गलेकी पीडामें ठंडी औषध गले पर न मलें परंतु मवाद निकालने के लिये पीछे चूरे अरमनी ज़ोफ़ा और राई पानी सें पीसकर गले पर लगावें मवाद भीतर से बाहर खिंच आवेगा और ठुडी पर पछने लगावें ॥

जो यह रोग बलगम की अधिकता से होतो गुल्लाब पि लावें और मूली के पत्तोंके रसमें शिकंजबीन घोलकर कु ल्ली करें और जो यह रोग बहुत बढ़जाय तो जीभके नीचे- की रगकी फस्द खोलें और गुद्दीके ऊपर और ठुडीके नीचे पछने लगावें ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होतो फस्द बासलीककी खो लें और नश्तर गहरा लगावें और गुल्लाब दें और दूध और अ मलतास की कुल्ली करें और मेथी और करमकल्ले के पत्ते कूटके उसके रसमें रोग़न नरगिस और बतख की चरबी मि लाके गलेके चारों ओर लगावें ॥

खुन्नाक कल्बी बहुत बुरा रोग है इसमें रोगी अपना मुख कुत्ते की प्रकार खोल देता है जीभ बाहर निकल आती है यह गलेके उन्नेके की सूजन के कारण से होता है -

जायगावो तालूकी खाल ऊपरको खिंचेगी-इससे कव्वा भी ऊपरको उठ आयगा-जो इन उपायों से कुछ लाभ नहो-और गला बन्द होजाने का डरहोतो-दस्तकारी करनी पड़ेगी-अर्थात् बहुत सावधानी से जितना उचित हो काटडालें-परंतु इसके काटने और गलाने में बहुत डर है-अधिक काट जाने से-शब्दों का उच्चारण अच्छी प्रकार नहीं होसक्ता॥

तीसरा पाठ ३
खुन्नाक के विषय में

इस रोग में गले के भीतर सूजन होजाती है और सांस रुकती है और खाना पीना बन्द होजाता है-जो रुधिर और पित्तकी अधिकता होतो-सरारू फस्द खोलें-और जीभ के नीचे जो रग है उसकी फस्द करें-और रुधिर कई वार थोड़ा २ निकालें-और जो रोगी कमज़ोर न होतो एक वार जितना चाहें रुधिर निकालें-और जो उसके पीछे फिर ज़रूरत पड़े तो थोड़ा थोड़ा रुधिर निकालें-और जो वृद्धि होतो मवाद को नर्म करें और निकालें फिर सिकाक और ठंडी औषधों से कुल्ली करें और गर्मी निकालने को ठंडे शर्बत पिलावें और भोजन की जगह आशजौ पिलावें और जो खार कैड़ी वस्तों से कुल्ली करावें और पिलावें-जो सूजन बाहर गरदन पर हो आवे-तो उसपर पछने या जोकें लगावें-इससे भीतर का मवाद बाहर निकल आवेगा-और रुधिर की अधिकता में पिंडली पर पछने लगावें लाभदायक है-जब इस रोग को तीन दिन व्यतीत होजाय-तो अमलतास गाय के दूध में घोलकर कुल्ली करावे-जब रोगी बहुत कमज़ोर हो

के

केहकीमके पास आवेतो वे जरूरत फस्द न खोलना चाहिये-
जब यह सूजन पक जाय और आपसें आप न फूटे तो चूरी असम
नी- और हींग अर्वाबीलकी बीट दूधमें घोलकर कुल्ली करा
वेइससे फूट जायगा- फिर शहद और दूधको मिलाकर कु
ल्लीकारें- कि पीप साफ़होजाय- और भोजन की जगह यह
हरीरा खिलायें गेंहूकी भूसी पानीमें भिगोकर छानलें- और
उसमें रोग़न बादाम डालकर औटावें- और थोडीसी शक्कर
मिलाकर हरीरा बनालें ॥ ३८२ - ३१३ - ५३८

गलेकी पीड़ासें ठंडी औषध गले पर मसलें परंतु मवाद
निकालने के लिये पीछे चूरे अरमनी गिल और राई पानीमें
पीसकर गलेपर लगावें मवाद भीतर से बाहर खिंच आवेगा
और ठुड्डी पर पछनें लगावें ॥

जो यह रोग बलग़म की अधिकता से होतो कुल्लाव पि
लावें और मूली के पत्तोंके रसमें शिकंजबीन घोलकर कु
ल्ली करें और जो यह रोग बहुत बढ़जाय तो जीभके नीचे-
की रगकी फस्द खोलें और गुद्दीके ऊपर औरठुड्डीके नीचे
पछने लगावें ॥

और जो सौदाकी अधिकता से होतो फस्द बासलीकखो
लें और नश्तर गहरा लगावें और कुल्लाब दें और दूध और अ
मलतासकी कुल्लीकारें और सेथी और कासनीकल्के के पत्ते
कूटके उसके रसमें रोग़न नरगिस और बतख की चरबी मि
लाके गलेके चारों ओर लगावें ॥

खुन्नाक काल्बी बहुत बुरा रोग है इसमें रोगी अपना
मुख कुत्ते की अकार खोल देता है जीभ बाहर निकाल आती
है यह गले के उजेंके की सूजनके कारण से होता है -

उपाय इसका फ़स्द और जुल्लाव सेकरें- और कभी गरदन के नोडों के हटजाने से भी ऐसा होताहै- चाहिये कि नोडों कोठी कक्करें ॥

एक प्रकार खुन्नाक की और है जिसे जुन्हा कहते हैं-य ह सब से बुरी है इसमें रोगी के मुख से बात तक नहीं निकल सक्ती-नकुछ निगल सकता है और जो कुछ पिलाते हैं तौग ले में फंदा पडके नाक से निकल आताहै- ऐसे समय में जो ग ले पर लाल रंग होजाय तो बहुत अच्छा है-उपाय इसका वही है जो ऊपर लिखा गया ॥

जब रोगी कोई वस्तु निगल नसके तो गरदन के दूसरे मो हरे पर सींगी लगाकर चुसें इससे खाना उतरने की जगह कुछ खुल जायगी और पतली वस्तु उतरने लगेगी और जब दम रु क जाय तो गले में छेद करदें उसकी रीति बड़ी पुस्तकों में लि खी है॥

चौथापाठ४

गले और मरी और कुसवेरैया में फुन्सियां होजा नेके विषयमें

मरी में फुन्सियोंका चिन्ह यहहै कि निगलने के समय पी ड़ा बहुत होगी और खट्टी और तेज़ और कड़ी वस्तु खाने से और भी अधिक होगी और कुसवेरैया की फुन्सियों का चिन्ह यहहै कि बात करने में और चबाने में और थूक और रेत पहुंचने से अधिक पीड़ा होगी और निगलते में कुछ न मालूम होगा- फ़स्द खोलें और ठंडे मेवों का पानी पीवें और बहुत ठंडा पानी न पियें

करें और तेज़ और खुश्क भोजन न खावें - और जब जानें कि दुंबा पक गये तो मवाद को पकावें और फूटने के पीछे साफ करने का उपाय करें - जैसाकि खुन्नाक़ में लिखागया ॥

और गले में जो फुन्सियां पड़ेंतो वही कुल्ली करें जो खुन्नाक़ में लिखी गई हैं ॥

पांचवां पाट ५

गले में जोंक चिमट रहने के विषे में

बहुधा ऐसे पानी होते हैं जिनमें छोटी जोंक होती है - जब बिना देखे कोई उस पानी को पीता है तो जोंक गले में यामरी या कुसबैरया में चिपट जाती है - कभी तालू की राह से नाक की ओर चढ़कर चिमट रहती है ॥

जो जोंक गले में नीची हो और दिखाई न देतो आपसे आप रुधिर बह निकलेगा और बेचैनी होगी ॥

और जो कुसबैरया में चिमटे तो हरदम खांसी आवेगी - और जो नाक के पास चिमटे तो नाक से रुधिर बहेगा - और द माग बन्द होजायगा - और कभी खखार के साथ मुंह से रुधि र निकलेगा ॥

जो गले में ऊपर को दिखलाई देतो पहिले मोचने से सिर उसका दबोचके थोड़ी देर ठैरे रहें वह मुंह खोल देगी फिर उ सको निकाल लें - और जो दिखाई न देती होतो काली मि ट्टी एक पोटली में बांधके मुंह में गले के पास लेजायं वह मिट्टी की सुगंध से पोटली में चिमट जायगी फिर उस पोटली को निकाल लें ॥

और जो तालू में चिमटीहोतो करेले का रस और कुट-

की सिरके में औटाके नाकमें डालें- जो इससे जोंक पेट में जा पडे तो जल्दी से के करावें- और जो के से न निकले या के न आवे तो जुल्लाब दें ॥

पानी बहुत सावधानी के साथ देखके और छानके पीना चाहिये ॥

छठापाठ ६

सुई निगल जाने के विषयमें

चुम्बक पत्थर को गुलाब में पीसकर जहां तक सुख पिलावें- और घडी के पीछे जुल्लाब दें- और फिर सेंदे को ठीक करें ॥

सातवांपाठ ७

नरी के भिंचजाने के विषे में

इससे पतली वस्तु तो गले से नीचे नहीं उतर सकती- और गाडी वस्तु उतर जाती है आयारिज खिलाके बलगमको निकालें- और अनीसून सुन्दर- सुम्बल- लाल बहमन- और सपेद बहमन- औटाके और छानके थोड़ा २ पिलावें- और ठुड्डी के नीचे पछने लगाके जुन्द बेदस्तर और शिकंजबीन गलें या बारे लगावें ॥

आठवांपाठ ८

नरखरे के ढीले होजाने के विषेमें

चिन्ह उसका यह है कि सांस नहीं लीजाती या बिलकुल बन्द होजाती है ॥

इसका उपाय कही है – जो ऊपरके पाठमें लिखागया और जब सांस बिलकुल न लीजाय तो जल्दी से गलेमें छेद करके लोहे या तांबे या पीतल की नली उसमें अटकादें – कि रोगी उसमें से सांस लेवे और फिर उसका उपाय करें ॥

नवांपाठ ९

सरीसें खुजली होने के विषयमें

कै करावें और पुराने सिरके से कुल्ली करें – और दूध और शकर एक २ घूंट करके पीवें ॥ ५ । २ । ५ । २

दसवांपाठ १०

कुसवैरैया के फडकने और कांपने के विषय में

फडकने का चिन्ह यह कि बात करने में हरघडी रुक२ कर रुसा रुसा होगी – और कांपने का चिन्ह यह है कि बात करने में कंप कंपी मालूम होगी – जैसा कि बूढों को होता है – इसका उपाय वही है जो रेशे – और ज़ुकाम का उपाय है – और इसमें कुल्ली कराना भी लाभ दायक है ॥

ग्यारहवांपाठ ११

डूबे हुये के उपाय में

जब आदमी को पानी से निकालें और उसे होश न हो परंतु दम आता जाता हो उसको उलटा लटका कर पेट उसका दबावें कि पानी निकलजाय और मिर्च और सोंठ सिरके में औटाके उस के मुंहमें टपकावें कि होश में आवें इसके पीछे हरीरा बेसन और दूधकादें कि पेट फडा ठीक होजाय और जब देखें कि सांस

आतीजातीनहीं है तोजानेकि- वहमगया॥

बारहवांपाठ

गलाघोंटे हुये और फांसी दिये हुयेका उपाय

जोदम आताजाता देखें तोजल्दी से फन्देकोकाट दें- फिरदेखे कि उसके मुखमेंकफहै या नहीं- जोनहो तो ससरूपारद खोल दें- औरतलवों में राई मलें जब उसकोहोश आजाय तो रोगन बनफशा और गर्म पानी सेकुल्ली करावे- और जोमुंहमें काफ़ पा न जाय तो उसकेजीनेकी आसनहीं॥

तेरहवांपाठ १३

उसर उलवलानेकेविषयमें

इसरोगमें कठिनाई सेनिगला जाता है- जो यह गलेके तंग होजाने से होतो खुन्नाक़ और मरीके भिचजानेका उपाय करें जैसा ऊपर लिखागया है- औरजोमरी में कोई विगाड होजाने से यहरोगहोतो- कारण के अनुसार इस विगाडकोदूर करें और दोनों कंधोंके बीचमेंलेपकरें- इसलिये कि मरीपीठकी ओर है औरवासवैरेयाछाती की ओर॥

चौदहवांपाठ १४

मरीकी सूजनकेविषयमें

जैसामवादहोउसी के अनुसार उसे निकालें और वैसेही शरबत पिलावें॥

पन्द्रहवां पाठ १५

मरीमें घाव पड़जाने के विषयमें

चिन्ह इसका यहहै कि मरीकी जगह पीड़ा होगी और तेज़ और खट्टी वस्तु के खाने में दुःख होगा और चिकनी वस्तु भलीभांति निगली जायगी और मरीकी सूजनके चिन्ह इस्से विपरीत हैं और घाव कभी रफ़ूटजानेके पीछे पड़ा करता है- और कभी विना सूजन के गर्म सवाद के कारण पड़ जाता है- उपाय इसका यह है कि सफेद सीस रोग़न गुल में पिघलाकर एक एक घूंट करके पिलावें- परन्तु इसमे पहिले दो तीन दिन शहद और दूध और शक्कर मिलाकर पिलावें- कि घाव साफ़ होजाय॥

सोलहवां पाठ १६

आवाज़ बन्द होजाने और पड़जानेके विषयमें

इसमें पहिले यहदेखें कि नज़ले से है या गले के किसी बिगाड़ से- जो नज़लेसे होतो खशखशका शरबत पिलावें- और पोस्त खशखश से कुल्ली करें इससे नज़ला रुकजायगा- और जो गले के बिगाड़ से होतो जैसा उचित हो वैसा उपाय करें॥

- कावाबचीनी चबाना- वार्कीला- मुनक्के- छुहारा- इन्जीर- बिर्लगोज़ा- बादाम- गन्ना- शहद- अलसी के बीज- इनमें से हर एक आवाज़को साफ़ करता है॥

नज़ले के लिये रूमाल गले में लपेटे रहें- और सिरको ठंडी हवा से बचावें॥

दसवांअध्याय

छाती ओर फेंफडे के रोगों के बियेमें

पहिलापाठ १

दम के वर्णन में

यह रोग वडी कठिनाई से जाता है ओर दूर होकर फिर होजाता है- इसके उपाय में जितनी जल्दी होसके करें- जो बलगम से होतो खांसी के साथ बलगम निकलेगा- ओर छाती में खरखरा हट पाई जायगी- इसमें पहिले बलगम की मुन्जिशें दें- फिर जुल्लाब देकर मवाद निकालें ओर बहुत गर्म दवा न दें जिस से खुश्की रहजाय या मवाद गाढा पडके जम जाय- ओर मवाद निकालने के पीछे शरबत जूफा दो तोले गर्म पानी में घोलकर सवेरे ओर संध्या को सोने के समय पिलावें- ओर कभी कभी मूली के बीज शहद के साथ ओटाके कै कराया करें ओर जिस समय बलगम की अधिकता होतो- अलसी कुचली को पानी में ओटाकर शहद मिला कर पिलावें- इस से बहुत जल्दी चैन होजा यगा- ओर अलसी के तेल में मोम को पिघलाकर छातीपर म लाकरें ॥

ओर जो यह रोग दिल की गरमी से होतो चिन्ह उसका यह है कि नाडी ओर सांस जल्दी जल्दी ओर भारी चलेंगी ओर प्यास बहुत होगी ओर ठण्डी हवा अच्छी मालूम होगी- इस में बायें हाथ से फस्द बासलीक खोलें ओर लुआब ओर नर्म करने वाली ओषधें पिलावें ओर हाथ पांव मलें ॥ १ आदि

औरजो यहरोग फेफडे में अधिक गरमी होजाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी परंतु भारी नहोगी और प्यास बहुत होगी और ठंडी हवा अच्छी मालूम होगी इसमें ठण्डी ओषधें पिलावें और लगावें ॥

औरजो यह रोगछाती के उजलों के ढीला पडजाने सेहो तोनाडी धीमी होगी और सांस दुहरी आवेगी जैसी किरोने में आतीहै और छाती को सीधाकरे विना पूरी स्वासन आवेगी इसमें पालिजका उपाय करें और मेथीके बीज-दारचीनी-शहद में औटाके सकरघूंट पीवें और रोगन नरगिस मलें ॥ ५१ नी

औरजो फेफडे की खुश्की सेहोतो प्यास अधिक होगी-और आवाज़ धीमी निकलेगी और तरवस्तुओं से लाभ होगा-इसमें फेफडे को तरी पहुंचावें और तर औषधें औटाके उसमें रोगी को बिठावें-और बकरीका दूधपीना अतिलाभदायक है॥

औरजो फेफडे की सरदी के कारण सेहो तो ठण्डी वस्तुओं से हानिहोगी और गरमी के चिन्हन पायेजायंगे-इसमें फेफडे को गरमी पहुंचावें और मेथी के बीज औटाकर पिलावें-और गर्म तेलों को मलें ॥ [illegible]

औरजो दमा दम लेनेकी राहों में हवा भररहने सेहोतो सूखी खांसीहोगी-और बलग़मन निकलेगा-और वादी वस्तु खाने से और बढेगा-और छाती भारीन मालूम होगी उपाय इसका यहहै कि वायको निकालें और जुल्लाब दें-और सोया और बाबूना छाती और पसलियों में मलें और माजून फिलासफा खिलावें ॥ २५ [illegible]

औरजो यह फेफडे की सूजन से या जिगर आदिकी परदों की सूजन सेहोतो इसका उपाय उन्हीं रोगों में लिखाजायगा॥

औरजोदगाखुन्नाक के कारण से होतो - इसका उपाय वही है जो खुन्नाक का है ॥

औरजोसेदे की तरी से होतो पेटसरने परदस चढने लगेगा और खाली पेट में कमी होगी - इसमें सेदे से मवाद निकालें और भोजनकमदें और पचाव की औषधें खिलावें ॥

एकप्रकार इसरोगकी बहुत बुरीहै - इसमें छातीजोसी थाकेर बिनादम नहीं लियाजाता - औरकारवट से नहीं लेटाजा कारणइसका यातो कोई गाढा मवाद है या सांस आनेकी राह में सूजन है याछाती के उजलोंका ढीला होजाना - उपाय हरएक का ऊपर लिखचुके है ॥

दूसरापाठ

खांसी के विषय में

जो यह फेफडे की गरमी ठंड और तरी या खुश्की से होतो पहिचान उसकी लिख चुके हैं उसकारण कोदूरकरें ॥

औरजो रुधिरकी अधिकता से होतो नाडीभारीहोगी औ रे सांसकी हवा गर्म होगी और मुखका रंगलालहोगा - इससे वा सलीकाफस्द खोलें - और ठण्डी औषधें पिलावें ॥

औरजो जिगरकी गरमी से होत्तो - ठंडी औषधें दें और नु कूसुलय्यन पिलावें ॥

औरजोकोई पतलामवाद भेजेसे गलेमें उत्तरे तो - गा ले में सरसराहट होगी और खांसी में बलगम न निकलेगा - और रातको सोने से अधिकहोजायगी - इसमें नजले को रोकें - औ पोस्त खशखाशको औटाके कुल्ली करे - और बबूलकागोंद मु खमें रक्खें ॥

और जो भेजे से फेंफडे पर मवाद गिरके गाढा होजाय तो बडे ज़ोरकी खांसी से बलग़म निकलेगा - और छाती भारी मालूम होगी और पहिले इससे ज़ुकाम हुआ होगा - इसमें ज़ूफा - इन्जीर - मेथी के बीज - मुलहटी - पानी में ओटाके पीवें - और मुलेहटी का सत - काली मिरचें - शक्कर - बराबर लेकर गोलियां बनावें और मुख में रक्खें ॥

और जो फेंफडे और छाती में अधिक तरी होजाने से होतो खांसी में लसदार बलग़म निकलेगा और छाती के भीतर खर खराहट होगी - यह बहुधा बूढों और तर मिज़ाज़ वालों को होता है इसका उपाय वही है जो बलग़मी दमे का है ॥

और जो फेंफडे में धूयें या गर्द पहुंचने या बहुत चिल्लाने से होतो उस कारण को दूर करें - और तर और नर्म वस्तु खावें और ओषधों की कुल्ली करें - और रूई और पारवाने की जगह घी लगावें ॥

और जो खांसी किसी और रोग के कारण से होतो उस रोग का उपाय करने से जाती रहेगी ॥

और जो फेंफडे में फुन्सियां पडजाने से होतो नाडी जल्दी जल्दी चलेगी और पेशाब में जलन होगी और ठण्डी वस्तों से आराम मिलेगा - इसमें फस्द खोलें और छाती पर पछने लगावें और पित का जुल्लाब दें - फिर जो उपाय गले की फुन्सियों का है वही इसका करें ॥

और जो मेदे की तरी से होतो मेदे से मवाद निकालें - और भोजन कम दें ॥

और जो फेंफडे में सौदा का मवाद आजाने से होतो खांसी में बलग़म काला और नीला निकलेगा और २ चिन्ह सौदा

के पाये जायंगे- इससे गेहूं की भूसी का शरीरा शक्कर या शहद डा लकर निकाले और सुन्निश देकर सौदा को गुल्ला वदें॥

और जो नरखरे में पानी या और कोई वस्तु जा पडे और उससे खांसी होतो जब तक वह वस्तु वहां से दूर न होगी- खांसी न थमेगी- इसके उपाय की जरूरत नहीं है- परंतु कभी ऐसा होता है कि भारी वस्तु जा पडने से मरने का डर होता है- ऐसे समय में छाती और गले को सहलायें और कै करावें- इससे वह वस्तु निकल आवेगी॥

तीसरा पाठ ३

मुखसे रुधिर निकलने के विषै में

इसमें पहिले यह देखना चाहिये कि रुधिर मुख के भीतर से आता है या भेजे से या गले के अन्दर से- जो केवल मुख से आवेगा तो थूक के निकालेगा॥

और जो सेने से आवेगा तो खखार के साथ निकलेगा और उसके निकलने से सिर हलका होजायगा॥

और जो गले से आवे तो विना खांसी के निकलेगा॥

और कुसवैरैया का रुधिर कफ और खांसी के साथ निकलेगा और छाती में पीडा होगी॥

और फेफडे का रुधिर बहुत लाल होता है- और खांसी भी होती है- परंतु पीडा नहीं होती॥

और छाती का रुधिर काम और फुटकी रसा निकलेगा और खांसी बहुत होगी और घाव की जगह पीडा होगी- और लेटने में खांसी और पीडा अधिक होगी॥

और जो मेरी या मेदे या जिगर या तिल्ली से आता हो तो जिस जगह से आवेगा उस जगह कोई बिगाड पाया जावेगा और उसके साथ के भी होगी ॥

जो मुख से रुधिर निकले तो – आसके पत्तो – गुल्नार – माजू – फिटकरी – आदि से कुल्ली करें ॥

और जो जोंक के चिपटने से आवे तो उसका उपाय लिख चुके हैं ॥

और जो भेजे से आवे तो फ़स्द सराल करें – और गुद्दी पर पछने लगावें – और ऊपर लिखी हुई वस्तों से कुल्ली करें ॥

और जो गले और कुसबेरैया से आता हो तो वही कुल्ली करें – और कुर्सनफ्स उकदम मुख में रक्खे – परंतु कुसबेरैया का घाव कठिनाई से जाता है – और भीतर के परदे के घाव का उपाय हो सकता है ॥

और जो फेंफडे से रुधिर आता हो तो – फस्द साफिन और बासलीक़ खोलें और पिंडली पर पछने लगावें – और जो आवश्यकता हो तो – अकाकिया – कुन्दर – माजू – गुल्नार – बंबूल का गोंद – गिले अरमनी – अफ़ीम – बराबर लेकर पीस के मलें – परंतु यह देख लेना चाहिये कि फेंफडे में सूजन तो नहीं है ॥

और जो छाती से रुधिर आता हो तो फ़स्द बासलीक खोलें – और कुर्सनफ्स उलदम मुख में रक्खे और खिलावें – और छाती पर लगावें ॥

छाती का घाव जल्दी अच्छा हो जाता है और फेंफडे का घाव बहुत बुरा है ॥

और जो रुधिर भरी और मेदे आदि से आता हो तो उसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

इस रोग के सब प्रकारों में धोया हुआ शहद ना ५॥ माशे खुरफे या बारतंग के पत्तों के रस के साथ देना और कुलफे का साग पका कर खाना और साग डंठल समेत कच्चा चबाना और अर्क उसका निगलना अति लाभ दायक है ॥

जब रुधिर किसी जगह फेफडे पर गिरे और उसके साथ खांसी न हो तो सिरके और गुलाब से कुल्ली करावें और थोडा सा पिलाभी दें - और जो खांसी अधिक हो तो - सालर शहद में मिला के चटावें या इन्जीर की लकडी जला के पानी में घोल के दें - और हाशा एक प्रकार का पोदीना होता है उसे भी मिला लें तो अति लाभ दायक हो जायगा ॥

चौथा पाठ ४

मुख से पीप निकलने के विषै में

जो पह फेंफडे की सूजन के फूट जाने या सिल आदि से हो तो उपाय इसका आगे लिखा जायगा और जो नके और मुख के भीतर से आवे तो खुन्नाक का रोग पहिले हुआ होगा और इन स्थानों में सूजन होगी - इसका उपाय हम लिख चुके हैं ॥

परंतु जो पीप छाती से आवे सूजन के फूटने के कारण से तो मवाद को उन औषधों से पतला करें जो बलगमी खांसी में लिखी गई हैं कि मवाद पतला हो के टपक जाय और मोम को रोगन बाबूने में पिघला के मले और कोई ठण्डी वस्तु और कब्ज -

करने वाली कूभी नखावें - और मवाद के पतला करने के लिये जूफा - औरहाशा और इन्जीर - और मुल्हटी - ओटाके पीना अ तिलाभदायक है - और यह औषध हर परदे की सूजन में चाहे वह छाती की हो या फेफड़े की और फूट गई हो लाभदेगी॥

जानना चाहिये कि छाती का मवाद फेफड़े में उत्तर कर नरखरे की राह मुख से निकलता है - सिवाय इसके और कोई राह छाती के मवाद निकलने की नहीं है॥

पांचवां पाठ ५

फेफड़े की सूजन के विषय में

जो सूजन रुधिर या पित्त या खांसी वलगम से हो तो तप बहुत होगी और सांस नली जायगी और छाती भारी होगी और पीड़ा होगी और गालों पर लाली होगी और प्यास बहुत होगी और इन चिन्हों में मवाद के अनुसार कभी और अधिकता होगी इसमें वासलीक फस्द खोले - और जो रुधिर की अधिकता देखे तो पहिले साफिन की फस्द खोले - इसके पीछे मतबूख सुलय्यन से मवाद को नर्म करें - और जो नजले से सूजन हो तो फस्द सरा रुकारें॥

जानना चाहिये कि फेफड़े और छाती और उसके पास में जो सूजन हो उसमें तीन दिन से पहिले फस्द खोलें - और जिधर सूजन हो उसकी दूसरी ओर की फस्द खोलें - और जब मवाद गिरने से बहर जाय तो दूसरी ओर की खोलें - जिधर सूजन हो॥

फेफड़े की सूजन में जब तप अधिक होगी तो सूजन की ओर का गाल लाल होजायगा - और भारीपन भी उसी ओर मालूम

होगा - और सूजन की ओर लेटने से मुख से पानी बहुत निकलेगा - जो रोगी कमज़ोर न हो तो - तीन तीन दिन पीछे फ़स्द खोला करें - और उसके पीछे मवाद को नर्म करें और मवाद को बाहर खेंचने के लिये छाती पर पछने लगावें ॥

और रोग के आदि में ठण्डी औषधें जो मवाद को फेंफड़े पर गिरने से रोक सकें और इसके पीछे सूजन को पकाने अर्थात बिठानेवाली ओषधें मलें - और ज़िमाद शोरा पीड़ा को जल्दी से अच्छा करता है ॥

खबरदार जिन ओषधों में काब्ज़ हो जैसे कासनी का रस वा गाढ़ा करनेवाली ओषधें जैसे शरबत खशखाश और ठंडा पानी इस रोग में कभी न देना चाहिये - परंतु जो सूजन पित्त से हो उसमें यह ओषधे दे सकते हैं ॥

इस रोग में छाती को मवाद से साफ करने का उपाय करें और जो तप के लिये ठंडाई पिलानी हो तो माउल्शअरुल - और शर्बत गुलाब और आशजोर्द - और खीरे और लौकी और तरबूज का पानी भी दे सकते हैं - क्योंकि यह साफ करते हैं और इनमें काब्ज़ नहीं है - और शिकंजबीन जो बहुत खट्टी न हो अति लाभदायक है और जब सांस लेने में रोगी हांपने लगे तो लुआब इसबगोल पतला करके चान्द और शरबत गुलाब के साथ एक एक घूंट पिलावें - और गुनगुने पानी से छाती और पसली को धोवें - जब तक कि दम ठिकाने से होजाय और पीड़ा थम्मजाय ॥

जहां कहीं सूजन होती है या तो मवाद आप से आप पक के दूर होजाता है या पीप पड़ जाता है या वह स्थान कड़ा पड़ जाता है - सूजन पकने के चिन्ह यह है कि रोग में कमी मालूम होगी और बलग़म गले से सुगमता से निकलेगा ॥

और पीप पडने के चिन्ह यह हैं कि रोग बढता जायगा- और जिस दिन मवाद पकेगा उस दिन बहुत अधिकता होगी परंतु तप और पीड़ा उहर जाय गी और भारी पना बढ़ जायगा- और जिस दिन सूजन फूटेगी उस दिन जाडे के साथ तप फिर ज़ोर करेगी ॥

और वहे हो जाने के चिन्ह यह हैं कि बहुधा रोगों में कमी मालूम होगी- परंतु दम रुकेगा और सूखी खांसी ज़ोर करेगी और भारी पना भी रहेगा- और कभी यह सूजन कड़े पड़ने के-पीछे भी पक के फूट जाती है- परन्तु बहुत कम- जिस समय सूजन फूट जाय और बलगम की जगह पीप निकले तो बहुत अच्छा है- नहीं तो वह औषधे दें जो चौथे पाठ में लिखी गई हैं और कभी ऐसा होता है कि सूजन भली भांति नहीं पकती- परन्तु किसी कारण से कच्ची फूट जाती है और केवल रुधिर निकलता है ऐसे समय में शीघ्रता से फ़स्द खोलें और वह उपाय करें- जो तीसरे पाठ में हैं ॥

और जो फेफड़े की सूजन ठण्ड से हो अर्थात बलगम या सौदा से तो बलगमी के चिन्ह यह हैं- कि मुख से थूक बहुत निकलेगा और भारी पना और दम का रुकना बहुत होगा और गर्म सूजन के चिन्ह कोई नहोंगे- परन्तु हलकी तप रहेगी और गर्म सूजन में तप अधिक होगी ॥

और जो सौदा से हो तो सूखी खांसी होगी और सांस कठिनाई से ली जायगी- और जो पहिले गर्म सूजन हो फिर कड़ी हो जाय चिन्ह उसका यह है कि कड़े पडने से पहिले गर्म सूजन के चिन्ह पाये जायगे ॥

——

बलगमी में पहिले मवाद को नर्म करें और ऐसी ओषधें मलें जो ठण्डी हों - और मवाद को फेंफडे पर गिरने से रोकें और थोडे दिन पीछे जब तप कम होजाय तो बलगम की मुंजिश पिला के जुल्लाब दें ॥

और जो सौदा से हो तो खतमी के बीज और अलसी के बीनों का लुआब रोगन बादाम में मिलाके एक २ घूंट पिलावें और लडकी की मा का दूध और नर्म करने वाली ओषधें मलें - परंतु सौदावी का उपाय बहुत कम हो सकता है ॥

फेंफडे की सूजन में कभी पथरी पडजाती है - फिर खांसी थम जाती है - और कभी इससे सिल का रोग हो २ जाता है ॥

छठा पाठ६

सिल के विषय में

फेंफडे में घाव पडजाने का नाम सिल है - चिन्ह उसका यह है कि इसमें तपेदिक अवश्य होती है और खांसी में पीप निकलती है ॥

पीप और कच्चे बलगम के पहिचानने में धोका होजाता है - इसलिये उसकी पहिचान याद रखनी चाहिये - कि पीप पानी में बैठ जाती है - और आग पर जलाने से गंध निकलती है - और बलगम पानी पर तैरता है - और आग पर रखने से गन्ध नहीं देता - इस रोग का उपाय नहीं हो सकता परंतु जो उचित उपाय के साथ दैव योग्य से दूर भी होजाय तो क्या अचम्भा है - जैसा हकीम बूअली सीना ने लिखा है कि मैंने एक स्त्री का उपाय

किया वह तेईस वरस जीती रही और हकीम जालीनूस कहता है कि मैंने इस रोग में जिसका उपाय आदिसे किया वह अच्छा होगया इससें शीघ्रता से फस्द वासलीक उस ओर खोलें जिधर पीड़ा नहो और जो फस्द न खोल सकें तो छाती पर पछने लगावें-और जो इसमें नजला भी हो तो फस्द सरारू भी खोलें और आशनों में केवडे पकाके खिलावें और तपेदिक का उपाय करें- और हकीम बूअलीने लिखा है कि इस रोग से जहां तक नया गुलकन्द खिलाया जाय खिलावें- यहां तक की रोटी के साथभी वही खिलाया जाय- परंतु यह बात मेरी समझ में नहीं आती-क्योंकि गुलकन्द से दस्त आने का डर है- और दस्त इस रोग में बहुत बुरे हैं- और सफूफ सरतान शरबते उन्नाव- या शरबत खशखाश के साथ चटाना लाभदायक है ॥

सफूफ सरतान यों बनाते हैं- कि केंकडे को जलाकर खाकर लें और वह राख १० माशे लें और बबूलका गोंद और गिले अरमनी हर एक ५ माशे- सफेद खशखाश- और काली खश खाश हर एक २॥ माशे - कतीरा ३ माशे पीसके सफूफ बनावें और ७ माशे खाया करें ॥

सातवां पाठ ७
छातीके परदों और झिल्लियों और पट्ठों और उजलों और उसके आसपासके जोडोंकी सूजनोंके विषयमें

इनसूजनों का नाम अलग अलग रक्खा गया है - जो सूजन आगे की पसलियों के भीतर झिल्ली में या उस परदे में जो मरी और मेदे और जिगर के बीच में तना हुआ है - पड़े उसको ज़ात उल जनूब खालिस और ज़ात उल जनूब सही कहते हैं ॥

ओर जो सूजन भीतर के सब परदों में हो उसका नाम खानिका है ॥

ओर जो सूजन पसलियों के बीच के अजलों में हो उसको - ज़ात उल जनूब ग़ैर सही ओर ग़ैर खालिस - कहते हैं ॥

ओर जो ऊपर की पसलियों की झिल्ली में हो तो उस का नाम इन्हीं नामों से रक्खा किया जाता है - ओर जो पीठ की पसलियों के भीतर की झिल्ली में सूजन हो उसका नाम शोसा है ॥

जिगर ओर मेदे के बीच में जो परदा है उसकी सूजन को बरसाम कहते है ॥

जो झिल्ली छाती से मिली हुई है उसकी सूजन को ज़ात उल सदर कहते हैं ॥

ओर इस झिल्ली के साम्हने पीठ से मिली हुई जो झिल्ली है उसकी सूजन का नाम ज़ात उल बेर्ज़ है ॥

जो पहिचान मवाद की ओर उपाय फेफड़े की सूजन में लिखा गया है वही इसका भी करें ओर सूजन की जगह पीड़ा से मालूम हो जायगी - अर्थात जिस स्थान पर पीड़ा होगी वही सूजन भी होगी ओर ज़ात उल सदर में लेप छाती पर लगावें - ओर ज़ात उल बेर्ज़ में कान्धों के बीच में इन सूजनों ओर फेफड़े की -

सूजनों में यह अन्तर है कि फेंफड़े की सूजन में नंडी ऊंडेरतीहुई पड़तीहै - और दम बहुत रुकताहै और इन सूजनों में नाड़ी ऐसी नहीं हो ती और दमभी काम रुकताहै और सरसाम मे होश और ज्ञान जाता रहताहै - इसी कारण से बहुत मनुष्योंको सरसामका धोखा हो जाताहै ॥

कभीऐसाहोताहै कि जिगरकी सूजन में दम रुकने लगताहै - इस कारण से ज़ात उल जनब का धोखा होता है - परंतु ज़ात उल जनुब और जिगरकी सूजन में यह अन्तर है कि जिगर की सूजन में रंग पीला होजाता है और खांसी नहीं होती और जि गर की ओर बोझ और पीड़ा होतीहै और पेशाब गाढ़ा आता है ॥

जब मवाद इन सूजनों का पकजाय तो जो बलग़म मु ख से निकलेगा उसमे पकने के चिन्ह होंगे - उस समय चाहिए कि ऐसा उपाय करे जो पीप बनने से पहिले सब मवाद पक के निकल जाय इसलिये गर्म पानी और आशजो - शहद और हदगुन गुना करके पिलाना चाहिये - इससे मवाद थूक बन कर निकल आवेगा - और रोगी को उसकरवट से सुलावे - जिधर सूज न है - इससे फेंफड़ा सूजन के पास आजायगा और पकेहुए म वादको चूसके निकाल देगा ॥

ज़ात उल जनब दो प्रकार काहै एक हकीकी - दूसरा गैर हकीकी - हकीकी तो वह है जो सूजन हो - और गैर हकीकी यह है कि गाढी रीह पसलियों के आस पास और झिल्लियो में रुकजा य और पीड़ा हो ॥

और जो रीह फंसने के कारण आगे नहीं बढ सकती इस लिये ज़ात उल जनब हकीकी का धोखा होताहै - अब अन्तर इ न दोनों मे यह है कि ज़ात उल जनब रीही में भारीपन और तप

नहीहोती- और ज्ञात उल्लजनव हकीकी में यह दोनों वातें पाई जाती हैं - उपाय इसका यहहै कि रीढ़ी में पकाने वाली औ पधें लगावें और कभी फस्द और जुल्लाव भी देना पडता है - और सामने के हाथ से फस्द उसे लम खोलना शीघ्रता से लाभ देतीहै ॥

आठवांपाठ ८

छाती के आस पास पीप रुकरहने के विषयमें

यह इसप्रकारहोता है कि फेंफडे आदि की सूजन पक के फूट जाती है और छाती के आस पास फेंफड़े से वाहर गिरती है और गाढे होने के कारण वहीं फंस रहती है - न फेंफड़ा उसे चूसके निकाल सकता है और न पेशाव और पारवानह से निक ल सकती है - चिन्ह उसका यहहै - कि इस से पहिले छाती में किसी स्थान पर सूजन हुई होगी और श्लेष्मकाने के महोंगे और हल्की तप होगी - और पेशाव और दस्त और पीप न निकलेगी- इसमें- इन्जीर- सूखा जूफा- हटी- हंसराज- सुनक्के- पानी में औटाके रोग़न वादाम और- मिश्री मिलाके पिलावें कि वह पतला होकार निकलने के योग्य होजाय- और वह औषधें दें जो उसको निकालें - और पेशाव लाने वाली औषधें भी दें - और मसाने को धोवें - और जो दस्तों में निकले तो नर्म करने वाली औषधें दें और जो दोनों में निक ले तो कभी वह दें और कभी वह परंतु ऐसा कम होता है ॥

नवांपाठ १०

छातीकाठण्डयाजाना और जकड़जाना

यहरोग या तो बाहर से अधिकठण्ड पहुंचनेसे होगा या भीतर से पहिले इस कारण को मालूम करें - और उसमें दम रुककर आवेगा - उपाय इसका यहहै कि सातर और हींग आदि के तेल में जुन्द बेदस्तर मिलाकर मलें और गर्म औषधें औटाके धारें और लेपकरें और हींगमाय उल अस्ल में मिलाके एक एक घूंट पिलावें और हरीरो और माउल अस्ल भोजन की जगह दें ॥

कभी यहरोग अफीम पीने और सीसे के पिघलने के धूयेंके पहुंचने से होजाता है - इसमें वह गर्म औषधें जो स्वांस के लिये हैं - और गर्म घासों के जोशांदे से सेकें ॥

जो अफीम पीने से हो उसमें केसर का तेल छाती पर मलें - और जो सीसे के धूयें से होतो कुट का तेल मलना अति लाभदायक है ॥

सीसे पिघलने के धूयेंसे बहुत बचना चाहिये ॥

ग्यारहवांअध्याय

दिलकेरोगोंकेबिषयमें

पहिलापाठ १

दिलकेमिजाज़केबिगाडमें

जो अकेला हो तो ठीक करने ही से जाता रहेगा ॥ जो किसी मवाद से हो तो पहिले उस मवाद को निकाले- और फिर मिजाज की संभाल करे- और जो फस्द की आवश्यकता हो और कोई हानि भी न हो- तो दोनों कन्धों के बीच से पछने लगावे- और मिजाज को ठीक करने और मवाद निकालने में कई बातों का ध्यान रखना अति उचित है। एक तो यह देख ले कि कारण रोग का कम है या अधिक दूसरे रोग एक कारण से है या कई से- तीसरे दिल को कमजोर न होने दे- चौथे जो तप हो तो उसका भी ध्यान रक्खे और उपाय करे- इस रोग का उपाय शीघ्रता से करे नहीं तो पुराना पड़के कठिनता से जाता है ॥

दूसरा पाठ २

खफकान अर्थात दिल घबराने के विषय में

यह रोग जब बढ़ जाता है तो मुर्च्छा आने लगती है और ये दो प्रकार से उत्पन्न होता है- अर्थात् या तो इसका कारण केवल दिल में होता है- या बदन के और स्थान में जैसा मेदा और मेना और जिगर और आंतें और फेंफड़ा आदि या सारे बदन में और जोंक मारने या ज़हरीले जानवर के काटने से हो वह भी इसी प्रकार से समझना चाहिये ॥

जो इस का कारण दिल के सिवाय किसी और स्थान में हो तो उस स्थान को ठीक करे- परंतु दिल को पुष्ट रक्खे- और जो केवल दिल में हो तो मवाद के अनुसार उसे ठीक करे और जुल्लाब दे ॥

और जो यह रोग दिल के तीव्र होने से हो तो शरीर

खिलायें ॥

औरजो वहुतसी उलटी आने या रुधिर निकलने या दस्त आने से दिल कमज़ोर होजाय और उससे यह रोगहोतो दिल की पुष्ट करने वाली औषधें और भोजन दें ॥

[illegible] किसीको यह रोग गरमी से हो उसको चाहिये कि गरम [illegible] और गर्म हवामें और गर्म शहर में न रहें - नहीं तो अवस्था उसकी काम होजायगी ॥ या उल्टी वहुत हुआ करेगी इस रोग का कुछ वर्णन तीसरे पाठ में भी आवेगा ॥

तरेली यशव की कौडी के स्थान पर लटकाना इस रोगमें अतिलाभ दायक है ॥

तीसरापाठ३

मूर्च्छा के विषयमें

जब स्वप्न कान बंद जाताहै तो मूर्च्छा आने लगती है और जब मूर्च्छा वहुत आती है तो मनुष्य मरजाता है - और मूर्च्छा तीन प्रकार की होती है ॥ ...

एक तो यह कि रूह हैवानी जाती रहै ॥ ...

दूसरे यह कि वह रूह घुट जाय ॥ ...

तीसरे यह कि उत्पन्न कम हो - और इन तीनों प्रकारों में रोगी कमज़ोर होजाता है ॥

और रूहके जाते रहने के भी कई कारण हैं ॥

एक यह कि दस्त बहुत आवें या रुधिर अधिक निकल जावे ॥

दूसरे कोई खुशी अधिक और अचानक हो ॥

तीसरे चैन और स्वाद अधिक होने सेभी जाती रहती है ॥

चौथे अधिक पीडा और बेचेनी से ॥

और रूह के घुंट जाने के कारण यह हैं ॥

कि किसी मवाद के अधिक होजाने से या अधिक मदिरा पीने से और अधिक मोटा होजाने से ॥

दूसरे अधिक दुखसे ॥

तीसरे अचानक डर के होने से ॥

और रूह के कम उत्पन्न होने केभी कई कारण हैं- अर्थात् दिल में बिगाड होना या बुरे भोजन खाना या बहुत बीमार रहना और भूखा रहना ॥

जो मवाद रगों से दिल में पहुंचता है वह या तो दिलकी रगों में समाता है या दिलके ऊपर रहता है उसका वर्णन इसी अध्याय के चौथे पाठ में आवेगा ॥

चाहिये कि मूर्छा में कारण के विपरीति उपाय करें- अर्थात् जो मूर्च्छा गरमी से हो तो ठंडी औषधें दिल की पुष्ट करने वाली सुंघावें- जैसे चन्दन - कपूर आदि और केवडे का अरक गले में टपकावें- और जो ठंड से हो तो- मुश्क और केसर आदि सुंघावें- और गले में टपकावें और मिज़ाज के अनुसार लेप करें- और गर्म मिज़ाज वाले को गुलाब और ठंडा पानी छाती और मुंहपर छिडकना लाभदायक है- परंतु जो बहुत दस्त आने से शरीर ठंडा पड गया हो और उसके कारण से मूर्च्छा हो तो पानी और गुलाब न छिडकना चाहिये- इसमें गर्म रोटी सुंघावे और माउल अस्ल मुंह में टपकावें और गरम तेल टूंडी की नीचे मलें ॥

और जो गरमी की अधिकता से वहुत सा पसीना आवे
मूर्च्छा होतो ठंडे पानी या गुलाव से हाथ पांव धुलावें और पसी
ना वन्द करने के लिये मूरद के सूखे पत्ते या माजू पीसकर वदन
पर मलें ॥

और पीडा की अधिकता से मूर्च्छा होतो माजून फ
लो नियां खिलावें - और कूलंज की पीडा में भी ऐसा हीकरें
और जो यह रोग जी मचलाने या हिचकी से होतो
उलटी करानालाभ दायक है और वहुधा मूर्च्छा की वहुत सी
प्रकारों में उलटी कराना अच्छा है - परंतु जो वहुत पसीना आवे
तो न करानाचाहिये ॥

और जो जहरीले जानवर के काटने या डंक मारने
से होतो तिरयाक और विषको दूर करने वाली औषधें दें -
और जो रहम के विगाड से होतो सुगंध न सुघावें - परंतु द
र्गन्धें सुघानाचाहिये - और रहम को अन्दर सुगन्ध लगा दें -
और हर प्रकार की मूर्च्छा में हाथ पांव मलना लाभदायक
है - और जब रोगी चैतन्य होजाय तो कारण के अनुसार उपा
य करें ॥

मूर्च्छा के चिन्ह यह हैं - रंग पीला होना - हाथ पां
व ठंडे होना - और नाडी होले होले चलेगी - और जो मूर्च्छा अ
धिक होगी तो आखें भी वन्द हो जावेंगी - मूर्च्छा और सकते
में अन्तर यह है कि मूर्च्छा वाला पुकारने से सुनता है - और
सकते वाला नहीं सुनता - और जो चिन्ह मूर्च्छा के ऊपर लि
खेगये हैं - वह सकते और सवात के रोग में नहीं होते ॥

सोतदिल औषधें जो दिल को पुष्ट करती हैं यह है -
याकूत - फीरोज़ा - सोने चांदी के वरक - गाउज़वा - ॥

औरगर्म ओषधें यह हैं - जदवार - दरूनज - अम्बर - जुरम्बाद - कच्चारेशम - केसर - दोनो बहमनें - ग - कच्चा अद - बालंगू के बीज और पत्ते - छोटी और बड़ी इलायची - रेहांके फूल औरबीज - कबाबा - तुरंजके छिलके साजिज़ हिन्दी - रासन॥

औरठन्डी ओषधें यह हैं - काहरुबा - बिसद - कापूर चन्दन, बंसलोचन - गिलोमरवतूम - सेव - धनियां॥

और याकूतियां - औरदवाउल मिस्क - भी दिलको पुष्टकरती हैं - और जो खुश्की औरतरी दोनों प्रकारकी ओषधें देना चाहें - तो उन्हीं में से ठन्डी और गर्म ओषधें समझकर मिलादें॥

जब अधिक गर्मी दिल में हो या मूर्च्छाहो तो भीबहुत ठन्डी ओषधें न देना चाहिये - इसी लिये पहिले हकीम दिल के रोगों में कापूर को कुर्सों को बिना केसर नहीं देते थे॥

चौथापाठ ४

दिलके दोनोंकानोंके सूजने के विषय में

दिलसे ऊपर दो वस्तु उभरी हुई हैं जिनमें छिद्र भी हैं और उनमें से हवा दिल को पहुंचती है - उन्हें दिलके कान कहते हैं - जब कोई रोग देर तक रहता है और रुक जाती रहती है तो भोजन दिलको नहीं लगता और इनमें सूजन होजाती है - ये सूजन ठन्डे मवाद से होती है - क्योंकि गर्मी कम होने से भोजन भली भांति नहीं पकता औरवही इस सूजन का मवाद बन ९ - और सूजन गर्मी से हो या ठन्ड से दिल के लिये बहुत

बुरीहै - और गर्मी की सूजन से तो मनुष्य मरही जाताहै और ठन्डी सूजन में उपायका अवसर मिलताहै - इसका जल्दी उपाय करना चाहिये - नहीं तो रोगी दुबला होके मरजायगा - ॥

ठन्डी सूजन के चिन्ह यहहैं - छाती भरी रहनी - बहुधा मूर्च्छा रहनी - और उदासी - आंखोंपर भुरभुरा हट - और मुंहका रंग बहुत पीला होगा ॥

इसमें - बाबूना - नाखूना - हंसराज - गेहूंकीभुसी - पानी में ओटाकर छातीको ठुंडी तक धारें और पटकाने वाली औषधों का लेप करें और दिल को पुष्ट करते रहें - दिल के ऊपर की झिल्ली में जो सूजन होती है, उससे इन बातों की सूजन से कम दुःख और मूर्च्छा होती है ॥

पांचवां पाठ ५

दिलसे धूंआं उठने के विषैमें

यह किसी मवाद के जल जाने से होता है - और जब पुराना होजाता है तो मूर्च्छा आने लगतीहै और बुरी बुरी बातों के ध्यान होते हैं - इससे सौदाका मवाद निकालें - और तरी पहुंचावें - इस रोग में जो रंग रंग के काले दस्त आवें या नकसीर फूटें या बवासीर होजावे तो रोगी जल्दी अच्छा होजावेगा ॥

छठापाठ ६

ख़फ़क़ान कल्ब के विषयमें

इसरोगमें ऐसा मालूम होताहै कि दिल को कोई दबो

रजब ऐसा होता है तो मूर्च्छा आजाती है और मुं
निकलते हैं - और थोडी देर के पीछे रोगी अच्छा
होजाता है - इसमें दिलको ठीक करें और दिल और भेजे
को पुष्ट रक्खें - और मुफर्रह सग़ीर - तिरयाक़ कबीर खि
लावें ॥

सातवाँपाठ ७

तकश्शुरकल्ब केविषयमें

इसमें दिल छिलता है और पीडाभी होती है औरजब पीडा अधिक होती है तो मूर्च्छाभी आजाती है - और थोड़े समय पीछे होश आता है और मूर्च्छा के समय पीडाकी अधिकता से मुंह पर झुर्रियां सी पडजाती हैं - और सारे बदनसे पसीना निकलता है ॥ इससें पहिले कारण को मालूम करें कि मवाद भेजे से आताहै या किसी और स्थान से फिरवैसाही उपाय करें - औरजो पित्तसे होतो ——— पित्तको निकालें - औरजो नज़ला होतोमवाद निकालने के पीछे खश खाशका शरबत चटावें - औरनज़ले की रोकने वाली औषधें दें ॥

आठवाँपाठ ८

क़ज़ाफुलकल्बके विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि दिल बाहर खिचा आताहै जैसे वलटी से - ये रुधिर या पित्त की अधिकता से होगा जो रुधिरकी अधिकता होगी तो मुंह का रंगलाल होगा

और पित्त में पीला-इससे दाहिने हाथ से फास्द बासलीक खो
लें और पित्त का जुल्लाब दें - और चन्दन का शरबत बेद मुश्क
के अरक और गुलाब में घोलकर पिलाया करें- और भोजन
अच्छा दें और दिल को खुश करने वाली औषधें पिलावें॥

नवां पाठ ९.

दिल के बैठने के विषै में

यह दिल में रुधिर या पित्त की अधिकता होजाने से होता है - और कभी इसके साथ धीमी पीडा और मूर्च्छा भी होती है - जो मुंह का रंग लाल होतो रुधिर की अधिकता होगी - और पीला होय तो पित्त के मवाद के अनुसार फास्द खोलें और जुल्लाब दें॥

दसवां पाठ १०

दिल पर तरी छाजाने के विषय में

इस रोग में ऐसा जान पड़ता है कि दिल पानी में डूबा जाता है और फडकता है - यह रोग दिल घबराने की प्रकार में से है - इसमें दिल के ऊपर की झिल्ली में का पानी इकट्ठा होजाता है - इसमें अयारिज खिलावें - और गुलाब के फूल - बालछड़ - बालछड़ - आदि का लेप छाती पर करें और रोगी से मिहनत करावें - और क्रोध दिलावें इससे तरी दूर जाती है - कभी यह तरी इस दूर होकर दिल से चिमट जाती है और क्रोध आता है

खुशीनहीं होती-इसमेंनर्म करनेवाली ओषध और छाती पर खुश्की दूर करने के लिये मोंम रोग़न मलें फिर मवाद को निकालें और दिलको पुष्ट करें - ... र में दिल बहुत उत्तम वस्तुहै - इसको ... रना चाहिये ॥

बारहवां अध्याय

स्त्रीकी छाती के रोगों के वर्णनमें

ईश्वरने स्त्रीकी छातियोंको दूधके लिये उत्पन्न किया है और उसका मांसभी सफेद हैजब रुधिर उनमें आताहै तो दूध बनजाता है - जैसा कि मर्दका रुधिर पेल्हडों में आकर वीर्य्य बनजाता है ॥

पहिलापाठ१

दूधकम होने के विषयमें

इसरोगमें प्रभावके अनुसार दूधकम होजाता है-इस के तीन कारण हैं - एक कभी रुधिरकी उसके निकलजाने से दूसरे किसी रोगके देर तक रहने से और कभी रुधिरकी अधि कतासे भी इसी प्रकार से दूध कम होजाता है कि छाती में क़ु तसा रुधिर आकर दूध नहीं बनने पाता - तीसरे रुधिर के विग इसे भी दूध कम होजाता है - चाहे वह ...

किसीमवाद से चिन्ह उसका यहहै कि उसमवाद के चिन्ह पाये जायंगे या किसी मवाद की अधिकता हो – जो रुधिर की कमी होते मिज़ाजके अनुसार वहवस्तु खावें जो दूध उत्पन्न करे जैसा दूध आदि – और जो रुधिर की अधिकता होतो फ़स्द खोलें और पछने लगावें और भोजन थोड़ादें – और जो मिज़ाज में कोई बिगाड हो तो ऐसे भोजन और औषधदें जो रुधिर को ठीक करें और जो मवाद अधिक हो उसे निकालें ॥

जो दूध पतला और पीला और स्वाद और बास उसकी तीव्रहो तो पित्तकी अधिकता होगी – और जो वह पानीसा पतला और सफेद और खट्टा होतो कफ़की अधिकता जानो – और जो मैला और गाढ़ा और थोड़ा होतो – सौदा की अधिकताहै – और जहां कफ़ और पित्त दोनों मिले होंतो दूधका स्वाद खारी और नमकीन होगा ॥

जो औषधवीर्य्य को बढ़ाती वह दूध कोभी बढ़ातीहै और जब खुश्की और दुबले पन से दूधकम होजायतो चौपायोंका दूध अतिलाभदायक है ॥

यह औषधदूधकोउत्पन्न करती हैं – गाजरके बीज – प्यालके बीज – शलगम के बीज – मूली के बीज – सौफ सब बराबर लेकर उन सबके बराबर भुनेहुये चने मिलाके कूट छानलें और उसमें से १७॥ साढ़े सत्रह माशे ताजे दूधके साथ सवेरे पिलावें – और जो रातको सफेद चने दूध में भिगोके सवेरे छानके और शक्कर मिलाके पिलावें तोभी लाभ होगा ॥

यह लेप दूधको बढ़ाता है – बाकले का आटा ३५ पेंतीस माशे – बादरंज साढ़े १७॥ माशे कूटछान के बादरंज के अर्क में घोलके छातियों परलगावें ॥

दूसरापाठ २

दूधवढ़जानेके विषयमें

खानेका उपायकरें और वह औषधें।

दायकहोंगी और लाख और मुरदा संगरोगन गुल में मिलाके छातीपरलगावें और मलें-औरज़ीरा लगाना और ईसव गोलके पत्तोंका लेपकरना भी

नकालेपकरें ॥

तीसरापाठ ३

छातियोंके सूजने औरतन्नेके विषयमें

जो किसी गर्म मवाद् से होतो सिरकेको मिलाके पुकने में भरके सेकें और हरी मकोय पीसकरलेपकरें और तीन दिन पीछे वह औषधें लगावें जो आगे के पाठ में लिखीगई हैं - और जो ठण्डे मवाद हो तो अजमोद्को कूटकर लेप करें या बाबूने को सोंफके पानीमें पीसकरलगावें औरवही उपायकरेंजो और सूजनोंका हैं ॥

चौथापाठ४

छातीमेंदूधजमजानेकेविषयमें

जब छातीके भीतरदूध जम जाता है तो सूजन उत्पन्न होती है- इसका कारण यह है कि या तो गर्मी से दूध गाढा होजाता है- या ठण्ड से जम जाता है- और देर तक दूध के न निकलने सेभी ऐसा होताहै - कारण के अनुसार उपाय करें और जब देर तक दूधके न निकलने से या बच्चे के न पीने से या किसी और कारण से ऐसा होतो गर्म पानी से छातियों को धारें और होलेहोले दूधको चुसवायें कि सारा दूध निकल जावे - और जो दूधके बन्द होने से छाती पकजाय और सूजजाय और दूधका रंग और स्वाद बिगड़ जाय तो सूजन को पकाने के लिये- बाबूना- अलसी के बीज- मेथीके बीज- खेरूके बीज बराबर लेकर चुकन्दर के पानी में अथवा केवल पानी में पीसके दिन में दो तीन बार छाती पर लगावें और जब सूजन आपसे आप पककर फूटजाय तो अच्छा है नहीं तो नश्तर लगावें - कभी ऐसा होता है कि नश्तर गहरा नहीं लगता और पीपकी जगह नहीं पहुंचता और उससे केवल ऊपरका रुधिर निकलता है - ऐसे समय में दूसरी बार गहरा नश्तर लगावें जिससे पीप निकले फिर घावका उपाय वही है- जो मुंह और जीभके घावों में लिखा गया- क्योंकि छाती में भी पतली और नर्म रगें और मांस हैं - जैसे जीभ और मुंह में-- और जो छाती में गुल्ली होजावे तो मोम रोगन बांधें॥

पांचवांपाठ५

छातीकेपिसजानेकेविषयमें

मूंगकोसर्वके पत्तोंकेपानीसें पीसकारलेपकरें औरजो सूजनहोजायतो उसका उपायकरें ॥

फिटकरीकोरोगनजैत में मिलाके शीशेकेवासनमेंरक्खें और लगावेंतो छातियां वढ्नेन पावेंगी और जोउपाय पेलडोंकेवढ्नेकाहैं वही इसकाहै ॥

तेरह्वांअध्याय

मेदेकेरोगोंकेविषैमें

पहिलापाठ१

मेदेकेमिज़ाज विगडजानेकेविषयमें

गरमी औरठण्ड और मवाद आदिके चिन्ह आपसे आपमालूमहोजावेंगे – जो गरमीसे मिज़ाज में विगाडहो औरकोई मवाद नहोतो – थोडा और हलका भोजन पेटमें जाकर विगडजाता है – औरवहुतसा और भारी नहीं विगडता और भलीभांतिपचजाताहै – खारी कफजब मेदेमें होता है तो – प्यासवढ्जाती है – और ठण्डे पानीसे अधिकहोती है और गरम पानीसे कम – औरजो मेदे में पित्तया गरमी होतोभी प्यास वढ्जातीहै

और यह ठण्डे पानी से बुझती है और गर्म पानी से अधिक होजाती है+ जो मेदे में केवल गर्मी हो और कोई मवाद न होतो मेदे को ठीक करें और जो कोई गर्म मवाद होतो उसे निकालें - मेदे से मवाद उल्टी से भली भांति निकलता है और जो किसी स्थान से मेदे में मवाद आता होतो उस स्थान से मवाद को निकालें - बहुधा भेजे और तिल्ली और जिगर से मेदे में मवाद गिरा करता है - लक्षण प्रत्येक के यह हैं - जो भेजे से गिरे तो नजला होगा और जिगर और तिल्लीसे गिरने में इन स्थानों में बिगाड़ पाया जायगा - जो भेजेके कारण सेहो तो फस्द सरारू खोलें - और जिगर में दाहिने हाथसे फ़स्द बासलीक या असीलम खोलें - कभी ऐसा होता है कि मेदा पुष्ट और साफहो केवल देर में भोजन करने के कारण निर्बल होजावे - और मवाद उस में गिरे यह बात बहुधा गर्म मेदेको होतीहै - कि भोजन न मिलने से बेचैन होजाता है - और कभी उनको भूखकी अधिकता से मूर्च्छा आ जाती है ऐसे मनुष्यों को चाहिये कि आत कालही कोई रवटी वस्तु खालिया करें और पेट खाली न रक्खें - और कभी मेदे की परत में मवाद के फंस जाने से यही रोग होताहै उसमें अयारिज की करा खिलावे उल्टी करावें और जो उसमें शरबत इफसंतीन या पीली हड़ मिलालें तो मवाद मेदे की तह से उखड़ कर निकल आवेगा॥

दूसरा पाठ २
पेटकी पीड़ा के विषयमें

जो यह मेदे के बिगाड़ सेहो तो उसका वर्णन होचु

का- और मेदे में सूजन या घाव होतो उसका वर्णन आगे आवेगा- और जो वाय की अधिकता से होतो पीड़ा फिरती हुई मालूम हो गी और डकारें और हिचकियां आवेंगी और पेट बोलेगा- और फू ला हुआ होगा,- और जब भोजन मेदे में नीचे उतरेगा तो बाईं और पीड़ा होगी- इसमें पेट को सेकें और इलायची को गुलाब में औ टाके पिलावें और पौदीना चबावें कि डकार खुलकर आवें और कमूनी खिलावें और जो वाय गाढ़ी होतो कफ़का जुल्लाब दें और पचाव करने के लिये उपाय करें- और पेट पर बारे लगाने से पीड़ा ज़ल्दी जाती रहती है- किसी कारण से पीड़ा हो उस में शिवं नवीन को गुलाब या पानी में मिलाकर पिलाना अति लाभदाय कहै- कभी ऐसा होता है कि पीड़ा पतले खारी कफ़ से हो और कोई वस्तु ठंडी दीजावे और कफ़ से वाय कुछ कम उठे और इस कारण से पीड़ा में कुछ कमी होते जान पड़ता है कि गर्म मवाद है क्योंकि ठंडी वस्तु से कमी हुई- और इसी प्रकार कभी ऐसा होता है कि मवाद गर्म हो और कोई औषधि गर्म दीजावे और वह धूएं को पचावे और वाय को तोड़े तो धो का होता है कि मवाद ठण्डा है क्योंकि ठण्डी दवा से लाभ हुआ इन दोनों धोकों से बड़ी हानि होती है इसी लिये चाहिये कि और लक्षणों परभी ध्यान रक्खें॥ [illegible]

और अधिक भोजन या तीव्र वस्तु खाने से पीड़ा होतो उलटी करके उसे निकाल डालें और कई दिन तक भोजन कम खाय और जो तीव्र भोजन खाने से हो तो ऐसी वस्तु खावें जो उस प्रकार की न हो॥

और जो मेदे के कमज़ोर होने से यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि भोजन करने के पीछे पीड़ा की अधिकता होगी और जब तक वह उलटी या दस्तों से निकल न लगा पीड़ा नहीं

वढ़ेगी–इसमें वह औषधें दें जोमेदे को पुष्ट करें औरनौशदारू कोखिलाना अति लाभदायकहै॥

औरजो मेदे में मवाद इकट्ठा होजाने से मेदा कमजोर होजाय लक्षण उसका यह है कि भूख बन्द हो जायगी और गर्म मवाद में प्यास और मतली अधिक होगी इस में मेदे से मवाद निकालें और कुर्स कौकब और कुर्स अनीसून लाभकारक है॥

जो मेदे की हिस्से वढजाने से पीड़ा हो पहिचान उस की यह हैकि थोड़े कारण से पीड़ा उत्पन्नहोजातीहै–जैसे भोजन के धूऐं या वीम से या सौदाके गिरने सेजो मेदे के खाली होनेके समय तिल्लीसे गिरता है और उससे भूख मालूमहोती है–और ठण्डे पानी पीने से और इसके सिवाय किसी प्रकारका बिगाड न पाया जावे ऐसे समय में भारी भोजन या ऐसे दवा खिलावें जो मेदे को कुंद और सुन्न करदें जैसे पोस्त खशखाशको पानी में भिगोकर औरछानकर पिलावें॥ ॰।।२

एक प्रकार की पीड़ा ऐसी है जो खाली पेट में नहार सुखहोती है–और खाने के पीछे जाती रहती है–इसके तीन कारण हैं–एक यहकि तरी मेदे में इकट्ठीहोजाय और पेट के खाली होने के समय भूख की गर्मी से ओटे और उससे वाय उत्पन्न होके पीड़ा हो–दूसरे यह कि मेदे के खाली होने के समय जिगर से पित्त मेदे में गिरे–और उससे पीड़ाहो–तीसरेयह कि तिल्लीसे मेदे पर प्रभाव से अधिक सौदा गिरे या सौदामें तेज़ीहो जिससे पीड़ा होजाय–वाय का लक्षण यहहै कि डकार आने से पीड़ा हलकी होजाती है और किसी मवादका चिन्ह नहीं पाया जाता और पित्त और सौदा के लक्षण लिख चुके हैं

परंतु सौदा के कारण मेदे में जलन होती है - आय में तरीको मेदे से दूर करें और उसे पुष्ट रक्खें - और पित्त से सवाद को निकालें - और जो अवश्य होतो दाहिने हाथ से फस्द असीलस खोलें और सौदा में जो सवाद की अधिकता होतो उसे निकालें और बायें हाथ से फ़स्द असीलस खोलें - और जो सौदा की तेजी होतो उसे ठीक करें ॥

श्री

तीसरा पाठ ३

"ज़ौफ़हज़्म और सूयेहज़्म और तुख़मे" के विषय में ॥

कारण इन तीनों रोगों के एक है - जो कारण कमज़ोर होतो पहिला रोग होगा - और जो बहुत पुष्ट होतो तीसरा - और मध्यम में दूसरा रोग होताहै - जो स्वभाव के विपरीति देरतक भोजन मेदे में ठहरा रहे और फिर पककर निकल जाय तो वह ज़ोफ़हज़्म है, और जो भोजन भली भांति न पचे और दस्त पतला आवे तो उसे "सूयेहज़्म" कहते है ॥

और तुखमा वह है कि भोजन बिलकुल न पचे और वैसाही दस्तों में निकले - जैसा कारण देखें वैसा ही उपाय करें - बारह घन्टे से कम और चौबीस घन्टे से अधिक भोजन पेट में न रहना चाहिये - मेदे का जो रोग गर्मी से न होअर्से सेर भर शिकंजबीन सफ़र जली में तीन तोले सोंठ मिला देना अति खास कारक है ॥

चौथापाठ ४

हैज़े के विषय में

यह वह रोग है, जिसमें बिना पचा हुआ और बिगाड़ कारने वाला मवाद शरीर से मेदे में आकर दस्तों और उल्टी में बहुत ज़ोर से निकलता है - और कभी ऐसा होता है कि उलटी नहीं होती केवल दस्त आते हैं - परंतु मतली अवश्य होती है - यह रोग बहुत डरावना है परंतु दस्त और प्यास और कमज़ोरी और नाड़ी का न चलना और हाथ पांव का ऐंठना देखकर बहुत डरना न चाहिये जो उपाय अच्छा किया जायगा तो दूर होजाने की आस है - उपाय करने वालों को घबराना न चाहिये - खास करके जब कि बच्चों को यह रोग हो इसमें जहां तक बने बिगाड़ करने वाले मवाद को दस्तों या उलटी से बिलकुल निकाल डालें - और बन्द न करें - परंतु जो रुकाव देखें तो उल्टी और जुल्लाब से उसे निकालें और कमज़ोरी अधिक होजाय तो मिज़ाज के अनुसार बन्द करें - बंद करने के लिये नीबू के छिलके मुख में रखके उसका रस चूसे और जब प्यास और गरमी अधिक होतो गरम औषधें और तिरफाला फाका कभी न दें - और यह बातें याद रक्खें - एक यह कि रोगी को हिलने जुलने न दें और भोजन की प्रकार से कोई वस्तु न खिलावें परंतु जब अधिक आवश्यकता होतो कोई हल्की और पतली वस्तु खिलावें जैसे अनार या मिठे आदि का रस, और जहां तक बने रोगी के सुलाने का उपाय करें - यद्यपि इस रोग में नींद आना बहुत कठिन है तथापि सब उपाय सुलाने के करने चाहिये - और जब मवाद निकल चुके तो को ई हलका भोजन हाल के अनुसार थोड़ा २ खिलावें ॥

यहां में ऐक चोखेका वर्णन करता हूं कि रातिके अंतमें सवेरा होनेपर कभी उल्टी होती है उससे डरके तिरयाक़ फ़ारूक़ और लौंग आदि गरम औषधियां देते हैं यह बात अच्छी नहीं है क्योंकि गर्म औषधें देनेसे तप होजाती है कभी मवाद के जलनेसे गंभीर बीमारी होजाती वह बुरी है उससे मूर्च्छा और कमज़ोरी और विघ्न अवश्य होता है जो मतलीमें ठंडा पानी पिलाना ज़हर को कम करता है जब ऐसी उल्टी राति के अंत में हो मूर्च्छा आदि के साथ तो तिरयाक़ फ़ारूक़ दें नहीं तो कुछ न दें और तीन पहर तक भोजन न दें और जब मूर्च्छा उत्पन्न होतो तिल्ली के तेल में जाय फल पीसके और गुनगुना करके सारे बदन पर मलें ॥

पांचवां पाठ५

भूख के घटजाने या जाते रहने के विषय में

कारण इन दोनों का एक है जब कारण कमज़ोर होते भूख घट जाती है और जब कारण पुष्ट होता जाता रहती है परंतु कारण इन दोनों के बहुत हैं एक केवल मेदे का बिगाड़ है बिना मवाद के चाहे यह बिगाड़ गरम हो या ठंडा दूसरे मेदे में मवाद का इकट्ठा होना तीसरे सारे शरीर में किसी कारण मवाद की अधिकता हो इस कारण से बदन को भोजन की चाह न हो चौथे शरीर के छिद्रों का बंद होना और चमड़ा कड़ा होना कि इससे मवाद घटता नहीं है पांचवें जिगर का कमज़ोर होना या जिगर और मासारीक़ा के बीच में सुद्दा पड़जाना छठे

रास्ते में सुद्दा पड़ना जो तिल्ली और मेदे के बीचमें है - सातवें मेदे की हिस्स जाती रहे ॥ ३।१५७।१२५।७५×

जो मवाद और सौदा के बिगाड से हो उसके लक्षण आपसे आप मालूम होजांयगें - परंतु वह जो तिल्ली से मेदे पर सौदा[illegible] गिरने से रास्ते के बंद होजाने के कारण से हो, और जो वह मेदे की हिस्स जाती रहने से मेजे के किसी मवाद के कारण हो उन दोनों में मेदे के कारण सब से अच्छे रहेंगे - और उन दोनों में अन्तर यह है कि सौदा के न गिरने से हो उसमें खट्टी वस्तु खाने से बहुत जल्दी भूख लगेगी - और जो मेदे की हिस्स जाने से हो उससे खट्टी वस्तु खाने से कुछ भी भूख न लगेगी - और इस के सिवाय मेजे में बिगाड पाया जावेगा ॥

जब बदन को भोजन की चाहना होती है तो वह रगों से मांगता है और चूसता है और रगें जिगर से मांगती हैं और जिगर मासारीका से और मासारीका मेदे से - उस समय में मेदा जान लेता है और तिल्ली से सौदा मेदे पर गिरता है और उसकी खटाई और कसी लेपन से मेदा ऐंठता है - इसीका नाम भूख लगना है - जब कभी इन में से किसी एक बात से बिगाड पड़ जाता है तो भूख नहीं लगती - सादे बिगाड में उस बिगाड को ठीक करें - और जब कोई मवाद हो तो उस मवाद को निकालें और जब शरीर के छिद्रों के मैला होने से यह रोग हो तो गर्म पानी से स्नान करें - और जो जिगर के कमजोर होने से यह रोग हो तो उसमें जिगर को पुष्ट करें और जो तिल्ली और मेदे के बीच के रस्ते के बंद होजाने से वह रोग हो तो तिल्ली से मवाद निकालें और दूसरे उपाय करें जो तिल्ली की सूजन का है और जब मेदे की हिस्स जाते रहने से हो तो मेजे को पुष्ट करें और आवश्यकता के

अनुसार भेजे से मवाद निकालें– क्योंकि ऐसा पट्ठों भेजे से मे दे पर आया है– मेदे में हिस्स उसी के कारण से है इसलिये भेजेके उपाय से उस में भी लाभ होगा ॥

शरीर मे रुधिर के घटजाने और किसी प्रभाव के छोड देने से या किसी दुःख के होने से भूख बिगड़ जाय तो जो उपाय अवश्य समझें करें– और जो आंतो में केंचुऐ उत्पन्न होने से भूखजाती रहे तो उनके निकाल ने का उपाय करें और इसी प्रकार से कारण को दूर करें ॥

भूख लगाने वाली औषधें यह हैं– शिकंजबीन सफरजली– और नीबू का शर्बत– और हरा पोदीना– सिरके में डाल कर खायें– और खट्टा अनार– और पोदीने का शर्बत चाटें ॥

छठा पाठ ६ ॥

भूखके बिगड़ जानेके बिषैमें

इस रोग में मनुष्य वह वस्तु खाने लगता है जो खाने के योग्य नहीं– जैसे मिट्टी, कोयला, कागज, रुई आदि– और यह बहुधा पेट वाली स्त्रियों को होता है– इसमें बुरे मवाद मेदे में इकट्ठे होजाते हैं और उनके बिपरीत खाने की चाहना होती है इसमें मेदे से मवाद निकालें– परंतु पेट वाली स्त्रियों का कुछ उपाय न करें– उनका ऐसास्वभाव तीन चार महीने पीछे आपसे आपजाता रहता है– और अजवायन और जीरे का चबाना और उसका रस निगलना भी लाभ कारक है ॥

सातवां पाठ ७

भोजन का होकां होजाने के विषय में

इस रोग में ठण्ड से मेदे में बिगाड़ होजाता है और तरी से मेदा ऐंठता है जैसे कि सौदा गिरने से भूख के समय होताहै- लक्षण उसका यह है कि खाने का होंका हो और प्यास बिलकुल न हो और पेट फूला रहै और नाड़ी धीमी चले इससे मेदे को गरमी पहुंचावें- और अनीसून- अजवायन- जीरा- मस्तगी- आदि गर्म औषधें चबावें और मेदे पर बालछड़- जायफल- आदि १ पीस कर मलें- और जो कफ़ से बिगाड़ होतो उस मवाद को निकालें- और जो तिल्ली से मेदे पर सौदा अधिक गिरे और इस से यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि जब तक पेट खाली रहै मेदे में जलन पाई जायगी- इसमें सौदा का मवाद निकालो और दाहिने हाथ से फ़स्द बासलीक और उसीलम खोलें कि जिगर से सौदा निकल जाय और तिल्ली पर बारे लगावें- जो मेदे या सारे शरीर की अधिक गरमी से भोजन जल्दी पचजाया करे- जैसे कि रसायन या कुश्ता खाने से होता है- उपाय इसका समझ के अनुसार करें जिससे वह कारण दूर होजाय- जो इस रोग का कारण भेजे से मेदे पर कफ़ का गिरना और खट्टा होजाना होतो खट्टी डकार आवेगी- और पहिले ईससे नज़ला हुआ होगा- इसमें नजले को रोकें और जो आंतों में केंचुए पड़ने से यह रोग होतो इस कारण से कि केंचुए भोजन को खालें तो उसका वर्णन सोल्हवे अध्याय के नवें पाठ में किया जायगा ॥

आठवां पाठ ८

जूउल बक़र के विषय में

इस रोग में भूख बिलकुल जाती रहती है और भोजन से ऐसा दिल हटजाता है कि एक टुकड़ा खाना कठिन होता है- परंतु सारा शरीर भूखाहोता है- और दिन पे दिन दुबला होता है- और ज़ोर घटजाताहै - और देखने में कोई कारण और रोग नहीं पाया जाता- जब यह बढ़जाता है तो मूर्च्छा उत्पन्न होती है - जब मूर्च्छा होतो पहिले उसका उपाय करें और फिर कारण को पहिचान के उसे दूर करें - और जब रोगी कमज़ोर होतो जुल्लाब न दें - उत्तम उपाय यह है कि मेदे को पुष्ट और ठीक करें ॥

नवां पाठ ९

भूख की सहारन होने के विषय में

इसमें समय पर भोजन न मिलने से मूर्च्छा भी आजाती है चाहिये कि हर समय भोजन बना रक्खें और मेदे को पुष्ट करें और खट मिट्ठे अनार के रस और सेब के रस में रोटी भिगो कर खिलावें - इससे मेदा पुष्ट होता है ॥

दसवां पाठ १०

अधिक प्यास होने के विषय में

यह दो प्रकार का है एक तो सच्ची प्यास होना और दूसरे झूठी-सच्ची प्यास वह है कि जिसमें गरमी के बुझाने के लिये- और तरी घटजाने से पानी की चाहनाहो- इसमें गरमी और खुश्की के लक्षण पाये जावेंगे और पानी से प्यास बुझेगी- और झूठी प्यास वह है कि खारी या जिस्सी काफ या जलाहुआ सौदा मेदे में चिपटे और उसके धोने के लिये पानी की चाहना हो- इसमें पहिले तो ठण्डे पानी से प्यास बुझजाती है परंतु थोड़ी देर पीछे फिर लगती है और मुखका स्वाद मवाद के अनुसार होता है- और जो थोड़ी देर पानी न पिये तो प्यास धीमी होजाती है- जब वह रोग गरमी से होतो यह देखना चाहिये कि वह गरमी मेदे में है या जिगर में- या छाती में- या फेफड़े में- जिस स्थान पर गरमी हो ठंड पहुंचावें- और छाती और फेफड़े और दिलकी गरमी में ठण्डी हवा खाना और ठंडी वस्तु सूंघना अति लाभ दायक है- और मेदे और जिगर की गरमी को ठंडा पानी लाभ देताहै- इसी से पहिचान सकते हैं कि गरमी किस स्थानपर है- और जब कोई ठण्डा मवाद होतो गर्म पानी में सिकंजबीन घोलकर पिलावें- और उल्टी करावें और सौंफ का अर्क दें और चनों को औटाकर उसका पानी पिलावें- परंतु खारी बलगम में सिवाय सौंफ के अर्क के और कोई वस्तु गरम न देनी चाहिये- और जब खुश्की होतो तरी पहुंचावें- और रोगन बादाम और दूध पिलाना अति लाभदायक है- और जो प्यास तप या जिगर की सूजन के कारण से होतो तप और सूजन का उपाय करें- कभी ऐसा होता है कि बहुत सा रुधिर निकलने से पित की अधिकाता होकर खुश्की बढ़ जाती है- और उसके कारण से प्यास लगती है इसमें ठण्ड और तरी पहुंचावें- और

किसी लसदार भोजन के खाने से भी प्यास लगती है- क्यों कि वह मेदे में जाकर चिमट जाती है - और उसके धोने और छुटाने की चाहना होती है- इसका वही उपाय करें - जो कफ़ की प्यास का है - और इसमें पानी का न पीना भी लाभदायक है और कभी बर्फ़ खाने से भी प्यास होती है इसलिये कुछ लोग बर्फ़ को गरम बताते हैं - इसमें नीबू का शर्बत पीवे या थोडा २ गर्म पानी ॥

ॐ
ग्यारहवां पाठ ११

मेदे की सूजन के विषयमें

यह सूजन चाहे जिस मवाद से हो उसमें पीडा और तप अवश्य होगी- परंतु गर्म मवाद में यह दोनों अधिक होंगे और ठंडे में कम- और चिन्ह प्रत्येक के पाये जायगे- जो गर्म मवाद हो तो फस्द खोलें और उलटी न करावे- और पुष्ट जुल्लाब भी न दे- जब कब्ज़ होतो- अमलतास और इमली और गुलाब के फूल हरी मकोय के फाटे हुए अर्क में पिलावे और पहिले चन्दन और मामीसा का लेप करें- और तीन दिन पीछे जौ का आटा ज़र्द खैरू के फूल गुलाब में पीसकर ले पकरे और जब ठंडा मवाद कफ़ का होतो पहिले कफ की मुनिसू दें- अंगूर की लकड़ी जलाकर उस की राख और सोया और सरकंडे की जड और बाल्छड सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करें - फिर जुल्लाब की आवश्यकता होतो अमलतास को औटे हुए जूफे में घोलकर और छानकर पिलावें- और जो २

सौदा के मवाद से सूजन होतो वह सूजन कड़ी होगी— जो उसमें गरमी का लगाव न होतो रेंडी का तेल और अमलतास और म कोय का अर्क मिलाकर पिलावें— तीन दिन में वह कड़ापन जाता रहेगा— और जो यह सूजन पुरानी होजाय तो कुर्स सम्कुल देना चाहिये ॥

बारहवां पाठ १२

दुबेल तुल मेदा के विषय में

इस रोग में मेदे की सूजन फोड़ा बनजाती है— और पक के उसमें पीप पड़ती है— जो गरम सूजन होतो उसे खुराज कहते हैं— इसके पकाने और फूटने के चिन्ह वही हैं जो जातु ल्जाव में बताये गये हैं— जब मवाद इकट्ठा होने पर होतो मेथी और बनौले के बीज और कडुये बादाम कूट पीसकर रेंडी के तेल में मिलाके लेप करें कि वह पककर फूट जावे— और जो आप से न फूटे तो रोगी को गरम पानी पिलाकर सूजन को दबावें— कि वह फूट जावे और फिर माउल असल और गुला ब का शर्बत दूध में मिलाके पिलावें— कि मेदे से मवाद निकल जावे— और जब देखें कि मेदा साफ़ होगया तो कुन्दरु दम्मुल अखबैन— गुलनार— काहरुबा— गिले अर्मनी— पीसकर फं कावें— कि घाव पुरें और आशजो या हरीरा भोजन की जगह खिलावें ॥

तेरहवां पाठ १३

मेदे के घाव और फुन्सियों के विषै में

इसमें पीड़ा और जलन खट्टी और तीव्र वस्तुओं के खाने से होगी - और जिस स्थान पर पीड़ा होगी उसी पर घाव और फुन्सियां होंगी - फस्द खोलें और उसी के पीछे वह उपाय करें जो सूजन का है और काली गाय के मठे में [illegible] फूल और चूके के बीज और बंसलोचन पीसकर देना लाभदायक है - और जब फुन्सियां फूट जांय तो पहिले वे औषधें दें जो घाव को साफ़ करें - फिर वह [illegible] जैसे ऊपर के पाठ में लिखी गई हैं - और नरम करने के लिये अमलतास को हरी कासनी के पानी में घोल कर देना लाभदायक है ॥

चौदहवां पाठ १४

पेट फूलने के विषय में

इसका कारण या तो कोई ठण्ढा और सादा बिगाड़ है या भोजन का बिगाड़ या किसी सवाद का मेदे में इकट्ठा होना - इसके चिन्ह और उपाय जो पहिले मेदे के बिगाड़ में लिख चुके हैं - और [illegible] पिलाना भी लाभदायक है ॥

—०—

पंद्रहवां पाठ १५

डकार जंभाई और अंगडाई अधिक आने के विषयमें ॥

यह तीनों रोग सारे शरीर में या मेदे में वाय के उत्पन्न होनेसे और उसमें से अधिक धुंआ उठने से होती हैं - इनमें मवाद को निकालें और पचाव को ठीक करें - और सौंफ को महीन पीसकार गुलकंद में मिलाकार खिलावें - और मुश्कयासमस्तगीशहद में मिलाकर देना अति लाभदायक है - और सारे शरीर से वाय को खोता है ॥

सोल्हवां पाठ १६

उल्टी उबाकी और मतली और तकल्लुवनफस के विषयमें

उल्टी वह है कि कुछ मेदे से मुंह की राह निकले - और उबकाई वह है कि कुछ न निकले परंतु ऐसा मालूम हो कि उल्टी होती है - और मतली उल्टी से पहिले होती है - और बराबर उल्टी होना तकल्लुवनफस कहलाता है - मवाद के अनुसार जुल्लाव दें - और गरम पानी में सिकंजबीन घोलकार पिलावें - और जो कुछ हानि न हो तो उल्टी कराना उत्तम है - और जो मवाद किसी और स्थान से मेदे में आकर गिरता हो तो उस स्थान का जुल्लाब दें - और ठीक करें - और जो तपमें बुहरान के दिन उल्टी हो तो उसे कभी न रोकें ॥

आमला-कहिरुवा-बंसलोचन-जौकासत्तू-चाहे लादें या इकट्ठादें ॥

यह औषधकफ़की उल्टीको दूरकरतीहै मेदेको पुष्टकरतीहै

जदगरकी-लौंग-मस्तगी-सूखापोदीना-र कूटछानलें-और उसमें से साढ़े तीन माशेलेकर पैंतीस माशे गुलकंद में मिलाकर दें ॥

यहलेपसौदाकी उल्टीकोलाभदायकहै

लादन-माखूना-छैंडीला-मौरद के हरे पत्ते-व में पीसकर मेदे और तिल्ली पर लगावें-और कुर्स से अधिक कफ और सौदा की उलटी में कोई नहीं है-खाली सिंगी विना पछने की ढूंढी के पास और कांधों के बीचमें लगाना और हाथ पांव मलना और रोगी के सुलाने का उपाय करना अति लाभ दायक है-और जब भोजन के बिगाड़ से उलटी आवे तो उस भोजन को बिलकुल निकालना चाहिये-इस लिये चाहे उलटी करावें-चाहे मुल्लावदें और जो मेदे के कमज़ोर होने से होतो उसे पुष्ट करें-और जो कैंचुवे पड जाने से यह रोग होतो उन्हें निकालें ॥

सत्रहवां पाठ १७

उल्टी में रुधिर आने के विषय में

यह रोग दो प्रकार से होता है - एक यह कि कोई रग मरी या मेदे की टूट जाय या फट जाय या रग का मुंह खुल जाय - इस रोग में मरी या मेदे में कोई बिगाड़ पाया जायगा - और दोनों कंधों के बीच में पीड़ा होना मरी के घाव का लक्षण है - इसमें फस्द बासलीक खोलें - और आवश्यकता के अनुसार रुधिर निकालें - और जब बहुत सा रुधिर उल्टी में आता होतो उसमें एक सेर तक रुधिर निकालना लिखा है - और हाथ पांव कसना और पिंडली पर पछने लगाना और रुधिर को बन्द करने वाली औषधें देना लाभदायक है - और रग के मुंह खुल जाने से जो रुधिर आता हो उसके बन्द करने के लिये मुनक्के के बीज समेत खाना अति लाभ दायक है - और जो मरी में कोई बिगाड़ होतो रुधिर के रोकने की जो औषधि पियें वह थोड़ी थोड़ी गले से नीचे उतारें कि देर तक दवा मरी में रहे - और रग के फट जाने में कुर्स कुहैल लाभ दायक है - और ऐसाही हरे बारतंग और हरे कुल्फे का पानी लाभ कारक है ॥

दूसरे यह कि जिगर या तिल्ली या भेजे में कुछ बिगाड़ हो और वहां से रुधिर मेदे में गिर कर उल्टी में निकले - लक्षण उसका यह है कि उन्हीं स्थानों में बिगाड़ होगा - इसमें फस्द खोलें और उस स्थान को ठीक करें और ठहर ठहर कर थोड़ा रुधिर निकालें - परंतु जो मवाद बहुत होतो एक बारभी बहुत निकाल सकते हैं - और जो छाती पर चोट लगने से यह

... खोलें - फिर मुगोस-
-एलुआ- भासके पत्तों के पानी
सकार चोटकी जगह लगावें ॥

अठारहवां पाठ १८

मेदे में रुधिर या दूधको जम जाने के विषय के वर्णन में

जब रुधिर कहीं से आकार मेदे में रहजाय और उसमें गरमी न रहे और वह जम जाय या दूध पीवे - वह उंड से या किसी जमाने वाली वस्तु से जैसे पनीर मेदे में जम जाय - लक्षण दोनों का यह है कि मूर्च्छा और ठंडा पसीना आवे ॥ और कभी जाड़ भी आता है कि इसमें सोया और पोदीना और राई और सिकंजबीन मिलाके गरम गरम पिलावें - सब जानवरों का पनीर जमे हुए दूध और रुधिर को पिघलाता है - परंतु खर गोश का पनीर इस के लिये बहुत अच्छा है - वह पतले रुधिर और दूध को जमा देता है - और जमे हुए को पिघला देता है ॥

कभी ऐसा होता है कि दूध पीने वाले बच्चों के मेदे में दूध जम जाता है - कारण इसका दूध पिलाने वाली के दूध का बिगाड़ है - या मेदे की कमजोरी - पहिले दूध को पिघलावें और दाई से बच्चे को अलग करलें - और ऊंटनी या गौ या बकरी का दूध पिलावें - और उत्तम यह है कि किसी और दाई का दूध पिलावें - जिस का दूध अच्छा हो - और जिस जानवर का दूध दें उसको सुद्दाव या कैसम खिलावें - और जो दाई को दूर न कर

सकें तो भोजन उसको ठीकदे--और कभी २ थोड़ा थोड़ा सा तिरिया काफारूक उसको खिलावें-और बच्चे कोभी थोड़ा सा खिलावें-और जब तक दाई को भोजन न पचे दूध न पिलाने दें-और बच्चे के पेट को कपड़े से टांके रक्खें-कि गरम रहे और सूखा हुआ पोदीना साढ़े सत्रह १७॥ माशे जवीन को खिलाना जमे हुऐ दूध को पिघलाता है॥

उन्नीसवां पाठ १९

अधिक हिचकी आनेके विषयमें

जो बहुत खाजाने से आवें तो खाने के पीछे ऐसा होगा जल्दी से उल्टी कराके भोजन को निकाल डालें और पचाव की औषधियां दें-और कभी इलायची पोदीना चबाने से थम जाती है-और कभी आपसे आप-और जो उनका कारण वाय होतो-वाय उत्पन्न करने वाली वस्तु के खानेसे ऐसा होगा-और पचाव न होगा जैसे बच्चों को बहुत होती है वह वस्तु जो वाय को दूर करें दें-और जो किसी तीव्र मवाद या औषधि के खाने से होतो पहले सिकंजवीन और गरम पानी पिलाकर उल्टी करावें-और ठंडे और तर लुआब और शीरे दें-और गर्म पानी में रोग़न बादाम मिलाकर एक घूंट पीना और भोजन में मक्खन डालके खाना अति लाभ दायक है-और जो मेदे से काफ़ के चिमट रहने से ऐसा होतो लक्षण उसका यह है कि मुंह से पानी निकाले और पचाव नहो और खट्टी डकारें आवें-अयारिज का जुल्लाव देके उस मवाद को निकालें-और जो यह किसी सादे बिगाड़ से होतो लक्षण उस बिगाड़ के पाये जावेंगे-इसमें गर्म औषधें पीवें -या

इस प्रकार में और वाय में और कफ में उत्तम उपाय द
और चिल्लाना है - और जो कारण इसका जिगर

। भी लाभ दायक है - और अर्कीनाना और रवटे अना
र का रस मिलाके पीना और बहुत सा ठंडा पानी पीना और रीटे
को गले में लटकाना और डराना और मस्तंगी और दार चीनी औ
टाके पिलाना लाभ दायक है ॥

बीसवां पाठ २०

इक़िलाव मेदे के विषय में

इस रोग में भोजन ठहरके उल्टी में निकल जाता है - कारण इसका छिल जाना उस आंत का है जो मेदे के पास है जब भोजन पचके उस आंत तक पहुंचता है तो उल्टी होजाती है - और जो उपाय मरोड़ का है वही इसका भी करें ॥

इक्कीसवां पाठ २१

कलकुल मेदे के विषय में

यह वह रोग है जिस में रोगी को यह जान पड़ता है - कि में गरम राख परलोट रहा हूं - इसके दो कारण हैं - एक तो मेदे में पित्त इकट्ठे हो जाय या कोई ठंडा मवाद बिगड़ जाय इस में मवाद और मिज़ाज के अनुसार जुल्लाव दें - और ठीक करें ॥

बाईसवां पाठ २२

मेदेके फड़कने के विषय में

इसरोग में दिल घबराने कीसी हालत मेदे में मालूम होती है-मवाद के अनुसार जुल्लाव दें और जो केंचुरे पड़गये होंतो उन्हें निकालें॥

तेईसवां पाठ २३

वजउल फवाद के विषयमें

यह एक पीड़ाहै जो मेदे से होतीहै-इसमें हाथपांव ठंडे होजाते हैं-और मूर्च्छा होजाती है-और दिलतक इसका दुख पहुंचताहै-और जो यह रोग देर तक रहै तो रोगी मरभी जाता है-जोउपाय मेदे की पीड़ाकाहै वही इसकाहै॥

चौबीसवां पाठ २४

पेटमें जलन होने के विषय में

जो यह रोग बासी रोटी या कच्चे फलों के खाने से यामेदे में कच्ची तरी के इकट्ठा होजाने से होतो लक्षण उसका यह है कि पहिले भारी वस्तु खाई होंगी-और भूख के समय जलन में कमी होगी और जो सौदा के गिरने से होतो भूख के समय जलन होगी और चिकनाई खाने से जलन जाती रहैगी-जो भारी और तर भोजन के खाने से होतो उसमें उलटी करावें-और हल्का

भोजन दें और मेदे को पुष्ट करें – और जो सौदा से होतो बायें हाथ से फ़स्द असीलम या बासलीक़ खोलें – और हड़ का मुरब्बा और सिकंजबीन बज़ूरी दें ॥

पच्चीसवां पाठ २५

मेदे के ढीला होजाने के विषय में

यह दो प्रकार से होता है – एक तो मेदा ढीला होजाय और दूसरे उसके बंधन जिनसे कि वह बंधा हुआ है – ढीले होजाय – पहिले का लक्षण यह है कि पचाव नहीं और छाती उभर आवे – दूसरे का लक्षण यह है कि मेदा झुक पड़े और जिस ओर झुकेगा उसी ओर बोझ होगा – इसमें – इस्तिरख़ा – और फ़ालिज का उपाय करें – और हल्का भोजन दें – और सुगंधि वाली और कब्ज़ करने वाली औषधें दें – और वह उपाय करें जो छब्बीसवें पाठ में लिखा जायगा ॥

छब्बीसवां पाठ २६

मेदे की बुनावट के ढीला होजाने के विषै में

यह रोग बहुत बुरा है इसमें भोजन कभी नहीं पचता और सूजन और बिगाड़ के लक्षण नहीं पाये जाते – जवारिश अ़द खिलावें और मस्तगी का तेल मेदे पर मलें – और ख़रेज़ मुर्ग़ का संगदान सुखाकर और भूनकर सवा दो माशे इतरीफ़ल या शर्बत हब्बुल आस के साथ चटावें – और हरा यशब पीस के पौने दो माशे देना लाभदायक है ॥

सत्ताईसवांपाठ२७

मेदेके खिंचजानेके विषयमें

जो यह रोग मेदे में हो पचाव नहीं रहैगा– और जो पीठ के बंधन से होतो खातेही भोजन आंत में उतर जावेगा और न पचेगा– और जो दहने या बायें बंधन से होतो रोगी उसी ओर झुका रहैगा– और जो हंसली के बंधन में होतो रोगी आगे को झुका रहैगा और पीठ सीधी नहो सकैगी– इसमें वही उपाय करें जो तशन्नुज का है ॥

अट्ठाईसवांपाठ२८

मेदेके कड़ाहोजानेके विषयमें

यह कड़ापन हाथ लगाने से मालूम होता है– और नव बढ़जाता है तो दिखाई भी देता है– इसमें मेदे का बिगाड़ अवश्य होगा– जो गरमी से होतो फ़स्द बासलीक़ या असीलम खोलें– और कच्चा मोम रोग़न बनफ़्शे या रोग़न गुल में पका के लगावें– और जो सर्दी से होतो– बाबूना– बालछड़– सरकंडे की जड़– मेथी के बीज– गूगल– कड़ुये बादाम कूट छान के लेप करें– कभी ऐसा होता है कि तिल्ली के कड़े होजाने से उसी ओर मेदा भी कड़ा होजाता है– इसमें तिल्ली का उपाय करें ॥

—॰—

उन्नीसवां पाठ २९

पहचान उसकी यह है कि वह कहाफन मेदा ओर से पतला ओर दूसरी ओर से मोटा होगा - ओर मेदे में कोई बिगाड़ नहीं पायाजायगा - इसका वही उपाय करें जो ऊपर के पाठ में। लिखागया है ॥

तीसवां पाठ ३०.

पेटचलने के विषयमें

जो कोई सादा बिगाड़ या मवाद होतो लक्षण और उपाय उसका ऊपर लिख चुके हैं - और जो फुंसियों और घाव सेहो तो उसका वर्णन कर चुके हैं - और जो जिगर से कमज़ोरी नहोतो सफूफ़ चारतुख़म और सफूफ़ हब्बुलरसा लाभ करता है - और जो नज़ले के गिरने से हो उसमें सोने के पीछे दस्त आवेंगे - इसमें नज़ले का उपाय करें - और दस्तों को न रोकें - परंतु मवाद को निकालें और मेदे को पुष्ट करें - और जो भोजन से दस्त आवें तो पचाव और भोजन को ठीक करें - और जो रगों के मवाद से ऐसा होतो लक्षण उसका यह है कि शरीर मोटा होगा और दस्त बड़े आवेंगे - इसमें फ़स्द खोलें और बदन मलें और पसीना निकालें और भूखे रहें - और जो जिगर के कमज़ोर होने से होतो दस्त सफ़ेद या हरे आवेंगे - इसमें जिगर और मेदे को पुष्ट करें और जवारिश मस्तगी खावें - और जो दस्त चौरी

-८(१२)
बाधकर आवे - तो मवाद के रंग से लक्षण मालूम होगा - फ़स्द औ
र जुल्लाव से उस मवाद को निकालें ॥

और जो मासारीका में सुद्दा पडने से ऐसा होतो वर्णन
उसका जिगर के सुद्दे में होगा - और जो मेदे के खदाने के मिट
जाने से ऐसा होतो कोई गलाने वाला मवाद गिरा होगा - या
मेदे में गर्म सूजन हुई होगी - या विष खाया होगा - कारण
के दूर करने के पीछे - सिमाक - ज़र्वर्द - बंसलोचन - छा
लियां - चंदन - अनार के छिलके - रसौत - पीसकूर - विही या
अंगूर के पानी मे मिलाकर मेदे पर लेप करें - और सत्तू और से
ब और विही रोगन बादाम मिलाकर खिलावें - और खाने के
पीछे देर तक दाहिनी करवट लेटे रहें - और कहते हैं कि दूध
और मेदे का हरीरा मेदे के खदानों को उत्पन्न करता है - और
जो जुल्लाव के पीने से अधिक दस्त आवें तो खट्टा मठौ ठंडा क
रके पिलावें ॥ ॥३२६

इकतीसवां पाठ ३१

मेदे के छोटा होने के विषय में

७.२१ ०१२ मे ६ ५१

जो यह जन्म से होतो अधिक भोजन चाहे हलका
हो दुख देगा - इसका उपाय सिवाय इसके और कुछ नहीं है
कि नित ऐसा भोजन खावें जो थोड़ा हो परंतु ज़ोर उसमें अधिक
हो - और जो खिचाव या सूजन आदि से होतो उसका वह उपा
य करें जो उचित हो ॥

चौथा अध्याय

जिगर के रोगों के वर्णन में

पहिला पाठ १

जिगर के बिगाड़ के विषय में

चाहे यह रोग मवाद से हो या बिना मवाद के इसमें जिगर में कोई बिगाड होगा – और इसके साथ हरप्रकार के लक्षण पाये जायगे – इसमें कारण को दूर करें – जिगर के बिगाड को कासनी अति लाभ कारक है – और अमलतास के साथ हर प्रकार के बिगाड को लाभ देती है – परंतु अमलतास उससमय परदें जब कि मवाद को नर्म करना चाहें – अब यहा वह औषधें लिखते हैं जो केवल जिगर को लाभ देती है – इन्हें समझ के दें और वायु का ध्यान रख ठंडी औषधें – हरी कासनी का रस – अनार का रस जुरिश्क का शीरा – अस्पगोल का लुआब – चन्दन का शर्बत – और सिकंजबीन – और मठा चाहें इनको अकेला दें या मिलाके, और जो कब्ज न होतो कुर्स तबाशीर काफिर दिही, या नेब के सत में मिलाके या शर्बत हुस्माज के साथ दें + और जो कब्ज होतो हड और अमलतास औटाके दें – और जब रुधिर की अधिकता हो और कोई रोक नहो तो फस्द खोलें – और जो पित्तों से होतो ठंडाई अधिक दें – और जो अवश्य होतो फस्द भी खोलें और ठण्डी औषधों का जिगर पर रखना जिगर की गरमी को बुझा

ताहै- परंतु जब तक जिगर से मवाद न निकाल के ठंडी औषधे न लगावें ॥

औरगर्म औषधे यह है- सौंफ- करफ्स के बीज- शहद का गुलकन्द- असानासिया- दवा उल कारकम- और कफ के निकालने के लिये- माउल उसूल- और इखैर्लि सिंज लाभ दायक है- और सूखे जूफे को पानी में औटाके साढे चार माशे दवा उल कारकम के साथ देना जिगर को गर्म और पुष्ट करता है- और माजून फलसफा और धनियां का इत्तरी फल भी जिगर को गर्म करता है- और मवाद अधिक न निकाले- कि इससे कमजोरी और दुबला पन होता है- और जो इस रोगमें दस्त भी आते होतो कुलफा- रेहां के बीज बबूलका गोंद अत्येक साढे दश माशे भूनकर और गुलाब में भिगोकर दें- और जो सौदाकी अधिकता होतो तरी पहुंचावें- और सौदा के निकालने के लिये इफती मून औटाके या इफ्तीमून की गोलियां माउलजोबन के साथ दें- और कैरूती मुरत्तब जिगर पर लगावें- इससे खुश्की और कडापन जाता है- परंतु कि तरी अधिक न पहुंचावें नहीं तो जिलधर होजाने का डर है- और जो भोजन इस प्रकार के बिगाड के अनुसार हो दें- और इसके साथ कोई और रोग भी होतो उसका भी उपाय करें ॥ इती

दूसरा पाठ २

जिगर के कमजोर होजाने के विषय में

चाहे जिस कारण से हो लक्षण उसका यह है कि दस्त ... होगा- और बदन दुबला होगा-

और भूख बिलकुल न होगी - और दाहिनी ओर बगल में ऊपर से नीचे की पसली तक लम्बाई में पीड़ा होगी - परंतु खाने के पीछे जब भोजन जिगर में जाने लगेगा - तो अधिक पीड़ा होगी और रोगी का रंग सफ़ेद और हरा होगा - और कभी पीला और काला जानना चाहिये कि बदन के प्रत्येक स्थान में चार शक्ति हैं - पचाव दूर करने वाली शक्ति - खैंच लेने वाली शक्ति - और जानने वाली शक्ति - जिगर की चारों शक्तियों में से जो कमज़ोर हो जायगी उसे जिगर की कमज़ोरी कहेंगे - और लक्षण इन चारों की कमज़ोरी के अलग अलग हैं - जिगर के पचाव की कमज़ोरी के लक्षण यह हैं, कि दस्त और मूत्र धोवन कासा होगा और सूजन और उदासी आदि पाई जायगी - और दूसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र थोड़े २ होंगे और उनमें रंग भी थोड़ा होगा और भूख न लगेगी - और तीसरी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त बड़े और सफ़ेद और पतले आवेंगे - और बदन दुबला होगा - और चौथी शक्ति के लक्षण यह हैं कि दस्त और मूत्र मांस के धोवन से होंगे - और रुधिर के पतला होने से बदन ढीला हो जायगा - और मूंह पर सूजन और उदासी होगी - यह रोग जो जिगर के बिगाड़ से हो उसका उपाय लिख चुके हैं - और जो सुद्दे या सूजन या जिगर के फट जाने से या किसी और कारण से हो उसका उपाय आगे आवेगा - और जो किसी और स्थान में हो तो उस स्थान का उपाय करें - और जिगर और रुइ को पुष्ट करते रहें - और फ़स्द असलीम भी लाभ दायक है॥

तीसरा पाठ ३.

जिगर के सुद्दे के विषय में

इस रोग में जिगर के अन्दर या उसकी रगों में थोड़ी गा ढ़ा मवाद फंस रहता है चिन्ह उसका यह है कि शरीर में रुधिर कम उत्पन्न हो और रंग पीला हो - और दस्त धोवन से आवें - और जिगर भारी हो - और जो सुद्दा जिगर के ऊपर होगा तो बोझ अधिक होगा - और मूत्र थोड़ा और पतला आवेगा - और जो सु द्दा भीतर होतो दस्त बड़े और पतले आवेंगे - इस रोग में और जि गर की सूजन में यह अंतर है कि सूजन में तप होती है - और अधि क पीड़ा होती और सुद्दे में बोझ अधिक होगा जो सुद्दा जिगर के ऊपर होतो मिज़ाज के अनुसार मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और जो जिगर के भीतर हो तो नर्म करने वाली औषधें और जु ल्लाब दें - और उपायों में मिज़ाज का ध्यान रक्खें - और जो कबज़ करने वाली वस्तु खाने से सुद्दा पड़े तो रोगन बादाम और दूध और शक्कर का हरीरा पिलावें - और अनार का रस भी लाभदायक है - और जो जिगर की रगों के संकड़ा होजाने से सुद्दा होतो यह रोग जनम से ही होगा - इसका उपाय कुछ नहीं है - सिवाय इसके कि भारी भोजन खाने से बचते रहें - और कभी २ मूत्र लाने वाली औषधें पिया करें ॥

चौथा पाठ ४

मासारीका के सुद्दे के विषय में

लक्षण उसका यह है कि जिगर और मेदे के बीच में

अंदर को खिचाव और बोझ मालूम हो और मेदा और जिगर दोनों चंगे हों - और दस्त कच्चे आवें - और शरीर दुबला होता जावे - इसका ठीक उपाय वही है जो जिगर के भीतर के सुद्दे का है - और वह औषधें दें जो सुद्दे को दूर करें ॥

पांचवां पाठ ५

जिगर के फूलने के विषय में

लक्षण उसका यह है कि दाहिनी पसली के तले पीड़ा और खिचाव हो और बोझ न हो और तर्पं और पचाव के पीछे पेट अधिक फूल जाय - इसमें कामूनी खिलावें - और शर्बत दीनार पिलावें - और गर्म पानी से नेहार मुंह नहावें - परंतु हवा न लगे - और नमक और बाजरे और राख से सेकें - और जो आवश्यकता होतो जुल्लाब दें - और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और हल्का भोजन जिसमें बाय दूर करने वाली औषधें पड़ी हों खिलावें ॥

छठा पाठ ६

जिगर की पीड़ा के विषय में

जो इसका कारण कोई बिगाड़ या सुद्दा आदि हो उसका उपाय लिख चुके हैं - और जो शिरका या सूजन या जिगर के फटने या पथरी सरेस पड़ने से होतो उसका उपाय आगे लिखेंगे ॥

—३•६—

सातवां पाठ ७

शिरका के विषय में

जब नेहार मुंह या मेहनत करने के पीछे या[illegible] ही जल्दी से ठण्डा पानी पीलें उसकी ठंड जिगर को लगे और पीड़ा होतो गरम पानी में कपड़ा भिगोके गरम गरम जिगर पर रक्खें और चाल छड़ और मस्तगी गुलाब और सौंफ के अर्क में पीस कर गर्म करके जिगर पर लेप करें और गरम पानी से धोरें - और जो इसमें हकीम से कोई भूल हो जायगी तो जलंधर या जिगर की सूजन होजावेगी ॥

आठवां पाठ ८

जिगर की सूजन के विषयमें

जो यह रुधिर या पित्तों की अधिकता से होतो लक्षण उसका यह है कि तप और प्यास होगी और जिगर में बोझ और पीडा और जलन होगी और सिवाय उसके और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पाये जायगे - और जिगर की सूजन के भीतर या बाहर होने के लक्षण तीसरे पाठ में लिख चुके हैं - और सिवाय उसके जिगर की भीतर की सूजन में उल्टी और मूर्च्छा और हाथ पांव ठंडे होंगे और बाहर की सूजन में खांसी और दमका रुकाव होगा और हसली नीचे को खिचेगी और मूत्र थोड़ा होगा - और सूजन टेढ़ी दिखाई देगी जब सूजन रुधिर की अधिकता

लगावें और देर न करें - कहीं ऐसा न हो कि कोई रोग उत्पन्न हो जावे ॥

दसवां पाठ १०

जिगरके फोड़े के विषयमें

जो उपाय मेदे की फोड़े का और फेफडे की सूजन का है वही इसका है - जो मवाद आंतों की ओर गिरने लगे तो हलका सा जुल्लाव दें - और जो गुरदे की ओर गिरे तो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें - और जो फूटके पेट में जावे तो जलंधर का डर है उसमें जिक्की जलंधर का उपाय करें - और जो मवाद आपसे आप पक कर पचजावे तो रोगी में कमी होगी - और दस्तों और मूत्र में पीप न निकलेगी ॥

ग्यारहवां पाठ ११

जिगरकी फुंसियोंके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि जिगर में कोई गरमी से बिगाड़ हो और जिगर के स्थान पर जलन हो और कभी २ रोंगटे भी खड़े हों और जाड़ा आवे - इसका वह उपाय करें जो गरम मवाद के बिगाड़ से पहिले पाठ में लिखा गया है ॥

बारहवां पाठ १२

जिगरके फडकने के विषयमें

इसमें ऐसा मालूम होता है कि कोई फूंकता है-और यह बात थोड़ी देर रहकर बंदहो जाती है- कारण इसका जिगर का सुद्दा है- और वाय का फिरना और रहजाना- इसमें वह औषधें दें जो सुद्दे को दूर करें और दाहिने हाथ से फस्द असीलम खोलें ॥

तेरहवां पाठ १३

जिगरकी पथरी के विषयमें

लक्षण उसका यह है कि भोजन पचने के पीछे उलटी आवें और कोई वस्तु चुभे और जिगर में पीड़ा हो और कभी- हाथ लगाने से जिगर पर सूजन और कड़ापन मालूम हो- और देखने मेंभी आवे ॥ और जब दाहिने हाथ से फस्द बासलीक खोलें और नश्तर गहरा लगेतो रुधिर के नीचे रेत हो- इसका उपाय वही है जो अठारह वें अध्याय के दस वें पाठ में लिखा गया है ॥

चौदहवां पाठ १४

जिगरके छोटा होनेके विषैमें

इसका लक्षण और उपाय वहहै जो मेदे के छोटा होने में लिखा गया-परंतु इसमें जिगर सेसवाद निकालना चाहिये चाहे नरम करने वाली औषधें दें चाहे मूत्र लाने वाली ॥

पंद्रहवां पाठ १५

जिगर से दस्त आनेके विषयमें

यह रोग छः प्रकार का है- पहिला चीढ़ी जिसमे दस्तों मे पीप आती है- कारण इसका जिगर के फोडे का फूटना है- उपाय इसका लिख चुके है ॥

दूसरा गस्साली जिसमें मांस के धोवन कैसे दस्त आतेहैं इसका कारण जिगर की कमज़ोरी है उपाय इसकाभी लिख चुके हैं और मुनक्के बीज समेत खाना अति लाभ दायक है ॥

तीसरा दमवी जिसमे रुधिर के दस्त आते हैं- कारणइसका जो केवल रुधिर की अधिकताहो और घाव नहोतो लक्षण उसका यहहै कि बहुत सा रुधिर निकलके ठहर जावे और फिर निकले और चिन्ह रुधिर की अधिकता के उत्पन्न हों- औरजो जिगर पर घाव या चोट लगने से होतो मेदे और आंतों के खाली होने पर थोडा रुधिर बराबर चला आवेगा और चिन्ह घाव के उत्पन्न होंगे- जो यह रोग रुधिर की अधिकता से होतो जब तक कमजोरी न बढने लगे दस्तों को न बंद करें- और आदि में फस्द खोलें और मवाद को दूसरी ओर गिरावें- उपाय इसका यहहै कि हाथ पांव और छातियों आदि को कसकर बांधें और फस्द में थोडा थोडा रुधिर ठहर२के निकालें- औरजो कब्ज़ की आवश्यकता होतो कुर्स कहरुवा- कुलफ़े के बीजोंका शीरा- और बारतंग का पानी मिलाके दें और भोजन थोडा खावें- और जो घाव के कारण सेहो उसका उपाय यही है- औरजो यह रोग रुधिर की अधिकता से नहो तो कारण को दूर करें और कुर्स नफ्स मुहम

मे जरावंद वटाकर देना काबज़ और घाव के भरने के लिये अति लाभदायक है॥

चौथा सफराबी इसमे जिगर पर गरमी होगी - इसका उपायभी जिगर के बिगाड में लिख चुके हैं - परंतु मवाद निकालने और ठीक करने से पहिले दस्तों को न रोकें॥

पांचवां सुदीदी कारण इसका जिगरमें रुधिर या किसी और मवाद का जलजाना है - लक्षण और उपाय भी वही हैं जो चौथी प्रकार में लिखा गया है - और चन्दन को गुलाब में घिस कर, जिगर पर लगावें - और दाहिने हाथ से फस्द असलीम खोलें॥

छठा ग्वासरी इससें दस्त गाढ़े कीचड़ से आते हैं - इसका कारणभी जिगरके फोडे का फूटना है या जिगर के सुद्दे का खुलजाना और बुरे मवाद का बढ़ना या जिगर में मवाद का जल जाना इसमें लक्षण और कारण जानके उचित उपाय करें - और जब तक कमज़ोरी न बढ़ने लगे दस्तों को कभी न रोकें - इन दस्तों और मेदे के दस्तों का अंतर जिगर और मेदे के लक्षण से जाना जाता है - और जिगर के दस्तों में बुरी गंधि होगी - और दस्त बारीक रके आवेंगे - और खाली पेट में दस्त कम होंगे और पीडा नहीं गी, और दिन व दिन रोगी दुवला होता जायगा - और मेदे के दस्तों में यह बातें न होंगी - परंतु जब जिगर के दस्त देर तक रहेंगे तो मेदे से भी दस्त आने लगते हैं - उस समय मेदे और जिगर के चिन्ह इकट्ठे हो जावेंगे - ऐसे समय पर दोनों के अनुसार उपाय करें॥

सोलहवां पाठ १६

सुउल किनी आके विषयमें

यह रोगभी जिगर का बिगाड़ है और जलंधर से पहिले होता है - और लक्षण उसकायहहै किमुंह और हाथ पांव पर सुर सुराहट होती है और जिगर की कमज़ोरी के लक्षण उत्पन्न होते हैं - उपाय इसका जलंधर में लिखा जायगा - जो यह रोग पुष्ट नहीं होता है - इसलिये कामज़ोर औषधें दें और सफर करें और पैदल चलें - और यह रोग बढजावें और जलंधर होता हुआजान पड़े तो सवा रत्ती ऊंटनी के दूध ताज़ा सें दो रत्ती सिकंजबीन मिलावे देंना लाभ दायक है - और अनार का रस पिलानाभी लाभ दायक है और ठंडा पानी बिल कुल न पीवे - और पानी के बदले कासनी और सौंफ़ और मकोय का अर्क पिलावें - औरजो हो सकेतो भूखेरहें नहींतो मूंग या चनोंको औटा के उसका पानी दें और जोयह रोग बवासीर या हैज़ के रुकाने से होतो मूत्र लाने वाली औषधें देकार और लेप लगाकार उन्हें जारी करें औरजो इससे लाभ नहोतो फ़स्द साफ़िन खोलें और रुधिर थोड़ा निकालें और फ़स्द से पहिले जुल्लाब पिलाना उत्तमहै ॥

सत्रहवां पाठ १७

जलंधर के विषयमें

यह रोगतीनप्रकार का होता है - पहिला लहमी इसमें सारे शरीर पर सुर सुराहट होतीहै - और मवाद मांसके भीत

होताहै ॥

दूसरा जिक्की इसमें पेट मशक सा होजाता है- और हाथ पांव पर कभी सूजन होती है और कभीनहीं होती- और पेट के परदों में तरी समाजाती है ॥

तीसरा तबली इसमें गाढी वाय पेट के परदों में समा जातीहै और पेट पर हाथ मारने से तबले कीसी आवाज निकलती है इसमें पहिले कारण को दूर करें- और फिर जिगर को ठीक करें- और गरमी पहुंचावें और जो गरमी होतो उसे बुझावें फिर इस रोग का उपाय करें अर्थात [illegible] और मूत्र और पसीना लाने वाली औषधें दे जैसे शरीर को बालू में गाड़ देना- और खुश्क औषधें मलना जैसे नखचूर और राख और खूब कला और मंडुये का आटा आदि और खुश्क करने वाली औषधों का लेप करना अति लाभ दायक है ॥

३०६

और ठंडा पानी न पीवें और गर्म औषधें भी अधिक न दें- और जो बिना ठंडे पानी पिये चैन न पडे तो छोटी बधनी जिसकी टोटी सकड़ी हो उससे एक एक बूंद पानी गले में टपकावें- और वह पानी भी पक्का हुआ और ठंडा किया हुआ हो और थोड़ा सिरका भी उसमें मिलावें- और जो पानी के बदले कासनी और सौंफ का अर्क दें तो उत्तम है और वह भी थोड़ा हो चाहिये कि दिन भर में भोजन से तिगुने पानी पिलावें- और चंगे रहने के दिनों में जितना भोजन खाते हों उसका छटा हिस्सा इस रोग में खावें अनार अति लाभ दायक है जितना खा सकें खावें और जहां तक होसके नोन न दे और रोटी में सोंफ अनीसून मिलादें और सूखी रोटी खिलावें और अरबी ऊंटनी का दूध अति लाभदायक है- भोजन

और पानी के बदले पिलावें - इस दूध पिलाने की रीति यह है कि पहिले दिन १४० माशे पिलावें - फिर हर रोज़ १४० माशे बढ़ा दिया करें - परंतु इसका ध्यान रखें कि मेदे में दूध जमने न पावे - इसके लिये पोदीना और हब्ब सिकबीनज कभी २ दिया करें - तो दूध न जमेगा और लहसी में हब्ब रावंद का गुल्लाब दें - और जो गरमी हो तो हड़ को ओटाके शर्बतु ब्रुर्द मुकर्रर के साथ दें और जिकी में जो गरमी न होतो काल कालीनजहरि दें - और जो गरमी होतो काल कालानजवामिद और पीली हड़ अति लाभ दायक है और तबकी में मिज़ाज के अनुसार गुल्लाब दें - और सब प्रकारों में मुवाद निकालने के पीछे जिगर के पुष्ट करने के लिये कुर्स अस्वर बारीस आदि खिलावें और मूत्र लानेवाली निरन्तर दें उसे बदलते रहें और जो औषध दें उसे भली भांति पीस लिया करें कि वह जिगर में तुरंत पहुंचे और पसीना लाना भी अति लाभ दायक है रीति उसकी यह है कि नमक और रमनी को रोगन बावूने में मिलाकर शरीर पर मलें और पसीने को पोंछते जावें और दूसरी रीति यह है कि गरम रेत में रोगी को बिठावें या लिटावें और उसके चारों ओर शरीर को रेत से तोप दें केवल मुंह खुला रहे जब रेत ठंडी होजावे तो और गरम रेत डालें इससे सूजन जल्दी घट जाती है और जो सूजन किसी एक स्थान पर हो जैसे हाथ में या पांव में तो उसी को रेत में गाडे और ऐसे ही धूप में बिठावें और गरम नदियों में और समुद्र के पानी से न्हाना लाभ दायक है - और जो नमक को पानी में घोलकर कोई दिन तक धूप में रक्खें तो वह भी समुद्र के पानी के समान होजाता है और यह लेप तरी को सुखाता है और दहलैया - जंगली चापूतर की वीट उस्तुखुद्दूस चनन सुरंजी चर्वी इन सबको मिलाकर मरहम बनालें - लहसी में

सारे शरीर पर लेप करें और तबली में हाथ पांव पर और जिक्की में केवल पेट पर– और चाहिये कि तबली में सवाद निकालने के पीछे वाय के तोड़ने का उपाय करें– उन ओषधों में जो मेदे के फूलने में लिखी गई हैं और सूखा सुद्दाव और इसपंध और सौंफ और अजमूद और नमक अर्मनी और लाल शक्कर पीस कर सुद्दाव के पानी में शाफा बनाकर पैखाने की जगह रक्खें और जिक्की में छेवा देते हैं उससे पीला पानी निकलता है परंतु इसमें डर है– इस रोग में जो पानी रोगी को पिलाते हैं उसके पकाने की यह रीति है कि सौ हिस्से पानी और एक हिस्से सिरका मिलाकर औटावें और जब तिहाई रह जाय तो ठंडा करके पानी के बदले पिलाया करें– इससे जलंधर की प्यास बहुत बुझती है– प्यास के बुझाने और जिगर के सुद्दा खोलने के लिये सिरका अतिलाभ दायक है। और इसके लिये ज़रिश्क भी अच्छा है– जो खांसी हो तो खट्टी वस्तु कोई न दे– जो इस रोग के साथ कोई और रोग हो तो उसका भी ध्यान रक्खें और जिक्की में पेट पर यह लेप करें– नमक अरमनी– मुलैठी– क़र्दमाना– सुनक्के– प्रत्येक साढ़े दस माशे– करंज के बीज २४॥ साढ़े चौबीस माशे– बकरी की मेंगनी १७५ माशे– जौ का आटा और गौ का गोबर प्रत्येक २१० माशे– सब को पीसकर सौंफ या कासनी के पानी में मिलाके पेट पर लगावें॥

तबली जलंधर में जब बहुत दिन होजावें और पेट कड़ा होजावे तो उस समय पेट के कड़ा होने के सिवाय और कुछ डर नहीं है और उपाय उसका यह है कि उन ओषधों का लेप करें– जिनसे पेट नर्म हो उसके पीछे बाबूना– और कूना– दौना मरुवा– सातर सुद्दाव के बीज– जुन्दबेदस्तर– गाव की राख– मरहम– कूट छानके और सुद्दाव के पानी में पीसकर पेट पर लेप करें– और जब जलंधर में कोई

औषधलाभदायक नहोतो पांच स्थान पर दाग़ दें एक मेदे पर दूसरा जिगर पर- तीसरा तिल्ली पर- और चौथा मेदे पर- नीचेको पांचवां टूंडीपर- जो रोगी पुष्टहोतो सबदाग़ इकादां दें नहीं तो थम थम कर ॥

पंद्रहवां अध्याय

॥१५॥

यरक़ान और तिल्ली और पित्तेके रोगोंके विषयमें ॥

पहिलापाठ १

यरक़ानके विषय सें

इसरोग में शरीरका और आंखोंका रंग पीला या काला होजाता है- पीला यरक़ान पित्तोंके फैलने और काला यरक़ान सौदा के फैलने से होता है ॥

पीला यरक़ान बहुत अच्छाहोता है- एक वह जो बुहरान के दिन पित्तोंके चमड़े की ओर आजाने से होता है- इसमें जोरोगी पुष्ट होतो कुछ उपाय नकरें और जो कमज़ोर हो तो उसे गर्म पानी में बिठावें कि शरीर के छिद्र खुलें - और सका

भली भांति चाम से आजाय और केवल सिकंजवीन या कासनी के शीरे के साथ पिलावें जो पीलापन आप से आप जाता रहै तो अच्छा है नहीं तो खोलने वाली और जलौवने वाली औषधें पिलावें ॥

दूसरी प्रकार वहहै कि जिगर में गरमी से कोई विगाड़ उत्पन्न होने के कारण हो यह बहुधा रुधिर की तप में होता है- इसकी पहंचान जिगर के विगाड़ से होगी-इसमें वही उपाय करें जो जिगर के विगाड़ में लिखागया है ॥

तीसरी प्रकार वहहै कि पित्त के गरम विगाड़ से उत्पन्न हो लक्षण उसके यह हैं कि अचानक उत्पन्न होगा और उससे पहिले सफेद मूत्र आवेगा-फिर पीला होकर गाढ़ा और काला हो जायगा-और न कोई विगाड़ और सुद्दा जिगर में होगा- और भूख जैसी की तैसी रहेगी इसमें सिकंजवीन कासनी के शीरे के साथ पिलावें-और जो उपाय जिगर की गर्मी का है वही इसका है ॥

चौथी प्रकार वह है कि पित्त में गरम सूजन उत्पन्न हो और उससे पित्त औरंकार फैले- लक्षण उसका यह है कि तप रहेगी- और जीभ में कांटे पड़ेंगे और उबकाई और उलटी होगी-जो उपाय जिगर की गरम सूजन का है वही- इसका है ॥

पांचवीं प्रकार वह है जो सारे शरीर और रगों की गरमी से उत्पन्न हो-लक्षण उसका यह है कि बदन जलेगा और कब्ज रहेगा और सारे अंग में खुजली और फुंसियां होंगी-और सब लक्षण गरमी के पायेजावेंगे-जो कोई सादा विगाड़ होतो ठंडाई पिलावें और जो मवाद होतो उसे निकालें और सारे शरीर को

ठीक करें- और तरी पहुंचाने वाले रोगन मलें- और उसी प्रकार वे आबज़न में बिठावें ॥

छठी प्रकार वह है जो शरीर के छिद्र बंद होने से उत्पन्न होता है-इसका कारण यह है कि गरमी की ऋतु में बहुत चलने से रेत शरीर पर जम जाती है और छिद्र बंद होजाते हैं-इस से पित्त औंटकर फैलते हैं इसमें खैरु के फूल और गेहूं की भूसी औंटाकर उसके गर्म पानी से न्हावें ॥

सातवीं प्रकार वह है जो जिगर की गर्म सूजन से हो-लक्षण और उपाय उसका उसी सूजन में लिखागया है ॥

आठवीं प्रकार वह है जो जिगर के सुद्दे से हो इसका उपाय भी जिगर के सुद्दे में मिलेगा ॥

नवी प्रकार वह है जो विषैले जानवर के काटने औ विष खाने से उत्पन्न हो- इसमें विष का औगुण दूर करें-और वह औषधें दें जो उचित हो और जो गरम विष खाया होतो-कुर्स काफ़ूर और ठंडी औषधें दें- और जो ठंडा विष होतो तिरयाक फ़ारूक़ खिलावें ॥

दसवीं प्रकार यह है कि पित्त कमज़ोर होजावे और पित्तों को जिगर से न खेंचे- और वह सारे बदन में फैलजावे-लक्षण उसका जी मतलाना है-और पित्तों की उलटी न होना और कब्ज़ रहना और दस्त बिना रंग के होना-इसका उपाय वही है जो जिगर की कमज़ोरी का है ॥

ग्यारहवीं प्रकार वह है कि जिगर और पित्त के बीच में जो रास्ते हैं उसमें सुद्दा पड़े-लक्षण उसका वही है जो पित्त की कमज़ोरी में लिखा गया है-और दस्त भी होले होले सफ़ेद आने लगे-इसमें जिगर के सुद्दे को खोलें ॥

बारहवीं प्रकार यह है कि पित्ते और आंतों के बीच में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े- इसमें अचानक दस्त सफेद आवेंगे- और कब्ज होगा- इसमें भी सुद्दे को खोलें और इन दोनों प्रकारों में अमलतास को करमें कल्ले के पानी में घोल कर कड़ुये बादाम का रोगन मिलाकर पिलाना अति लाभ दायक है ॥

तेरहवीं प्रकार यह है कि इन दोनों रास्तों में बुरा मांस या मस्सा उत्पन्न हो- लक्षण उसका वही है जो ऊपर के प्रकारों में लिखा गया है- परंतु उपाय इसका नहीं हो सकता है ॥

चौदहवीं प्रकार यह है जो कफ़ की कूलंज से उत्पन्न हो- इसका कारण यह है कि लेसदार कफ़ इस रग के मुंह पर चिमट जावे जिससे पित्त गिरते हों- उपाय इसका वही है जो कूलंज का है ॥

इस रोग में कारण दूर करने के पीछे जो पीलापन आंख में रहजाय तो गरम स्थान में बैठकर पुराना सिरका नाक में डालें और सिरका और गुलाब मिलाकर आंख में टपकावें और इफ़्संतीन को औटाकर कुल्ली करें ॥

काला यरकान भी कई प्रकार का होता है- पहिली प्रकार वही है जो बुहरान के दिन हो- तिल्ली के रोगों में इसके पीछे तिल्ली का वह रोग घटजावेगा- इसका उपाय वही है जो पित्तों की प्रकार में लिखागया है- और साबुन और सोये का तेल मलना अति लाभ दायक है ॥

दूसरी प्रकार यह है कि जिगर और तिल्ली के बीच में रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े- लक्षण उसके यह हैं कि भूख

हौले हौले बढ़ेगी- और जिगर में बोझ होगा- और ...
भी हौले हौले बढ़ेगा- इसमें सुद्दे को खोलें - और जुल्ला
व दें- और बायें हाथ से फ़स्द बासलीक अथवा असीलम
खोलें ॥

तीसरी प्रकार वह है कि मेदे और तिल्ली के बीच
में जो रास्ता है उसमें सुद्दा पड़े- इसमें भूख अचानक जाती रहे
गी और तिल्ली में बोझ होगा- इसका उपाय भी ...
रवासा करें ॥

चौथी प्रकार वह है जो रुधिर के जल जाने से उत्पन्न
हो- यह जिगर की गरमी के कारण से होता है- इसका ...
उपाय जिगर के बिगाड में देखो ॥

पांचवी प्रकार वह है जो तिल्ली की कमजोरी से उत्प
न्न हो- इसका उपाय आगे लिखा जायगा ॥

छठी प्रकार वह है जो तिल्ली की सूजन से उत्पन्न हो
इसका वर्णन भी आगे करेंगे ॥

सातवीं प्रकार वह है कि जिगर में अधिक ठंढ से बि
गाड़ हो और उससे यह रोग उत्पन्न हो- उपाय इसका जिगर के रोगों
में लिखा गया है ॥

जब यरकान पीले और काले दोनों साथ हों तो दोनों
हाथ से फ़स्द खोलें- तीन दिन बीच देकर और ऐसी औषधें औ
टाकर पिलावें जो सौदा और पित्तों को निकालें- और जो मवा
द अधिक हो उसके अनुसार उपाय करें- और जिगर और ति
ल्ली को ठीक करें ॥

दूसरापाठ २

तिल्लीके बिगाड़ केविषयमें

गर्मीका लक्षण तिल्ली का जलना और मूत्र और दस्तों का रंग लाल और काला होना और गरमी के लक्षण पाये जाने ॥

और बंड का लक्षण यहहैकि तिल्ली के स्थान पर गड बड़ होनी और भूख का घटना और दूसरे लक्षण ठरड के पायेजावेंगे ॥

और खुश्की के लक्षण यह हैंकि तिल्लीपर कड़ापन होगा और रुधिर गाढ़ा होगा और शरीर दुबला होगा ॥

तरीके लक्षण यह हैकि तिल्लीमें बोझ होगा और शरीर का रंग सीसे कासा होगा ॥

जो कोई सादा बिगाड़ होतो मिजाज को ठीक करें औरजो मवाद होतो उस मवाद को निकालें और फिर ठीक करें जैसा कि जिगर के रोगों में लिखा गया है - और बांये हाथ से फस्द वासलीक खोलें- और जो गरमी से बिगाड़ होतो यह औषधें लाभ दायक हैं - बेद के पत्तों और कुशूस को पानी में सिकंजवीन ? मिलाकर दें - और नर्म करने के वास्ते काली छड़ पानी में औटा के गुलकन्द के साथ पिलावें - और जो गरमी अधिक होतो कुर्सकाफूर कुर्सकुल्लू कंद्रीपून मिलाकरदें - और जो ठरड से बिगाड़ होतो अजमूद का पानी और सिकंजवीन बुजूरी नहारे मुंह पिलावें- और मूली का पानी और तिरियाक अर्बा और गुलकंद- और चित्र की जड़ की छाल- सिकंजवीन बुजूरी के साथ

दें और जो खुश्की से विगाड़ होतो शर्वत वनफ़शा और मालजोव न आदि तरी पहुंचाने वाली औषधें पिलावें या लगावें- और जो किसी मवाद से विगाड़ होतो पहिले फ़स्द और जुल्लाव से सौदा को निकालें- और जो तरी से विगाड होतो-गुलाव के फूल- विझ की जड़-वालछड़-रेवंद-धुलीहुई लाख- और जरिश्क सब को पीसकर कुर्स बनाके दें- और सुखाने वाली औषधों का लेप करें- और नर्म करने के लिये हुव्व अयारिज़ दें- और जो कई मवाद मिले हुये होतो उसका उपाय भी वैसाही करें- और तिल्ली से ठंडा मवाद निकालने के लिये विझ की जड़ की छाल और इफ़ती मून दोनों वरावर कूट छान कर शहद में मिला के ७सात माशे देना चाहिये-, और जो ठंड और खुश्की दोनों हो तो उनका वर्णन आगे कियाजायगा॥

तीसरापाठ ३

तिल्ली की सूजन के विषयमें

जो सूजन गरम हो तप नित्य रहेगी- और जो कारण इसका रुधिर होतो तप चौथे दिन अधिक होगी- और जो पित्त होतो एक दिन बीच करके तप अधिक होगी- और वाकी और लक्षण रुधिर और पित्तों की अधिकता के पायेजावेंगे- और जो कफ़ की सूजन हो उसको तहब्बुन तिहाल कहते हैं- और जो सौदा से हो उसको जसावत या सलावत कहते हैं- लक्षण तरी और खुश्की के दूसरे पाठ में लिखे गये हैं- मवाद के अनुसार उस मवाद को निकालें और ठीक करें- और जो गरम सूजन

होतो जौका आटा- हरीमकोय-झाऊ के पत्तोंके पानी में पीसकर तिल्ली पर लेप करें- और कफ की सूजन में अंगूर की लकड़ी की राख- रोगन गुलमें मिलाकर लेप करें- या बकरीकी मेंगनियां जलाकर उसकी राख तीन हिस्से और किब्रकी लकड़ी की राख ऐक हिस्से सिरके में मिलाकर लगावें- और जो सौदासे होतो अशक सिरके में पकाकर या सुद्दाबऔरपोदीना सिरके में पीसकर या गेहूंकी भूसी सिरके में ओराके अशक मिलाकर तिल्लीपर लेप करें- और कहते हैं कि जो कोई प्याला झाऊ की लकडी का बनाकर खाना पानी उसमें खिलाया पिलाया करें तो चालीस दिनमें तिल्लीकी सूजन घुलजावेगी- और इंसरान-सूखा जूफा- संभालूके बीज- बराबर लेकर कूट छान के शहद में मिलाके सात माशे खिलानाभी सूजन कोघुलादेता है और कुंजीर और किब्रका अचार जो सिरका में बनाहो अति लाभ दायक है- और मरहमों से सूजन को नरम करके बायें हाथ से फ़स्द बासलीक खोलना लाभदेता है-

चौथा पार ४

तिल्ली की सूजनके पकजानेकेविषयमें

लक्षण पीप पड़ने का यह है कि पीड़ा होती है- जैसे कोई वस्तु चुभती हो और सूत्रसें तलेछट निकलती है और दुर्गंधि आती है और कभी ऐसा होता है कि यह सूजन अंदर को फूटती है- और उलटी और दस्तोंमें निकलती है- उपाय इसका वह है जो जिगर के फोड़े का है- परंतु मूत्र लाने वाली औषधें मिज़ाज के अनुसार दें और जो पीप निकलजाने के पीछेभी कदाचित रहे तो

और कब्ज करने वाली औषधों से बचें- और जब सूजन कड़ी होके पुरानी होजाय और कोई औषधं लाभ का रक नहो तो दागदें- इसकी रीति यहहै कि चाम को तिल्ली की जगह से मोचने से पकड़ के अलग उठालें- और लोहेके औज़ार से जिसकी दोनोंके होंभली भांति गरम करके दागदें- और इसी दाग के इधर उधर दो दाग और दें कि तीन चारमें छः दाग होजायें और जो वह औज़ार छःपहल का होतो औरभी अच्छा है- उससे एकही वार में छःदाग होजावेंगे ॥

पांचवांपाठ ५

तिल्लीकीकमज़ोरीकेविषयमें

जो तिल्लीकी खेंचने वाली शक्ति में कमज़ोरी होतो लक्षण उसका यहहै कि भूख बिलकुल जाती रहैगी- और सौदाके रोग उत्पन्न होंगे- औरजो उसकी सासका शक्ति में कमज़ोरी होतो सौदा की उलटी और दस्त होंगे- और जो उसके पचाव में कमज़ोरी होगीतो भूख बहुत होगी- या सौदाके दस्त होंगे- और जो दूर करने वाली शक्ति में होतो तिल्ली बढ़ जावेगी- और भूख जाती रहैगी- तिल्ली के पुष्ट करने के लिये इफ़संतीन रूमी और बालछड़ और झाऊका फल और ज़र्दमाना- और सरकंडे की जड़ की छाल और कबर की जड़ और गुलाब के फूल- गूगल सबको कूटकर झाऊ के पत्तों के पानीसे या सुद्दाब के पानी से मिलाके सिरके के साथ तिल्लीपर लेप करें- और तिल्ली को खुरखुरे कपड़े से मलें- और उसपर खाली सींगी लगावें ॥

छठापाठ ६

तिल्लीके सुद्देके विषय में

इसनें तिल्ली में सोफ होगा - और सूजन के लक्षण बिलकुल न होंगे- जिगरके सुद्दे मेंजो पुष्ट कारने वाली औषधें लिखी गई हैं दें- और सिकंज बीन चुजूरी और कुर्स किब्र अति लाभ दायक हैं॥

सातवांपाठ ७

तिल्लीकी उस सूजनके विषय मेंजो वाय सेहो

यह तिल्ली के पचाव और दूर कारने वाली शक्ति की कमजोरी से होतीहै- इससें तिल्ली को पुष्ट करें- और गेंहु की भूसी और वाबूना और नमक कूट कार सेंकें और नमक अर्मनी और पोदीना और सुहाव सिरके और शहद में पीसकर लेप करें- और चारे लगावें- और सुफूफ तेरातेजक खिलावें॥

आठवांपाठ ८

तिल्लीमें पथरीपड़नेकेविषयमें

इसमें रेत मूत्रमें आती है और तिल्ली में चुभती है और इसके सिवाय और कोई रोग नहीं होता- इंजीर को सिरके में भिगोकर खिलावें और उसीका लेपकरें- और मूत्र लाने वाली ...

औषधें दें जो गुरदे और मसाने की पथरी को तोड़ती हैं॥

सोल्हवाँ अध्याय

१६

आँतों के रोगों के विषय में

पहिला पाठ १

ज़लकुल अमआ के विषय में

इस रोग में भोजन विना पचे हुवे दस्त होकर निकल जाता है- जो आंतो में फुंसियां हों तो जलन और पीड़ा होगी- और पतला और पीला पानी निकलेगा- पित्तों का जुल्लाव दें- और फ़स्द खोलें- और ठंडी औषधें पिलावें- और सुफूफ़ ज़लकुल अमआ खिलावें॥

और जो ... औरचु

भना भीतर होगा- पीड़ ... और कभी नीचे को

और कभी आस ... औषधें

टुंडी के नीचे ल ...

औ ... और

उलटी करावें- औ ...

सुखानेवाली औषधें दें ॥

और जो तरी से बिगाड़ होतो सुखाने वाली सुफ़ूफ़ खिलावें और रोगन गुल पेट पर मलें ॥

और जो पित्तों की अधिकता होतो पित्तों को निकालें और पीली हड़ दें ॥

और जो कफ़ और पित दोनों होतो दोनों को निकालें और पीली हड़ सात माशे-हब्बुल आस-गाज प्रत्येक पौने सात माशे सब को कूट छानकर उसमें इलों पौने सात माशे मिलाके यह सुफ़ूफ़ सात माशे फंकावें ॥

और जो फ़ालिज से यह रोग होतो उसीका उपाय करें ॥

और जो जुल्लाब से यह रोग होतो चार तुख्म भून कर रोगन गुलसें चिकना करके फंकावें- और जो इलों को मठेसे इतना औटावें कि वह जमजावे- तो उसका खिलाना अति लाभ दायक है ॥

दूसरा पाठ २

आंतों से दस्तों में रुधिर आने के विषय में ॥

यह रोग दो प्रकार का है एक तो यह कि आंतें छिलजावें दूसरे यह कि रुधिर की अधिकता से आंतों की रगका मुंह खुलजावे ॥

पहिली प्रकार अर्थात् आंतों के छिलजाने के जो कारण इसके पित होतो पिचके दस्त आवेंगे और फिर दस्तों में छिलके निकलेंगे- और फिर रुधिर छिलकों समेत और आंव निकलेगी- और

गसी के लक्षण पाये जावेंगे- आदि में कच्चे अंगूरों का सत्त और अनार का सत्त और जो औषधें खट्टी और कब्ज़ करने वाली हों खिलावें- और जब मवाद अधिक होजावें तो उसे निकालें- और लुआब अस्पगोल और लुआब बीदाना- और लसदार औषधें जो घाव को बंदकरें पिलावें- और कुलफ़ा का शीरा- गिले अरमनी के साथ पिलाना और सुफूफ मिकलियासा अति लाभदायक हैं- और जब तुरत दस्तों को रोकना हो तो बीजों को भून डालें और केवल बारतंग लाभदायक है- और जब पीड़ा अधिक हो तो चार तुख़्म का लुआब रोगन गुल में मिलाकर पिलावें॥

और जो कफ़ से हो तो पहिले कफ़ के दस्त आवेंगे- और बहुधा ज़ुकाम नज़ले के पीछे ऐसा होता है- पहिले कारण को रोके और वह औषधें दें जो घाव पर चुपकें- जैसे रैहां के बीज और बारंग और जंगली तुल्सी आदि- और काली हड़ घी से चिकना के भूनकर और कूटछानकर तीन माशे लें- और उसके बराबर सफ़ेद कंद मिलाके खिलावें॥

और जो यह रोग सौदा से हो तो हर समय मरोड़ रहे और दस्तों में सौदा और रुधिर और छिलके निकलेंगे- इसमें पहिले कारण को दूरकरें- फिर तिल्ली को पुष्टकरें और मवाद के नरम करने वाले बीज और सुफूफ तीन खिलावें॥

और जो तिल्ली के कड़ेपन और मवाद की ख़राबी से हो तो पहिले कब्ज़ होगा- और जैसी ही वस्तु खाई होगी- और मवाद सी काड़ा निकलेगा- इसमें तर और नरम करने वाली औषधों को दें जैसे बीदाने- अस्पगोल का लुआब- और शर्बत बनफ़शा और रोगन बादाम आदि- और जब आंतों से मवाद निकल जावें और मरोड़ है तो कब्ज़ करने वाली औषधें जो गंधक हों दें- परंतु जब

तक मवादको न निकाललें - और आंतों से सूखा मवाद न निकालडु वे कभी कब्ज करनेवाली औषधें न दें ॥

और जो विषैली वस्तु खाने से मरोड़ हो जैसे हरताल और नौसादर और चूना आदि - उसमें उलटी करावें और ताजा दूध और इरीरे पिलावें ॥

और जो जुल्लाव पीने से मरोड होतो ठंडी औषधें दें और सुफूफ़ तीन और बीज खिलावे - और मठे में लोहा बुझाकर अकेला पिलावें या चांवलके साथ खिलावें ॥

जब आंतोंकी रग खुलजाने से रुधिर के दस्त आवें तो लक्षण उसका यह है कि मरोड़ और बवासीर और जिगर के दस्तों का लक्षण नहोंगे और पीडाभी नहोगी - परंतु पेचिश में पीड़ा अवश्य होती है - जो रुधिर अधिक निकलजाय और रोगी में जोर रहे तो फ़स्द बासलीक़ खोलें - फिर बंद करने के लिये कुसैकड़ुआ और ऐसीही औषधें दें - और गिले अरमनी पौने दो माशे - शर्बत हब्बुलआस या शर्बत अंजबार के साथ देना अतिलाभ दायक है और अनार के छिलके और माज और गिले अरमनी बराबर लेके कूट छानकर गोलियां बनावें - उसमें से सात माशे खाना अतिलाभदायक है - और पेट पर बारे लगानाभी अच्छा है ॥

जबतक होसके इस रोग में अफ़ीम के प्रकारकी औषधें न खिलावें - और जो अवश्यकता होतो थोड़ी दें या उनके साथ उनकी ठीक करने वाली औषधें मिलादें ॥

तीसरा पाठ ३

———

आंतोंसे पीप आनेके विषयमें

कारण इसका या तो मरोड़ से घाव पड़ जाना है- या पक कर सूजन का फूटना- इस में पहिले पेचिश होगी या सूजन होगी ॥

पहिले उन औषधों से हुकना करें जो घाव को साफ करें और फिर उनसे जो घावको भरलावें- हुक़ना करें॥

साफ़ करनेवाली औषधें यह हैं- अनार के छिलके- सिमाक़- आस- चांवल- जौ- सबको कुचलके पानी में औटावें- और मलकर थोडा सा विना बुझा चूना मिला कर हुक़ना करें ॥

और भरलाने वाली औषधें यह हैं- वबूल का गोंद- गिले अरमनी- दम्मुल अखवैन- वरगर्द के रेशे का रस- जलाहुआ काग़ज़ सबको पीसकर हरेवार तंग के पानी में और कच्चे शहतूत के रसमें मिलाके हुक़ना करें ॥

जबमरोडसे पीप आवेतो पहिले कारणको दूर करें- और फिर घावके भरनेका उपायकरें॥

चौथापाठ ४

कूंथकेरदस्त आनेके विषयमें

इसमें आंव निकलती है और कभी उसके साथ रुधिर होता है- यह सूखेमवादके आंतों में फंसरहने से होताहै और ... में आंव निकलती है इसको नहीर ....

मन्सा यह है कि अस्पगोल आदिके पिलाने से आंव नहीं आती-इससें मवाद की नर्म करें और वैसाही हुकना काम में लावें और कभी केवल गरम पानी लाभदेताहै और इससें कब्ज़ करने वाली औषधें कभी नदें - कि उससे मरने काडर है॥

और जो कफ़या पित्त या सौदा से होगईहो तोउपाय उसका मरोड़ में लिखागयाहै॥

इस रोग में हुकना और शाफ़ा अति लाभदायक है॥

और जो नीचे की आंतमें गरम सूजन होने से यह रोग होतो उस स्थान पर बोझ होगा- और कभी तप और मूत्र कठिनता से होगा - इससें फ़स्द खोलें और कमर के नीचे पछने लगावें - और भोजन थोड़ादें और ठंडी औषधें जोकि रक्की गरमी दूर करें पिलावें- और जब मवाद का गिरना रुकजावेतो - खैरू - मेथी - बनफ़शा - बाबूना - करमकल्लेके पत्ते - औटा के पेटको और पैखाने की जगह को धारें- और जो उल्टी हो सकती होतो बहुत अच्छाहै॥

और जो पैखाने कीजगह अधिक ठण्ड पहुंचने से यह रोग होतो - सेकें और गरम पानी से धोरें- और कूटका तेल आदि गरम करके मलें - और ईंट गरम करके उस पर बैठें - और सात माशे हालों भून के नहार मुंह फांके॥

जोसवारी या किसी कड़ी वस्तुपर बैठने सेहोतो मोमरोगन मलें॥

खाली पेटमें खटाई खाने से भी ऐसा रोगहोजाता

हैं उसमें मिश्रीका शर्वत पिलावें ॥

पांचवां पाठ ५

मरोड के विषय में

इसका उपाय कारण के अनुसार करें जो ऊपर लिखा गयाहै - और कूलंज में और कैंचुये पड़ने के रोगमें लिखा जायगा ॥

और जो जुल्लाव के पीने के पीछे यह रोग हो-तो थोडा थोडा गरम पानी पिलावें - और रोगन गुल मलें ॥

छठापाठ ६

आंतों के फूलने औरबोलनेकेविषैमें

यह रोग वाय उत्पन्न करने वाली वस्तुओं के खाने से या बुरा भोजन खाने से होताहै - इसमें अच्छा भोजन खावें - और गुल कंद और गुलाब पीवें और जो कारणकम ज़ोर हो और उससे आंत को ठंड पहुंचैतो आंतें बोलेंगी - इसमें भोजन थोड़ा खावें और माजून फ़लाफली और कमूनी खावें - और जो इसके साथदस्तभी आतेहोतो जवारिशखोर्नी अतिलाभदायक है ॥

———•———

सातवां पाठ ७

कूलंज के विषयमें

यह पीडाहै जो कूलून नाम एक आंत में होतीहै-और इसके साथ बिलकुल कबज होजाता है - और जोकुछ निकलताभीहै तो बडी कठिनता से - कारण इसका गाढ़े कफका आंतमें अटक रहना होतो भोजन बुरा खायाहोगा और कबज अधिक होगा - और खट्टी और नमकीन वस्तुभ च्छीलगेगी पहिले शापे और हुकनोंसे मवाद को नरमकरें फिर जुल्लाव पिलावें - और वह जुल्लाव ऐसा होकि मलकी कोदूरकरे - और मेदेको पुष्टकरे - जैसे सफ़रजली और जवारिश शहरयारा का जुल्लावदें ॥

जुल्लावदेने से पहिले आबज़न, औरसेंक, औरले पन करें ॥

और कबज़ दूर होजाने के पीछे एक रातदिन बिलकुल भोजन न दें - और चनों को ओटाकर उनका पानीम रस मसाला डालदेवें - और पानी थोड़ा पिलावे - औरजोपानीकेबदले गुलाव या सौंफ़ का अरक या माउलअसलदें तो अच्छाहै ॥

जो गाढ़ीवाय के कारण से पीडाहोतो तर्कलेसे चुभेगे और पेट फूलने वालीवस्तु खाई होगी - और पेट बोलेगा - और पीडा एक स्थान परनरहे इसका उपाय भी वैसाहीकरें और जुल्लाव देनेसे पहिले इसमें लेप आदि कर सकतेहै और सोयेका तेलमलें और कमूनी खिलावें - और कडउपाय

करें- जो मेदे के फूलने में लिखा गया है - उरद के आटे की रोटी एक ओर से पका के कच्ची ओर से गरम गरम पेट पर बांधना और वारे लगाना अति लाभदायक है ॥

पेट पर सोदाके गिरने से भी कुछ मनुष्यों को ऐसी पीडा होती है - चिन्ह उसका यह है कि अचानक पीडा हो-और पेट फूल जावे और खट्टी डकारें आवें-परंतु पीडा अधिक नहो इसमें सोदा का मवाद निकालें और फस्द असीलम खोलें और तेल मलें - और जो आंतोंकी सूजन के कारण से पीडा होतो मवाद के अनुसार जुल्लाब दें - और फस्द खोलें - और वह उपाय करें जोमेदे की सूजनमें लिखागयाहै - टौले और कफकी सूजन बहुत काम होतीहै - और सौदा की सूजन में उन औषधोंसे हुकनाकरें जोवाय कोतोडें - और उन में रोगन मिलेहो ॥

औरजो आंतके टलजाने से यह पीडा होतो कूदने उछलने से ऐसा हुआ होगा - इसमें पेट मलवावें इसीकोलो गनाफ टलना कहते हैं ॥

औरजो आंत अपनी जगह से उतर आवे और मवाद आंत में फंसा हुआ होतो उस मवाद को निकालें - और फि सलाने वाली औषधें दें - और ऐसा उपाय करें कि फिरय हरोग नहो ॥

औरजो आंतोके भीतर पित्त इकट्ठाहोवे तोकेवल मवाद ही निकाल लेने से लाभ होजायगा ऐसा बहुत कम होताहै क्योंकि पित्त पतले होतेहैं और मैं उत्पन्न भी कम होतेहैं ॥

और जो मसाने और गुरदे और जिगर और तिल्ली और रहम की सूजन से हो तो उनका उपाय करें ॥

एक प्रकार कूलंज की बहुत बुरी है - इसको एला उस कहते हैं - और उबकाई और उल्टी भी इसमें होती है ॥

और जब यह रोग बढ़जाता है तो पैखाना मुंह से निकलता है - इसका उपाय वही है जो ऊपर लिखा गया है ॥

इसरोग के आदि में फ़स्द अति लाभदायक है - जब आंतों में सूजन हो या उसका डर हो ॥

हर प्रकार की कूलंज में यह औषधें अति लाभदायक हैं - हुदेर कासास - सुखाये हुए केंचुए - भुनाहुआ बिच्छू - जलायाहुआ बारहसिंगा - और यही औषधें मरोड़ के रोगको एकदम से खोदेती है ॥

आठवां पाठ ८

बिना पीड़ा के कब्ज़ होने के विषय में

इसमें कूलंज का उपाय करें - और शर्बत बनफ़शा रोगन बादाम के साथ पिलावें ॥

नवां पाठ ९

पेट में केंचुए पड़ने के विषय में

यह चार प्रकार के होते हैं - एक लंबे बालिश्त भरके या गज़ भरके उनको केंचुए काहतेहैं ॥

दूसरे चौड़े जैसे कद्दूके बीज होतेहैं इनको कद्दूदाने काहतेहैं ॥

तीसरे गोल होते हैं ॥

चौथे पतले और छोटे इन को चिंचिने का हते हैं ॥

लक्षण इनका यहहै कि दिनको होंट सूखे रहें और रात को राल बहाकरे - और मेदे के मुंह पर क़ै ईदमाल मडो और भूखके समय केंचुए ऊपर चढतेहों और ऊपर ही की आंतमें पडतेहों औरकद्दूदानोंसे और तीसरी प्रकार से भूख अधिक होजातीहै - और जो कभी कभी दस्तों में भी निकला करते हैं - और- कूलून- और- अंजैर- नामकी आँतों में उत्पन्न होतेहैं - और चिंचिने बच्चों के बहुत पडतेहैं और नीचेकी आंतों में होतेहैं - उनमें पैखाने की जगह खुजली होतीहै ॥

इन्हें मारके निकालें- इसप्रकार सेकि तीन दिन बराबर ताज़ा दूध मीठा डालके पिलावें - और चौथे दिन दूधके साथ यह औषधें दें छिलाहुआ बिरंग- काबिलीये रेवस- तुरबुद- कमीला प्रत्येक १७॥ माशे - बाकला- मिश्री - कड़वा कूट प्रत्येक २४॥ माशे - शीर्ह ३५ माशे - नमक ३॥ माशे कूट छान के १०॥ माशे दें और पीने के समय नाक बन्द करलें - नहींतो कीड़ोंको इनकी बास पहुंच जावेगी ॥

गरम मिज़ाज वालेको गरम औषध कभी नदें उस

केलिये यह औषधहै खट्टे अनारके पेडकी छाल और रज
सीकी जडपानी मे औटाके और छानके पिलावें - इससेकी
डेमर जातेहैं - और दस्तोंके साथ निकल आतेहैं - और जो
दवा पीना बुरा मालूम होतो हुकना या शाफ़ा करें - और ये
भी नहोसकेतो सिमावा अकाकिया पिले सर्वेतुस शराबमें
पीसकर पेट पर लेप करें - या कडुये बादाम और कमीला
और तुरमस और किन्न और अफ़सन्तीन को सिरके में पीसकर
लेप करें ॥

और चचचों के लिये यह उपाय अतिलाभ दायकहै
कि मंहदी और मोम मिलाके बत्ती बनावें और उसकाशाफ़
करें फिर थोडीदेर पीछे दियेसे देखके जो कीडा किनारे हो
उसे मोचने से पकडके खेंचलें - जैतून का कच्चातेलभी स
बप्रकार के कीडों को लाभ दायकहै - चाहे खिलावें या पा
खानेकी जगह लगावें ॥

सत्रहवांअध्याय

॥१७॥

उन रोगोंके विषयमें जो पैखाने कीजगह
होतेहैं ॥

पहिला पाठ १

बवासीरके विषयमें

इसमें पैखाने के स्थान पर मससे फूल आतेहैं-जो उनसे रुधिर और पीला पानी बहै तो उसे खूनी बवासीर कहते हैं और जो कुछ न बहै तो बादी बवासीर कहलातीहै इस रोगमें सौदाके मिलने से रुधिर गाढ़ा होजाता है या वह जलजाता है और कभी पित्तों के मिलने सेभी होताहै-रुधिर के गाढ़ा होनेके लक्षण यह हैं शरीरभारी होगा और पीडा और खरक अधिक होगी-और पित्तों के मिलने के चिन्ह यह हैं कि मससों में जलन और पीडाहोगी-फस्द खोलें औ जो न हो सकें तो पछने लगावें और कब्ज़ को दूर करें और रुधिरको ठीक करें और जो वह अधिक निकलता होतो कु स कहरुवा खिलावें-और जब काला रुधिर निकलने लगे और कमज़ोरी का डर नहीं तो कभी बंद न करें क्योंकि इससे और रोग नहीं होने पाते और जो मससे फूले हों और पीडा हो प रंतु उनसे रुधिर न बहता होतो खतमी और सोये से सेंके-और रोगन शफतालू मले-और मरहम सफेदे का अतिला दायकहै-परंतु मस्सोंके काटने में डरहै-जो काटें तो सकम सा रहने दें और गूगल और मुर और वकायनके छिलके और काँचली सांपकी और टुंडनी वैरान की-चाहे सबको व हे सबको जलाकर धूनी लेना मस्सोंको सुखा देताहै-औ र गिरा देताहै ॥

१

८६२ ०५ ५२

दूसरा पाठ २

बादी बवासीरके विषयमें

इस रोग में गाढ़ी वायु आंतोमें उत्पन्न होतीहै- वह कभी नीचेको उतरतीहै और कभी पीठकी ओरजाती है और कभी हाथ पावों में आजाती है-औरकभी खून बहताहै औरकभी पेट बोलताहै औरकभी पीडाभी होतीहै-इसमें सोदा का मवाद निकालें और वायु की तोडने वाली औषधदें- और किबरकी जड़ की छाल एक हिस्से और सातर फारसी उससे आधी पीस कर सात मासे फंकावें और बदन का मलना और घोडे की सवारी और महनत करना और फ़स्द बासलीक़ अति लाभ दायकहै ॥

तीसरी पाठ ३

पैखाने केस्थान परनासूरहोजाने के विषेमें

उससे पीलापन बहा करताहै और बड़ी कठिनाई से अच्छाहोता है- इस रोग में शियाफ़ गर्व पानी में घिसकेस वें और आमकोदोतीन बूंदें इसकी चित लिटाके टपकाया करें- और जब तक दवा सूख नजाय वैसेही पडेरहें- औरजोना सूर में बत्तीजा सके तो बत्ती उसी शियाफ की औषधों के गोंद कापानी लगाके रक्खें- और सलाई में रुई लपेटके बत्ती की जगह रखना उत्तम है ॥

और जब नासूर आंतके पार होजाता है तो अच्छा नहीं

होसकता॥

चौथा पाठ ४

पैखाने की जगह सूजन होजाने के विषय में

जो गरमी से होतो पीड़ा और जलन होगी - फस्द खो लें और पछने लगावें और उलटी करावें - और जब सूजनप कने पर आवेतो तुरंत चीरदें क्योंकि देर में नासूर पड़ने का डरहै - और जो सूजन ठण्ड और कफ़ की अधिकता से होतो सूजन नरम होगी और गरमी के लक्षण बिलकुल न होंगे उसमें उलटी करावें और पकाने वाली मरहम लगावें॥

पांचवाँ पाठ ५

पैखाने की जगह फट जाने के विषय में

इसका उपाय वहीहै जो होठों के फटने में लिखाग या और बहुत ठंडे पानी से बचें - और खट्टी वस्तुन खावें - और कबज नहोनेदें - इसके लिये सवेरे शर्बत बनफ़शा में रोगन बादाम और लुआब बीदाना मिलाकर देतेहैं - और नरम भोजन खिलातेहैं॥

छठा पाठ ६

शिश्नके ढीलाहोजानेके विषैमें

शिश्न एक पट्ठाहै जो दस्त और वायु को रोकताहै जब वह ढीला होजाताहै तो दस्त और वायु नहीं रुक सकती अचानक निकलजाती है - यह बात तरी और ठंड पहुंचने से होतीहै - इस रोग में उस मवाद को निकालें - जिससे पट्ठा ढीला होगयाहो और उस उपाय से मिज़ाज को ठीक करें - जो फ़ालिज में लिखागयाहो - औरजो सूजन होतो उसका उपाय करें - औरजो चोट लगने या ववासीरके मस्से काटने से यहरोग होतो उपाय उसका कठिनहै ॥

सातवां पार ७

कांचि निकलनेके विषयमें

जो कारण इसका सूजन होतो उसका उपाय करें - खतमी और बनफ़शा औटाके रोगीको उसमें बिठलावें - और मोम रोगन मलें तो वह अन्दर बैठ जातीहै - और जो तरी से पट्ठा ढीला होगयाहो उससे यह रोगहोतो ज़रा सेर्के यनेसे निकल आया करेगी - और सहजसे अंदर को चली जावेगी - उपाय उसका यहहै कि रोगनगुल्ल मलदे ऊपर सफेदा - गुलनार - माज़ू - फिटकरी - सुरमा - अनार के छिलके - पोस औरछानके छिड़कें और गद्दी रखकर कसदें ॥

आठवां पाठ ८

पैरवाने की जगह गहरा घाव होजाने के विषय में

इसमें काला मरहम लगावें और सुरवाने वाली औषधें छिड़कें - और जो पीडा की अधिकाता होतो अफ़ीम मलें औरव ही उपाय करें जो और घावों का है॥

नवां पाठ ९

पैरवाने की जगह खुजली होने के विषय में

जो कीडे उत्पन्न होने से खुजली होतो लक्षण और उपाय उसका लिख चुके हैं - और जो कोई मवाद होतो उसी के अनुसार उसे निकालें - और हर मवाद में तुंडी पर पछने लगाना और सिरका और रोग़न गुल मलना अति लाभदायक है॥

अठारहवां अध्याय

गुरदों के रोगों के विषै में



पहिलापाठ १

गुरदेके बिगाड़के विषय में ॥ ८ ॥

लक्षण गरमी और तरई और सवाद के वैसेही पायेजा यगे जैसे कि जिगर के बिगाड़ में लिखेगये हैं - और उपाय भी उसी परकार का करें - और जब गरमी से बिगाड़ होतो काफूर मलना लाभदायक है - परंतु अधिक न मलें कि इससे पथरी पड़जाने का डर है - और विषय की चाहना भी घटजाती है

दूसरा पाठ २

गुरदे के दुबला होजानेके विषैमें

लक्षण इस रोगका यहहै कि मूत्र अधिक और सफेद आवेगा - और शरीर दुबला होगा और विषय की चाहना भी कम होगी - और पीठ और सिरमें पीछेकी ओर हलकी पीड़ा बराबर रहेगी - जिस कारण से हो उसकारण को दूर करें - और फिर गुरदेको मोटा करनेके लिये - पिस्ते - बादाम - बुंदुक - नारियल - शक्कर के साथ और दवाउत तुरंजबीन - और विषयकी चाहना उत्पन्न करने वाली औषधें खिलावें ॥

तीसरा पाठ ३

गुरदेकी कमजोरीके विषय में

लक्षण इसका यह है कि देदा और सूधा होने से और करवट वदलने के समय कमरसें पीड़ा होगी- और विषयकी चाहना और सूत्र घटजायगा - और मांसके धोवन कासा सूत्र आवेगा- जो कोई सादा बिगाड होतो उसी के अनुसार उसे ठीक करें ॥

औरजो गुरदे के दुवला होने से ऐसा रोगहोतो उसका उपायकरें ॥

औरजो गुरदेके खाल ढीला होजाने से- औरउसके रास्तोंके खुलजाने से यह रोग होतो कारण उसका विषय की अधिकता या चोट लगना या सूत्र लानेवाली औषधोंका अधिक पीना होगा - इसमें कारण को दूर करें - औरजो औषधें जिगर को पुष्ट करतीहैं वह गुरदेकोभी पुष्टकरती हैं- और माजून लबूब और विषय की चाहना उत्पन्न करने वाली औषधें अति लाभ दायकहैं ॥

चौथापार ४

गुरदे में वायकी पीड़ाहोनेके विषयमें

इस रोगमें कमरके आसपास पीड़ा और खिचावहोगा औरबोझ नहोगा - और पथरीके लक्षण भीनपायेजावेंगे - और सुखके समय पीड़ा घटजाया करेगी - इसमेंजीरा - सोया- सुदावकेबीज- बावूना सबको पीसकर गुरदेकेस्था

पर लेप करें- और शर्वत कुंहूर पिलावें और वाय की तोडने वाली औषधें खाना और शरीर को मलना और पचात्र कोठीका करना अति लाभदायक है ॥

पांचवां पार ५

गुरदे की पीड़ा के विषय में

इसका कारण गुरदे की वाय या कमज़ोरी या सूजन या पथरी या घाव होगा- उस कारण को दूर करें- और बाबूना औ रसोया और खतमी और करम्ब के पत्ते औटाके भाब जन करना हर प्रकार की पीड़ाको लाभदायक है ॥

छटा पार ६

गुरदे की सूजन के विषय में

लक्षण और उपाय इसका मवाद के अनुसार वह है जो जिगर की सूजन में लिखागया- परन्तु कमर में पीड़ा होगी- जो दाहिने गुरदे में सूजन हो तो कुछ ऊपर को जिगर के पास पीड़ा होगी- और जो वायें गुरदे में हो तो नीचे को मसानै के पास पीड़ा होगी- यह इस लिये है कि दाहिना गुरदा वायें गुरदे से कुछ ऊंचा है ॥

और जो पीड़ा अधिक हो तो परदों के पास गरम मवाद से होगी ॥

औरजो सूजन गुरदे के रस्तों में होतो मूत्र रुकेगा- औरजो आँतों के पासहोतो पीड़ा भीतर की ओरहोगी- और अचम्भा नहीं कि क़ुलंजका रोगभी उत्पन्न होजावे- और जब गुरदे की सूजन पुरानी होजावे।तो फ़स्द माबिज़ लाभ दायकहोगी॥

सातवांपाठ७

गुरदेके घावके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि मूत्रमें पीप और रुधिरऔ र छिलके निकलेंगे- और गुरदे के स्थान पर पीड़ाहोगी इस में मवाद को ठीक करें- और जिस ओरके गुरदे में घावहोउ सीओर फ़स्द बासलीक़ खोलें- और पुष्ट जुलाब कभीनदे परंतु हलका जुल्लाब दे सकते हैं-इसके पीछेरास्ते औरम ड के अनुसार मूत्रलाने वाली ओषधें पिलावें- और फिरघा व भरने वाली ओषधें दें- जैसे गिले अरमनी-दम्मुल अख वैन- जलाहुआ कागज़- कुंदर आदि और कुर्सकाबानज और वर्नादकुल कुफ़ूर खिलाना लाभदायक है॥

आठवांपाठ८

गुरदे में खुजलीहोनेके विषयमें

सात दिन में दोबार मवाद को निकालें- और उलटी करें- और शर्बत बनफ़शा पिलावें- और शियाफ़ाबियज़

को रोगन बादाममें घिसके मूत्रकेछिद्र में टपकावे- और बन्नी दवुल कुसूर खिलावे॥

नवांपाठ ९

जिया वितुसके विषय में

यह वह रोगहै कि पानी जैसा पीवे वैसाही तुरंत सूत्र में निकल आवे- इसका उपाय गर्मी और ठण्डदेख केकरना चाहिये- गरम में कुर्सकाफ़ूर और कुर्स तवाशीरऔ रकुर्स जियावितुस दे- और ठण्डमें मसरोदीतूस और माजून कासिकुल चोल खिलावे॥

दसवांपाठ १०

गुरदेमें पथरीपड़ने और मूत्रमें रेत आनेके ॥ विषयमें॥

इसरोगकी वारियां होतीहै- कभी रक्तसहीनेके पीछे कभी वर्ष दिनमें और कभी कामवृद्धि में जोर करताहै॥

इसका लक्षण यह है कि इड्डी की जगह खिंचावऔ रबोझहोगा और मूत्र पीला और लालआवेगा- और कभी २ उससे पथरीभी निकलेगी- औरजब आतें भरेंगी तो पीडाअ धिक होगी॥

औरजो सूजन गुरदे के रस्तों में होतो सूत्र रुकेगा- औरजो आँतों के पासहोतो पीड़ा भीतर की ओरहोगी- और अचम्भा नहीं कि कुलंजका रोगभी उत्पन्न होजावे- और जब गुरदे की सूजन पुरानी होजावे। तो फ़स्द साविज़ लाभदायकहोगी ॥

सातवांपाठ ७

गुरदे के घावके विषयमें

लक्षण उसका यह हैकि सूत्रमें पीप और रुधिरऔर छिलके निकलेंगे- और गुरदे के स्थान पर पीड़ाहोगी इसमें मवाद को रोका करें- और जिस ओरके गुरदे में घावहो उसी ओर फ़स्द बासलीक़ खोलें- और पुष्ट जुलाब कभी नदें परंतु हलका जुल्लाव दे सकते हैं- इसके पीछेबारसी ओरमर्ज़ के अनुसार सूत्रलाने वाली औषधें पिलावें- और फिरघाव भरने वाली औषधेंदें- जैसे गिले अरमनी- दम्मुलअख़वैन- जलाहुआ काग़ज़- कुंदर आदि और कुर्स कोकनज और वर्नादकुल कुजूर खिलाना लाभदायकहै ॥

आठवांपाठ ८

गुरदे में खुजलीहोनेके वियैमें

सात दिन में दोचार मवाद को निकालें- और उलटी करें- और शर्वत वनफ़शा पिलावें- और तिर्याक़ अविफ़्म

को रेगान वादमें घिसके मूत्रके छिद्र में टपकावें-और खनी दकुल बुजूर खिलावें॥

नवां पाठ ९

जिया बितुसके विषय में

यह वह रोगहै कि पानी जैसा पीवै वैसाही तुरंत मूत्र में निकल आवे-इसका उपाय गर्मी और ठण्डदेख केकरना चाहिये-गरम में कुर्सकाफूर और कुर्स तबाशीर और कुर्स जियाबितुस दें-और ठण्डमें मसरोदीतूस और मजून चासिकुल चोल खिलावें॥

दसवां पाठ १०

गुरदे में पथरी पड़ने और मूत्र में रेत आने के

॥ विषयमें॥

इसरोगकी बारियां होतीहैं-कभी एक महीने के पीछे कभी वर्ष दिनमें और कभी कमवृद में जोर करताहै॥

इसका लक्षण यह है कि दुइडी की जगह रवोफहोगा और मूत्र पीला और लाल आवेगा-और कभी २ उससे पथरीभी निकलेगी-और जब आतें भरेंगी तो धिक होगी॥

दूसरा पार २

मसाने के घावके विषयमें

चिन्ह इस का यहहै कि सूत्रमें छिलके और
औरजलन होगी और रुकके आवेगा - उपाय इसका वही
हैजो गुरदेके घावकाहै - औरजब पीड़ा अधिक होतो
अवियज स्त्रीके दूधमें घोलके सूत्र के छिद्र में टपकावे
औरजब पीप अधिक आती होतो केवल माउल असलटप
कावें वह घाव के साफ करने में अति लाभदायकहै - औरम
सानेके रोगोंमें सूत्रके छिद्रसे दवाको पहुंचाना तुरतलाभ
ताहै - और स्त्रियोंको पिचकारी से दवा पहुंचासक्तेहैं॥

तीसरापार ३

मसानेकी खुजलीके विषैमें

पेडूमें खुजली और जलन और पीड़ाहोगी - औरमू
में दुरगन्धि होगी - औरकभी कभी उसके साथ रुधिरभी नि
कलेगा - इसमें मवादको निकालें और टीकाकरें - और लुआब
दाना और स्त्रीका दूध और रोगन बादाम सूत्रके छिद्रमेंटप
कावें - औरइन्ही औषधोंसे हुकना करें - औरभोजन कीजगह
आशजौ और दूध और चांवल खानालाभदायकहै॥

चौथा पार ४

मसाने में रुधिर जमजाने के विषय में

यह रोग मूत्र में रुधिर निकलने से या मसाने में चोट पडने से और किसी रग के फटजाने या मुंह खुलजाने से उत्प... इस रोग में हाथ पांव ठण्डे होंगे- और कसीजाडा ...गा और मूर्च्छा होगी- अकेली सिकंजवीन अंगेसिली ...समें थोडी अंगूर की लकडी की राख मिलाके पानी में घो ...लकर पिलावें और खरगोश का पनीर अंगूर की लकडी की राख के पानी के साथ खिलावें- और पेडू को उस पानी से धोवें और मूत्र के छिद्र में टपकावें- और इस उपाय से जमा हुआ रुधिर न पिघले तो वह औषधें जो पथरी को तोडें और मूत्र लाने वाली औषधें और पुराने चनों को सुहागे के पानी में औटाके पिलावें- और जब कोई औषध लाभदायक नहोतो जमे हुए रुधिर को चीरकर निकालें- और भोजन की जगह पुराने चनों को औटाकर उसका पानी दारचीनी डारके पिलावें ॥

पांचवां पार ५

मसाने की पीडा के विषय में

यह सुजन के कारण होगा- या घाव के या खुजली के या पथरी पडने के या मसाने में वायु उत्पन्न होने से इनसब

का उपाय लिख चुकेहैं - एक प्रकार इस पीडाकी यह
जो सराने के बिगाड से होतीहै - जो यह गरमी
सहोगी और सूत्रमेंजलन होगी - और पहिलेइससे
खुरवाईहोगी - इसमें ठण्डाई पिलावें और
वें और ठंडी बनादवुल बुजूर
सूत्र सफेद आवेगा - और इससे पहिले ठंडी
लाये होंगे जैसे कपूर आदि - और ठंडीहवा लगने
डाहोजातीहै गरम भोजन और औषधें दें -
नी से पेडूको धोवें॥

और दूसरी प्रकार इस पीडा की वहहैकि
नके दिन सवाद मसाने में आवे और सूत्र ज़ोर से
और उससे यह पीडाहो इससे अधिक सूत्र
पाय करें॥

छठापार ६

मसानेके टलजानेके विषयमें

पीठपर चोट लगने से ऐसाहोताहै
पधों का लेपपेडू पर करें - और जो चोट पडने से पट्टा
गयाहोतो सूत्र रुक रहताहै - १५४
अचानक सूत्र आने लगताहै - इन दोनों में फस्द
खोलें - और कभी इसरोगके साथ और रोगभी होताहै -
ले उसरोगका उपायकरें और फिर इसका॥

सातवां पार ७

मसानेके फूलनेके विषय में

मसाने में वाय भरजातीहै - और पेडूपर खिचाव रह ताहै - और वाय एक स्थान पर नहीं रहती और न बोझ हो ताहै - और जो बोझ और खिचाव एक स्थान पर रहैतो जा नों कि वायके साथ तरीभीहै - इस रोग में कुछ दिनों तक मा उल उसूल गरम पिलावें या उसमें थोडा रोगन बेदइंजीर मिलाकर पीवें - और रोगन गरम जोवाय को तोडे मलै - और मूत्रके छिद्रमें टपकावें - और रोगन केसर का खिलावें - औ र मलें और जब मूत्र निकलने में कठिनता होतो खरबूजेके बीजसहित छिलके कुचलके खांड के साथदें - और आबज़न में बिठावें - और जब इसके साथ तरीभी होतो बारबार उलटी करावें - और तिरियाक़ और मसरूदीतूस और इंजीर खिलावें।

आठवां पार ८

मसानेमें पथरीपडनेके विषयमें

लक्षण उसका यहहैकि लिंग कीजडमें खुजलीहोगी और थोडी २ देर पीछे मूत्र आवेगा और विषयकी चाहना प हलेतो एकबार अधिकहोगी - और फिर तुरंतही जातीरहै गी - इस रोगमें मूत्रका रुकके आना - या बिलकुल न आना और मसानेमें पीडाहोना कुछ नहीं होता - परन्तु जिस र

समय पथरी मसाने के मुंह पर आनकर अड़जाती है-
तो ऐसा होताहै और इस पथरी का उत्पन्न होना
र सेजान सकतेहैं कि गुरदे की जगाह और १.
पीड़ाहो ॥

वह उपाय करें जो गुरदे की पथरी में
है और अधिक मुए औषधें दें- और बिच्छू
कातेल आदि पेडूपर मलें और मूत्र के छिद्र से टपकावें-
और जो अवश्य होतो चीरकर निकालें- और जो रोगीकी अ
वस्था सतरह या १८ वर्ष से कमहोतो कभी ऐसा नकरें कि
मरने काडरहै- और जब पथरी मूत्रके रास्तेसे आकर अड़
रहे और मूत्र रुकजावे और उससे पीडाहोतो रोगीको बिठा
लिटावें और दोनों पांव उठाके गरम पानी से पेडूको धोवें
और नीचे से ऊपर तक मलें- इससे पथरीवहांसे हटके मसा
के अंदरचलीजावेगी- और मूत्रका रास्ताखुलजावेगा और
गरलि यहूद अलीलपथरीके तोडने में लाभदायकहै॥

नवांपाठ ९

मूत्र मेंजलन होनेके विषयमें

यह गुरदे या मसाने की खुजली या इनहीस्थानों
के घाव की पीप से होताहै- खुजली और घावका उपाय क
रें- और जो लिंग के भीतर घाव होतो उपाय उसका आ
गे लिखा जायगा- और जो जिगर की गरमी और पित्तकी
अधिकता से होतो उनके लक्षण पाये जावेंगे- इसमेंबहदाने

औषधें दें - जो जिगर के बिगाड़ में लिख चुके हैं - और जो सवा
द की अधिकता के कारण उससे व्याप्त होतो सवाद को निका
लें - और श्याफ़ अबियज़ स्त्री के दूध में घोलकर रोग़न गुलओ
र रोग़न बादाम मिलाके मूत्र के छिद्र में टपकावें - और लिंग को
अस्पगोल के लुआब में रक्खें ॥

लिंग के छिद्र में एक तरी विसरी है उसके छिलजा
ने से भी यह रोग होता है - लक्षण इसका यह है कि उससे पहि
ले गरम औषधें मूतलाने वाली खाई होंगी - और विषय की
अधिकता होगी - इससे पहिले कारण को दूर करें - श्याफ़ अ
बियज़ को स्त्री के दूध में घोलकर मूत्र के छिद्र में टपकावें -
और लुआबों और बीजों को चाहें पीवें चाहें टपकावें ॥

दसवां पार १०

मूत्र बंद होजाने के विषय में

जो यह रोग गुरदे या मसाने की सूजन से या उनमें
पथरी पड़ने से या मसाने में रुधिर के जमने या पीप अटकने से
या बाय के फंसने से होतो उसका उपाय ऊपर लिख चुके हैं ॥

और जो मूत्र के स्थान पर मांस उत्पन्न होने से यह रो
ग होतो और किसी रोग के लक्षण नहीं होंगे - और इसका उपा
य नहीं होसकता - परंतु थोड़ासा लाभ होने के लिये - ढीला और
नरम करने वाली औषधों का आवज़न करें - कि बिलकुल रुका
न रहे ॥

मसाने की गर्दन पर एक पट्ठा है जो मूत्र को नि
चोडता है- उसके ढीला होने से भी यह रोग होजाता है-
लक्षण उसका यह है कि मसाने के दबाने से मूत्र खुलके
कलता है - इससें गरमी पहुंचावें चाहे पीने की
से या लगाने की से और वह तेल मलें जो फ़ालिज में
गये हैं ॥

औरजो मसाने और लिंग में लेसदार मवाद
हे और उससे मूत्र रुकेतो पेड़ बोझल होगा- और
लेगाटा करने वाली वस्तु खाई होगी- और किसी दूसरे रोगके
लक्षण नहोंगे -इसमें पुष्ट औषधें सूंघलाने
और आबज़न करें और खिसक और बिच्छूका तेल उसी
में टपकावें ॥

औरजो मसानेकी दूरकरने वाली शक्ति के जाते
रहने से यह रोग होतो उससे पहिले रोगीने देर तक मूत्र
को रोका होगा-इसमें आबज़न करें- और पेड़को हाथ से
दबावें- और रोगन बिलसान और रोगन कुस्त पेड़ पर म
लें- औरजो इससे लाभ नहोतो एक पोली सलाई चांदी
शीशे या रांगे की लेकर छिद्र में डालें- रीति यह
कि थोड़ासा फूसड़ा रेशम वालेकर तागे में बांधें- और
सिरा उस धागे का उस सलाई में डालकर निकालें - और
जिस ओर वह फूसडाहो उसी ओर से सलाई उस छिद्र में
डालें-जब वह सलाई मसाने के मूंह तक पहुंच जावे तो
गे को ज़ोर से खींच लें तो मूत्र का रास्ता बिल कुल खुल
जावेगा ॥

और जो मूत्र के रास्ते में घाव या फुंसी होनेसे मूत्र रुकेतो उनके लक्षण पाये जावें गे-इसका उपाय सोज़ाकमें देखना चाहिये ॥

औरजब पीठ या पेडू पर चोट लगने से यह रोग हो तो देखना चाहिये कि सूजन है या मसाना ढीला और खिंचगया है-जो सूजन होतो उसका उपायकरें-और जो खिंचाव आदि होतो फस्द बासलीक खोलें - और रोगन गुल मलें ॥

औरजो मूत्रके रास्तेमें खुश्की और कब्ज़होतो गरमी के लक्षण पायेजावेंगे-और तर औषधोंसे लाभ होगा-औरमसा ने सेथोड़ासा मूत्र निकल सकेगा-औरजबबहुत माद्दइकट्ठा होजायगातो भली भांति निकला करेगा-इसमें तरी औरठंढ पहुंचावें ॥

औरजो पट्ठों और बन्धनों पर कफ के गिरने से मसा ने और मूत्र के रास्तेमें खिंचाव होजावे तो लक्षण उसका यह है कि मूत्र थोड़ा सा उछल कर निकल पड़ता है-और रेलेसे नहीं आता-इसमें खिंचाव का उपाय करें- जैसा हम लिख चुकेहैं ॥

औरजो पेडू पर पेलड़े चढ़जाने से मूत्र रुकेतो उनकेउतारनेका उपायकरें ॥

औरजो मूत्र की सरसराहट न जान पड़ने से यह रोग होतो केसर और बिलसान का तेल छिद्र में टपकावें- और पोदीने और सोये आदि का लेपकरें- और माउलवसूल और रौग़न बेद इंजीर पिलावें- और तिरियाक कबीर खिलावें ॥

और जो तरी से यह रोग होतो सब से पहिले उलटी करावें ॥

और जो मसाने के टलजाने से होतो उसका उपाय लिख चुके हैं ॥

और जो मसाने के आसपास किसी और स्थान में सूजन व बिगाड़ होतो उसस्थानका उपायकरें ॥

और जो मसाने के बराबर गुरियों के उतरने से मूत्र रुके तो उन गुरियों को अपने स्थान पर बिठावें जैसा कि बारहवें पाठ में लिखा जायगा ॥

ग्यारहवांपाठ ११

मूत्रखुलके नहोनेके विषयमें

इस रोग में मूत्र रुक रुक बूंद करके आताहै - उसके लक्षण और उपाय दसवें पाठ के अनुसार हैं ॥

बारहवांपाठ १२

अचानक मूत्र निकला करने के विषय में ॥

मसाने के ढीला होने या उस में कोई गरम व बिगाड़ होने पर उस की आस पास की सूजन से या मसाने के टलजाने से यह रोग होतो उसका उपाय दसवें पाठ में लिख चुके हैं ॥

और जो शराब या खरबूजों आदि के खाने से होतो उसकारण को दूर करें- और जो मसाने के बराबर की गुरियों के टलजाने से होतो देखें कि वह भीतर को घस गई है या बाहर उभर आई है- जो भीतर घस गई होतो खाली सीसियां उसजगह पर रखकर चूसे या जिफितें का लेप करें और जो बाहर उभरी होतो हाथ से मलें- और जो मसाने के बंधन टूट गये होतो उसका उपाय नहीं होसकता॥

तेरहवां पाठ १३

सोते में मूत्र निकलजाने के विषय में

यह रोग लड़कों को बहुत होताहै- इसमें गरमी पहुंचावें और इसवें पाठ में जो उपाय मसाने के पट्ठेकी सुस्ती दूर करने वाले कहे करें- और रातको कई बार उठाके पेशाब करालें- और रात को खाने पीने न दें- और कुन्दर का जीरा हब्बुल आसप्रत्येक साढे बाईस २२॥ माशे पीस कर १५० माशे शहद में मिला रक्खें- और सोने के समय सात माशे खिला दिया करें॥

चौदहवां पाठ १४

मूत्र में रुधिर निकलने के विषय में

जो गुरदेकी रग फट गई होया खुलगई होतो चिन्ह

रुधिर साफ़ बिना तलछट के निकलेगा पीप बिलकुल न होगी जो थोड़ा थोड़ा आता होतो रग का मुंह खुलगया होगा- और जब बहुत सा आवे तो जानो रग फट गई है - फ़स्द बासलीक़ या साफिन खोलें- और कुर्स काहरुबा और कुर्स कोलुद्दम खिलावें और पेड़ू पर और पेशाब की जगह पछने करावें- और जब रुधिर में तेज़ी होतो ठंडे पानी से पेड़ू को धोवें और ठंडी औषधों का लेप करें और ध्यान रक्खें कि रुधिर मसाने में न जमने पावें - और शर्बत उन्नाब धनिये के नुक्के में देना रुधिरको बन्द करता है और गर्मीको बुझाताहै ॥

और जब जिगर या गुरदे की कमज़ोरी से होतो रुधिर से सूत्र अलग न हो सकेगा- इसलिये उसके साथ निकलेगा- लक्षण उसका यहहै कि सूत्र मांस के धोवन का साहोगा ॥

जब गुरदा कामज़ोर होगा तो सूत्र सफ़ेद और गाढ़ा होगा ॥

औरजब जिगर कामज़ोर होगा तो सूत्र लाल और पतलाहोगा ॥

इसमें जिगर और गुरदे को पुष्टकरें ॥

औरजो सूत्रकी रगों में घाव होतो पीप आदि सेजान पड़ेगा - इसका उपाय लिख चुकेहैं और कुर्स काकनज लाभदायकाहै ॥

बीसवांअध्याय

॥२०॥

उनरोगोंके विषयमेंजोकेवलपुरुषों कोहोते हैं॥

पहिलापाठ १

विषयकीचाहनाघटजानेकेविषैमें

विषय की चाहना शरीर के बडे बडे स्थानों के चंगा होने से पूरी होतीहै और विषय की चाहना दो प्रकार से घट जातीहै ॥

एकतो यहहै वह आपही घटजावें- दूसरे लिंग के ढीला होजाने से इन दोनों प्रकारों का वर्णन अलग अलग कियाजाता हैं ॥

पहिली प्रकार के कई कारणहैं ॥

एक तो यहकि शरीर भोजन की कमी से कमजोर होजावे और उससे रूह और वाय और रुधिर जो विषय के मवाद हैं कम उत्पन्नहों लक्षण उसका यह हैकि कम जोरी दुबला पन होगा- और पहिले से सूखे रहे होगें-

उपाय इसका यह है कि अच्छे अच्छे भोजनों से और पुष्ट औषधों से शरीर को पुष्ट करें और खेल कूद और नाच रंग में लगे रहें ॥

दूसरे यह है कि वीर्य्य थोडा उत्पन्न हो चाए हे भोजन भली भांति खावें- लक्षण उसका यह है कि वीर्य्य थोडा निकलेगा - कारण यह है कि कोई बिगाड़ वीर्य्य उत्पन्न होने की जगह पड़ जायगा - और उन वस्तुओं से हानि होगी- जो उस बिगाड़ के अनुसार हो- और उनके विपरीत से आराम होगा- इसीसे उस बिगाड़ की प्रकार जान पडेगी- कि गर्म है या ठंडी आदि- इसमें मिजाज को ठीक करें॥

तीसरे यह कि वीर्य्य अधिक हो परंतु उसकी तेज़ी और गुदे गुदी हद जाती रहे लक्षण उसका यह है कि वीर्य्य अधिक निकले और गाढा हो और विषय करने के समय आदि में ज़ोर कम हो और फिर अधिक होजाए-इसमें माजून ज़रशोनी और ... र माजून वुजूर आदि खिला
के गरमी प...

... कि विषय की
... मलाप-
... लिंग आदि
या...
वा...
रज...
परत... वातका

छटे यह कि दिल या मेदे या जिगर या भेजे या गुर्दे पे किसी बिगाड़ के होने से ऐसा होतो पहिले उस बिगाड़का उपाय करें ॥

दूसरी प्रकार यहहैकि शरीरमें कमज़ोरी होनेसे या बहुत दिनों तक विषय के छोड़देने से लिंग सुस्त होजाय उपायइसका ऊपर लिखचुकेहैं और गर्मपानीसे धारे- फिरभेड़ीका दूधमलें- और ज़िफ़लगावें ॥

जोनीचे के धड़में वायुहोतो देखेंकि ठंड सेहै या गर्मीसेया खुश्कीसे उसीके अनुसार कामकरें ॥

जो पट्ठों पर कफ़ के गिरने या ठण्ड पहुंचने सेहो तोलक्षण उसकायहहै कि पहिले ये सबबातें पाईजावेंगी औरवीर्य्य पतला होगा- और बिनाज़ोर करने के निकलाकरेगा-इसमें वही उपायकरें जो फालिजकाहै और गरम शाफ़े और हुक्ने करें और गरम औषधें मलें- और लिंगको बहुत [illegible] पानी से धारें- जोवह उसकी ठण्ड सेन सिमटेतो उस रोगका उपाय नहींहोसकता ॥

अब ऐसी औषधें लिखीजाती हैं जो लिंगको बड़ा करें ॥

पहिले उसे खुरखुरेऔर कड़े कपड़ेसे इतनामलें कि लाल होजावे फिर रोग़न मोर्चा और इसीप्रकारकी और औषधें मलें और उसपर ज़िफ़्तका लेपकरें ॥

दूसरे कैफ़सके पानी से कई बारधोवें ॥

बकरी के घीसे कईबार चिकनाकरें ॥

चौथे केंचुए याजोंक सुखाके रोग़न सोशन्न से मिलाके मलें ॥

दूसरापाठ २

वीर्य्यजल्दी निकलनेके विषय में

ठंड या तरी से होतो लक्षण उसका यहहैकि बहुत सफेद और पतला होगा- और गर्मी न होगी- गरमजुल्लावों से सवाद को निकालें- और उलटी करावें औरमाजून खुंब सुल हदीद खिलावें और उसकी शराव पिलावें और शहदाने को औटाके शहद मिलाके पिलावें ॥

और जो यह रोग वीर्य्य और रुधिर की अधिकता सेहोतो फ़स्द खोलें- और विषय थोडाकरें और भोजनकम खावें और वह वस्तु खावें जिन से वीर्य्य और रुधिर कम उत्पन्न हो ॥

और जो वीर्य्य में तेजी आगई होतो लक्षण उसका यहहै कि वह पतला और पीला निकलेगा- और उसमें जलन होगी- इसमें ठंडाई और काहू के बीज औटा के पिलावें ॥

औरजो कमजोर होने के कारण से यहरोगहो तो उस कारण को दूर करें ॥

तीसरापाठ ३

विषय की चाहना अधिकहोजाने के विषयमें

यह रोग भी रुधिर और वीर्य्य की अधिकता से होताहै उन्हें कम करें - परंतु ऐसा न चाहिये कि कोई हा नि हो और जो बहुत ही अवश्य होतो फस्द और जुल्लाब दे - और वह वस्तु खावें. जो वीर्य्य को कम करें - और भोजन भी कम खावें ॥

और जो वीर्य्य में तेज़ी होतो ठंडाई दें - और ठंडे पानी से न्हावें ॥

और जो कमज़ोरी हो और रुधिर कम होजावे - और इस पर भी वीर्य्य की अधिकता होतो वह पतला, और सफेद होगा - इससे कालौंजी और सुदाँव और संभालू के बीज देना चाहिये - और जवारिश कमूनी अति लाभ दायक है ॥

और जो वीर्य्य के स्थान पुष्ट हों - परंतु शरीर में और स्थानों पर कमजोरी होतो उसके लक्षण पाये जावेंगे - उपाय इसका यह है कि वीर्य्य के स्थानों को कमज़ोर करदें - और दूसरे स्थानों को पुष्ट करें ॥

और जो वीर्य्य के रास्ते में फुन्सियां या घाव या खुजली उत्पन्न होने से यह रोग होतो लक्षण उसका यह है कि विषय करने के समय वीर्य्य मज़े से निकले - परंतु घाव में पीड़ा होगी - और पीप भी निकलेगी - इसका उपाय वही है जो मसाने के घाव का है - फस्द और जुल्लाव आदि दें ॥

और जो शरीर के फूलने से यह रोग होतो गर्मी की अधिकता में ठंढी औषधें दें - और जो तरी अधिक होतो वह औषधें दें जो वाय को तोडें और खुश्की करें - और जो

सौदा की अधिकता होतो फ़स्द बासलीक खोलें-औरसौ
दा का जुल्लाब दें॥

चौथापाठ ४

वीर्य्य निकलाकरनेके विषयमें

जो यह रोग वीर्य्य की अधिकता या तेज़ी या उस के स्थान के ढीला होने से होतो लक्षण उसका यह है कि तुरंत ही विषय की चाहना उत्पन्न होजाया करेगी - औरहर वार में वीर्य्य निकलेगा - इसका उपाय दूसरे पाठ में लिखा गयाहै॥

और जो यह रोग उस पट्ठे के खिंच जाने से होजो वीर्य्य के स्थान पर है तो खिचाव का उपाय करें-औरपेडू आदि पर रोगन मलें॥

- और जो गुरदे की कम जोरी हो और उसकीचर्वी पिघल के निकला करे तो लक्षण उसका यह हैकि विषयक रने के पीछे मूत्र मे कोई वस्तु सफ़ेद और गाढ़ी निकले और गुरदे की कमजोरी के और लक्षण पाये जावेंगे और कभी विषय की बातें सुनने से भी वीर्य्य निकल आताहै-उसकारण को भी दूर करें॥

यह रोग स्त्रीयों को भी होता है- और उसके यही कारण होते हैं जो ऊपर लिखे गयेहैं- और कभीहैम

के मुंह ढीला होजाने से भीहोता है- उपाय इसका यहहै कि उलटी करावें- और कब्ज़ करने वाली औषधों को औटा के आबजन करें ॥

यह औषध वीर्य्य या मज़ी या वदी निकलनेमें लाभदायक है-सुहाग के बीज साढ़े दस माशे- संभालूकेबीन और सोसन की जड प्रत्येक सात माशे- पीस छानके मरे या कच्चे अंगूर के रसमें मिलाकेदें ॥

यह दवा मज़ी और वदी को लाभदेती है- भंगको भूनकर पीसके शहद में मिलाकेदें ॥

जानना चाहिये कि मज़ी और वदीलसदारवस्तुहै और मूत्र के साथ या उसके पीछे निकला करतीहैं ॥

पांचवां पाठ ५

वीर्य्य के वदले रुधिर निकलनेके विषयमें

इसका कारण खुसियें या गुरदे की कमजोरीहै-जो गरमी का डर नहोतो खुसियों को रोग़न मस्तगी में भिगोवें और गुरदों को पुष्टकरें ॥

छटा पाठ ६

सोते में वीर्य्य निकलजाने के वि षयमें

इसका ज्याय और लक्षण वहीहै जो चौथे पाठ में लिखचुके है- और सीसे का टुकड़ा पीछे कमर पर गुरदों की जगह बांधे ॥

सातवां पाठ ७

लिंगके हरसमय ज़ोर करने के विषयमें

जो रुधिर की अधिकाता होतो फ़स्द खोलें और भोजन थोड़ा दें- और ठंडी औषधें काम में लावें- और जोठंड और खुश्की से होतो उल्टी करावें- जिससे काफ़ निकलेऔर वह औषधें जो वाय को तोडे चाहे लगावें या खिलावें और सुदाव का तेलपीर और पेडू परमलें ॥

आठवांपाठ ८

वीर्य्य निकलने के समय अचान कफेखानाहोजाने के विषयमें

शरीर के बड़े २ स्थानों की कमजोरी से और तरी की अधिकता से होताहै - इसमें उन स्थानों को पुष्ट करें - और मकाकिया और समर्क और गुल्लार और बबूल का गोद और कुंदर से शफ़ा करें और विषय के समय भी यही करनाचाहिये - और नारदीन का तेल पैखाने के स्थानपर मलें और विषय के समय पेट खाली रक्खे ॥

नवाँ पार ९ ॥

पुरुष को विषय कराने की चाहना उत्पन्न होने के विषय ॥ में ॥

इस रोग में आंतों में खुजली होजाती है - जोकोई सवाद पाया जावे तो उसे निकालें - और इस रोग का सवाद बहुत करके खारी कफ़ होता है और जो सुभावमें स्त्रियों कीसी बातें होजावें तो मारपीट से दूर करें ॥

दसवां पार १०

खुसियों की सूजन के विषयमें

जो सूजन अधिक और बोगलहो और गर्मी पाईजावे

तो रुधिर की अधिकाता होगी- और पित्तों की अधिकाता में अत्यंत गर्मी होगी - पहिले पांव और पिंडली पर पछने लगावें और फस्द खोलें- फिर उन ठंडी औषधों का लेपकरें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें- और इसके पीछे उसलेप में पर काने वाली औषधें भी मिलालें और फिर केवलपर काने वाली औषधों का लेपकरें - जैसाकि सूजन के उपाय में लिखागयाहै ॥

और जो सूजन में नर्मी और सफेदीहोतो कफ की अधिकाता होगी-इसमें उलटी करावें औरकफकी मुंजिश और जुल्लाव दें- और बाकलें के बीज पीसके वेसन और शहद में मिलाके लेपकरें ॥

और जो सूजन में कड़ा पन और कालापन होतो सौदा की अधिकाता होगी-इसमें नरम करने वाली औषधें बाबूने और नाखूने के साथ लेपकरें- और फिर सौदाका जुल्लाव और मुंजिशदें ॥

और जो किसी मवाद के लक्षण नहों और सूजन फूली हुई होतो वाय से होगी -इसमें परकाने वाली औषधों से सेक करें- और कासूनी खावें और जोइससे लाभनहो तो उलटी करावें और जुल्लाव दें- जो रोग नीचे के अंगमें हो तो- इनमें उल्टी कराना अति लाभ दायक है- और उसमें डरभी नहींहै ॥

जो सूजन केवल थैली अर्थात् ऊपर की खाल में होतो दुख काम होगा- और सूजन दिखाई देगी - और अंदर की सूजन में दुख और तप और प्यास अधिक होती है ॥

ग्यारहवां पाठ११

खुसियोंके बढ़जाने के विषयमें

यह रोग सूजन की प्रकार से नहीं है-इसमें सोट
फ्न आजाता हैं- इसमें खुरसानी अजवायन और शूक
रान और तफाह और पोस्त खशखाश और सान के पत्थर
की रेत हरे धनिये के पानी में पीसकर लेप करें- औरजो
गिले अर्मनी और सिरका भी मिलालें तो अति लाभदाय
क होगा- और इसी लेपको स्त्री की छाती पर लगाने से
छातियों बढ़ने नहीं पाती- परंतु इस रोग में भोजन भीथोडा
खाना अवश्य है॥

बारहवां पाठ१२

लिंगमें रहम के मुंहके फड़कने के विषयमें

मवाद को निकालें और रुधिर को ठंडा करें और
फिर उसी जगह पर जोंकें लगाना अति लाभदायक है,
और भोजन भी अच्छा खावें॥

तेरहवां पाठ १३

खुसियों की पीडाके विषयमें

जो सूजन के कारण से होतो उसका वर्णन करचुके हैं और जो वाय होतो पीडा एक जगह नठहरेगी- उसमें सेवें और गरम तेल मलें- और जो गर्मी.ठंडसे विगाड होतो उस का उपाय भी लिख चुके हैं- और जो चोट पड़ने से पीडा होतो फस्द खोलें और बनफशा- खेरू- मकोय. कद्दू. नीलोफर का लेप करें ॥

चौदहवांपाठ१४

खुसियों के छोटा होजाने के विषय में॥

यह ठंड के पहुंचने से होताहै- इसमें गरम पानी से न्हावें और गरम दवायें लगावें ॥

पंद्रहवांपाठ१५

खुसियों के चढ़ जाने के विष

॥यत्नें॥

कभी ऐसा होता है कि विलकुल ऊपर चढ़आते हैं नीचे कुछभी नहीं रहता उस समय सूत्र रुक के और टपकटपक के निकलता है- और चलाफिरा नहींजाता-और जो थोडा चढ़े तो थोडी२ पीडा होतीहै और कुछ हानि नहीं होती- और कभी पीडाभी नहीं होती- परंतु जो देर तक यह रोग रहेतो अच्छा नहीं है- इसमें गरम पानी से स्नानकरे और फरफियून का तेल मले- और आवज़न करें और उसी जगह सींगियां लगावें॥ 2॥ U

इसीप्रकार से कभी लिंगभी चढ़जाता है-उसका उपाय भी यही है॥

सोल्हवाँपार १६

रगों उभर आनेके विषय में

इसका उपाय नहीं है जो पैर की रगें उभरने का लिखा जावेगा- और जो कड़ापन भी आजावे तो उसका वह उपाय करें जो सूजन का है॥

सत्रहवां पाठ १७

ऊपर की खाल ढीली होजाने के विषयमें ॥

२। माजू - आस - गुलाब के फूल - गुलनार - बलूत के फल आदि कब्ज करने वाली औषधों का लेप करे - और उन्हीं को औटाके धारे ॥

अठारहवां पाठ १८

लिंग आदिके घावके विषयमें

जो यह घाव ताजे होतो मुर्दा संग और तूतिया छिडकें और लगावें - चाहे सूखा पीसके या मरहम बनाके - और जो रुधिर की अधिकता होतो पहिले मवाद को निकालें ॥

४ और जो घाव पुराने होतो यह मरहम लगावें दम्मुल अखवैन - और सुर्मा प्रत्येक नौ माशे - सफेदा - मुर्दा संग - इजरूत प्रत्येक सात माशे पीसके रोगन गुल मिलाके लगावें ॥

जो घाव लिंग के अंदर होतो मूत्र आने में जलन होगी - उसका उपाय मसाने के घाव से करें ॥

उन्नीसवां पाठ १९

लिंग के सूजजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो दसवें पाठ में लिखाग
याहै ॥

बीसवां पाठ २०

लिंग आदि की खुजली के विषयमें

इसमें फ़स्द खोलें- और रान और जांघ पर प
छने लगावें और पित्तों का जुल्लाब दें- फिर गरम पानी औ
र सिरके से धोवें-और रोगन गुल मलें-और अंडे की सफेदी
का लेप करें ॥

इक्कीसवां पाठ

लिंग के फटजाने के विषयमें

इसका उपाय वही है जो पैरवाने की जगह के पाठ
ने कहा है ॥

बाईसवांपाट २२

लिंग पर और उसके आस पास काड़ी फुं-सियां और मस्से होजाने के विषयमें

काला दाना सिर्के में मिलाकर लगावे- और यही उपाय करें जो मस्सोंका है॥

तेईसवांपाट २३

मूत्रके छिद्र बंद होजानेके विषेमें

जो फुंसी निकाली होतो मूत्र कठिनता से जलन के साथ होगा- इसमें फ़स्द खोलें- और कुलफे और खय्यारजों के बीजोंका शीरा निकालके शर्बत खश खाश के साथ दें- और अस्पगोल रोगन वनफशे और बादाम में मिलाके लिंग पर रक्खें- जब वह पकके फूटे और पीप निकलेतो श्याफ अबियज रोगन गुल और स्त्री के दूधमें घोलके छिद्रमें टपकावें- और जो पीडा अधिक होतो थोडीसी अफ़ीम भी मिलालें॥

और जो कोई केसदार मवाद छिद्रमें फंसा

होतो मूत्र कठिनता से निकलेगा- और जलन न होगी- और मूत्र में उस मवाद्का लक्षण पाया जावेगा- इससे मूत्र लाने वाली औषधें दें- और पिघलाने वाली औषधों को औटाके धारें- और उसी औटे हुये पानी में थोड़ासारोग़न बाबूना मिलाके पिचकारीलें॥

औरजो मस्साहोतो मूत्र कठिनाई-सेहोगा-औरनजलन होगीन कफ़ निकलेगा- जोवह मस्सा सिरेपर होतो एलुआ और सफ़ेदारोग़न गुलमें पीसकर टपकावें और जो पीड़ा अधिक होतो फस्द साफिन खोले- औरपिंडलीपर पछने लगावें॥

चोवीसवां पार

लिंगके टेढ़ाहोजानेके विषयमें

इसका कारण पट्टेका खिचाव या सूजन है- पहिले उस कारणको दूर करें- और रोगन आदि मलके उस स्थान कोनरमकरें- और फिर हाथ से भली भांति उसेसीधाकरलें॥

इक्कीसवां अध्याय

॥२१॥

मिराक सिफाक और सर्ब के विषयमें

जानना चाहिये कि पेटके चमडे को सिराक कहते हैं- और जो झिल्ली उसके नीचे है वह सिफाक कहलाती है- और एक परदा मोटा चिकना जो सिफाक के तले है- सर्ब कहलाता है ॥

पहिला पाठ १

कीलके विषयमें

यह वह रोग है कि सिफाक की राह जो चददों की ओर है खुसियों के पास से खुलजावे- या सिफाक आपही यहां से फटजावे और सर्ब आंत या वाय या तरी खुसियों की थैली में उतर आवे- इसको फितका भी कहते हैं ॥

और जब कोई गाढा मवाद उतरे तो उसे बारदुल लहमी कहते हैं- इन पांचोंका वर्णन अलग अलग करते हैं ॥

पहिले आंतके उतरने का लक्षण यह है कि थोडी थोडी उतरे- और कठिनाई से ऊपर को चढे और चढनेके समय गड बड हो- और कभी झूलनकी पीडा भी इस में होती है- उपाय इसका यह है कि १

होले होले मलके ऊपर चढ़ावें- और जो तुरंत न चढ़े तो ग
रम पानी से धारें-और आवज़न में बिठावें- और जब चढ़
जावे तो यह लेप पेडू और चड्डों और खुसियों पर लगावे-
मस्तगी-इंजरूत- कुन्दुर-सरों के फल और पत्ते-अकाक
किया-गुलनार-सुर-दम्मुल अखवैन- फिटकरी-रसौत
ग्रमल-सल्ज़ा- सबको बराबर लेके कूट छान के सरेश
मोंही को हरी मकोय के पानी में पिघलाके यह औषधें
उसमें मिलाके एक कपड़े पर मरहम की तरह लगाके खु
सियों पर चिपटादें और ऊपर से पट्टी खेंचवार बांधदें-
और तीन दिन तक बंधा रक्खें- और रोगी को चाहिये कि
तीन दिन तक चित्त पड़ारहे- और तीन दिन पीछे बहुत होलेसे
उठे और चले फिरे और जो वस्तु हानि दायक हो उसे न खावे
पीवे और छिलने रुलने से बचे- और नित्त जवारिश कमू
नी खावें और आंकड़ा जो इस कामके लिये बनाया गयाहै
बांधे रहें ॥

दूसरे सर्द के उतरने का लक्षण भी कठिनता से चढ़
ना है- परंतु उसमें गड़बड़ नहीं होती- और यही इसमें और
आंत के उतरने में अंतर है- इसका उपाय भी वही है जोऊप
रलिखा गया ॥

तीसरे वाय के उतरने का लक्षण यहहै कि सहजसे
ऊपर को चढ़े और गड़बड़ अधिक हो-इसमें वायकी तोड़
वाली औषधें काम में लावें- और वाय उत्पन्न करने वाली
वस्तु से बचें और पट्टी बांधे रहें ॥

चौथे पानी उतरनेका लक्षण यहहै कि खुसियों
की खाल भारी और पानी से भरी मालूम हो और किसीउपाय

से ऊपर न चढ़े- इसमें उस पानी को सुखावें जैसाकि जिक्री जलंधर में लिखाहै- और जब इससे लाभ नहो तोछेद देके पानी निकालडालें॥

पाँचवें कररुल लहमी में गारा पन और खिंचाव और कड़ापन थैली के अंदर होताहै नेकि उसकी खाल में यही अंतर है- इस रोग में और यहां की सूजन में मतवूख इसीमून से मवाद निकालें- और वाकी वही उपाय है जो खुसियों की सूजन काहै॥

दूसरापाठ २

पेट और चढ्डों की फ़ितक के विषय में

कभी सिफ़ाक टुंडी के पास ऊपर वा या नीचे को उससे फटजाता है- और सिराक जैसे कातीसा रहता है- और जो कुछ सिफाक के तलेहै और वार सिराक को ऊंचा करता है- और इसी प्रकार से चड्डों में सिफ़ाक फटजाता है और उस जगह ऊंचा होजाताहै--और यह दोनों रोग बहुतकर के स्त्रियों को होते हैं- उस जगह को भारी गद्दियों और पट्टियों से कसके बांधें और उन वस्तुओं से बचें जो ऊपर लिखी गई हैं- परंतु सच यह हैकि यह रोग अच्छे नहीं होते- उपाय करने से केवल यह लाभहै कि रोग बढ़ने नहीं पाते हैंकि इन रोगों में पांवों की उंगलियों पर सीखको करके दाग देना लाभ दायक है- और इसी प्रकार से उस मोटी रगपर जो अंगूठे की जड़में हाथ की मुट्ठीपर

है दूसरी ओर दबादें ॥

तीसरी पाद ३

टूंडीके उभरनेके विषयमें

जो उत्पत्ति के दिन बुरी तरह से काटने से याकि सीचोट से उभर आवे तो उसी समय तुरंत ही उसे ठीक करें नहीं तो पुराना होने पर कुछ लाभ नहीं होगा-उसी समयपट्टी आदि से ठीक करें ॥

जोयह रोग सिफाक के फटने या कफके इकट्ठा होने से होतो जैसाकि जिक्की जलंधर में होताहै यावायके इकट्ठा होने सेजैसाकि तवली जलंधर में होताहै याटूंडी की खालके नीचे-मांसबढ़जाने से या किसी रगके फटजाने से और रुधिर इकट्ठा होने सेहो ॥

इनमें से जो रोग फितक की प्रकार का है उसमें दबाने से टूंडी नीचे होजाती है- चाहे गड़बड हो या न हो ॥

और कफमें बोझ जान पड़ेगा ॥

और वाय में नरमी होगी- और वाय की उत्पन्न करने वाली वस्तु खाने से और अधिकहोगा और उनकी विपरीत से घटेगा ॥

मांस उत्पन्न में टूंडी कड़ी होगी- और दबाने से नहीं दबेगी ॥

और रुधिर के इकट्ठा होने में ऊपर का रंगनील

याकाली होगा ॥

जो यह रोग पित्तकी प्रकार से हो उसका उपाय लिख चुकेहैं ॥

औरजो कफ यावाय से होतो उसका उपायजलंध रके वर्णन में देखले ॥

और मांस उत्पन्न होजाने में कुछ उपाय नकरें-वह अच्छा नहोगा ॥

और जो रुधिर इकट्ठा होजावे तो जोंकलगावे वावज़ करने वाली औषधोंका लेपकरें - जोनकसीरके वर्णन में लिखी गईहै - कि रगों का मुंह जिससे रुधिर निकलताहै वन्द होजावे ॥

बाईसवां अध्याय

॥२२॥

उन रोगोंके विषयसें जो केवलस्त्रियों कोहोतेहैं

पहिला पाठ १

बांझहोनेके विषयमें

सं ७ - ५। ७५२

जो रहम में कोई बिगाड़ गर्मी या ठंड या खुश्की या तरी और सादा या सवाद से हो उसका कारण जानके उपाय करना चाहिये ॥

गरमी की पहिंचान यहहै कि हैज़ का रुधिर काला और गादा होगा- और उसमें गरमी भी पाई जावेगी ॥

ठंडकी पहिंचान यहहै कि हैज़का रुधिर देरकरके और बिनाजलन के निकलेगा ॥ ७२। ७२।-१-

और खुश्की की पहिंचान यहहै कि पेशावकीजगह सूखी रहेगी और हैज़ कम होगा॥ मे७।-२-१-

तरीकी पहिंचान यह है कि रहम सेतरी निकलाकरेगी- और ऐसी स्त्रीको तीन महीने से अधिक पेट न रहेगा ॥

और जो बिगाड़ किसी सवाद से होतो पहिंचान उस सवाद की उस तरी के रंगसे जानी जावेगी- जोकि रहम से बहै ॥ ॥६५२५२

जोमुटापे के कारण गर्भ न रहैतो दुबला होनेका उपायकरें ॥

औरजो अधिक दुबला होने से हो यहां तक कि इतना रुधिर न बचे कि बच्चे को बढ़ावे तो मोटा होने का उपायकरें जो इस पुस्तक के अंत में लिखागया है ॥

और जो हैज़ के बंद होजाने से होतो ऐसी औषधें काम में लावें जो हैज़ को निकालें॥

और जो रहम की सूजन या बवासीर या घाव या वडेपन से होतो उस कारण को दूर करें और इनका वर्णन अलग अलग कियाजावेगा॥

और जो रहम में गादी वाय इकट्टी होने से होतो लक्षण उसका यहहै कि पेडूं फूला हुआ होगा - और विषय के समय पेशाब की जगह से वाय आवाज के साथ निकलेगी-इसमें वाह औषधें काममें लावेंजो वाय को तोडें-और पेडूपर वारे लगावें -और रोगन बेदइंजीर सादे दशमाशे माउल उसूलमें मिलाकर पिलावें॥ २ मा।

और जो रहम के मुंह में कोई विगाड होनेसे सूजन या मांस या मस्सा आदि जिस से मुंह बन्द होजावे तो उस कारण को दूर करें- उसका वर्णन आगे किया जावेगा॥

औरजो रहम का मुंह सामने से हटगयाहै।और जो उससे वीर्य्य भीतर नजासके तो विषय करने के समय पीडा होगी- और उसका उपाय २०वें पाठ में लिखा जावेगा॥

औरजो विषय के पीछे स्त्री तुरंत ही उठखडीहो या कोई औरबात इसी प्रकार कीहो जिससे वीर्य्य फिसलकर निकलजावे तो उसकारण कोरोकें॥

कभी पुरुष भी बांझ होताहैजैसे कि वीर्य्यकेविगडजाने सेहोतो पुरुष का उपाय करना चाहिये-औरवीर्य्य को ठीककरें-

और कभी ऐसा होता है कि मनुष्य के जन्म में यह रोग होतो उसका उपाय नहीं होसकता ॥

अब इस बात का जानना कि स्त्री बांझहै या पुरुष इस प्रकार से होसकताहै कि दोनों के वीर्य्य अलगरखे - और उन्हें गरम पानी में डालेंजो ऊपर तैरता रहेजानों कि वही बांझहै ॥

जो औषधेंकि गर्भ रहने के लिये लाभदायकहैं - यहहैं - हाथी दांत का बुरादा ४॥ साढ़े चार माशे खिलावें या पनीर लगावें ॥

दूसरापाठ २

बहुधागर्भगिरनेके विषयमें

जो इसका कारण चोट, या क्रोध, या दुख आदि या उलटी या भूक या कोई रोग होतो उस कारण को रोकें - बार होने के कारण और इसकी दवाहैं - इस लिये ऊपर के पाठमें देखना चाहिये ॥

तीसरापाठ ३

जन्नेमें कठिनताहोनेके विषेमें

इसका उपाय ठंडी और गरम हवा और समय के अनुसार करना चाहिये - और जो स्त्री कठिनता सेजना

करे- उसे आठवें महीने से दूध पिलाया करें जितना उसेपच सके- औरजब वह जनने को होतो उसे गरम जगहमें लेजायें और गरम पानी बदन पर धारें और आबज़न में विठावें-और तेल मलें और टहैलावें- औरठंडे पानी और ठंडी वस्तुओंओर खटाई से बचें - और स्त्री को चाहिये कि अपने दमको रोकें और पाँव पर ज़ोर करें और कूँथे और दाई रोग़न बादाम या अलसीका तेल- और अलसीका लुआब मिलाके गुनगुनाकर के रहमके मुंहपर बहुत सा मलें-इससे बचचा सुगमता से उत्पन्न होताहै ॥

यह औषधें इस रोग को अति लाभदायकहैं- चुंम्बक पत्थर का बड़ा टुकड़ा बायें हाथ में बांधे और मूंगेकी जड़दाहिनी रान पर बांधे- और दार चीनी खिलावें-और जोंदबेदस्तरया हींग भी मिलालेंतो तुरंत लाभ होगा- परंतु गरमी नहो और अमलतास के छिलकेडेढ़ तोला कुचलके ओटावें- और शर्बत बनफशा याचनों का पानी मिलाकेपिलावें- इससे तुरंत ही बचचा हो सकताहै- और मशीमाभी निकल आतीहै- और गर्भवती स्त्रीको सुगंधि न सुंघाना चाहिये- और जनने केसमय तो कभी नहीं सुंघावें ॥

चौथापाठ ४

मशीमाके रुकने और पेटमेंबच्चामरजाने के विषयमें ॥

१ पेट में बच्चा मरजाने का लक्षण यह है कि फि
रना उसका बंद होजाता है- और स्त्री के हाथ पांव ठंडे होजा
तेहैं- और हांपने लगती है- और सांस पेट में नहीं समाती-
इसमे तुरंत ही बच्चे या मशीमा को निकालें- चाहिये किय
हाड़ी पोदीना- हंसराज- अवहल- प्रत्येक साढ़े१०॥ दशमा
शे तुरसुंस और पोदीना प्रत्येक सात माशे औटाके और
तीन तोले मिश्री मिलाके पिलावें - और नक छिकनी
या पिसी हुई कलोंजी या तमाखू की नास सुंघाके छींक
लिवावें- और जब छींक आने लगे तो मुंह और नाक १
बंद करालें- कि ज़ोर छींकका अन्दर को पड़े और बच्चा
मरा हुआ निकल पड़े- और सांपकी केंचली और कबूत
रकी वीट जलाके रहम में धूनीदें तो तुरंत लाभहोता है-
और जो इनसे कुछ लाभ न होतो बच्चे को काटके निकालें।

पांचवां पाठ ५

जो रुधिर जनने के पीछे निकलता है उसके रुके रहने के विषयमें

१४ इसका उपाय वही है जो हैज़ के बंद होने का है
कुछ स्त्रियों को जनने के पीछे पीड़ा होतीहै उसकी औष
धें यहहैं- अलसी के बीज औटाके रहम को भपारा दें-
और गधी का दूध गुनगुना करके मूत्र की जगह को धोवें
और गधे या खिच्चर का सुम जलाकर धूनी लें- और

सातर का पानी पिलावें- और खुब्बाज़ी ओंटाके पिलावें-और रहम में भी पहुंचावें- और जो कोई दवा लाभ दायक न होतो पोस्त को पानी में भिगोकर उसका पानी थोड़ा सा पिलावें ॥

कभी गर्भ गिराना पड़ताहै- यह अत्यंत महा निषेध कामहै- और जो अत्यंत आवश्यकता होतो उसकाउपाय यहहै कि कागज़ की बत्ती बनाके रहम के मुंह में रक्खें और जो उसको कुतरान में अथवा इन्द्रायन के पानी में या उसके जुशांदे में भिगोलें तो अधिक पुष्ट हो जावेगा- और हींग दो माशे, सूखा हुआ सुहाग दश माशे- सुर्ख सुरकी तीन माशे कूट छान के खिलावें- और ऊपर से अबहल ओंटाके पिलावें- संध्या और सवेरे यह सब सब खुरावाकें और भोजन के बदले चनों का पानी दें- और तिरियाक़ गर्बी भी लाभ दायक है- और जो औषध मरे हुवे बच्चे औरमशीमा को पेट से निकालती है वह पेट के गिरने में भी काम आती हैं ॥

गर्भ गिराने के समय पहिले गरम स्थान में बैठकर रोग़न बेद बंजीर मलें और चिकनाई पिलावें- और जब गिरजावेतो गूगल और राई जलाके रहम को धूनीदें कि रुधिर गाढ़ा न होने पावे और निकलता रहै ॥

जब चाहे कि गर्भ न रहने पावे तो उपाय उसका यह है कि विषय करने के पीछे सात बार या नौ बार कूदें- और वीर्य्य निकलने के पीछे तुरंत ही जब खड़ी हो और .. लें- और पुरुष विषय के समय लिंग पर तिली तेल मलाकरे - उसकी चिकनाई से वीर्य्य फिस

ल जावेगा- और काली मिर्चे विषय कारने पीछे मूत्रके छिद्रमें रक्खें- और चूहे की मेंगनी पीस के गद्दी वनाके रक्खें ॥

छठापाठ

रिजा के विषयमें

यह वह रोगहै कि जिसमें सब लक्षण गर्भ रहने के से पाये जाते हैं- परंतु वह गर्भ नहीं है क्योंकि इस रोग में और गर्भवती होने में यह अंतर है कि बच्चेके हिलने कुलने के जो समय हैं उनमें बच्चा हिलता नहींहै-और लक्षण जो गर्भ केहैं वह नहीं पायेजाते ॥

और ऐसाही जलधर में और इस रोग में जानने वालों को अंतर मालूम होजाता है अर्थात जैसा कड़ापन इस रोगमें होताहै वह जलधर में नहीं होता ॥

कारण इसका रहम की सूजन होतो उसका उपाय आगे लिखा जावेगा ॥

और जो किसी मवाद के गिरने या वायके उत्पन्न होने से हो तो उसका उपाय पहिले पाठ में लिख चुके हैं ॥

और जो केवल स्त्री के वीर्य्य से और रहम सेको ई वस्तु उत्पन्न होगई होतो गर्भको गिरादें ॥

ॐ

सातवां पार७

हैजः की अधिकताओं विषे में

जो रुधिर की अधिकता से होतो फस्द से उसे खाली करें छातियों को पट्टी से कसके बांध दें-और उनके नीचे पछने लगावें-और फ़स्द के पीछे क़ुर्स कहरुवा रुधिर बंद करने के लिये खिलावें-और शाफा सुमाकिके रहम में रक्खें ॥

और जो रुधिर पित्तों की अधिकता से पतला और तेज होगया होतो पित्त के लक्षण पाये जायंगे-इसमें पित्त को निकालें और बड़ी ऊपर वाले क़ुर्स और शाफा दें और वंदन पेड़ूपर लगावें ॥

जो रुधिर में तरी बढ़जावे तो कफके लक्षण पाये जावेंगे-इसमें तरी को सुखावें और निकालें ॥

जो सोदा के मिलने से रुधिर में तेजी आगई हो तो रुधिर काला या नीला या हरा होगा-उसमें सोदा को फ़स्द और जुल्लाव से निकालें ॥

और जो इसका कारण रहम की बवासीर या घाव होतो उसका उपाय आगे आयेगा ॥

और जो जनने की कठिनता से रहम की रगें फट गई होंतो-उसका उपाय आठवें और नवें पार में लिखा गया है ॥

और जो बच्चे के फस्ने में वह रोग होतो ९

शराव में भिगावें और कब्ज़ करने वाली औषधें जैसे माजू और गुल्नार और गुलाव के फूल ओंटाके आगे से धोवें और उस स्थान को चिकना रक्खें - और अंगूर की लकड़ी और पत्तों की राख कपड़े पर रखके गद्दी बांधें - और ज़हर मुहरा मठे में घिसकर पिलावें - और जो उपाय घावका है वही मरहम लगावें ॥

आठवां पाठ

रहमके घावके विषयमें

लक्षण उसका यह है कि पीड़ा कमी रहेगी - और पीप या रुधिर अकेले या दोनों मिले हुये निकलेंगे - जबतक घावमें पीप न पड़े और कोई हानि न होतो फ़स्द खोलें - और भोजन ठीक दें - और क़ुर्स कहरुवा खिलावें और कब्ज़ करने वाले हुकने और गद्दी काममें लावें - और जब घाव में पीप पड़े या सूजन पकके फूटे तो रोग़न गुल और शक्कर और रोग़न बनफ़शा पानी में घोलके रहममें हुकना करें - और जब मवाद साफ होजाय तो मरहम वासलीकून रोग़न गुल में मिलाकर रहम में हुक़ना करें किंच अच्छा होजाय ॥

और जो रहम की गर्दन में घाव होतो इन्हीं औषधों की गद्दी रक्खें - कुछ हुकने की आवश्यकता नहीं है - और अकेला शहद या ओंटा हुआ दूध रुई में भिगोके घाव में रक्खें - और रहम से मवाद निकालना अति लाभ

दायक है ॥

और जब पीड़ा अधिक होतो - अफ़ीम औरकेस र स्त्री के दूध में घोलके उसमें रुई भिगोके रहम के भीत र रक्खे ॥

नवाँ पाठ ९

रहम के फटजाने के विषय में

सं ३५१ - २८५

इसमें विषय के समय पीड़ा अधिक होगी - औ र लिंग रुधिर में भरा हुआ निकलेगा - जो सरहम पैखाने की जगह के लिये लिखे हैं वही लगावे - और मरहम ९ बासलीकून और रोग़न बनफशा लगाना अति लाभ दायक है - कभी पैखाने और पैशाब के स्थान के बीच में जो पर्दा है वह जनने की कठिनता आदि से फटजाता है - इसमें न लीका गूदा और सफेद मोम और बकरी के गुरदे की चर्बी लेकर बहुत सी संग निपहत मिलाके मरहम बनावे - और उसको गद्दी पर लगाकर इस प्रकार से बांधे कि घाव कीज हतजमजावे - और हानि कारक वस्तुओं से बचें ॥

दसवाँ पाठ १०

८५ - २८५

रहम की खुजली के विषय में

यह रोग पित्त खारी बलग़म या सौदा बादी

में तेज़ी आजाने से होता है- लक्षण इसका यहहै कि हैज़ का रुधिर पीला या सफ़ेद या काला होगा- पहिले मवादको निकाले- फिर पोदीना अनार के छिलके- और दुली हुई म सूर कूट छान के सुसल्लस या शराब या सिरके में घोलके रुई उससे भिगोके अन्दर रक्खें- और रोग़न गुल और रोग़न नफ़शा मलें- और जो सूत्र के स्थान पर खुजली होतो उसका भी यही उपायहै ॥

ग्यारहवां पाठ ११

रहमकी बवासीरके विषयमें

इसका उपाय भी वही है जो बवासीर का सत्रहवें अध्यायमें लिख चुके हैं ॥

बारहवांपाठ १२

रहमकी फुंसियों के विषयमें

यह रुधिर के बिगाड़ या पित्त से होता है-फुंसियां छूनेमें आती हैं और खुजली होती है-फस्द से मवाद को निका ल और सिकंजबीन पिलावे और सफ़ेदे का मरहम लगावें और जो रहम की गर्दन की में फुंसियां हों- औरजो भीतर को होतो हुक़ना करें ॥

तेरहवाँ पाट १३

रहमके मस्सोंके विषयमें

यहभी छूने से मालूम होते हैं फस्द खोले- औरसे दाका जुल्लाव दे- और वाबूना नाखूना और मेथी और अलसी के बीज ओंटाके आवज़न करें- और पेशाव करनेकी ठे उसी से धोवें ॥

चौदहवाँ पाट १४

रहमकेनासूरके विषयमें

जब घाव चालीस दिनका होजाताहै तो उसेना सूर कहतेहैं- लक्षण उसका यहहै कि पीलापानी बहाकरे और उपाय उसका वहीहै जो आठवें पाटमें लिखागयाहै ॥

पंद्रहवाँ पाट १५

रहमसे पानी बहनेके विषयमें

इसमें फस्द और जुल्लाव से सवाद को निकालें- और मिज़ाज की ठंड और गर्मी के अनुसार सुखाने का उपायकरें ॥

ॐ

सोल्हवां पाठ १६

रहम से वीर्य्य बहने के विषय में

इससे पानी बहने में यह अंतर है कि पानी में दुर्गंधि अधिक होगी- और वीर्य्य में गाढ़ापन और सफ़ेदी अधिक होगी- इसका उपाय वही है- जो पुरुषों के वीर्य्य बहने का है॥

ॐ

सत्रहवां पाठ १७

हैज़ बन्द होजाने के विषय में

जो रुधिर की कमी से हो तो शरीर दुबला होगा और रुधिर की न्यूनता के लक्षण पाये जावेंगे- पुष्टभोजन खिलाके रुधिर बढ़ाने का उपाय करें॥

और जो ठण्ड पहुंचने से या किसी गाढ़े मवाद के मिलने से रुधिर भी गाढ़ा होगया हो तो पहिले उनके कारण पाये जावेंगे- और ठंड के लक्षण होंगे- उस गाढ़े मवाद को निकालें- और वह औषधें जिन से रुधिर पतला हो चाहे पिलावें या भपारा दें॥

और जो रहम की रगों के मुंह बंद होगये हों तो देखना चाहिये कि कारण उसका गर्मी है या ठंड या खुश्की- फिर वैसा उपाय करें- जो कि पहिले पाठ में लिखा

गया है ॥

जो रहम का घाव भरने से रुधिर रुक रहा होतो उसका उपाय नहीं हो सकता - परंतु अधिक हानि से बचने के लिये कभी कभी फस्द खोला करें - और मिहनत अधिक करें - और भोजन कम खावें ॥

और जो रतक के कारण से होतो उसका उपाय आगे आता है ॥

और जो अधिक बुढापेसे रुधिर निकलने के रस्ते बंद होगये होंतो जुबला करने का उपाय करें ॥

और जो रहम का मुंह चिरजाने से होतो उपाय उसका बीसवें पाठ में आवेगा ॥

अठारहवां पाठ १८

रतक के विषय में ॥

यह वह रोग है कि भग के मुंह पर या उस के और रहम के मुंह के बीचमें या रहम के मुंह पर कोई खुवदी हुई उत्पन्न हो - पहिले में लिंग अंदर न जासके और दूसरे में पूरा जावेगा - और तीसरे में जासकेगा - परंतु हैज़का रुधिर निकलने न पावेगा - चाहिये कि इसको कि सीसे काटडालें ॥

ॐ

उन्नीसवांपाठ १९

रहमके उभरनेके विषयमें

इसका लक्षण यहहैकि पेडू और कमर औरपेखाने के स्थान पर अधिक पीडा मालूम होगी- और कुजाज़ और राशे के रोग उत्पन्न होंगे- और भीतर कोई वस्तु नरम पाईजावेगी- आंतों को हुकने से और मसाने को मूत्र लाने वाली औषधों से साफकरें- चमेली का तेल या रोगनगुल लेकर उसमें थोडासा केसरका तेल और अरगंजा मिलावें- और गुनगुना करके रहम में टपकावें- और ऊपर मलें और दाई से कहदें कि स्त्रीको चित लिटाकर दोनों रानें उठावें- इस प्रकार से कि आपसमें मिलने न पावें अलगअलग रहें- और भेडके नरम बालजो खालके पास बालोंकी जड़ में होते हैं लेकर उस शराब में जिसमें कि कब्ज़ करने वाली औषधें औटाई गई हों भिगोके अकाकिया और सुंक और रामिक कूट छान के उसमें उन बालों को लथेड़े और पोटलीसी बनाके रहम को उससे उठाकर भीतर करें-औ रउस पोटली को उसी जगह रहने दें और दूसरी गद्दी सेभ गको भरदें और कसके पट्टी बांधे और पेडूपर उसके आस पास काबिज़ औषधों का लेपकरें और तीन दिन तक इसी प्रकार से रहें- और हानि कारक वस्तुओं और हिलने जुल ने से बचें- तीसरे दिन पट्टी खोलके उस औषधिको नि कालें और नई दवा रक्खें- और जब तक भली भांति

आराम नहो चलने फिरने में पटी बांधें रहें और बराबर सु
गंधि सुंघावें ॥

बीसवांपाठ २०

रहमके झुक पड़नेके विषयमें

यह दाईको हाथ लगाने से मालूम होसकता है और इससें विषय के समय पीडा होती है- और कभी कभी पेचिश भी होती है- और मूत्र और पैखाना बंद हो जाताहै ॥

जोरुधिर की अधिकता से सों तन गई हो तो जिधर को झुकाओ हो उसी ओर फ़स्द साफ़िन खोलें ॥

और जो ठंड पहुंचने सेहोतो तर आबज़न सेवि तावें- और रोग़न बाबूने में बतख की चर्वी पिघला करके मलें ॥

और जो कफ़ गिरने से हो तो अयारिजें खिला के मवाद को निकालें ॥

और जो कारण दूर करने के पीछे भी यह रोग न जावे तो उंगली में मोम रोग़न लगाके दाई सीधा करदें ॥

ॐ

इक्कीसवांपाठ २१

रहम कीसूजनके विषयमें

धरआरंभ - २०१४

जो गरम से होतो लक्षण उसका यहहै कि गरमतप होगी औरनाडी और सांस जल्दी जल्दी चलेंगी। औरमेदे औ रभेजेमें बिगाड होगा-औरजो आगेको रहम में सूजन होतो पेडूमें पीडाहोगी- और जो पीछे होतो कमर की ओर- और जो दोनों जराह होतो दोनो ओर में पीडा होगी-इसकाउ पाय वहीहै जो मसानेकी सूजनकाहै॥

और जब सूजन पकजावे और फूटे तो रहम के घा वका उपाय करें॥

और जो कफकी सूजन होतो पेडू के आसपासपी डा होगी और बोझभी होगा- उलटी और मसाने की ठंडीसू जनका उपाय करें॥

औरजो सौदा से होतो कडापन होगा औररह म किसी ओर झुका होगा- और पीडाकम और बोझ अधिक होगा- फस्द और जुल्लाव से सौदा को निकालें- और सरह म और चरबी और रोग़नों से चाहे पिचकारी लें या गदीररवे या लेप लगावे - और सोये और रवैरू को ओटाके रात दिनमे दो बार आबजन करें॥

बाईसवां पाद २२

रहम के दुवैले के विषयमें

धं मीटा – २०२५

जब सूजन पकजावे और न फूटे उसको दुवैला कहते हैं॥

जो यह रहम के मुंहमें होतो छेदा देकर पीपको निकाल डालें॥

जो रहम के भीतर तहे में होतो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें - और नरम करने वाली औषधों का लेपकरें कि आप से फूटजावें - और जो फूटने में देर होतो-इंजीरऔ रराई ओंटाके रहम में डुकना करें - और फोके उनका कूट के सूजन की जगह पेडूपर लेप करें - और जब फूटे तो पीप को साफ़ करें - और घाव को भरें॥

तेईसवां पाद २३

सरतान रहम के विषय में

यह रोग बहुधा गरम सूजन के पीछे होजाता है इसमें कड़ापन और गरमी और तपक होगी - पीड़ाछाती तक होगी - और पांव पर सूजन होगी - इसका उपाय नहीं हो सकता - परंतु थामने के लिये ऐसे मरहम लगाया करें जिन से पीड़ा धीमी हो - और आबज़न और डुकनाआदि

किया करें- और मरहम रसूल अति लाभ दायक है- औरसौ
दाके निकालने के लिये कभी कभी फस्द और जुल्लाब
दें- परंतु तरी पहुंचने का ध्यान बहुत रक्खें ॥ ५/औ६

चोबीसवांपाठ २४

इ ख़ुतिनाक़रहमके विषयमें ७/८ ज

इस रोग में मृगी और मूर्च्छा कासा हाल होता
है- परंतु कफ़ मुंह से नही निकलता- और तड़पन नहींहोती
और मूर्च्छा ऐसी अधिक होती है कि पुकारने से भी कुछख
बर नहीं होती- मूर्च्छा में वह उपाय करें जो मूर्च्छा और मृगी
काहै- परंतु इसमें सुगंधि कभी न सुंघावें- दुर्गंधि सुंघानी
लाभ दायक है- और गंधक और गूगल आदि जिसमें दुर्गं
न्धिहो नाक के आगे जलावें- और सुगंधि रहम के भीतर मलें
और मुश्क और अम्बर की धूनी रहम में पहुंचावें- औरजब
विषय के छूट जाने या वीर्य्य की अधिकता से यह रोगहोते
होंसके विषय करें ॥

और जब हैज़ के रुधिर रुकाने से होतो- फ़र
फ़ियून और काली मिर्चें गद्दी में भीतर रक्खें- और जब
रोगी चैतन्य होतो मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें- औरफ़
स्द खोलें और मवाद निकालें और रहम को पुष्टकरें ॥

पच्चीसवांपाठ २५ *गुल। आ२ ८ मा६

रहममेंपानीभरजानेकेविषयमें

इस रोगमें ज़िक्की जलंधर की भांति पेट फूलजाता औरकभी पानी ऊपर वह आता है- इससें रहम और सारे शरीर का मवाद निकालें- और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें और वह उपाय करें जो जलंधर और पंद्रहवें पाठमें लिखा गया है- और भूका रहना और महनत करना लाभदायक है- और कहते हैं कि सफेद कुत्की भीतर लगना अच्छाहै ॥

छब्बीसवांपाठ२६

रहममें वायभरजानेकेविषेमें

इसमें पेड़ फूल जाता है और पीडा भी होती है- और बजाने से तबले की सी आवाज़ निकलती है- अयारिज खिलाके सारे शरीर का मवाद निकालें- और वाय तोड़ने वाली औषधों से हुक्ना- लेप- सेंक- आबज़न आदि करें- और जो उपाय तबली जलंधर का है वहीइसकाहै ॥

जो रोग बीसवें अध्याय के आठवें और नवें और बारहवें पाठ में लिखे गये हैं वह स्त्रियों कोभी होतेहैं- उनके उपाय वहीहैं जो पुरुषों के लिये हैं ॥

तेईसवां अध्याय

॥२३॥

पीठ और हाथ और पांवके रोगोंके बिषयमें

पहिला पाद १

कुभ निकल आनेके विषयमें

इसमें पीठ की गुरियां अपनी जगह से आगे पीछे रहने चायें खिसक जायें ॥

इस रोगके कारण पांचहैं - एक उस पट्ठेकी सूजन जो गुरियों के आस पास है ॥

दूसरे गुरियों के नीचे गाढ़ी वायका रुकना॥

तीसरे यहकि पतली तरी गुरियों की नसोंमें आवे और उसे ढीला करदे ॥

चौथे नसोंका खिंचना॥

पांचवें यहकि गुरियों पर चोट पड़े॥

५८ पहिली प्रकार का लक्षण यहहैकि पहिले पीठ में पीड़ा होतीहै- और नाडी भारी होती है- और तप अधिकहोतीहै ॥

और दूसरी प्रकार का लक्षण यहहै कि पीड़ा अधिक होतीहै विनातपके ॥

तीसरीमें मूत्र सफेद निकलता है- और इससे पहिलेतर वस्तु खाई होगी ॥

और खिचाव और चोट पड़ने का लक्षण तो सब जानतेहैं ॥

पहिली प्रकार में फस्द खोलें और मुलायमकरने वाली औषधें दें- और लेप लगावें- और सूजन का उपाय करें ॥

दूसरी और तीसरी प्रकार में वह उपायकरेंजो गुर्देकी वायकाहै ॥

और खिचाव में तशन्नुजका उपायकरें ॥

और चोट लगने में पीठके मुहरों की ठिकाने से विगवें जो भीतर को घुस गये हैं ऊपर खेंचें सींगियों से या वारे लगाकर या ज़िफ़्त और गूगल थोड़ा सा आकरकरा मिलाके लेप करें कि सूखने से तनाव पड़े औरऊपर खिंचें ॥

जो मुहरे बाहर उभर आये होंतो हाथ से मलके भीतर अपने ठिकाने पर फेर दें- फिर काबिज़ औषधोंका लेपकरें कि फिर न उभरें ॥

दूसरापाठ २

पीठकी पीड़ाके विषयमें

जो कारण इसका केवल कोई बिगाड़ बिना मवाद के होतो ठंड लगेगी- और पीड़ा बिना बोझके होगी- और गरमी से आराम मिलेगा इसमें पिलझे और लगाने से गरमी पहुंचावें ॥

औरजो कफ उत्पन्न होने या गिरने से होतो कफ उत्पन्न होने में पीड़ा बोझके साथ होगी - और पहिलेसे कफ उत्पन्न करने वाली वस्तु खाईहोंगी ॥

और कफ गिरने के लक्षण इनके सिवाय- क्रोध दौड़- धूप- और मिहनत आदिहैं ॥

मवाद को निकालें और शाफ़करें ॥

और कफ़ गिरने में पचाने वाली औषधोंका लेपभी लाभ दायक है बिना मवाद निकाले हुये ॥

औरजो पीठ में बायु फ़सी होतो लक्षण उसका वहीहै जो कफ के गिरने का है- परंतु इसमें बोझ नहो गा या हलका होगा- और पीड़ा इधर उधर फिरेगी - इस का उपाय भी लिख चुके हैं - क्योंकि जड़ इसकी भी क फहै ॥

औरजो विषय की अधिकता होतो विषयकरना छोड़ दे- और रोगन गुल और रोगन सुरजान पीठ पर मलें और जो इससे लाभ न होतो कफका मवाद निकाल ॥

और जो गुर्दे की कमज़ोरी हो तो लक्षण और उपाय उसके वही हैं- जो गुरदे के रोगों में लिखे गये हैं ॥

जो पीठ में बड़ी रग है उसमें रुधिर की अधिकता से हो तो पीठ के मुहरों में गर्दन के पास से-कमर तक बराबर लम्बाई में पीड़ा और तपक हो- इसमें फ़स्द बासलीक और माबिज़ खोलें और ठंडाई पिलावें- और ठंडी औषध पिलावें ॥

जो यह रोग रहम के बिगाड़ से हो जैसे स्त्रियों को हैज़ आने के समय हुआकरता है- जबकि भली भांति खुलके न आवे इसमें हैज़ लाने वाली औषधें दें- और उसके निकालने का उपाय करें- और रोग़न गुल पीठ पर मलें ॥

तीसरा पाठ ३

कोखकी पीड़ाके विषय में

इसके कारण और लक्षण और उपाय पीठकीपीड़ासे देखें ॥

चौथा पाठ ४

गठिया के विषय में

यह पीड़ा शरीर के जोड़ों में होतीहै-इसमेंकभी स्त
न होतीहै और कभी नहीं होती ॥

जो चूतड़ों के जोड़ में पीड़ा हो उसे कौज्जलवर्कां कहते हैं- और जो कूले से नीचे को उतरे पांव तकतो अर्कुनिसा कहलाताहै ॥ -५०२॥ -

और जो टखने के जोड़ से ऊपर कोचदे या पांवकी उंगलियों मेंहोतो उसका नाम नुक़रस है- बहुधा यह पांवके अंगूठे में होताहै ॥ +

और जो हाथ पांव के सबजोड़ों में होतो वजय मुफ़सिलहै ॥

सब प्रकारों के कारण और उपाय एकसेहैं- इस वास्ते एक उपाय लिखा जाता है- और जो वस्तु केवल एक ही प्रकार के लिये हैं वह भी बताई जाती है ॥

जो केवल गरमी ठंड या खुश्की से होतो होले होले उत्पन्न होगा- और चोट और पीड़ा न होगी- और इन बिगाड़ों के लक्षण पाये जावेंगे- पीने और लगाने की औषधों से मिज़ाज को ठीक करें- और तरी से यह रोग नहीं होता ॥

जो रुधिर की अधिकता से होतो उस स्थान पर लाली और तपक और तनाव होगा- जो पीड़ा एक ओर होतो दूसरी ओर फ़स्द खोलें- और जो दोनो ओर होतो दोनो ओर से खोलें- जो हाथ के जोड़ों में होतो फ़स्द हफ़्त अंदाम खोलें- और पांवो के जोड़ों में होतो वासलीक परंतु रुधिर अधिक निकालें- और जो मवाद के नरम करने की

आवश्यकताहो तो वैसी औषधें दें - और मिज़ाज के ठीक करने के लिये शर्बत पिलावें - और रोग के आदि और बढ़तीमें फ़स्द के पीछे इन ठंडी औषधों का लेपकरें - जो मवाद को इधर गिरने से रोकें - और पीड़ी की अधिकतामें सुन्न करने वाली औषधें भी मिलालें - और रोग के अंतमें बनफ़शा और खेरू आदि फिर पचाने वाली औषधें से नाखूना और बाबूने के फूल काममें लावें - चाहेतड़ेड़ करें या लेप ॥

और जो पित्त के मिलने से रुधिर बिगड़ जावे तो पित्तके लक्षण पाये जावेंगे - अर्थात् पीडा की अधिकता और जलन आदि फ़स्द खोलें - और मवाद को नरमकरें परंतु रुधिर अधिक न निकालें - फिर मूत्र लाने वाली औषधें जो ठंडी हों अति लाभदायकहैं - और बचाने वाली औषधों का लेप कभी न चाहिये - और इन दोनों प्रकारों में सिकंजबीन जो बहुत तेज़ न हो लाभ कारीहै ॥

और जो पित्त से पीडा होतो केवल उन्हीं के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें मवाद को नरम करें - और मिज़ाज को ठीक करें - और उलटी अति लाभ कारक है और फ़स्द न खोलें - यह रोग केवल पित्त से बहुत कम होताहै ॥

जो कफ़ से होतो जोड़ बोझल होंगे और बलगम के लक्षण पाये जावेंगे - इसमें उलटी करावे - और मुंजिश देके कई बार जुल्लाब दें - जब मवाद निकल चुके तो मूत्र लाने वाली गरम औषधें पिलावें -

और इसमें भूले से भी केवल वह ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें - या केवल पचाने वाली औषधें का भी न लगावें ॥

और जो सौदा से होतो रंग काला होगा - और पीड़ा कम होगी - और सूजन में कड़ापन और तनाव होगा फस्द खोलें और जब मवाद भली भांति पकजावै तो सौदा के जुल्लाब दें - और ऐसे मरहम लगावें जो कड़ेपनको नरम करें ॥

फस्द में नशतर चौड़ा लगावें - जो रुधिर गाढ़ा काला निकले तो बहुत सा निकालें - और बंदनकरें - और जो लाल और साफ़ निकले तो तुरंत बंद करदें - और पहिले मवाद को सौदा की मुंजिशों से पतला करलें - फिर फ़स्द खोलें ॥

जो वायु से हो तो पीड़ा फिरैगी और तनाव होगा - इसमें गुलकंद और गुलाब और सौंफका अर्क और शर्बत बज़ूर पिलावें - और रोगन गुल मलें और क़फ़को निकालें और पचाव को ठीककरें ॥

एक प्रकार वायु की पीड़ा की ऐसीहै कि कड़ापनें और तेज़ी उसकी हड्डियों तक पहुंचती है - और उसे तोड़तीहै और बिगाड़ती है - इसमें रुधिर और पित्तको निकालें ॥

जो पीड़ा मिले हुए मवाद से हो उसका उपाय भी वैसाही करें - और सुरंजान सब प्रकारों में लाभकारी है खानेमेभीऔर लगाने में भी परंतु कफ़ के मवाद को अतिलाभ दायक है - और इसमे जीरा सोंठ मिलालेना चाहि

ये फिर मेदे को हानि न करेगी - और जब इसे खावें तौजो डों पर रोगन गुल मलते रहें - और इसकी खुश्की से फिर हा निन होगी ॥ १८ ९ ११ १९

यह औषधें इस रोग में लाभकारक हैं - सुरंजान और मिश्री मिलाके कूट छान के साढ़े दश माशे ठंडे पानी के साथ फंकावें ॥

सूखा धनियाँ और बराबर शक्कर मिलाके साढ़े दस माशे खिलावें ॥

सफेद खशखाश पीसके बराबर शक्कर मिलाके सात माशे फंकावें ॥

अस्पगोल गरम पानी में घोलके और रोगनगुल मिलाके लेप करें ॥

१० मेथी के बीजों का लुआब और सिरका मिला के लेप करें ॥

नुक़रस आदि में सुन्न करने वाली औषधों और ठंडी औषधों से जब भेजे में कोई बिगाड़ उत्पन्न होतो औषधि को तुरंतही छुडा़लें - और त्रावूला और खैरू को औटाके सिं रको धारें कि सवाद भेजे से उतर आवे ॥ ११ ८१९ ८२

जब वजउलवर्क और अरकुंनिसा में औषधि से लाभ नहोतो पहिले रोग में जुलेपर दाग़दें और दूसरे में टखने पर ॥ १ ५।२५।१ ४

अरकुंनिसा जो रग है - उसकी फ़स्द भी लाभ कारक है - वह रग गठीली होतीहै - चाहिये कि लोहे की सीख भली भांति गरम करके टखने से आठ अंगुल ऊपर दाग़दें चौडाई में और एक दाग़ पांवकी छुगलियां और

दूसरी उंगली पर जो उसके पास है जड़ में ऊपर को सला ई गरम करके लगावें कि एक लकीर सी पड़ जावे चौव चौनी सावधानी के साथ जोड़ों की सब पीड़ाओं को अति लाभ दायक है ॥

पांचवां पाठ ५

पिंडली की रगें बड़ी और मोटी होकर उभरआवें॥

इसमें सौदा और कफ़ का मवाद निकाले-और फ़स्द बासलीक़ और जुल्लाब और उलटी के पीछे उन्हीं रगों की फ़स्द खोलें कि उनके भीतर का मवाद निकल जावे और जब रोग में कमी होजावे तो भली भांति नर्मी से उन्हें बांधे कि मवाद उलट न आवे ॥

छटा पाठ ६

पांव सूजकर हाथी केसे होजाने के विषय में

इसका उपाय वही है जो ऊपर के पाठ में लिखागया है-और जो अधिक हो जावे तो अच्छा हो नहीं सकता ॥

सातवां पाठ ७

एड़ी की पीड़ा के विषय में

जो घाव से हो तो मरहम लगावे ॥

जो चोट लगी हो तो - मामीसा - गिलेअर्मनी - पानीय गुलाब में पीसकर लगावें - और ठंडे पानी से धोवें और पछने भी लगा सकते हैं ॥

और जो जूते के दबाने से हो तो भी वही उपाय है ॥

और जो मवाद के गिरने से हो तो रुधिर के मवाद में फ़स्द खोलें ॥

और जो कोई और मवाद हो तो उलटी करावें और गुल्लावदें ॥

और गरम पीड़ा में रोगन गुल और ठंडी में बाबूने और फ़रफ़ियून और कुट का तेल मलें ॥

आठवां पाठ ८

तलुये की पीड़ा के विषय में

इस पीड़ा में धरती पर पैर नहीं रक्खा जाता - मसूर को सिरके में पकाकर लेप करें - और जो रुधिर का मवाद अधिक हो तो सब से पहिले फ़स्द खोलें ॥

चौबीसवां अध्याय

॥२४॥

{तपके वर्णन में}

तप तीन प्रकार कीहोतीहै-हुम्मायौमी-हुम्मारिवल्ती-हुम्मादिक्की

पहिलापाद १

हुम्मायौमी के विषयमें

यह वह तप है कि इसका संबंध रूह सेहोताहै
और एक दिन में वहुधा जाती रहती हैं- इसके कारण वहु
तहैं जैसे दुःख-क्रोध-भूक-प्यास-धूप-आग- भी
जन आदि- जब कोई कारण इन कारणो मे वढ़जाताह
तो रूह गर्म हो जाती है और तप हो आतीहै-और रूहें-
तीन है- नफ़सानी- हैवानी- तवई- इन तीनों में से
जिस रूह के कामो में हानि हो जानों कि उसी रूह में

तप है ॥ नालोर २ ॐ

हुम्मायोमी का लक्षण यह है कि गर्मी बिनाज्वन के बराबर रहेगी - जैसे कि बहुत मिहनत करने में होती है - और सेंडी तप और दिक के लक्षण न होंगे - और बहुधा एक रात दिन रहके उतर जाती है - जब कि दूसरी प्रकार की तप न हो जावे - इसमें कारण को दूरकरे - जैसे उचित हो ॥

इस तप में भोजन बंद न करें सिवाय उस तप के जो उस्वमें से हो - और उलटी भी न करावें - और न फ़स्द आदि परंतु जो तप सुद्दे से हो और कारण उसका सवादकी अधिकता हो और जब मेदे में पचाव न हो और गरसर्न जले में फ़स्द आदि कर सकते हैं - और इसतहसाफ़ी तप में भी ॥

इसतह साफ़ी और सुद्दे की तप में शरीर का मलना और मह्नत करना और गरम पानी से न्हाना अति लाभ दायक है ॥

इसतहसाफ़ी वह तप है जिसमें शरीर के छिद्र बंद हो जाते हैं - और खाल मैली और मोटी होजाती है - जैसे कि ठण्ड की अधिकता से खाल सुकड़ जाती है ॥

और सुद्दे की वह है कि पतली रगों में गाढ़ा मवाद फंस जावें ॥

६९६५ तस्फ़ी तप उसको कहते हैं कि मह्नत यान्हान छोड़ देने से गर्मी रुके - और उससे रुह गर्म हो जावे - चाहे सुद्दा पड़े या न पड़े ॥

और ज़हीरी तप वह हैकि पेचिश की अधिकता आदि से तप होजावे ॥

दूसरापाट २

हुम्मारिवल्ती के विषयमें

शरीर में चार मवाद हैं - कफ़ - रुधिर - पित्त सौदा - इसलिये इस तप में भी चार प्रकारें लिखी जाती हैं ॥

पहिली प्रकार रुधिर की तप सक तो यहहैकि रुधिर केवल गरम होकर तप उत्पन्न करे और सड़े नहीं दूसरे यह कि सड़ जावे - पहिले तप को सूना खस और दूसरे को सुतबिक़ा कहते हैं - पहिली के लक्षण यहहैं किरुधिर की अधिकता होगी - और शरीर एकसा गरम रहेगा - और पसीना न आवेगा - और सुतबिक़ा में मूत्र और पैखाने में दुरगंधि होगी और जितने लक्षण रुधिर के औटने के हैं इसमें सूनाखस से अधिक होंगे - जैसे होसके और सुगमता से रुधिर को निकालें - आवश्यकता के अनुसार रुधिर की गरमी को बुझावें - और रुधिर को साफ़ करें - परंतु बहुत ठंडाई देना इसमें बुरा है कि इस से कफ़ का सरसाम होजाता है - सोनाखस में जितना अधिक रुधिर निकालें अच्छा है - और सुतबिक़ा में आवश्यकता के अनुसार ॥

जब रुधिर पतला होजावे तो शर्बत उन्नाव

पिलाके उसे गाढ़ा करें - और जो गाढ़ा हो तो सिरके की सिकंजबीन देने से पतला होजावेगा और ऐसी औषधें दें जो मवाद को नरम करें - और जब मवाद बुहरान के पीछे रगों में रहजावे तो हरी कासनी का अर्क ७० माशे फाड़के और साफ़ करके ५२॥ माशे सिकंजबीन मिलाके दें - जो खांसी का लगाव हो तो खट्टी वस्तु कभी नदें - बीदाने और अस्पगोल का लुआब पिलावें - और शर्बत बनफ़शा चटावें और जो खटाई के बदले कोई और ऐसी औषधिदें कि खांसी को भी लाभदायक हो और तप को भी तो बहुत अच्छा है - इस तप में उन्नाव भिगोके या औटाके पानी उसका कई दिन तक पिलाना अच्छा है - विशेषकरके जब कि रुधिर को गाढ़ा करना हो - और केवल अस्पगोल रुधिर के साफ़ करने को अच्छा है - और आलूबुखारे का पानी भी लाभ दायक है - और खांसी को भी हानि नहीं करता॥

दूसरी प्रकार पित्तों की तप है - चाहे अकेली हो या कोई और मवाद मिला हो लक्षण पित आदि का सिरपर इस पुस्तक के लिखा गया है - यहां इतना जानना चाहिये कि जो पित का मवाद रगों के भीतर सड़गया होतो तप बराबर रहेगी - और एक दिन बीच करके अधिक होगी इसका नाम गिब्बे लाज़िमे है॥

और जो यह मवाद दिल और मेदे के पास की रगों में सड़जावे तो रोगी की अधिकता होगी - इसका नाम तपे मुहरिका है॥

और जो मवाद पित्तों का रगोंसे बाहर कहीं सड़े

तो गिब्बे दायरः कहते हैं ॥

फिर यह मवाद जो निरे पित्तों के विना किसी और मवाद के तो गिब्बे खालिस कहेंगे ॥

और जो कफ़ मिला हो और ऐसा मिले कि दोनों मिलकर एक हो जावें तो गिब्बे गैरखालिस नाम होगा ॥

और जो कफ़ और पित का भली भांति मेल नहीं हुआ हो- और अलग अलग हों तो शतुरुल गिब्ब कहेंगे ॥

गिब्बे खालिस में तप एक दिन आवेगी-और एक दिन नहीं- परंतु जो दो गिब्बे इकट्ठा हों इस प्रकार से कि एक दिन आवे और दूसरी दूसरे दिन आवे तो वारी से भी नामालूम न होगा ॥

और गैर खालिस में एक दिन अधिकता होगी - और दूसरे दिन कुछ थोड़ा सा अन्तर होजावेगा ॥

शतुरुल गिब्ब में पित और कफ़ रगों से वाहर सड़े होतो लक्षण यह है कि एक दिन केवल कफ़ के लक्षण पाये जावेंगे - और दूसरे दिन दोनों के - क्योंकि कफ़ की तप रोज़ वारी करती है- और पित्त की एक दिन वीच करके तो जिस दिन पित की वारी न होगी उस दिन केवल कफ़ के लक्षण पाये जावेंगे - और पित की वारी के साथ दोनों के ॥

जो दोनों मवाद रगों के भीतर होंतो दोनों के लक्षण बरावर रहेंगे परंतु एक दिन वीच करके अधिक अंतर

होजायगा ॥ नर्द्र।ल न

२ और जो पित्त रगों के भीतर हो और कफ़ वाहर होतो पित्त की तप वरावर रहैगी - और कफ की भी अपने समय पर रोज़ आवेगी । और एक दिन वीच करके न चिकता होगी - इन तीनों का नाम शतुरुल ग़िब्ब ग़ैर खालिस है ॥ ग़ैर

२ और जो पित्त रगों से वाहरहो औरकफभीतर तो कफ की तप वरावर रहैगी - और पित्त की एक दिनवी चकरके आवेगी जिस दिन पित्त की तपकी वारीहोगी उसदिन रोगी की वहुत अधिकता होगी - इसको शतुरुल ग़िब्बेखालिस कहते हैं ॥

ग़िब्बे खालिस जो वरावर रहे सात दिन से अधिक और ग़िब्बे खालिस दायरा चौदह दिन से अधिकनहीं रहती परंतु उपाय में भूलनहो ॥ + [illegible]

पित्त को ठंडाई और तरी पहुंचाना चाहिये- और जो कब्ज़ होतो मवाद निकालें - और जब मवाद रगोंके भीतर हो तो वहुत ठंडाई न दें - परंतु मवाद के पकाने का ध्यान रक्खें । और तपे मुहरका में ठंडाई अधिक चाहिये- जिससे दिक न होने पावे। परंतु वह तपे मुहरका जिसमें मवाद गरमी से अधिक हो उसमें पहले मवाद को पकाना और निकालना चाहिये। और ठंडाई का ध्यान रक्खें। और मवाद निकालने के पीछे ठंडाई अधिक करें। और इस पित्त की ग़िब्ब में जो रुधिरकी अधिकता हो - और मूत्र लाल और गाढ़ा निकले तो फ़स्द खोल सकते हैं - वहुत करके जब कि मवादरगों

के अंदर हो परंतु जैसा कि रुधिर की तप में वेधड़क फ़स्द खोल सकते हैं- वैसा पित्त की तप में नहीं कर सकते- और जो खोलें भी तो रुधिर बहुत थोड़ा निकालें और वह भी पकाने के पीछे और जब केवल पित्त हो और रुधिर की अधिकता बिल कुल न हो तो कभी फ़स्द न खोलें ॥

तपे दाइरी में जो हो सके तो बारी के दिन भोजन न दें- और जब जाड़ा और कंप कपी आने को हो तो सिकंजबीन गरम पानी के साथ पिलावें कि इस से उलटी होजावे- और निकल जावें- और जो उलटी नमी होतो उव काई ही से पचजावे- और जाड़ा ठहर जावे-और जब तप उतरने पर होतो पांशोया करें- और पांव गरम पानी में रक्खें और मलें कि रही सहीगर्मी जिस्से उतर जावे और उस समय सिकंजबीन भी पिलाना अच्छाहै- जो मतली हो और कुछ हानि न होतो उलटी करावें- और जो आंतों में गड़बड़ होतो जुल्लाब दें- और जो मूत्र खुलके नहीं आताहो तो मूत्रलाने वाली औषधें पिलावें- और जो शरीर पर तरी पाई जावे और पसीना खुलके न आवे तो पसीना लानेका उपाय करें- और जो इनमें से कोई बात न होतो जुल्लाबदेंना अच्छाहै ॥

और गरम तपो में तुरंजबीन नदें- परंतु आलूओर इमली के साथ और जब तक मेवों के पानी से काम निकले- कोई और पुष्ट वस्तु दस्त लाने वाली नदें- सिवाय मुलय्यन मुबारिक के ॥

और जब पित्त अकेले न हो तो विना मुंज़िश दिये जुल्लाव और मुलय्यन न दें- परंतु सवाद का औरना कम करने के लिये दे सकते हैं॥

जितना कफ़ अधिक हो ठंडाई कमदें- परंतु खरी वलग़म में ठंडाई देना चाहिये॥

तप में जब तक इन सब बातों को भलीभांति न जान ले- उपाय न करें और कुर्सगुल और सिकंजबीन गुलकंद के साथ मिली हुई तप में अति लाभ दायकहै॥

तपे मुहरिका में बहुत पसीना और नींद और मूत का होना और छींको की अधिकता और मूर्च्छा आदि होती है- और नकसीर फूटती है- और दम रुकता है- इन का उपाय भी तप के अनुसार करें॥ [illegible]

पित्तों के तप की एक प्रकार ऐसी है- जिस में बराबर तप रहती है- और एक दिन बीच करके अधिक हो जाती है- और पित्तों के लक्षण पाये जाते हैं- और भीतर गरमी और बाहर ठंड होती है- उपाय इस का वह है- जो ग़ैर खालिसा का है- और सिकंजबीन और गुलकन्द लाभ दायक है- इस तप को लैफूरिया कहते हैं॥

इसी तप की एक प्रकार और है- इसमें वारी के समय मूर्च्छा आजाती है- उसको हुम्मागशिया कहते हैं इसका उपाय वही है- जो उस हुम्मायौमी का है- जो कि मूर्च्छा सी हो जाती है- और वारीके समय रोटी नीबू के

र्कमें भिगोकर थोड़ी सी खिलावें॥

तीसरी प्रकार कफ़की तप है- जो इसमें कफ का मवाद रगों के भीतर सड़ जावे तो उसको लसक़ा कहते हैं॥

यह मवाद जो खारी कफ़ हो और दिल और मेदे के पास रगों के अन्दर सड जावे तो मुहरिक़ा कहलावे गा इसमें और पित्त की मुहरिका में अंतर इनके लक्षणों से मालूम होजावेगा॥

और जो कफ़ रगों के बाहर सड़ेतो नाइवा और मुआज़िवा नाम होगा- परंतु लसक़ा बराबर रहतीहै बिनाग़ा है और कभी कभी थोडो देर के लिये कुछ कभी कभी भी होजाती है॥

और नाइवा प्रति दिन में एक दो बार उतरजाती है॥

कफ की तप में कफ़ के लक्षण पाये जावेंगे- परंतु खारी कफ़ में वह लक्षण नहीं होते-क्योंकि इसमें गर्मी अधिक होती है-इसपर भी खारी कफ़की गर्मी पित्तोंकी गर्मीको नहीं पहुंच सकती॥

खारी कफ़का लक्षण यह हैकि रोंगटे शरीर पर खड़ेहों- और ठंड और कपकपी थोडीहो॥

२८६ और ज़जाज़ी कफ़ में कपकपी अधिक होती है और खट्टे कफ़में ठंड बहुत मालूम होती है- मीठे से प्यास और बहुधा कई बारियों तक रोंगटे खड़े होना+ और ठंड और कपकपी कुछ नहीं होती- सात दिन तक शहद की सिकंजबीन और शहद का पानी जिसमें थोडा सा जूफागोराहुआ

हो और शाराजी जिसमें थोड़ी सौंफ और चने
रहें- और सिकंज बीन और गुलकन्द
च्छाहै- इसके पीछे सिकंजबीन और गरम पानी से
वें- बहुत करके उस समय जब कि बारी आने कोहो और
हुत सी पिलावें- और जितनी उलटी सुगमता से आवे अच्छी
है- और कभी कभी गुलकंद के साथ अनीसून दें- और यदि
ना और मस्तगी बराबर चबाया करें- जब मवाद भली भांति
पकजावे तो जुल्लाब दें॥

जो कब्ज हो तो रात को दवाय तुरबुद
जितनी उचित हो खिलाया करें- और सबेरे गुलकन्द १४॥
माशे खिलाके ऊपर से शहद की सिकंज बीन पिलाया
करें- जब कि कब्ज़ दूर करना हो- और जो मूत्र
गाढ़ा और रंगीन हो तो फस्द खोल सकते हैं- औ
र जब भेजा कम ज़ोर हो तो सिकंज बीन न दें- और
मवाद निकलने के पीछे कुरस गुल अति लाभ दायक
है॥ २९२५।

जो कफ़ की तप पुरानी हो और कपकपी
अधिक आती हो- और शरीर देर में गरम होतो अजवायन
कूट छान के शहद में मिलाके १०॥ माशे खिलावें- और गारी
कून ३॥ माशे शहद ४॥ माशे में मिलाके खिलाना भी ऐसा
ही है॥ ८।

और लसक्रा से पकाने वाली और पतली
करने वाली औषधें देने में इतनी जलदी न करना चाहिये
जैसी कि नायबा में करसकते हैं- कहीं ऐसा न होकि
मवाद पिघल के सिर में चढ़जावे- और सर साम होजावे-

और सिरकी पीड़ा और भेजे की कमज़ोरी में तो ऐसा कभी न चाहिये ॥ ५वा ज्वाला १ २ ८ २ ७ २ व ३ ५ ७ २

एक प्रकार कफ़ की तप की ऐसीहै- जिसमेंभी तरंड और वाहर गर्मी होती है- उसको इनक्स्या लूस वोलते हैं- और एक और प्रकार है जिसमें भीतर गरमी औरवाहर ठंड होतीहै- उसका नाम लैफूरिया है- उसका वर्णन और उपाय ऊपरहोचुका ॥

कफ़ की तप की एक प्रकार ऐसीहै जिससे गरमी और ठंड इकट्ठा भीतर और वाहर होती है- और एक प्रकार में भीतर ठंड होती है- और वाहर असली हालत- और कपकपी कई वार विना गर्मी के आवे- इन दोनों का कुछ नाम नहीहै ॥

एक प्रकार दिन को आती है- और रात को उतर जाती है- उस को निहारी कहते हैं- और एक प्रकार रात को आती है- और दिन को उतर जाती है- उसको लैली कहते हैं- इन सव में मवाद को पतला करें ॥

४ चौथी प्रकार सौदा की तप है- इसका मवाद भीजो रगों के भीतर होतो रुवालाज़िम कहते हैं- और लक्षण उसका यह हैकि तप वरावर रहेगी- और दो दिन वीच करके अधिकता होगी ॥

जो मवाद रगों के वाहर सड़जावे उसको रुवा दायक कहते हैं- और यह दो दिन पीछे दौरा करती है- और इस तप के आने का दिन उतर जाने के दिन समेत चौथा दिन होताहै- इस लिये इसका नाम रुवा रक्खा गया

है इसीप्रकार से पांचवें दिन वाली तप और छेटे दिन वाली आदि जानों- परंतु चौथे दिन वाली बहुत आया करती हैं ये तपें या तो तवई सौदा के सड़ने से होंगी- लक्षण उनकाय है कि पहिले वह वस्तु खाई होगी जो सौदाको उत्पन्नकरे-और नाड़ी हल्की होगी- दूसरे यह कि गैरतवई सौदासे हो-और यह बात हम पहिले लिख चुके हैं कि जो मवाद्जल ता है वह गैरतवई सौदा होजाता है तो मालूम हुआकि यह तपें रुधिर या पित या कफ़ या सौदा से होंगी- और लक्षण हर मवाद के पाये जावेंगे- परन्तु पित्तों की तप में गरमी और तपों से अधिक होगी- और जल्दी जाती रहेगी॥

तपें रुवा देरतक रहती है- और कभी पांच छैः बारी होके जाती रहती है- और फिर आने लगती है- इसमें नागेके दिन बहुत करके इस रोग के आदि में खाना पीना बन्द करदें- और ठण्डा पानी और मेवे और वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु और गरम खुश्क और जल्दी सड़ने वाली वस्तु से बचें- और तर औषधों और भोजनों से जहां तक हो सके- मवाद को पकावें-फिर मवाद को निकालें कई बार करके- और रुधिर की रुवा में फ़स्द खोलें-परंतु दो तीन बारियों के पीछे और २ प्रकारों में भी फ़स्द खोलें- परंतु मवाद के भली भांति पकजाने के पीछे- और पित्तों की तप में पकाना अवश्य नहीं है- और जब फ़स्द से रुधिर लाल और साफ़ निकले तो रोक दें- और जो यह तप देर तक रहे तो रोगी में जोर रहने का ध्यान रखे और कड़ा परेहज़ न करावें- और हर महीने के सिरे पर

फ़स्द उसैलम खोलना और थोड़ासा रुधिर निकालना अच्छाहै और वारीके दिन २ घड़ी पहिले खाली सींगियां लगाके बहुत देरतक चूसना लाभ कारकहै ॥ रक्तसिलवत

मिली हुई तपों की कई प्रकारें हैं- नाम उन के अलग २ नहीं हैं- सिवाय शतुरुल गिब्ब- और गिब्बेगेर खालिसा के- और जिसकी इनमें से बारीका ठीक नहो उसको मुख्त लित कहते हैं- और तपों के मिलने की तीन प्रकारें हैं ॥ +और दूजे

एक यह कि एक तप अभी उतरी नहीं कि दूसरी चढ़े-उसको मुदाखिला कहते हैं ॥

दूसरी यह कि एक उतरे और दूसरी चढ़े उस को मुवाखिला कहते हैं ॥

तीसरी यह कि इकट्ठा दो तपें चढ़ें-चाहे साथ उतरे या नहीं - उसको मुशारिका और मुशाविका कहते हैं उपाय इसका सोच समझ के करें - जो अधिक हो उसका दूर करने की अधिक आवश्यकता जानों ॥

तीसरा पाठ ३

दिक़ के विषय में

यह वह तप है जिसमें बुरी गर्मी शरीर के-बड़े बड़े स्थानों और दिल में बैठ जाती है- और अच्छी तरी पहिले जाने लगती है- और आदि मे उसको दिल

कहते हैं॥

१ और जब दूसरा दर्जा होता है तो शरीर पिघलनेल गताहै- उसको जबूल कहते हैं॥

२ और जब इससे भी बढ़जावे और बाल गिरने लगें उसको मुफ़तित कहते हैं- उस समय उपाय कठिन होजाताहै॥

अकेली दिक की पहिचान यहहै कि हलकीतप बराबर रहती है- और भोजन करने के पीछे गर्मी अधिकहो जाती है- और नाड़ी कमज़ोर होती है- परंतु खानेके पीछे नाड़ी में जोशपाया जाता है मूत्र में छिलकेसे निकलते हैं- इसमें शरीर को तरी और ठंड पहुंचावें- और भोजन और मकान और हवा ठीक करें- और ठंडी औषधें और गधे का दूधओ र मग पिलावें- जो सड़ी हुई तप नहोतो इसके देने कीक्रि यावड़े ग्रन्थों में लिखी गई है- इस तप में जहां तक हो सके शरीर के बड़े बड़े स्थानों को पुष्ट रक्खें और तरी पहुंचावें- और दस्त न आने दें- और जब कमज़ोरी बढ़ने लगेतो माउल लहम पिलावें॥

एक और रोग है जो दिक से मिलता हुआ है उसको दिक़ शैख़ूख़त और दिक्कुल हरम कहते हैं- वह यह हैकि ज़वान सूरतकार बुड्ढों कासा होजाता है- और बुड्ढे को होतो वह और भी बुरा होजाताहै- बिना गरमीके और बहुधा बुड्ढों को यह रोग होताहै- और जवानों को कम और बच्चों को बहुत कम- तपों में ठंडी वस्तु अधिक खाने से दिलमें ठंड से बिगाड़ हो जाताहै- या महनत करने के पीछे ठंडा पानी पीलेने से या किसी और ऐसेही कारण

से यह रोग होता है- इससे मिज़ाज़ को गरम और तर वस्तु ओं से ठीक करें- परन्तु बहुत न दें- और कभी कभी शहद चाटें- और जब यह रोग जगह पकड़ लेता है तो अच्छा होना बहुत कठिन है- परन्तु उपाय से हाथ न रोकें कि जलदी म रने से बचें- और सोने का वर्क शहद में या गुलाब शर्बत में मिलाके खिलाना और माउल्लहम और अंडेकी ज़रदी देना अ तिलाभकारक है॥

२ मा १२ओ
२५२५

चौथा पाठ ४

सीतला के विषय में

इस रोग में जो तप होती है उसमें बेचैनी और पीठ में पीड़ा होती है- और नाक खुजलाती है- और आंसू बहते हैं- और सोते में चौंक पड़ता है॥

ख़सरा से मोतिया से बेचैनी अधिक और कमर की पीड़ा कम होती है॥

सीतला निकलने से पहिले रुधिर कम करें-जवानों के फस्द खोलें और लड़कों के जोंक लगावें- और नरम कर ने वाली औषधें पिलावें- और शरबत उन्नाव बराबर पि लाया करें॥

और जब निकल आवें तो कभी मवाद न निकालें प रन्तु भली भांति निकलने का उपाय करें-इस प्रकार से कि शरीर को नरम कपड़े से ढांके रक्खें- और ठण्डा

पानी एकर घूंट देते रहें- और खूबकालो बिछोने पर बिठा दें- और ओंटाके भपारादें ॥

पांचवां पाठ ५

हुम्माबबाई के विषयमें

यह तप बहुत बुरीहै वबा के दिनों में होतीहै ताऊन एक रोगहै उसके निकलने में ॥

जब तक वह न निकले सवाद को निकालें- औ रगारसी को बुलावें- और दिल और भेजेको पुष्टकरते रहें- औ र जब ताऊन निकल आवे तो उसका उपाय करें- जैसाकि आगे लिखा जावेगा ॥

पचीसवां अध्याय

॥२५॥

सूजनों और फुन्सियों और उनरोगों

के विषयमें जो शरीरके ऊपरहो
तेहैं ॥

पहिलापाठ१

सूजनों आदिकेविषयमें

छोटी सूजन को फुंसी कहते हैं- और सूजन कई प्रकार की होतीहै- और उनका चाल भीजुदाजुदा है- जैसाकि आगे लिखाजाताहै ॥

फलगमूनी- यह सूजन गाढ़ी है- बहुत बड़ी रुधिर के मवाद से उससें पीड़ा और तपक अधिक होतीहै ॥

फ़स्द खोलें और आदि में वह ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें लगावें- जैसे चंदनछालिया- गिलेअरमनी- मामीसा- अक़ाकिया- गुलाबके फूलकासनी आदि और बढ़ने के समय ढीला करने वाली औषधें मिलालें- जैसे जौका आटा- हराधनिया- खैरू- खुब्बाज़ी आदि और अंत में ढीला करने वाली और पकाने और पटकाने वाली औषधें मिलाके लगावें- जैसे बाक़लेका आटा- और खैरू- खुब्बाज़ी- बाबूना- कतीरा आदि और जब सूजन बढ़ने से रुकजाय तो अकेली पटकाने वाली औषधें लगावें- जैसे बाबूना और नाखुना अलसी

और मेथी के बीज आदि ॥

और जब मवाद न पचै और पकने पर आजावें तो पकाने वाली औषधों का लेप करें- जैसे कनौचे और कतानके बीज और इंजीर आदि कि जल्दी पकजावे- फिर जो आपफूटजावे तो अच्छाहै- नहीं तो फूटने वाली औषधें लगावें- जैसे कबूतर की बीट और जोंक या नश्तर से चीरदें- और फ़स्दके पीछे जो कब्ज़ होतो मतबूख फ़वाकह या मुलय्यन मुबारिक पिलावें ॥

यहजो रीत लेप की लिखी गई सब सूजनोंमें इसी प्रकार से करें- सिवाय उस सूजन के जो कानके पीछे और बगल के नीचे और रान के कोने में हो बड़े रस्थानोंके मवाद दूर होनेसेहो वहां ऐसी ठंडी औषधें जो मवादको इधर गिरने से रोकें लगाना न चाहिये ॥

सक़ाक़िलूस- यह बहुत बुरी सूजन है- जिस स्थान पर होती है- उसको काला करदेतीहै और बिगाड़देतीहै- काला होने से पहिले गहरे पछने लगावें- और उसी जगह का रुधिर निकालें- फिर मटर का आटा सिर्कै जबीन में मिलाके लगावें- जब वह जगह बिलकुल काली होजावे ॥

सिवाय काट डालने के कोई उपाय नहींहै- उसी समय काटडालें- कि बिगाड़ आगे को नबढे- और इसमें फ़स्द कभी न खोलें- जो वह काटने के योग्य नहोतो आसपास उसके दागदें ॥

हुमेरा- पित्त की सूजन है- जो केवल पित्त से होतो जलन और चमक अधिक होतीहै- और फैलताहै

आचला जाता है- और पीला होता है- और जो पित और रुधिर के मेल से होतो लाल होता है- और जलन नहीं होती- और न जल्दी फैलता है- केवल पित में उन्हें निकाले- और ठंडी और तर औषधें लगावें- हर समय औसतोमेल्ह से होतो पहिलें फ़स्द खोलें- और फिर पित को निकाले- और दवा उसी रीति से लगावें- जो फलगमूनी मे लिखी गई हैं॥

"जमुरा" यह दाने होते हैं फैलेहुए और बहुत लाल पीड़ा और जलन के साथ जैसा अंगारा होताहै- इस में पित को निकालें- और जो रुधिर अधिक हो तो फरदभी खोलें- और कुछ लोग यह कहते हैं कि रुधिर इतना निकाले कि मूर्छा आजावे और यह लेप लगावें- सिरके की तलछट गरम ज़मीन पर डालें- जब खौलने लगेतो उसे उतारके कपूर मिलाकेलगावें- और जो गिलेअर्मनी या सिर धोने की मिट्टी भी मिलालें तो अच्छाहै॥

नमरा- एक दाना या बहुत से दाने होते हैं- जलन और खुजली उसमें बहुत होती है- और अपनीजगह से बढ़ती नहीं- जो केवल पित होतो खाल के ऊपरहीहोगा और जो रुधिर भी मिला होतो खाल के ऊपर और मांसके भीतर पैदा हुआहोता है- कारण के अनुसार उपाय करें- और जमुरा वाला लेप लाभ दायक है- और दवायें नरद आस पास लगावें- और घाव का उपाय सफेदे की मरहम से करें॥

जावरसिया- छोटे २ दाने खाल पर ज्वार जैसे होजाते हैं- नोक उनकी सफ़ेद और जड़ लालहोतीहै

और अलग अलग निकलते हैं- इससे पित्त और कफ़ का मवाद निकलें- अनार के छिलके थोड़े से सिरके और गुलाब में पीसकर मलें- और जो आवश्यकता हो तो फ़स्द भी खोलें॥

नार फ़ारसी दाना है इसके भीतर पतला पानी भरा होता है और जलन और खुजली अधिक होती है- और रत्व निकलता है- जल्दी खुरंड हो जाता है- निकलने से पहिले उस जगह लाल और मोर के रंग की लकीरें पड़ जाती हैं- फ़स्द खोलें और पित्त का मवाद निकालें- और मुर्दासंग गुलाब में या माज़ू सिरके में पीसकर लगावें॥

निफ़ातात छाले पड़ने को कहते हैं- इसके भीतर बहुधा पतला पानी भरा होता है- और कभी पतला रुधिर और कभी केवल गाढ़ी बाय होती है- और कुछ नहीं होता- फ़स्द खोलें और रुधिर को गाढ़ा करें- और जब छाला बड़ा होकर फूल जावे तो सोने की सुई से फोड़ दे- जिससे पानी सब बह जावे- और ठंडी औषधें मलें॥

पित्ती ददोड़े होते हैं- लाल और चपटे छोटे हों या बड़े- और बहुधा अचानक हो जाते हैं- और खुजली और बेचैनी होती है- जो इससे पानी बहे तो इंदुसम कहते हैं- मवाद इस का बहुत करके रुधिर या कफ़ होता है- और लक्षण हर एक के पाये जावेंगे रुधिर में फ़स्द खोलें- और क़ब्ज़ दूर करें- और सिरका और गुलाब और रोग़न गुल मलें- और कफ़ में मवाद को

निकालें ॥

मशरा॰ यह सूजन पित्त और रुधिर से मुड़प रहोजाती है-इसमें मुंह लाल और पीड़ा और तपक होती है- और सिर और कान और नाक और गाल और माथा सू जजाते हैं- बहुत सा रुधिर निकालें- फिर मिज़ाज को नरमकार और उस समय गले और छातीपर ठंढी औषधें लगावे- किं बार मुंह से उतर कर छाती पर न गिरे और ३० दाने उन्नाव के पानी में औटाके सिकंजबीन मिलाके पिलाना अति ला भदायकहै ॥

ताऊन॰ सूजन है- जो बहुधा वबा के दिनों मेंहोती है-इसमें जलन बराबर रहती है- औररंग स का लाल या पीला या नीला या हरा या कालाहोताहै न रंगों में हर दूसरा रंग पहिले से बुरा होताहै- इसमें दिल और भेजे को ठंढ और ज़ोर अधिक पहुंचावें- औ र सूजन के आस पास ठंडी औषधें लगावें- और उस पर गहरे पछने लगावें- और गरम पानी से धो डालें- कि रुधिरभली भांति बह जावे- और जो रुधिर की अधि कता होतो फ़स्द भी खोलें- परन्तु पहिले सूजन पर पछ लगालें ॥

औरामगाबिन॰ यह वह सूजन है बगल में या कान के पीछे या चढ्डों में उत्पन्न हो बिना पके और जो किसी और जगह के घावके या गुल्ली केका रण सेहो तो केवल जिदवार घिस कारलगावें- मवाद निका लने की आवश्यकता नहीं- और जो शरीर के बड़े बड़े स्थानों के मवाद दूर होने सेहोतो दीक्षा करने वाली औषधें

लगावें- और ठंडी औषधें जो मवाद को इधर गिरने
रोकें- न लगावें- और मवाद को पकाके चीरने का
यकरें॥

आकिला– मवाद इसका आस में चारों ओ
जल्दी जल्दी फैलता है- और सवेरे से सांझ तक अमलता
स के बीज के बराबर होजाता है- इसमें दाग़दें- और गिले
अर्मनी सिरके में पीसकर आस पास लगावें- और वदन
से मवाद भली भांति निकालें- और घाव को सिरके और
पानी से धोवें- जो इससे लाभ न हो तो दाग़दें- इस प्रका
रसे कि तेल वाड़काड़ा के आस पास आकिले के आटे से घेरा
बनाकर वह तेल उसके बीच में छोड़दें कि जितनी जगह भु
लसजावें॥

दुम्मल– इस सूजन कोसब जानतेहैं-इस
में रुधिर को फ़स्द आदि से निकालें- और मवादों को
जुल्लाबों से निकालें- और सिकंजबीन पिलावें- और आदिसे
तीन दिन तक ठंडी औषधें लगावें- और चौथे दिन अस्पगोल
अंडेकी सफ़ेदी में मिलाके लेप करें- और जब पकाने परहो
पकाके चीरें- और पीप आदि से साफ़करें- घावके भरने
उपाय करें॥

पकानेवाली औषधें यह हैं- इंजीर-इलुवा-
कर मलें- गेहूंका आटा गूंध के थोड़ा सा नमक और अ
का तेल- और शहद मिलाके सूजन पर बांधें॥

फोड़ने वाली औषधें यह हैं- खट्टी- खमीर
के बीज- कबूतर की बीट- बिना बुझा चूना- अंडेकी
शहद में मिलाके लेप करें- और नश्तर से चीरदेना

सब से उत्तम है॥

दुबैला॰ यह सूजन दुम्मल से बड़ी विना पीड़ के शरीर के ऊपर या भीतर होतीहै। इसका मवाद भी कई रंगका होताहै- जैसे काली मिट्टी और गीकारी और नाखून इ ताल और चूने कासा- पहिले मवाद को निकालें- और भोन तथोड़ादें- और मरहम दारवलियून लेप करें- जव मवाद पकजावे तो चीरदें- चाहिये कि मवाद को कई वार करके निकालें- क्योंकि एक वारगी निकालने से इसमें मूर्च्छा आ जातीहै- और जव सव मवाद निकल चुकेतो पुरानी रुई घाव में भर दें- कि सारी पीप को चूसले- फिर घावके भरने का उपाय करें- जो दुवैला भीतर होताहै - उसका वर्णन अपनी अपनी जगह लिख चुकेहैं- जव तक सूजन भली भांति न पकले उसे चीरेंनहीं- और चीरने का स्थान उभरीहु ई जगहहै - जो पिलि पिली हो और चाहिये कि छेवेको नीचेकी ओर झुका रक्खें जिससे मवाद रेलेसे निकल जावे॥

उजीमा॰ सूजनहै सफेद विनागरमी औरपीड़ के इसमें मिजाज को ठीक करें- और कफका मवाद निकालें- और नतरून की खारमें जो अंगूर के पेड़ की राख से वनाई गई हो और थोड़े सिरके में मिलाकरे लेपकरें- और एलुआ सिर के और गुलावमें घोलकर लगाना लाभदायकहै॥

नफखा॰ वाय की सूजन को कहतेहैं - वह हल्की और उंगली से दवाने के पीछे फिर वैसीही होजाती है- जैसे मश्क में हवाभरीहो - वाय उत्पन्न करनेवाली वस्तु ओं सेवचें- और वायकी तोडने वाली वस्तुखावें- और वाजरे के आटे से सेकें और नमक और अंगूर की राख और गौकागोवर

और फिटकरी और एलुआ सब को पीसके सिरके में मिलावें लेपकरें ॥

सलआ – सूजन है मोटी बिना कड़ेपन कीकि नीचे खाल के हिलाने से हिलतीहै – अपनी जगह पर – इसमें कफका मवाद निकालें – और मरहम दाखलियून नित्य लगायेरहैं – और जो इससे लाभ नहोतो वह औषधे लगावें जो गला सड़ाकर फोड़दें – या नश्तर से चीरके भीतर से सावधानीके साथ उस गुद्दल को निकालडालें ॥

गुद्दे – और "गांठें" शरीरके ऊपर होतीहै इनसे और सलआ में यह अन्तरहै कि यह बड़े नहीं होते – और कड़े होते हैं – और जो मवाद अधिक होतो एकके पास दूसराभी निकल आताहै – इसमें मरहम दाखिलीयून लगावें और भारी टुकड़ा सीसे का उसपर बांधें ॥

फ़्राजिशला – उस सूजन को कहतेहैं जो गुद्द के स्थानों में उत्पन्न हो – परन्तु यह ताऊन कीप्रकार से नहीहै – उपाय इसका वहीहै जो औरास मुग़ाबिन ९ काहै ॥

ख़ुनाजीर – बुरी सूजन है – और सलआ की प्रकार उभरीहुई होतीहै और दबजातीहै – और बहुधा नरम मांस से उत्पन्न होतीहै – बहुत करके गर्दन और बग़लमें बलग़मको निकालें – और दाखिलीयून लगावें – और मवाद निकालनेके लिये हब्बे ख़ीज़रान और हब्बे वासलो और इतरीफ़लगुददीसब से उत्तमहै ॥

सुक़ेरूस – कड़ी सूजन को कहतेहैं – बहुधा सौदा के मवाद से होताहै – सौदा को निकालें – और दाखि

लगावें - और कभी कफ़ से या कफ़ और सौदा से मिल कर होताहै - परन्तु इसमें कड़ापन कम होताहै - मवा दके अनुसार उसे निकालें - यह सूजन दो प्रकार की होतीहै पीडी होतीहै और दूसरी में नहीं होती - उपाय हो सकताहै और दूसरी का नहीं ॥

सरतान - यह सौदा की सूजनहै - अधि कड़ी कालापन लिये हुये बुरे रंगकी - और बीच में और भीतर को बैठी हुई और उसके किनारे लाल हरी रगें होती हैं - सब मिलाके कड़े कासा होता ॥

इसमें हौले हौले कई बार करके सौदाका निकालें - और जिगर के मिज़ाजको ठीक करें - ठंडी औषधें लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें तक कि पीप पडे - इसकेपीछे घाव भरनेवाली और ठंढ वाली और बढ़ने से रोकने वाली औषधों का - जैसे कलईका सफेदा घोया हुआ तूतिया, आदि मिलाके ॥

नहरुआ - एक दाना होताहै - - जिसमें से एक वस्तु रग कीसी निकलती है लाल कालापन लिये हुए और बढ़ते २ एक एक बालिश्त या अधिक होजाती है और कभी खालकेनीचे कीड़े रेंगा करती है - आदि में फ़स्द खोलें फिर जोकें लगावें - और मवाद निकालें तरी पहुंचाने के साथ और एलुआ और हरी कासनी के पानी में पीस के लगावें - और ए इस रोग में लाभ कारक है - चाहिये पहिले दिन ॥

माशे सलुआ हरी कासनी के पानी में रात को भिगोदें- और सवेरे अकेला या क़ंद के साथ मिलाकर पिलावें- औरदूसरे दिन ३॥माशे सलुआ लें- और तीसरे दिन ४। मांशे-और जब नहरुवा बाहर निकलने लगेतो सीसे के टुकडे पर लपेटे कि बोझ से बाहर निकलता आवे- और आसपास सूजन के रोग़न मलें- और गरम पानी फुंकने में भरकर सेकें और ध्यान रक्खें कि नहरुवा टूटने न पावें- और जो टूटभी जावे तो लम्बाई में चीरदें- कि सारा मवाद निकलजावे- फिर घाव को भरदें- और कपीले की माजून इस रोग को नहींहोनेदेती ॥

जुज़ाम ⟶ इसमें शरीर का रूप बिगड़ जाताहै और नाक चपटी होजातीहै- और आवाज़ बैठजाती है- और मुंह फूलके शेरकासा होजाताहै- इसमें फ़स्द और जुल्लावों से शरीर का मवाद निकालें- और नित्य गरम पानी से न्हावें- और खाने पीने और नाक में डालने और शरीर पर मलने से तरी पहुंचावें- और बकरी का दूध अकेला या रोटी भिगोकर खाना अति लाभ कारक है- और जो वस्तु सौदा उत्पन्न करें- उससे बचें- और इसके उपाय से घबरावें नहीं- यह देरमें अच्छाहोताहै ॥

साफ़ा ⟶ घाव को कहतेहैं- जो सिर औरमुंहपरहोते हैं- जो तरी के साथ होतो फ़स्द खोलें- औरहड़ और शाहतरे को औटाके- पिलावें- इससे मवाद निकलेगा- और रुधिर को ठीक करें- और हलदी अनार के छिलके-मुर्दासंग- और मेंहदी पीसके सिरका और रोग़नगुल मिलाके लेप करें- और जो सुरवाहो और सफ़ेद छिलके

खाल परसे उतरें तो तरीपहुंचावें - एक प्रकार इसकी ऐसी है- जिसमें शहद कासा मवाद निकलताहै- और एक से दाने पड़तेहैं जिनकी नोंकें सुई कीसी होतीहैं- और दूसरी ऐसीहै जिसमें कड़ा दुम्बल हो जाताहै और पीप नहीं पड़ती और एक इंजीर कासा होताहै - और एक मेंहजामत बनवाने से सिरकी खाल लाल होजातीहै - इनसब प्रकारों में मवादको निकालें और मिज़ाज को ठीककरें ॥

खुजलीजो सूखी हो तो तर वस्तु लगावें- फिर कईबार करके मवाद निकालें- और गरम पानी से खाल कारके रोगन गुल और सिरका मिलाके मलें- और जो तरहो और पीला पानी उसमें से बहे तो पहिले फ़स्द खोलें और जो मवाद अधिक हो उसका जुल्लाब दें - और गरम दवा कभी न लगावें ॥

हिक्का - उस खुजली को कहतेहैं जिससे दानेन पड़ें- इसका उपाय भी वहीहै जो ऊपर लिखा गयाहै - औरजोखुजली पेशाब और पाख़ाने कीजगह हो उसमें मेथी और अलसीकेबीज शहद के साथ औटाके कपड़ा उसमें भिगोके शाफ़ाबनाके रक्खें ॥

खुजली - और "पिती" जो बच्चोंकोहोती है - उसमें पछने याजोंकें लगाके - गुलाब के फूल और बनफ़शा और नीलोफर और छिलेहुएजो औटाके शरीर को धोवें और ऊपर से रोग़न मलें और दूध पिलाने वाली अर्थात् बच्चे की माको ओषधि पिलावें ॥

हसफ़ - छोटे छोटे दाने लालशरीरपरनिकलते हैं- उनमें खुजली अधिक होतीहै- फ़स्द और जुल्लाब सेपित

का मवाद निकालें- और नमक और मेंहदी सिरके में मिलाके मलें॥

दाद ~ खुरखुराहट फैली हुई खुजली के साथहो तीहै- आदि में जबकि मांसके भीतर तक नहोतो रसौत सिरके में घोलकर या हड़ सिरके में पीसकर मलें- और जो कुछ मांस के भीतर पहुंच चुका होतो उस जगह पर जोकें लगावें और उशक या मुर सिरके में पीस के ऊपरसे मलें- और जो भलीभांति मांस के भीतर बैठ गयाहो और खाल मोटी पड़गई होतो पहिले फ़स्द और सौदा के जुल्लाव से मवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करें- फिर उसजगहका रुधिर निकालें- और तीव्र औषधें जैसे हरताल- उशक और राई- गूगल- फिरकरी गेहूं के तेलमें और सिरके में मिलाकर लगावें- जबदाद जाता रहै तो ठंडी औषधि कई दिन तक लगावें- कि फिर नहोने पावे- और बच्चों के दाद में बासी थूक लगावें- और जब दाद औषधि से अच्छानहो और संभव होतो चीरदें- फिर तीव्र औषधें लगावें कि बुरामांस गलजावें- फिर वह औषधें लगावें जो घावको भरें॥

ल ~ मुहासे ~ सफेद फुंसियां होती हैं नाक औरमुखपर निकलती हैं- इनमें शरीर से कफ़का मवाद निकालें- और अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लेप लगावें॥

बनातुल लैल ~ छोटी २ फुंन्सियां रातको ठंडके समय निकलती हैं- और उनमें खुजली भी होतीहै- फ़स्द और जुल्लाव से मवाद को निकालें- और गरम पानी से स्नान करने और मलने से शरीर के छिद्र खोलें जैसाकि

खुजली में लिखा गया है- और कफ़स के पानीमें सिरकेकी तलछट मिलाकर मलना लाभकारकहे॥

ससे ← अधिक काडी फुंसियां कई प्रकारकी होतीहैं- पहिले मवाद को निकालें- और नमक और सिरकामें- और रोगन गुल्से चिकना रक्खें॥

बलरवीया ← इन फुंसियों मेंसे पूर के पानी बहता है और ऊपर खुरंड जमजाता है- और इनके साथ बहुधा दिल घव रताहै- और मूर्च्छा आती है- पहिले मवाद निकालें- और गिले अर्मनी सिरके में पीस कर नित्य लगाया करें- जब तक कि घाव सूख के नया मांस न जमे॥

बतम ← यह काली फुंसियां होती हैं- जो पिंडली पर निकलतीहैं- इसमेंसे काला पानी बहताहै पहिले फस्द बासलीक खोलें- और कई बार उल्टी करावें फिरनों को या पछनों से उसे जगह का रुधिर निकालें- और जलीहुई महंदी मामीरा पीसके सिरके और रोगन जैत मिलाके लगायाकरें॥

तौसा ← फुंसी है घाव वाली कि मांसके भीतर शहतूत कीसी होतीहै- मवाद निकाल के मरहम जंगार लगावें- कि बुरा मांस गलजावें- फिर भरने वाली मरहम लगावें॥

दाखस ← गरम सूजन है- जो नाखूनों कीजड में होतीहै- इसमें पीडा और तपक और खिंचाव अधिक होताहै- और कभी तप भी होजाती है- फ़स्द और जुल्लाबके पीछे मिज़ाज को ठीक करें- और आदि में अस्यगोल सिरके

में घोलके और वर्फ में ठंडा करके लगावें- और जो पीडा अ
धिक होतो खुरासानी अजवायन और अफ़ीम सिरके मेंघी
सके लगावें- और जो इससे अच्छा नहोतो रोगन जैत गरम
करके उंगली उससें रक्खें कि मवाद पकजावे-और जोइस
से भी लाभ नहोतो अलसी और कनोंचे के वीज मलें- और
जव सूजन पकजावे तो चीरदें- जव पीप साफ़ होजावे तो भर
लानेका उपाय करें॥

अवूरसमा - चोट लगाने या कुचल जाने से
खाल के नीचे रग फटजातीहै- और रुधिर और वायु उसकी
खाल के नीचे अटक रहतीहै- लक्षण उसका यह है कि
रगके खुलने पर सूजन दवजावेगी- और खुलने पर उभर
आवेगी - क्योंकि खुलने में रुधिर रगके अन्दर खिंचजावे
गा- और वन्द होने में फिर वाहर निकलेगा- और रंग उतनी
खालका वैगनी और नीलाहट लिये होगा - क़बज़ करनेवा
ली औषधें लगावें- जैसे शाहवलूत और साजू आदि और जो औ
षधें रुधिर को हिलावें उनसे बचेरहें॥

कई प्रकार की फुंसियां और दाने होतेहैं-एक
यहकि छोटे २ दाने जिनकी जड़ें सफेद और कड़ी हों- और देर
में पकें- और सिरों से उनके थोड़ी २ पीप वहे तो उनको ज़ातु
ल अस्ल- कहतेहैं॥

दूसरी वह कि कड़ी हो और मुंह पर निकले-और
आस पास लालीहो उनको-शैलस-कहतेहैं॥

तीसरी वहजो कानपटी पर कानकी जड़में होतीहै
औरचीरने से गाढ़ा रुधिर निकलताहै॥

चौथी प्रकार ऐसी ही होतीहै- जो सिर और गर्दन

के नीचे निकलतीहैं - यह बहुतसी निकलती हैं - और पीडाउन में अधिक होतीहै ॥

पांचवीं प्रकार वह है - जो छोटी और कडी और पीडा रहित हों और देर तक रहें - और एक जगह से जाके दूसरी जगह निकल आवें ॥

इन सब में सवाद के अनुसार सवाद को निकालें - और लेप लगावें - और सिर और गर्दन की फुंसियों में रोगनवनफ़शा स्त्री के दूध में मिलाके नाक में टपकावें - और सिर पै मलें ॥

२ आबला फरंग ~ यह रंग बरंग के दाने होते हैं - जिस सवाद की अधिकता हो उसी को निकालें ॥

दूसरा पाठ ॥

खाल के रोगों के विषय में

१ सफेद दाग ~ यह गाढ़ी सफेदी होती है जो खाल पर होती है - और सम्पूर्ण शरीर पर भी होजातीहै ॥

छीप ~ हलकी सफेदी खाल पर होती है - अंतर इन दोनों में यह है कि पहिली में चमक होतीहै - और दिन प्रति दिन खाल के भीतर फैलती जाती है - और सुई चुभोने से रुधिर नहीं निकलता और छीप बहुधा गोल होती है - और अचानक उत्पन्न होजाती है - और सुई से रुधिर निकलताहै ॥

काली छीप ~ और दाग ~ से खाल उखड़ती है -

परंतु छीप की पत ली होती है - और दाग़ की मोटी - जैसे मछली के छिलके - सफ़ेद छीप और दाग़ में कफ़का मवाद निकालें और कालेमें सौदा का फिर तुरुमुस और मूलीके बीज सिरके में पीसकर सफ़ेद छीपमें लगावें ॥

और कालीछीप और दाग़में काली कुटकी सिरकेमें पीसकर लगावें ॥

सफ़ेद दाग़ ► अर्थात कोढ़में काले सांप का रुधिर लगाना लाभकारक है ॥

भांई ► जो मुंहपर पडती है इसमें और कालीछीप में यह भेद है कि छीप खुरदुरी होती है - और यह साफ़ होती है ॥

तलमश ► मुंह पर और शरीर पर लाल बूंदें होजाती हैं ॥

वरश ► वैसीही काली बूंदें है ॥

इनमें रेवंद चीनी शहद में पीस के लेपकरें - और पीला हरताल हरे धनिये के पानी में पीसके लगावें - जोइस से भी लाभन होतो सब शरीर का मवाद निकालें - फिर लेप लगावें - और औषधि लगाने से पहिली उस स्थान को गरम पानी से सेकें - और औषधिभी गरम करकेही लगावें ॥

तिल ► काले और नीले होते है - इनका वह उपाय है जो झांईका है ॥

चोट पड़ने या दबने से रग फटजावे और खाल के नीचे रुंडा होके नीला होजाता है - जब पीडाजाती रहै तो करम्ब के पत्तों या पोदीनेका लेपकरें ॥

नीला गोदा ► जो स्त्रियों के होता है उस के

मिटाने का उपाय यहहै - कि नतरून और गरम पानी सेउस जगह को मलें - और फिर इक्लकुल वतम शहद में पीसके कई वार लगावें - जौ इससे न मिटे तौ अस्ल वलादर लगाके सुई की नोक से कोंचें कि घाव पड़के नीलाहट वह जावे ॥

वादशनाम - सुरखी हाथ पांव और मुंह पर पड़तीहै - और विशेष करके ठंडमें - इसमें फस्द खोलें और हड़ को औटाके जुल्लावदें - और जो घाव होतो लालमरहम लगावें और उसी जगह का रुधिर निकालें - और सावन लगावें - जवव ह सूख जावे तो गरम पानी से धोकर फिर लगावें - और इसीप्रकार कईवार करें ॥

धूप में फिरने या कमज़ोरी या गरम औषधें खाने या किसी मवाद की अधिकता से शरीर का रंग वदल जावे तो कारण को रोकें और मवाद निकालें - और ठीक और पुष्टकें और वाकले के आटे से मुंह धोडालें ॥

सिरसे भूसी झड़े तो रोग़न मलें - और चुकन्दर के पानी में नमक डालके सिर धोवें - जो इस से लाभ न होतो कफ़ और रुधिर और सौदा का मवाद निकालें ॥

हाथ पांव आदि जो हवा की गरमी या ठंड से फटें तो मोमरोग़न मलें - और जो भीतर के विगाड से होतो तर औषधें काम में लावें जैसे दूध आदि - और मवाद को निकालें ॥

जो खाल कड़ी होजावे या उतरने लगे तो मवाद को निकालें - और तररोग़न मलें ॥

जो खाल छिलजावे तो मुर्दासंग गुलाबमें घिस कर मलें - जो सूजन का डर होतो फस्द खोलें - और कपड़ा पानीमें भिगोकर रक्खें - परन्तु जो पट्टेके किनारे परहोतो भीगा कपड़ा न रक्खें ॥

तीसरा पाठ ३

बालोंके रोगों के विषयमें

कभी बाल झड़जाते हैं और खाल नहीं उतरती और कभी दोनों बातें होतीहैं - यह खालका विगाड़है - इसमें मवादको निकालें ॥

जो विना विगाड़ के बाल झड़ें और टूटें तो कारण के अनुसार उपाय करें ॥

जो सिरके बाल झड़के खाल नरम होजावेतो जलदी जलदी सिर मुड़ाया करें - और आस और आमलेका तेल नित्य सिर पर मलाकरें ॥

जो चंदियाके बाल उतर आवेंतो उसकाभी यही उपायहै - परंतु जो बुढ़ापे सेहोतो अच्छा कदापि नहीं होसकताहै ॥

जो बाल खुश्की से फटने लगेंतो तर औषधें और रोग़न लगावें ॥

जो सिरकी खाल चिकनी होजावे तो इतरीफलसे मवाद को निकालें ॥

जो बुढ़ापे से पहिले बाल सफ़ेद होजावे तो सवेरे नित्य एक हड़का मुरब्बा खावें- और महीने में सात दिनड़ तरीफल सग़ीर खाया करें- और दो महीने पीछे कफ़का जुल्लाब लिया करें- और खट्टी वस्तुओं और फ़स्द और विषय की अधिकता से बचें ॥

जो चाहे कि बाल काले रहें- तो लादन और आ सका तेल मलाकरें- और बालों को लम्बा करने के लिये आ मलेको पानी में भिगोके आस और गुलाब के फूल छानके उ सपानी में मिलाके सिर धोलें ॥

बालोत्तपन्न करने के लिये पुराना रोग़न जैतले कर उसमें कैसूम की राख और समन्दर फैन मिलाकर मलें- और जो उपाय बाल भड़ने का है वही करें ॥

और बालों को उतारना चाहें तो चूना और हर ताल लगावें- इसको चूरा कहते हैं- परंतु पेड़ के बाल उस्तरे से मुंडना अच्छा है- इससे विषय की चाहना अधिक होती है- और वहां चूरा लगाने से हानि है ॥

और जो चाहे कि बाल न निकलें तो बर्तनओं र अफ़ीम और सूकरात्त सिरके में पीसकर मलें- और साजूओ र कछुये का रुधिर और चेंटी के अंडे मलना भी यही लाभ देता है ॥

और घूंघर वाले और घने बाल होने के लिये बेरी के पत्ते और साजू और मेंथीके बीज पानी में डालके उस पानी से सिरको धोवें ॥

और बालों को पतला करने के लिये हल्दी की राख नूरे में मिलाके गोली बनावें- सूखे बालों पर दिन

भरमें कई वार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह परठहरा वें नहीं तो वाल झड़ जावेंगे ॥

चालों के सीधा करने के लिये कि उलझें नहीं तेल को पानी में मिलाके गुन गुना मलें ॥

खिज़ाव के लिये मुर्दा संग- बुझाहुआ चूना- और मुलतानी मिट्टी- तीनों बराबर लेकर पानी में पीसकर वालों पर लगावें- और अरंड का पत्ता ऊपर बांधें- पहर भर पीछे खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले सीधे लेंकि मैल न रहे- और न कोई रोग़न सिवाय रोग़न गुल के लगावें ॥

और वालों को लाल पीला पन लियेहुए करने के लिये मह्इंदी शराव की तलछट, रतीनज मिलाके पानीमें पीसें- और फिटकरी और हरताल मिलाके मलें ॥

और वालों के लाल करने के लिये- सींद और कुंडुशको ओटाके धोवें ॥

बनूसाश को पीसके सिरके में मिलाके लगाना वालोंको सफ़ेद करताहै ॥

चौथापार ४

नाखूनों के रोगोंके विष

यमें

नाखून सफ़ेद होजावें तो मेथी और अलसीकेबीज कूटके शहद में मिलाके लेपकरें - और जो इससे लाभनहो तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़ जावें तो जरजीर के बीज सिरके में पीसके लगावें और पित का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीडा होतो आसके पत्ते और सरोकेपत्ते कूटके मलें ॥

जोनाखूनोंकी जड़ें मोटी और कुरूपहोजावेतो सौदा का मवाद निकालें - और मरहम दाखलियून और, मोमरोग़न लगावें ॥

जोनाखून फटते होंतो तरी पहुंचाना चाहिये और सौदा का मवाद निकालें - और बतख की और मुर्ग़की चरबी मेथी के लुआब में मिलाके मलें ॥

जो नाखून कफ़ के कारण ढीले होके गिरते हों तो पीड़ा न होगी - कफ़का मवाद निकालें - और जो रुधिरकीतेज़ीसे होतो फ़स्द साफ़िन खोलें और पिंडली पर पछने लगावें जो हाथके नाखूनों में होतो फ़स्द बासलीक़ और जोपांवके नाखूनों में होतो शरबत उन्नाब पिलावें ॥

जो नाखूनों में खुजली होतो नदी के पानी से धोके और इंजीर कूटके लगावें ॥

जोनाखून कुचल जावेंतो आदि में आसऔरअनार के पत्ते कूटके बांधें - फिर गेहूंका आटा ज़ैत में मिलाके बांधें ॥

जो नाखून अबरक की प्रकार सफेद और चमकीले और सुर सुरे होजावेंतो माउल उसूल और गुलकंद ओमसिकंज

भरमें कई वार सूखी गोली फेरा करें- परंतु एक जगह परठहरा वें नहीं तो वाल रुड़ जावेंगे ॥

चालों के सीधा करने के लिये कि उलझें नहीं तेल कोपानी में मिलाके गुन गुना मलें ॥

खिज़ाव के लिये मुर्दा संग- वुझा हुआ चूना और मुल्तानी मिट्टी- तीनों वरावर लेकर पानी में पीसकरवालों पर लगावें- और अरंड का पत्ता ऊपर बांधें- पहर भरपीछे खोलकर पानी से धोडालें- और लगाने से पहिले धोयें कि मैल न रहे- और न कोई रोग़न सिवाय रोग़न गुल के लगावें ॥

और वालों को लाल पीला पन लिये हुये कर नेके लिये मेहंदी शराव की तलछट, रतीनन मिलाके पानीमें पीसें- और फिटकरी और हरताल मिलाके मलें ॥

और वालों के लाल करने के लिये- सौंद और कुंदुरको ओटाके धोवें ॥

वचूसाश को पीसके सिरके में मिलावें लगाना वालोंको सफ़ेद करताहै ॥

चौथापार ४

नाखूनों के रोगोंके विषयमें

नाखून सफ़ेद होजावें तो मेथी और अलसीकेबी
कूटके शहद में मिलाके लेपकरें - और जो इससे लाभनहो
तो मवाद निकालें ॥

जो पीले पड़ जावें तो जरजीर के बीज सिरके में पी
सके लगावें और पित का मवाद निकालें ॥

जो उनमें पीड़ा होतो आसके पत्ते और सरोकेप
ते कूटके मलें ॥

जो नाखूनोंकी जड़ें मोटी और कुरूप होजावेतो
सौदा का मवाद निकालें - और मरहम दाखलियून और
रोगन लगावें ॥

जोनाखून फटते होतो तरी पहुंचाना चाहिये
और सौदा का मवाद निकालें - और बतख की और मुर्गी की
चरबी मेथी के लुआब में मिलाके मलें ॥

जो नाखून कफ़ के कारण ढीले होके गिरते हों
तो पीड़ा न होगी - कफ़का मवाद निकालें - और जो रुधिरकी ते
जी से होतो फ़स्द साफिन खोलें और पिंडली पर पछने लगावें
जो हाथके नाखूनों में होतो फ़स्द बासलीक और जो पांवके
नाखूनों में होतो शरबत उन्नाव पिलावें ॥

जो नाखूनों में खुजली होतो नदी के पानी से धोवें
और इंजीर कूटके लगावें ॥

जो नाखून कुचल जावैतो आदि में आस औरअ
नार के पत्ते कूटके बांधें - फिर गेहूंका आटा जैत में मिलाके
बांधें ॥

जो नाखून अबरक की प्रकार सफ़ेद और चमकी
ले और सुर्खुरे होजावेतो माउल उसूल और गुलकंद औरसिकं

बीन रोगन बादाम मिलाके दें जब मवाद पकचुकेतोइफीस गौटाके पिलावें और बकरी की पीठका मैल चर्बी और बादाम मिलाके लगावें ॥

नाखून पर चोट लगने से रुधिरनीचे जम जावे तो जिंक लगावें - और जरजीरके बीज सिरके में पीसकर मले और दिन में कई बार मुंहमें उंगली डालकर चूंसे यह अतिल भदायक हैं ॥

जो नाखून को उरवेड़ना होतो हरताल और जा वशीर कडुये बादामके तेलमें मिलाके मलें - और जो प हिले मरहम दारवलियून लगाले तो शीघ्र लाभ करेगा ॥

पाँचवाँ पार

—— ·⁂· ——

अलग अलग रोगोंके विषेमें

जूंये और लीखें और चक चाहें सिर में या कहीं और पडेतो खारी पानी से स्नान करें और जल्दी जल्दी उजले कपडे बदला करें - और गोहकी जीर और नौशादर सिरकेमें घोलकर मलें - जो पसीना बहुत आवें अधिक खाने सेतो भूखा रक्खें - और जो कमजोरीसे होतो पुष्ट करें - और माजू पीसके मलें और आसके पत्ते जलाके धूनी लें - और ऐसे भी जन खिलावें जिनसे गाढ़ा रुधिर उत्पन्न हो और पसीनारुक जावे - और नंगा रहना - और हल्के कपडे पहनना - और हवा में बैठना - और पसीने को न पोंछना लाभकारक है -

और यह रोगन पसीने को रोकता है - और दिल को पुष्ट करता है - और मूर्च्छा को लाभ कारक है - सेब और बिही का पानी और गुलाब रोगन गुल में मिलाके आग पर जलावें कि रोगन रहजावें ॥

बुहरान के दिन जो पसीना विशेष निकले तो उसे बन्द न करें - जब तक कि मूर्च्छा और कमजोरी का डर नहो ॥

जो पसीने में रुधिर निकले तो फ़स्द खोलें - और जुल्लाब दें - और वह औषधें पिलावें जो रुधिर की गर्मी को बुझाती हैं - फिर उसी औषधें शरीर पर मलें जो उसके छिद्रों को बंद करें - जैसे अनार के छिलके और आस के पत्ते पाइनके पानी से स्नान करें ॥

- स्वास्ते - अधिक दुबला पन और मुटापा भी एक रोग है - सो उसका उपाय यह है कि पहिले उसके कारण को दूर करें - फिर वह भोजन और औषधें समय के अनुसार दें - जो शरीर को ताजा करें - और यह औषधि अति लाभ कारक है तोदरी सफेद - तोदरी लाल - खशखाश - सफ़ेद बादाम - हब्बुस्सनोवर - हब्बुस्समला - बुन्दुक - हब्बुलरविज़रा सब को बराबर लेके कूट छान के गाय के घी में चिकनाय के हलुआ बनावें - और सबेरे और सांझको जितना उचित हो खिलावें - और भोजन ऐसा दें जो अच्छा और गाढ़ा और तर रुधिर उत्पन्न करें ॥

और दुबला करने का उपाय यह है कि जुल्लाब दें - और मूत्र लाने वाली औषधें पिलावें - और भोजन और पानी थोड़ा दें - और सोये और कूट का तेल मलें - १

और इतरीफल और कसूनी खिलावें - और कडी जगह प सुलावें - और यह औषधि शरीर को दुबला करती है-घोई हुई लाख ३॥ माशे सिरके में पीसकर नहार मुंह खिलावें ॥

सिर और माथे की खाल खिचने में बनफशे या कद्दू और काहू का तेल - और स्त्री का दूध मलें - और भेजेका मवाद निकालें - और जो जन्म से होतो अच्छा नहीं हो सकता ॥

जो सिर बडा हो जावे तो चमडे की टोपी बनाकर पहनावें - जो बहुत तंग हो - और पांव और पिंडलियां मलेंऔर भोजन थोडा दें ॥

जो सर्दी की समय उंगलियां फूलें और खुजलावें तो खारी पानी या चुकन्दर के औटे हुए पानी से धोवें ॥

जो ठुड्डी घायल और लाल हो जावें तो आदि में चैंरने और चितलेटने से रोकें - और रसोत - गिलेअर्मनी - अकाकिया - और गुलनार आदि लगावें - और घावों पर सफेदे का मरहम लगावें ॥

जो शरीर से दुर्गंधि आती हो तो मवाद निकाले फिर मुरदा संग गुलाबमें घिसकर मलें और नोशदारू खिलावे ॥ +२०।१।११५।२ -

जो ठंड से हाथ पांव काले और बिगड जावें तो सूजन होने से पहिले रोगन जैत या कोई और गरम रोगन मलें और जब सूजन होतो आदि में नारंगी और सोया और मेथी अलसी आदि को औटाके हाथ पांव उसमें रक्खें और जब उससे निकालें तो रोगन गुल मलें - और पिसी हुई मसूर को औटाके

और जब कालक आजावे गहरे पछने लगावें रक्खें और रुधिर को वहने दें- कि आप बंद होजावे- तो गिलै अरमनी पानी और शहद और सिरके में पीसकर लगावें- और थोड़ी देर पीछे पानी और सिरके से वोई वा रधोवें ॥

जो आगसे जल जावे और फफोला न पड़ा होतो कपड़ा वरफ़ पर ठण्डा करके जली हुई जगह पर रक्खें-और हर घड़ी बदलें- और गिलै अरमनी पानी और सिर के में मलके और मसूर उसमें पकाके लेप करें- और काजल गोंद में घोट के लगाना- और अंडेकी सफेदी लगाना और दही और दूधमल ना लाभकारक है- और जब छाला पड़ेतो फ़स्द खोलें- औरसफेदे और चूने का मरहम लगावें ॥

जलते हुये तेल से जल जाने में वही उपाय करें- जो आग से जल जाने का है- परन्तु अन्डे की सफैदी तेल में घोलकर सफ़ेदा मिलाके लगाना अति लाभ कारक है ॥

खोलते हुए पानी से जल जाने में जौकी राख अंडे की ज़र्दी में मिलाकर लगावें ॥

बिजली से जल जाने का उपाय वही है जो भा गका है ॥

धूप से जलने में काफूर और सिरके के मर हम मलें ॥

मिलावे के चेप लगने से जलन होतो पछने लगाके सींगी लगावें- फिर सिरके का मरहम लगावें ॥

और उबकाई और हिचकी उसमें बराबर रहती है - छाती का घाव भी ऐसाही है - उससे हवा निकलती है - छाती के परदों का घाव बुराहै उसमें दम रुकता है - और सेदे का घाव भी बुरा है - पेट का खाना उससें से निकल आता है - सिवाय इनके जहां घाव हो तो कुछ डरज करें - जो सीधा हो तो टांके लगावें - और कोई हड्डी का टुकड़ा हो उसे निकाल डालें - जरराह बुद्धि मान और दस्तकार चाहियें ॥

जो कोई वस्तु चुभजावे तो पहिले उसे निकालें - फिर मुर और कुन्दर घाव पर छिड़कें ॥

सातवां पाठ

कुरह के विषयमें

इसकी प्रकारें भी बहुत हैं - यहभी जरराही से संबंध रखताहै - जो थोड़ा हो तो आपसे आप अच्छा होजाताहै - और जो बहुत हो तो वह मरहम लगावें जो बड़ी पुस्तकों में लिखे गये हैं - और नीव के पत्ते कूटके शहद में मिलाके बांधें और परहेज और मवाद निकालना अति लाभ दायक है - और नासूर को पहिले गुलाब से जिसमें अंगूर की लकड़ी की राख पड़ी हो भली भांति धोवें और समुद्र के पानी से या सावन के पानी से जिसमें थोड़ी हरताल और नौशादर मिलाहो धोना अति लाभ कारक है - और फिर पुरानी रूई गुलाब या माउल अस्ल में भिगोके इंजरूत - सलुआ - मुर -

जो पान खाने से चूने के कारण जीभ फट जावे तो लुभाव अस्पगोल आदि से कुल्ली करें- और बादाम यफल का तेल मलें, और खोपरा चबावें॥

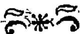
छटापाठ

॥ ६॥

घाव के विषय में

मांस के फटने को घाव कहते हैं- जब उसमें पीप पड़े तो उसका नाम कुरहा है- उसकी प्रकारें बहुत हैं- उनका वर्णन निव्व शकबर आदि बड़ी पुस्तकों में देखें यह जर्राही से सम्बन्ध रखता है- परन्तु थोड़ा सा जान लेना चाहिये दिलको घाव की सहार नहीं उससे मनुष्य तुरन्त मरजाता है- और भेजा भी नहीं सहार सकता- लक्षण उसके घाव का बुद्धि का बिगड़ जाना है- और गुरदे और मसाने और आंत का घाव भी ऐसा ही जानो- और पहिचान मसाने के घाव की यह है कि मूत्र उसी में से निकलेगा- और जो आंत में होतो पैखाना निकलेगा- जिगर का घाव भी बुरा है- परंतु अच्छा हो सकता है- और पट्ठे आदि का घाव भी बुरा है- उसमें रंग बदलता है- और मूर्च्छा और खिंचाव होता है- और रंग का घाव आगे को और होतो बचने की आस कम है तर पेट का घाव जो भली भांति लगा हो भयानक है-

नवां पाठ ९



कोडे की चोटके विषयमें

जो खाल के नीचे मांस टुकडे २ होगया हो तो उसे दवा के और मलके इकट्ठा करे - और फिर बकरी की खाल जल्दी से गरम गरम उधेड़ के बांधे - और जब वह सूख जावे तो उसे खोलें - इस उपाय से एक राति दिन में अच्छा होजाता है और जो खाल के नीचे रुधिर सिमट आया हो तो रोटी का गूदा और मूली मले॥

दसवां पाठ १०

हड्डी के टूटने और उखड़ने और खिसलनेके विषयमें

—और [illegible]

इसका ... [illegible]

ने में आसके पत्ते कुचल ...

की ज़रदी

दमभुल अरववेन – कुन्दुर– अफ़ीम– केसर– पीस के मिला वें– और घाव पै रक्खें – जब तक अच्छा न हो और जो इस से लाभ न हो तो जहां तक हो सके बुरा मांस काटडालें – फिर उसके भरने का उपाय करें ॥

आठवां पाद

८

मारने और गिरपड़ने से चोट लगने के विषय में

जो सूजन और तपन हो तो गिले अरमनी और अंडे की सफेदी आदि का लेप करें– और जो सूजन और तप हो तो फ़स्द और पछने लगाके ऐसी ठंढी औषधे लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोकें– और जो शरीर के किसी बड़े स्थान पर लगी हो तो उसे पुष्ट करें– और उनके की चोट पै पहिले पीड़ा को दूर करना चाहिये ॥

बारहवां पाठ ॥१२

विषैले जानवरों के काटने या डंक मारने के उपायमें

इसका उपाय छः प्रकारसे हो सकता है-जैसा उचित समझे वैसा करें ॥

पहिले वह औषधदें कि असली गरमी को उभारें और भीतर के स्थानों को पुष्ट करें और विष को दूर करें-जैसा तिरियाक़ कबीर- और लोबत वरवरी-जिद वार आदि॥

दूसरे वह औषधदें जो शरीर से तरीको निकालें- उलटी या जुल्लाब से परन्तु फस्द न खोलें-और नरता विच्छूके डंक मारने में या ऐसे सांप के काटने में जिन से किशरीर के हर छिद्र से रुधिर निकलने लगता है- फस्द खोलसकते हैं ॥

तीसरे ज़हर मुहरा और तिरियाक़ जो उसी विष के दूर करने को हो दें- जैसे घड़ियाल के काटने में उसीका मांस और सांपके काटने में उसीका सांस खिला देना अतिलाभदायक है॥ :सांप

चौथे वह औषधदें जो उस विषैले जानवरके मिज़ाज से विपरीति हो जैसे डोंग बिच्छूके लिये-औरइसीप्रकारसे जोहो ॥

पांचमें वह दवा या उपाय करें-जो मवादकोहि

ग्यारहवाँपाठ ११



विषके उपायमें

गुन गुना पानी या तिली का तेल या मक्खन बहुत सा पिलावे तुरंत उलटी करावें - और जो इससे उलटी भली भांति न हो तो सोये के बीज और नमक पानी में औटाके और तिली का तेल बहुत सा मिलादें - और उलटी के लिये जो कुछ दें बहुत सा दें - जब भली भांति उलटी हो चुके तो गौ का ताजा दूध जितना पिया जावे पिलावें - और जो यह भी उलटी में निकल जावे तो बहुत अच्छा है - और मक्खन और घी पिघला के दूध की जगह दे सकते हैं - और तिरियाक कबीर लाभकारक है - और विष खाने वाले को सोने न दें - और जो भूखा हो तो उचित भोजन पेट भरके खिलावें - और जब उस विष का नाम मालूम होजावे तो वही औषधें दें जो उसे दूर करती है ॥

जब विष खाने वाले को मूर्च्छा आजावे और आंखोकी पुतलियां फिर जावे या आंखें लाल हों और नाड़ी बंद होजावे और जीभ बाहर निकल आवे और ठंडा पसीना निकलने लगे तो जानो कि अब न बचेगा ॥

होताहै जो कुत्ते के काटने में होताहै - चाहिये कि उससे भीवचे कुत्ते का काटा हुआ पानी से बहुत डरता है - और पानी पीना छोड़देता है इसीसे मरजाताहै - उसे पानी पिलाने का उपाय यह हैकि एक नरकुल बहुत लम्बा लेके एक सिरा उसके मुंह में डालें और बहुत दूर से दूसरे सिरे में पानी छोड़ें कि वह पानीको देखने न पावे - और कहते हैं कि जब कुत्ता काटे उसी समय रुधिर उस का लेके थोड़ा सा पानी में मिलाके पिलादें - और छह महीने तक रोज एक माशे सुशक खिलावें और तीन महीने तक घावको वहनेदें और जिसकुत्तेने काटाहो उसीकाक लेजाभून के खिलाना अति लाभ दायक है ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः

छाके विषको खाल की ओर बहादें - जैसे दवा या दौड़ने से पसी
ना निकालना परन्तु इसमें डरहे ॥

छटे विषको फैलने नदें इस प्रकार से कि जिस जगह कांटा या डंक माराहे जो हो सके तो उस स्थान को तुरंतही काटडालें - और दागदें - या ऊपर को झटके कसकर बांधें कि विष आगे न चढ़ने पावे - और टंडीव सुन्न करने वाली औषधें लगावें और उस जगह सींगी लगाना और मुंह से चूसना लाभदायकहे - परंतु चूसनेवाले का पेट भराहो और रोगन गुल से उसे कुल्लीकरादें - जो उसे हानिनहो ॥

लागिया एक पेड़ है जिसमें से दूध निकलताहै उसका दूध सांपके काटे हुये को लाभ कारक है - और तुंज के बीज २ माशे सब भांत वरों के विष को लाभ देते हैं और कि स्को ताज़ा फल भी अति लाभ कारक है - नियोले का मेदा और पट मवाद धोकर धनियां लगाकर भूनना और सुखाके खि लाना और बकरी की मेंगनी जलाकर खिलाना और लेपकर ना और सातर खाना और लेप करना अति लाभ दायकहे और पक्का या कच्चा दूध घीके साथ उस स्थान पर लगाना भी अच्छाहे ॥

भिड़ और चेंटी और शहद की मक्खी के काटने में तीन हथेली भर धनियां फांके ॥

बावले कुत्ते के काटे को चालीस दिनतक अच्छा न होने दें - जो घाव भरने लगेतो ऐसी औषधि लगादें जिससे वह बहे - और सौदा का मवाद निकालने में बहुत लगे रहें - इसका विष बरषों के पीछे ज़ोर करता है - और जिस किसीको कुत्तेने काटा हो उसके काटने में भी वही अव गुण

नाड़ीपरीक्षा

दिलकीरगकेचलनेकोनाड़ीकहतेहैं

वह दिलके खुलने और वंद होनेसे चलतीहै - खुलनेसेहवारिं
गके भीतर जातीहै जिससे रूहहैवानीजो दिलमेंहै आरामपातीहै - और
गरमहवाकेदूर करनेके लिये दिलवंद होताहै इनदोनोंसेमनुष्यके
शरीरकाहाल और उसके रोग और आराममालूमहोतेहैं इसप्रकारसेशरी
रकाहालजानाजाताहै ॥

स्पष्टतौयह कि कितनी खुलतीहै और कितनी वंदहोजातीहै -
इसकीनौसूरतेहैं क्योंकि नाडीमें लम्बाई और चौडाई और गहराईहै और
हरएक इनतीनमें सेया वहुत अधिकहै या कमहै यामध्यमहै इनतीन
सेइनतीनकोगुणाकरोगेतो ९ तियनी होंगे वहनौ यहहैं तवील अर्थात
अधिकलम्बी - २ कसीर वहुतकमलम्बी - ३ मोत दिल अर्थातनलम्बीन
छोटी उतनीलम्बी जितनी किचाहिये ४ अरीज़ अधिक चौडी ५ ज़ैयक़कम
चौडी ६ मोतदिल उतनीचौडीजितनी किचाहिये ७ मुशरिफ़ अधिकउभरी
हुई ८ मुनखफ़िज़दवीहुई ९ मोत दिल न वहुत उभरी नदवी ॥

तवील से जितनाकि चाहिये वह रोग अधिकमालूम
होतीहै - कारण इसका गरमी की अधिकताहै ॥

२ क़सीरमें कम मालूम होतीहै उससे जितना किचाहिये
कारणइसका गरमीकमीहै ॥

३ मोत दिल में रग उतनी मालूम होतीहै जितनी किचा
हिये इसमें मिज़ाज की गरमी ठीक २ होतीहै ॥

औरतीनकुत्तरकोलेनेकीरीति जिसकोसलासीकहतेहैं अकारोंकोएकही रक्खे औरतीसरीअकारबदलतीरहें॥

नक़शासलासीका

त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.	त.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.
क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.	क.
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो
मुश.	मुन.	मो.	मुश	मुन.	मो.	मुश.	मुन	मो.
मो	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो.	मो
अ.	अ.	अ.	ज.	ज.	ज.	मो.	मो.	मो.
मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.	मुश.	मुन.	मो.

प्रकटहोकि ऊपरके दोनोंनकशोंमें(त)सेतवील और(अ)से अरीज़और(क)सेक़सीर औरमोसे मोतदिल और(ज)सेज़ैयफ़ और(मुश)सेमुशारिफ़ और(मुन)से मुनरवफ़िज़जानो।

इसीप्रकारज़ोरऔरकमज़ोरीजाननाहै वहयहहै जोनाड़ीज़ोर सेलगेदेखनेवालेकी उंगलियोंके मांसपरतो उसको पुष्टकहतेहैं जैसेंदिलभीपुष्टहोताहै औरजोहोलेसेलगेतो वहकमज़ोर वेगीयह पहिंचानहै दिलकीकमज़ोरीका।

औरतीसरीमोतदिलहै जिससेज़ोरहै यानीकां दिमेंठीक होनापायाजाताहै॥

तीसरीप्रकारनाड़ीकीचालकासमयदेखनाहै जोवह

४ अरीज़में उसका चोडान जितना कि चाहिये उससे अधिक होती है इसमें तरीकी अधिकता होगी ॥

५ ज़ैयक में चोडान कम होता है इसमें तरी कम होती है ।

६ मोतदिल में जितनी चाहिये उतनी चोडाई होगी उसमें तरी ठीक ठीक होती है ।

७ मुशरिफ़में वह रग अधिक उभरती है यह भी गरमी का कारण है

८ मुनख्फिज़में हद से कम उभरती है गरमी की कमी होगी।

९ मोतदिलमें उतना उभार होगा जितना कि चाहिये इसमें गरमी भी ठीक रहेगी - यह नो प्रकार एक एक क़ुतर की है - लम्बाई और चोडाई और गहराई को यहां पर क़ुत्तर कहते हैं - जब दो या तीन क़ुत्तरों को मिलाओ तो दो प्रकार सत्ताईस रकी निकलेंगी जैसा कि आगे के दो नकशोंमें लिखा गया है परन्तु दो क़ुत्तरों के लेने की रीति जिसको सनाई कहते हैं यह है कि लम्बाई की तीन प्रकारों को चोडाई की तीन प्रकारों के साथ लें तो नो होंगी फिर लम्बाई ही की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नो होंगी - फिर चोडाई की तीन प्रकारों को गहराई की तीन प्रकारों के साथ लें यह भी नो होंगी - यह सब मिलकर सत्ताईस हुई ।

नकशा सनाई का

त. अ.	त. ज.	त. मो.	क. अ.	क. ज.	क. मो.	मो. अ.	मो. ज.	मो. मो.
त. मुश.	त. मुन.	त. मो.	क. मुश.	क. मुन	क. मो.	मो. मुश.	मो. मुन.	मो. मो.
अ. मुश.	अ. मुन.	अ. मो.	ज. मुश	ज. मुन.	ज. मो.	मो. मुश.	मो. मुन	मो. मो.

अलग२ तो उसको मुस्तवी फ़िलवाज़ और मुखतलिफ़ फ़िलवाज़क हतेहैं इसमें हाल बुराहोगा-जोहरनवज़े के टुकडे सबहालोंमें एक से पाये जावें और जो सब नवज़े अलगहोंतो उसेमुस्तवी मुतलक़ होंकी राह से कहेंगे-और जो अलगर होंतो मुखत लिफ़ मुतलकाु की राहसे कहेंगे यह दोनों बुरे हालके चिन्हहैं मस्तवी और मुखतलिफ़ में अधिक-और जो नवज़े के हर टुकडे के टुकडे में मुस्तवी और मुखतलिफ़ देखें अर्थात जो टुकड़ा नाडीका एक ढंग ढीतलेहो उसके आदि और अंत औरमध्यमें दूसवार्यदु खितलाफ़ होतो उसे मुस्तवी मुतलक़ और मुखतलिफ़

-औरइसी प्रकार से मुस्तवी फ़िलवाज़ और

वाज़ जानो यह भी हाल के बुराहोने औरकमजोरी की अधिकता और मवादके भारी होने का लक्षणहै परंतु मस्तवी में थोड़ा और मुखतलिफ़ में अधिक॥

नवींप्रकार मुखतलिफ़ नाड़ी में

दौरानवज़े का एक प्रकार का अंतर रक्खेंतो उसको मुखतलिफ़ मुंतज़म कहतेहैं-औरजो एकसानरहेतो मुखतलिफ़ग़ैरमुंतज़म यह बहुत बुरेहालका लक्षणहै॥

दसवी प्रकार नाड़ी की तोल देखनाहै-तोल कहतेहैं एक वस्तुकोदूसरी वस्तुसे अंदाजा करनेको-इसलिये उ नाडीहोतीहै उसको जैयदुल वज़न कहेंगे-और जोइससे विपरीति हो उसे रदीउल वज़न कहेंगे-इसकी तीन सूरतेहैं पहिलीमुनावि वहहै कि एक अवस्थावाले कीनाड़ी मिलतीहो उसके पासवालीअवस्थाकी नाड़ी से जैसे कि लडके की नाडीजवान की कीतुहै कीसीहो दूसरी मुवाइज़ुलवज़नवहहै किजो दूरकी अवस्ताकरते से मिलती हो जैसे लडके

तीसरीरवारिजुलवजनवहहै कि किसी अवस्थाकीसीनहोजेसेकी पतीहुईनाडीजोवहुतबुरीहै औरइससे ऊपरकी दोनोंभीबुरीहैपरंतु इससेकम।

नाड़ीरूह औरअसली गरमीको आरामदेतीहै जवगरमीकी अधिकताहो औरनाडीमें किसीप्रकारकी कडापननहो औरजोर्स होतोनाड़ी अज़ीमहोगी अर्थात् तीनों कुतरों पर बढ़ीहुई औरजोइस सेकुछभीलाभनहोतो सरीहोजावेगी औरजोइससे गर्मीवढे औरल भनहोतो मुतवातिरहोजावेगी औरजोनाडीमेंकडापनहोतो सग़ीर होगी अर्थाततीनोंकुतरोंमेंघटीहुई औरजोनाडीनरमहो परंतुउस मेंज़ोरनहोतो सरीहोगी औरजोउससेलाभनहोतो मुतवातिरहोजा वेगीऔरजोकमज़ोरी वहुतहोतोकामजल्दीनकरसकेगी औरस गीरहोजावेगी।

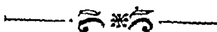
जवमवादया भोजनकेजोरकेवोझसेनाडीदव जावे औरउभ रनसकेतो कुछसगीरहोजातीहै जैसाकितपके आदिमेंवारियोंके अन्दर होताहै चाहेंजोरहो तरीसेनाडीनरमहोजातीहै औरखुश्कीसे कडीपरंतुइरानोंमें कुछकडी पाईजातीहै।

मवादकेवोझसे याकमज़ोरीकी अधिकतासेनाडीमेंइख्ति लाफ़पडजाताहै औरजवकमजोरी वहुत बढजातीहै तोइन्तिज़ाम नाड़ीकाजातारहताहै उचितवज़नभीनहींहोता।

नाड़ीकी मिलीहुईप्रकारें

अज़ीमउसनाडीकोकहतेहैंजोतीनोंकुतरोंमें वढीहुई हो।
सगीरवहहैजोतीनोंकुतरोंमें घटीहुईहो।
गलीज़वहहै जोचोड़ाई और गहराई में वढीहो औरलक्षणहैमवा दकीअधिकताका।

मूत्रपरीक्षा



जानना चाहिये कि मूत्र यह ही पानी पियाहुआहै-पहिले मेदे में भोजन के साथ मिलता है कि उसे पतला करके कैलूसबना के फिर मासारीका में होता हुआ जिगरमें पकताहै वहां से गुरदे में होके मसाने में इकट्ठा होता है और जो कुछ रुधिर से मिलाहुआ जिगरमे रहजाताहै वह रगों की राहसे सारे शरीर में पहुंचके कुछ पसीने में निकलजाताहै और कुछ फिर गुरदे में होताहुआ मसानेमें गिरताहै इसी लिये मूत्र रंगीन होजाताहै जिसको पसीना वहुतआताहै उसे पेशाव कम होताहै और पसीना कम आने वाले को पेशाव अधिक होताहै - जब मसाने में इकट्ठा होजाताहै तो पेशाव लगताहै इसी लिये सारे शरीर का हाल इससे जाना जाताहै यहां सेदो बातें मालूम हुई-एक यह कि पेशाव में दो वस्तुहैं एक पानी और दूसरे भारीपन ॥

दूसरे पेशावसे जिगर और मसानेका हाल भली भांति जाना जाताहै ॥

मूत्रके रंगकावर्णन

असल रंग पांचहैं- पीला-लाल-हरा-काला औरसफेद और सिवाय इनके जो हों वह इन्हीं के साथहैं ॥

पीले रंगकी पांच प्रकारहैं -

तिर्यनी- उस पानीकासा रंगहोताहै जिसमें भूसा भिगोयाहै अर्थात पीलाहोताहै - सपेदी लियेहुये यह लक्षणहै मिजाजकीठं डका क्योंकि यातो पानी की अधिकता होगी या पित्तोंकी कमी य हदोनों ठंडसे होतेहैं परंतु पित्तों की सरसाम में भी मूत्रकारंगऐसा होजाता है ॥

उतरुजी - अर्थातहलका पीला रंग जैसे तुरंज के छिलकेका होताहै - इसमें पीलापन तिर्यनी से अधिकहोताहै यहलक्षणहै मिजाज के ठीक होनेका और भली भांति पचाव होनेका।

अशकर - यह पीला रंगहै लाली लियेहुए मिज़ाज में गरमीहोने का लक्षणहै ॥

नौरी - यह रंग वहहै जिसमें पीलेपन में लाली अधिक होतीहै और चमक आग कीसी होतीहै - इससे अशर्कसे अधिक गरमीहोतीहै ॥

अहमरनासे - इसमें नारी से लाली अधिकहोतीहै औरगरमीभी उससे अधिकहोगी ॥ + + + +

दूसरा रंग लालहै वह चारप्रकार का होताहै ॥

असहव - थोडीलालीहो और सपेदी और पतले रुधिरसे ॥

वरदा - गुलाबी रंगको कहते हैं इसमें लाली असहव से अधिक होतीहै और गाढ़े रुधिरसे पायाजाता है ।

कानी - यह बहुत लाल होताहै उस रुधिरसे जिसमें गरमी बढ़ीहो ॥

अक़त्तम - लालहो कालापन ... रुधिरकी गरमी से ॥

यह चारों रुधिर और गरमी की अधिकता के लक्षणहैं

एक दूसरे से अधिक और कासी ठंडे रोगों मेंभिल्लाहरंगहोजाताहै जैसे फालिज और सुजल्ल फिनीओं में क्योंकि जिगर की कमजोरीसे रुधिर पानी से भली भांति अलग नहींहोसकता और रुधिर पेशाव में मिला आताहै ॥

तीसरा रंगहरा है - यहभी चार प्रकार काहै ॥

फिसंतफी अर्थात पिसतई रंग यह ठंडका चिन्हहै क्योंकि पित्तों और सौदा के मिलने से होताहै परंतुवह सौदाजो ठंड से उत्प न्नहों कुरशीने कहाहै कि यह रंग पित्तोंके जलने का लक्षणहैक्योंकि इसमें पीले पन की झलकहोती है जो ठंडे सौदा से होतातो काला पन होता ॥

नीलनजी - जैसे नील पानी में घुलाहोइसमें फिस्तकीसे भी अधिक ठंडहोतीहै - यह दोनों रंग जोबच्चोंके मूत्रमें होतो फालिज या तशन्नुज होनेकाडरहै ॥

जनज़ारी अर्थात जंगार कासा इसका कारण गरमी कीअधिकता और पित्तोंकाजलनाहै ॥

कुररासी गंदने कासा रंग यह भी पित्तोंके जलने का लक्षणहै परंतु जनज़ारी से कम ॥ + + + +

चौथा रंग काला है इसे कई कारणहैं ॥

एकाजलना इस प्रकार से कि पहिले शरीर में गरम पित्त हों और वह जलादे मूत्र के मवाद को और रंग उसका काला होजावे परंतु उसमें पीले पन की झलक होगी और पहिले से मूत्रमें गंध होगी या लाल आवेगा ॥ ६

दूसरा कारण जमनाहै - इसी प्रकारसे शरीर में ठंडा गवर हो जो मूत्र के मवाद को जमादे और काला करदे इससे पहिले सेहरा मूत्र विना गंध के या खट्टी गंध लियेहुए आवेगा ॥

तीसरा कारण सौदा का मूत्र में निकलना है यह सौदा कीत यें और बुहरान के दिन आवेगा इससे पहिले मवाद के पकने के लक्षण पाये जावेंगे और पीछे रोग में कमी होगी ॥

चौथा कारण किसी रंगीन वस्तु का खाना है जैसे कालीशराव आदि जो वह वस्तु जैसी की तैसी मूत्र में निकले तो जानलो कि जिगर का जोर जाता रहा और डरावना है और जो अधिक खालेने से होते कुछ डर नहीं ॥

पांचवां रंग सफेद यह दो प्रकार का होता है ॥

एक दूध का सा गाढ़ा यह कफ़ की अधिकता और मिज़ाज की ठंड या हड्डियों और पट्ठों के और चर्बी के पिघलने का लक्षण है जैसे कि दिक के अन्त में होता है – कारण इसका अधिक गर्मी है इसमें चिकनाई सफेदी के साथ होगी और शरीर दुवला और प्रति दिन पिघलता जावेगा ॥

दूसरे मानी का सा रंग यह लक्षण है जिगर के पचाव जाते रहने का ठंड की अधिकता से या मूत्र के रस्ते में सुद्दा पड़ने से कि रंगीन वस्तु नहीं निकलती और निरा पानी निकल आता है ॥

मूत्र का गाढ़ा और पतला होना

मोत दिल वह है जो न बहुत गाढ़ा हो न पतला जैसा कि चंगेपने में होता है और लक्षण है पचाव और भली भांति पकने का ॥

गाढ़ा होना लक्षण है न पकने का क्योंकि बिना पचा हुआ फोक मूत्र में मिलके उसे गाढ़ा करदेता है और कभी चिन्ह होता है गाढ़े मवाद के पकने का पहिंचान उसकी यह है कि पकने से पहिले मूत्र बहुत गाढ़ा आवे और पकने के पीछे कम गाढ़ा आवे ॥

कभी बहुत पानी पीने से मूत्र पतला आता है और कभी

राले में भी सुद्दा पड़ने सेभी पतला आताहै पहिचान उसकी यहहै कि सुद्दे की जगह बोझ और तनाव पाया जावेगा और कभी म वादके न पकने सेभी पतलाहोजाताहै-जबकि मवाद ऐसा कच्चाहै कि निकलन सके जैसाकि कफ़की तपों मेंहोताहै ॥

मूत्रका साफ़ औरगदलाहोना

साफ़ वहहै कि एकसाहो और वारपार उसमें से दीख पड़ैजै से पानी-चाहे गाढा हो जैसा अंडे की सफेदी ॥

और गदला यहहै जिसमें वार पार न दीखपड़े ॥

साफ़ मूत्र चिन्हहै मवाद के पकने और रुके रहनेका ॥

और गदलाहोना चिन्हहै मवाद केनपकने और ओटनेका कभी ज़ोर जाते रहने से और शरीर के अंदर की सूजन से मूत्र थोडा गदला होजाताहै ॥

मूत्रकीगंध

जब तक कि मूत्र में जितनी चाहिये उतनी ही गंधहोतो जानो कि मिज़ाज ठीक और मवाद पकाहुआहै और जब उससे बढ़जा वै तो दो बातें होंगी यातो मवाद अधिक सड़ा होगा जैसाकि सड़ी हुई तपों में या मूत्रके सस्थानों में खुजली और घाव होगा ऐसा बहुधा मसाने के घाव से होता है क्योंकि वहां मूत्र देर तक ठहरता है और घाव में पीड़ा पाई जायगी और मूत्रसे पीप और छेछड़े घाव से निकलेंगे और मवाद के सड़ने में यह बातें न होंगी ॥

मूत्र में गंध बिलकुल नहोना चिन्हहै मवाद के कच्चा होने और जमजाने का और कभी ज़ोर जाते रहने से भी ऐसा

रसूब मज़मूर्न वहहै जिसमें रसूबमहमूद की बातें न पाई जावें - इसकी भी तीन प्रकारहैं सब में अच्छी ग़मामास फिर मुतअ़ल्लिक़ फिर रासिब जबकि ऊपर ठहरना तलछट का गरमी से हो ॥

रसूबरदी - यातो तरी से उत्पन्न होतीहै या शरीर से - शरीर की रसूब जो असल स्थानों सेहो उसे खरराती कहते हैं और जो उन से नहो और चिकनाई उसमें पाई जावे तो वसमी कहते है - और जो चिकनाई नहोतो लहमीहै ॥

खरराती जो ऊपर से आवे तो कशूरी कहेंगे - और जो भीतर से आवे तो टुकड़े उसके बड़े और चौड़े सफेद या लालहो तो सफायही कहेंगे - सफेद चिन्हहै मसाने के छिलनेका - और लाल गुरदे या जिगर के छिलने का ॥

जो टुकड़े बड़े चौड़े नहोतो - लालहो कुरसनी कहेंगे और नहीं तो चरखाली ॥

तलछट जो तरी सेहो उनमें से जो लाली लिये हुयेहो चिन्ह है रुधिर के जलने का और कभी कफ़के गलने को और जो पीलीहो तो पित्त की अधिकता का और काली सौदा के जलनेका ॥

जो मूत्र बिना तलछट केहो उसके कई कारणहैं एक मवाद का नपकना - दूसरे सुद्दा - तीसरे मवाद की कमी - चंगे मनुष्यों के मूत्र में तलछट बहुत थोड़ी होतीहै - और जो होती भीहै तो बिना पचेहुये भोजन के फोकसे ॥

दुबले मनुष्य के और मिहनत करने वाले के मूत्रमें तलछट बहुत कम होतीहै - और जोरोगी मोटा और आराम चाहने वालाहो उसके मूत्रमें बहुत आतीहै - जिस तलछट का फोक पीप हो उसे मदी कहतेहैं - और जिसका फोक गाढ़ा और कच्चा मवाद हो वह मुरवाती है - यह बहुत करके अरकुंनिसा और वजैमुफ़ासिल

के रोगों में आतीहै-इन दोनों की सूरत एक सी होतीहै परंतु अंतर यहहै कि मही में दुरगंधिहोतीहै और सूजन या घावके फूटनेके पीछे निकलती है-और हिलाने सेजलदी फैलजातीहै औरजल दी इकट्ठा होजातीहै और मुरवाती में यह बातें नहीं होती ॥

मूत्रका थोड़ा औरघनाहोना

मूत्रके घने होने के बहुत कारणहैं एकपानी बहुत पानी अकेलाया कोई वस्तु मिलाके या तर मेवोंका खाना-दूसरे शरीर का पिघलना जैसाकि गरम तपों में होताहै-तीसरे रुके हुए मवाद का निकलना जैसाकि बुहरान इदरारी होताहै॥

बुहरानी और जुलानी मे यह अंतर है कि बुहरानी मे जोर होताहै और मवाद के निकलने के पीछे रोगी को आरामहोताहै और जुलानी में कमजोरी होतीहै उसमें पुष्टगर्मी पाईजातीहै और गंधितेज़ होती है और बुहरान के दिन नहीं होता-

बुरा मूत्र जैसे काला और गाढा इसमें अच्छा यहहै कि बहुत आवे और रुक २ के न आवे इसमें ज़ोर होताहै और जो कमज़ोरी होगी तो रुकके आवेगा॥

मूत्र के थोडा होने के कारण भी बहुतहैं-एक तरी का अधिक पचना दूसरे शरीर में तरी का न रहना गरमी की अधिकता से तीसरे सुद्दा पड़ना उनरस्तों में जिनसे कि तरी मसाने में जाती है चौथे अधिक दस्त या पसीना आना-इससे जो तरी मूत्र में आती थी वह दस्त और पसीने में निकल जावेगी ॥

पचाव के कमहोने पर भी जो मूत्र बहुत थोड़ा आवेतो जलंधर होजाने का डरहै॥

बुहरानकावर्णन



रोगकीलड़ाई जो मिज़ाज के साथहोतीहै उसे बुहरानक हतेहैं॥

जो मिज़ाज जीते और रोग एकबारगी जातारहै उसे बुहरान महमूद या कामिल कहतेहैं- और जो रोग जीते और रोगी एकबारगी मरजावे तो बुहरान रदीतामहै-यह दोनो गरम रोगों में होते २ हैं॥

जो रोग अच्छा होनेको हो परंतु देर में-इसे तहल्लुलकह तेहैं यह बहुधा पुराने रोगों और ठंडे मवाद में होताहै॥

और जो इसी प्रकारसे रोग मारडालने कोहोतोज़ूबान भी रुबूल कहतेहैं॥

चंगाहोने के लक्षण यातो एकबारगी मालूम होवेंगे परंतु देर में अच्छाहो और मवाद थोड़ा२ निकले या पहिले मिज़ाज का ज़ोर कुछ न मालूमहो परंतु मवाद को कुछ२ निकाल के एकबा रगी जीत जावेतो बुहरान जैयद नाक़िस कहतेहैं-जो रोगजीते कुछ२ ज़ोर को घटादे या पहिले रोग का ज़ोर मालूमनहो परंतुकुछ२ शरीर के ज़ोरको घटातारहै और एकबारगी मारडाले उसे बुह रान रदी नाक़िस कहतेहैं-इन चार पिछलों का नाम बुहरान मुरक्कब है॥

इन आठों सूरतों मे रोग छःप्रकारसे बदलतेहैं यानी एकबार गी चंगा होने की ओर या एकबारगी मरने की ओर या थोड़ा२ चंगाहो नेकी ओर या थोड़ा२ मरने की ओर या दोनों ओर हो और रोगीचंगा

होजावे या दोनो हों और भरजावे ॥

नववहुरान में भवाद एक वार दूर नहो सके तो वड़े स्थानोंसे दूसरी ओर चलाजाता है इसे वहुरान इंतकाली कहतेहैं-कुछ रोग जैयद हैं-जैसे यरकान,खुजली, दाद ओर कुछ रदीहैं जैसे कोढ़ खुनाक़- आकिला- दुबैला- आदि ॥

वुहरान इंतकाली नहीं होता-परंतु जवकि कमजोरीहो ओर सवाद थोड़ाहो ॥

वहुरान होने से पहिले उसके लक्षणपायेजातेहैं अर्थात जोवह दिनको होतो पहिली रातको ओर जो रातको हो तो दिनको वह चिन्ह होंगे कभी गरम रोगों में तीन दिन तक वह रहतेहैं चिन्ह जिस दिन अधिक होता हो वही दिन वहुरान का जानो ॥

जिस वहुरान से सवाद दूरहो वह पांचप्रकार काहोताहै नकसीर- उलटी- दस्त- मूत्र- ओरपसीना ॥

मूत्र ओर पसीने का वुहरान बहुधा नाक़िस होताहै-नकसीरका वुहरान सव से अच्छाहै-फिर दस्तों का फिर उलटीका- फिर मूत्रका फिर पसीनेका फिर खुराजात का अव हरवुहरानके चिन्ह अलग २ लिखेजाते हैं ॥

नकसीर के वुहरानके चिन्ह यहहैं- कानों का सुनहोना आवाज़ आनी सिर जलना चमकती हुई वस्तु आंखोंके सामने दिखाई देना-नाक खुजलाना सिरकी रगें धमकना आंखें ओर मुंह लाल होना ॥

उलटी वालेके चिन्ह यहहैं- दम फूलना- मतली-मिचलाहट- मुंह कड़वा होना- फड़कना- कौड़ीकी पीड़ा- आंखोंके नीचे अंधेराहोना-नाड़ीका वंद होना- ओरनीचेका होठ फड़कना ॥

दस्त के लक्षणयहहैं- पेट की पीडाशरीर का बोझलहोना

पक्षियो का तन्ना - पेट फूलना - पीठ की पीड़ा - दस्त रंगीन होना बातो का बोलना - और नाडी का सगीर - और कवी - और सत्व होना और किसी बुहरान के लक्षण न होना ॥

और सूत्र के लक्षण यह हैं - मसाने का बोझल होना - और सूत्र का बहुत और गाढा होना - और मवाद का दूर न होना - यह बहुधा जाड़ों में होता है ॥

पसीने के चिन्ह यह हैं - मुंह का फूलना चौथे दिन सूत्र रंग होजावेगा - और सातवें दिन गाढा होना और रोगी स्वप्न में - हमाम और नदी और मेह बरसता देखेगा - और जब उसके शरीर पर देर तक हाथ रक्खेंगे तो गरमी अधिक मालूम होगी ॥

बुहरान दंतकाली के लक्षण यह हैं - तप का जोर और समय पर कान निकलना और सारे शरीर में या एक जगह पीड़ा होना और कोई डर की बात न होनी और जोर और नाडी का ठीक होना ॥

कान बहना और चीपड़ और आंसू और रेंट सिर के रोगों के बुहरान की पहिंचान है - और राल बहना छाती के रोगों की और बवासीर का रुधिर बहुत से रोगों का बुहरान जैयद है कभी रास्ते के चिन्ह मालूम होते हैं और रोगी अच्छा होजाता है और कभी रसे को होता है और रोग घट जाता है उस समय नाडी नर्मली या बंद होजाती है ॥

बुहरान जैयद की पहिंचान यह है कि मवाद अच्छा पका होगा और वह भलि भांति निकलेगा और नाडी ठीक और पुष्ट होगी बुहरान रद्दी इसके विपरीत है - बुहरान के दिन कोई रसी औषध न दें जो मवाद को निकालें इस वास्ते जुल्लाब आदि न देना चाहिये - जो हो सके तो भोजन भी न दें और नहीं तो हलका भोजन

देनाचाहिये- औरलक्षणोंको देखके मिजाज की मददकरें-जोम
वाद नकसीर से निकाला चाहिता हो
ण उसे न निकाल सकताहो तो मदद दें-
रमरक्खें और गरम पानी से तरेंडादें-जो उलटी
टीकरावें औरजुल्लाव चाहती होतो मुलैय्यन
भीजानो जब मालूम होकि बुहरान इंतकालीहै और मवाद कि
सीजगह गिरके उसे बिगाडेगा तो मवाद को उधिर गिरावें
कुछ हानि नहो- जैसेकि जोजगह उसके बराबर हो उसे बासके

होतो बायेहाथसे कोई कडाकाम नकरें या
उठावें जो मवाद
पिडलियांटखनोंतकके
सें- औरजो मेदे में हो और छाती की ओर आवेतो बाहें औरजानकी
मूत्रमें पसीना निकालें और पसीने में मूत्र उलटीमें दस्त औरदस्त
में उलटी जबतक अधिक आवश्यकता नहो बुहरान में मवाद नि
कालना बद नकरें और उसे शरीर की किसी उत्तम औरकमजोरी
जगह परन गिरावें रोगके आदि में बुहरानबहुत बुराहै- बहुतसे
हकीम जो रोग दो पहर से पहिले उत्पन्न हुआहो उस दिनको हि
साब में गिनतेहैं - औरजो दो पहरके पीछेहो उसेछोड देते हैं-अ
के पीछे जोतप हो उसी समय से गिनीजावेगी-रोग में कुछ दिन
बुहरान के दिनहैं - उन्हें बाहुरीया बाहतेहैं- और कुछ योमुलम
न्ज़ार अर्थात खबर देनेवाले और कुछ न बुहरान केहैं नखबरदे
नेवाले परंतु कभी२ बुहरान उनमें होजाताहै -उन्हें वाकेफिलवस्त
कहतेहैं जैसाकि आगके नकशेमें लिखाजावेगा-बुहरान काजोर
औरकडापन आठवें दिनतक रहताहै फिर घटजाताहै॥

जिन दिनों में वुहरान वहुत करकेहोताहै और अच्छाहोताहै क्वग्यारह दिनहैं उनकी जगह हमने एकका अंक नक़शेमें लिखा है- और जिन दिनों में वुहरान रदी औरवुराहोताहै व्ह आठ दिन हैंउनकी जगह दोका अंक लिखाहै- और जिन दिनों में वुहरान नहीं होता वह तेरह दिनहैं उनकी जगह तीन का अंक लिखाहै औरउनमें जुल्लाव सी देसकतेहैं वे खटके होकार और छ: दिनवाले फिलवस्तहैं- उनकीजगह ४का अंक लिखाहै॥

दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल	दिन	हाल
१	वुहरान	११	४	२१	१	३१	१
२	खिलाफी	१२	२	२२	३	३२	२
३	४	१३	४	२३	२	३३	२
४	१	१४	१	२४	१	३४	१
५	४	१५	२	२५	३	३५	३
६	२	१६	२	२६	३	३६	३
७	१	१७	४	२७	१	३७	१
८	२	१८	२	२८	३	३८	२
९	४	१९	२	२९	३	३९	३
१०	२	२०	१	३०	३	४०	१

कभी देखने में रोग मालूम नहीं होता -छटे दिनवुहरान जैयद होजाताहै तौवह दिन सातवा होताहै- क्योंकि वुहरानजैय

दछटे दिन वहुत कम होता है ॥

नक़शे में जो दिन लिखे गयेहैं उनमें गरम रोगों का बुहरान होता है - और पुराने रोगों में महीना और वरस दिन कीजगह हैं जैसाकि कफ़की और सौदा की रुवा में सात महीने गिब्बकी सात बारियों के बराबर हैं - इसलिये बुहरान १२० दिन या सात महीने या सातवर्ष या चौदह या इक्कीस वर्ष पीछे हो ॥

वारी वाली तप में वारीके दिन बुहरान होता है - उसदिन पेट भरा न रक्खें ॥

बुहरान में बहुत बुरे बुरे लक्षण होना मरने की पहिचान है ॥

इतिश्री बुहरानका वर्णनसमाप्त

१	बुहरान	११	२१	३१
२	रिबलाफी	१२	२२	३२
३	बुहरान	१३	२३	३३
४	बुहरान	१४	२४	३४
५	[illegible] बसंत	१५	२५	३५
६	बुहरानरही	१६	२६	३६
७	कुमहरू	१७	२७	३७
८	रोजमुश	१८	२८	३८
९		१९	२९	३९
१०		२०	३०	४०

मिलीहुई औषधियोंकेवना नेकी विधि

इस पुस्तक में जो वनी हुई औषधें रोगी को देने के लिये बताई गई हैं उनके वनाने की रीति अव लिखते हैं और जिस पृष्ठ में उसका नाम आगयाहै उस पृष्ठ का अंक भी उसके आगे लिखाहै ॥

इतरीफ़लधनियांका

तीनोंहड़ें - वहेड़ा - छिलेहुये आमले - धनियां - उस्तखुद्दूस - सुंडी - वनफशे के फूल - प्रत्येक ३ तोले तीन तोले रोग़न वादाम में मिलाके तिगुने शहद के क़वाम में मिलाके चालीस ४० दिन तक जौ के अंदर रक्खें और उसमें से एक तोले या दोतोले खावें ॥

इतरीफ़लग़ुद्दी

उस्तखुद्दूस - ग़ुद्द जो वकरी के गले में होतेहैं उन्हें सुखाके - विसफायज - प्रत्येक १७॥ माशे - हड - आमला - तुरवुद - प्रत्येक २४॥ माशे - इस्तीमून ३॥ माशे - अनीसून - मस्तगी

लोंग- तज प्रत्येक सातमाशे- नौशादर-शैतरल-नरकचूर-रूमी कून-प्रत्येक ७०॥ माशे कूटछानके इसी प्रकार से शहद मेंबनाले और १७॥ माशे खावें ॥

अयारिजफीकरा

बालछड़- दारचीनी- तेज- इक्लु विलसान - वद विलसान- सलखी- आसारोन- केसर- अत्येक एक तोला- एलुआ दो तोले या तीन तोले सव को कूट छान के फंकी बनावें उसमें से सात माशे पेट खाली होने पर शहद और गरम पानी के साथ दें ॥

असानासिया

मुरमक्की- अफ़ीम- वजफ़ल वजन- केसर- जुन्द वेदस्तर- कूट- करदमाना- खशखाश- गाफिस- वफ़ूरीका दहन सींगनलाहुआ- गेंडिये का कालेजा सुखायाहुआ- सबकोवराबर लेके कूट छान के घोलने की दवा घोलके शहदमें मिलादें और छः महीने पीछे ३॥ माशे कासनी के पानी या शहद के पानीसे। साथदें ॥

बासलीकून

चांदीका मैल- समन्दर फैन प्रत्येक २२॥ माशे- सफ़ेदा कलाई- जोर- नमक तुरकी- कालीसिरचें- नौशादर- दारफिलफिल- प्रत्येक ४॥ माशे- जलाहुआ तांबा ३१॥ माशे- लोंग- छडीला प्रत्येक १॥ माशे- कापूर ८ रत्ती- तेज पात- जुन्दवेदस्तर वालछड़- सुरमा- प्रत्येक ३॥ माशे इन सब को पीसकर सुरमा

वनालें॥

वरूदवनफ़सजी

वनफ़शेके फूल-धनियां-बबूलकागोंद-कतीरा प्रत्येक ३॥ माशे। निशास्ता १०॥ माशे कूटछानके पांचबार सिरके में भिगोके छायामें सुखावें फिर सुरमा बनालें॥

बनादिकुलकुर

खरबूजे और ककड़ी के बीज प्रत्येक १७॥ माशे-क दू-कुलफ़ा-और खेरू के बीज-सफेद बनिरुलबनज-बादाम कतीरा-निशास्ता-मुलहटीकासत-खसखाशसफेद-गिलेअ र्मनी-कर्पासके बीज-प्रत्येक ७ माशे कूटछानके बीदानेके लुआ बसे कुर्स बनावें और १० माशे खावें॥

तिरयाक

गोलमिर्चें सफेद-सुरमक्की-प्रत्येक १॥ माशे-जिं यानी ३॥ माशे-जरावन्द सुदहरज ५। माशे इन्द्रजुलके बीज-कलोंजी-जीरा-प्रत्येक ७ माशे कूटछानकर गुलाब में गूंधले और बाकलेके बराबर खावें॥

सोंठकी माजून

सोंठ ७० माशे-बबूलकागोंद-इलायचीकेदाने-प्रत्ये क ७ माशे-लोंग-दारचीनी-प्रत्येक १७॥ माशे-जायफल-केस र-प्रत्येक ३॥ माशे-बसवासा १४ माशे कूटछानके ४०५ माशे मि श्रीकीचाशनी में मिलादें॥

मिलावेकीमाजून

काली मिर्चें-दारफिलफिल-कालीहड़-बहेडा-आमला-जुंदवेदस्तर-प्रत्येक १४माशे-मोथा १७॥माशे-कूट-अस्लवलादुर- विरंगकाबिली-शकर तबरज़द-हब्बुलग़ार-प्रत्येक ४२०माशे कूटछानके दुगने शहद और अस्लवलादुर कोचाशनीकरके मिलावें औरछः महीने पीछे खावें॥

जवारिशजालीनूस

बालछड़-लौंग-इलायची-तज-दारचीनी-सोंठ-कुलीजन-केसर-सफेद मिरचें-दारफिलफिल-दर्याईकूट-मोथा-अस्विलसान-हब्बुलआस-आसारोन-सीठविरायता प्रत्येक तोलेभर मस्तगी ५ तोले- औरसबके बराबर शक्कर-दुगने शहद मेंमाजून बनावें औरसात दिन पीछे ९ माशेखावें॥

ऊदकीमाजून

जोपचान कोठीक करतीहै औरभूखलगातीहै औरतरी औरकफको मेदे से दूरकरतीहै॥

केसर- सोंठ-दारफिलफिल-जायफल-प्रत्येक ३॥माशे-बालछड-इलायचीकेदाने-बसवासा-प्रत्येक ७ माशे-लौंग-मस्तगी प्रत्येक १०॥मासे-कचचाजद-तज-प्रत्येक १७॥ मासे कूटछानके दोसेरशक्करमेंचाशनी करलें॥

जवारिशखोजी

कन्दुर-अजवायन-मस्तगी-मोथा-बालछड प्रत्येक १७॥

मासे और मुनक्के को सिरके में भिगोकर निकालके सूनलें और पीसकर उसमेंसे १०५ मासे हब्बुल आस २१० मासे सबको कूट छानके दुगने शहद और खान्दकी चाशनी करके दवाओं को मिला दें और १० मासे से १२ मासे तक खावें ॥

हब्ब कोकाया ॥

पीकरा ३॥ मासे तरवुद सफेद मुनाहु आसकी जड़ पौलि यां उस्तखदूस प्रत्येक १॥ मासे बकायन १ रत्ती कूटछानके सौंफके पानी में गोलियां बनावें यह सब एक बार के खाने को है ॥

हब्बुल मिस्क

कालियां लौंग अकरकरा प्रत्येक ३॥ मासे गुलाव के फूल सफेद चन्दन हड़ प्रत्येक ७ मासे वंसलोचन १॥ मासे मुश्क कपूर प्रत्येक १ दांग कूटछानके गुलाव और पानके अर्क में गोलियां बनावें ॥

हब्बेरावन्द

रावंद १॥ मासे गारीकून ३॥ मासे तुर्बुद ७ मासे जरा वन्द दो दांग गूगल १॥ मासे अनीसून १ दांग कूटछानके गो लियां बनावें यह दो बार के खाने को है ॥

हब्ब सिकबीनज

सिकबीनज एलुआ गारीकून गूगल बराबर लेके गो लियां बनावें और ७ मासे से १०॥ मासे तक खावें ॥

हब्बखीजरान

भुनाहुआसकमूनियां.जावशीर.प्रत्येक ४॥माशे.वे
कायन ५॥माशे.नोशादर ७माशे.गारीकून ८॥माशे.अयारि
जफीकरा.१०॥माशे.इंजरूत.१४माशे.तुरबुद १४॥माशे.
कूट छानके गंदने के पानी में गोलियां बनावें और ३॥माशे
खावें॥

हब्बवासली

बालछड़.तज.हब्बे गौरंगद.दिलसान आसारोन.म
स्तगी.दारचीनी.केसर.प्रत्येक ३॥माशे तुरबुद ७माशे.भुनी
सकमूनियां.१४माशे उस्तखुद्दूस.वकायन प्रत्येक १७॥म
तुरबुद २४॥माशे एलुआ ५६माशे.कूट छान के पानीमें गोलि
बनावें और १४ माशे खावे॥

हब्बसिब्र

भुनीहुईसकमूनियां ७रत्ती.उसारागाफिस ८॥रत्ती.
गारीकून १८॥रत्ती.सिब्र ३॥माशे.कूटछानके
नीमें गोलियां बनालें यह एक बार खावें॥

हब्बइफतीमून

उस्तखुद्दूस ४दांग.कालीकुटकी.नमक प्रत्येक १॥
माशे.विसफायज.गारीकून.प्रत्येक ३॥माशे.अयारिज.
३॥माशे गोलियां बनालें यह सबदो बार या ३ बार खाने को हैं।

दिवालमिश्क

मस्तगी. कचचाजद. तुरंजके छिलके. दारचीनी. लौंग. बालछड़. सुंबुल. जायफल. कवाबा बड़ी ओर छोटी इलायचीके दाने. सोया. सरकंडेकीजड़. जंगलीतुलसी. फिरंजमुश्क. तुख्मे रेहां. जम. ओर बालंगूके बीज. दौनामरुवा. बिनाबिंधेमोती. हुसुर्द. कहरुवा शमई. कचचारेशमकटाहुआ. सफेद ओरलालबहमन प्रत्येक ३॥ मासे. मुश्क १॥ मासे. हड़के मुरब्बे के शीरे में गूंधके माजून बनाले ॥

दवायतुर्बुद

तुर्बुदसफेद छिलाहुआ साफकियाहुआ ३॥ मासे. सोंठ मस्तगी. प्रत्येक १॥ मासे. कंदइनसबके बराबर कूटछानके फंकी बनावें और ४॥ मासे खावें ॥

दवाउलकरकम

केसर ५॥ मासे. आसारोन. ऊद. अनीसून फितरासालयून. रेवंदचीनी. मुरमक्की प्रत्येक १४ मासे. बालछड़ २१ मासे. सीसंबूर तजफ़ाह. सरकंडेकी जड़. हब्बुलबिलसान प्रत्येक ७ मासे. मुलेठी. जौंद. मस्तगी. गाफ़िस. प्रत्येक १०॥ मासे. बिलसानकातेल ७ मासे कूटछानके शहद में मिलाके माजून बनाले और माउलअस्ल के साथ ३॥ मासे खावे ॥

दवाउलतुरंजबीन

तुरंजबीन सफ़ेद साफ़ करके १०५ माशे डेढ़ सेर दूधमें औ टावें जब गाढ़ी होजावे तो १३॥ माशे खावें ॥

जुरूर असफ़र

इज़रूत. सतुआ. रसोत प्रत्येक ७ माशे. केसर. सुर. प्रत्येक ३॥ माशे. पीसछानके आंखमें लगावें ॥

मस्तगी का तेल

मस्तगी ३५ माशे. रोगन गुल १७५ माशे. एक शीशीमें डालके गरम पानीमें उसे रक्खें और उसके नीचे आगजलावें यहां तक कि वह मस्तगी तेलमें पिघलजावे. फिर उसे निकाल लें ॥

कूट का तेल

कूट ३५ माशे. काली मिर्चें. फ़रफ़ियून. प्रत्येक १०॥ माशे. अकरकरा १४ माशे. जुन्दबेदस्तर ७॥ माशे. जैतका तेल १७५ माशे कूट और अकरकरे और मिरचोंको ३५० माशे पानीमें दरात दिन भि गोवें. फिर औटावें कि आधा जलजावे. फिर ज़ैतका तेल मिलाके औ टावें. कि निरा तेल रहजावे- फिर जुन्दबेदस्तर और फ़रफ़ियून को कूटछानके आगपरसे उतारके डालदें ॥

केसर का तेल

मुरसक्की १॥ माशे. चिरायता १७॥ माशे. केसर. कौड़े माला. प्रत्येक २१ माशे. चिरायते और केसर को अलग और मुरस क्कीको अलग सिरकेमें भिगोवें. पांच दिन तक और छटे दिन १

वर्दमाना को औसिरके में भिगोवें. एक दिन सात व रोज छानके तिलीका तेल मिलाके औटावे कि सिरका जलजावे और तेल रह जावे ॥

बिच्छूकातेल

जरावंद सुदहरज. जिन्तियान्ना. सोथा. कारनेकी जड़की छाल प्रत्येक ३ तोले चूटकर शीशेमें भरें. और ४०५ माशे कडुयेबा दाम या तिल्ली का तेल उसमें डाल दें और उसका मुंह बंद करके धूप में रक्खें. गरमी में सात दिन और जाड़ों में चौदह दिन. फिर उस दवाको उस तेल में भली भांति घोलें. और दो बड़े बिच्छू जीते उसमें छोड़दें फिर मुंह बंद करके चौदह दिन और धूप में रक्खें फिर छानलें ॥

सुहागकातेल

हरे सुहागका अर्क २ तोले. तिल्ली या जैतके तेल में जो ३ तोले हो औटावे कि पानी जलजावे ॥

नास्दीनकातेल

चिरायता. वरजुलगार. सोदक्कू फी. अद बिल्सान लाख. नेजेपात. आसके पत्ते. नास्दीन. सरकन्डे की जड़. रौसन नवहल. वादमाना. दोना मरुआ बराबर लेके कुचलके १ रात दिन गुलाब और पानी में भिगोवें फिर छानके तिल्ली का तेल मिलाके औटावें कि निरा तेल रहजावे ॥

रोग़न मोर्चा

काले चेंटे जो क़बरों में होते हैं - १०० पकड़े - और एक शीशे में जिस में चमेली का तेल पड़ा हो जीते डालें और गरमी की धूप में सात दिन तक फिर साफ़ करलें ॥

आसकातेल

इब्बुल आस कूट कर तिली के तेल में औटावें - फिर ६ लें ॥

रोग़न आमला

छिलेहुए आमले - आस के पत्ते - सनौबर के जड़ बराबर लेकर कूट के पानी में औटावें - कि गलजावें फिर छान के इतना तेल मिला के पानी को जलावें कि निरा तेल रहजावें ॥

सोयेकातेल

सोये के बीज छाया में सुखा के तीन तोले ले और ति तेल ५७॥। तोले शीशे में भर के धूप में २० दिन तक रक्खें फिर छानले ॥

गोरखरूकातेल

हरे गोरखरू को कूट के पानी उसका तिली के तेल में मि आगपर जलावें कि निरा तेल रहजावें ॥

गेहूंकातेल

इसके बनाने की रीतीतेहैं - एक यह कि गेहूं को आतिशी शीशे में भरके ऊपर से कपडौतीकरें और उसके मुंहमें रेशे किसी छाल के या तिनके भरदें कि गेहूं गिरनेन पावें - फिर उसको किसी वर्तन में कि नीचे उसके छेद हो उलटा रखके ऊपर इसके अर्नेउपले चुनें और आग लगादें और तेल १ वरतन में रखदें कि तेल उस में टपकाकरें ॥

दूसरी रीति यह है कि गेहूं को किसी साफ पत्थर पर रखके ऊपर से कोई लोहे की वस्तु गरम करके ज़ोर से दबा में तेल निकल आता है ॥

सुर्मारोशनाई

नुहासजर्लहु ३॥ - शादना - प्रत्येक १७॥ माशे - गोलमिर्चे - दारफिलफिल - केसर - चकायुन १॥ माशे - ज़ंगार - सलुअमक अर्मनी प्रत्येक ३॥ माशे - इकलीमिया - ७ माशे पीसके सुरमा बनालें ॥

माजूनजर औनी

कालीमिर्चें - दारफिलफिल - सोंठ - तज - दारचीनी - लौंग - कुलीजन प्रत्येक तोलेभर - दोनों तोदरी - औरबहमने - बूजीदां - लिसानुल असाफीर - मीठाकूट - सोया - बालछड़ - प्रत्येक २ तोले कूटछानके शहद में माजूनबनालें ॥

सिरकेकी सिकंजबीन

सिरका और शक्कर दोनों बराबर लेकर बनालें॥

सिकंजबीनबज़ूरी गर्म

32

उसारागाफिस. रेवन्दचीनी. प्रत्येक ७ मासे. कर्फस का सत्ती और कृशूसके बीज. सौंफ. अनीसून प्रत्येक १७॥ मासे. किब्र और सौंफ और कर्फस के जड की छाल २४॥ मासे. सबको कुच लके ९२१५ मासे पानी में भिगोवें और पानी से चौथाई सिरका उसमें डालें. १ रात दिन उसे भीगा रक्खें फिर औटाके साफ़ करलें और ८१ तोले कंद में चाशनी करलें॥

सिकंजबीन अनसिली

33

अनसिल उर्फ़ छरां कल्लकाडी की छुरी बनावे और छोटे छोटे टुकडे और पुराना सिरका २०२५ मासे डालें और औटावें कि विलकुल गल जावे और सिरका पांचवां हिस्सा रह जावे. फिर उसमें १॥ गुणा कंद मिलाके धीमी आंचमें पकावें. और कफ़ उसके अर्थात झाग निकालते जावें यहांतक कि चाशनी पर आजावे॥

सिकंजबीन इफ्तीमून

उस्तखदूस. सौंफ. शाहतरा प्रत्येक १७॥ मासे. इफ्तीमून विषफायज. सनाय. काविली हड प्रत्येक ३५ मासे. इन सबको १३५ मासे सिरके में भिगोके औटाके छानलें और ८॥ आधसेर कंद में चाशनी बनावें॥

सिकंजबीनसफ़रजली

खट्टी बिही ताजी कूटके पानी उसका ऽ१ सेरलें और ऽ। पाव भर सिरका मिलाके औटावें- फिर ऽ॥ सेर कंद डालके किवाम अर्थात् चाशनीबनालें और जो सिरके के बदले नीबूका अर्क़ मिलालें तो अति लाभकारक होगा॥

सुफ़ूफ़चारतुख़्म

ईसबगोल- तुख़्मरेंहां- कनौचे और बारतंगके बीज- बराबर लेके किसी मिट्टीके बरतन में भूनें- और गरम पानी ऊपर डालकें छौंक मारें और थोडासा रोग़न गुल या बादाम डालके ६ खिलावें॥

सुफ़ूफ़हब्बुलरुम्मां

खट्टे अनारके दाने भुनेहुये ७० माशे- कतीरा- धनियां प्रत्येक १४ माशे- काक़- स्वर्ण नूव विर्नी प्रत्येक ७ माशे- गुलनार- पर्दसिमाक़ प्रत्येक १०॥ माशे- कतीरा और धनिये को सिरके में भिगोके सुखाके भूनें फिर सबको कूट छानके फंकी बनावें और ६ माशे खावें॥

सुफ़ूफ़ मिकलियासा

ईसबगोल ७० माशे- रैहां- बारतंग मरूके बीज- बबूलका गोंद- गिलेअर्मनी- खशखाश प्रत्येक ५२॥ माशे- चूके और खुल्फा के बीज- निशास्ता- प्रत्येक २५॥ माशे- बीजोंको भूनके और बाकी सबको कूटके मिलादें- और ठंडे पानीके साथ फंकावें॥

सुफ़ूफ़तीन

ईसबगोल-मरू औरेरेहांके बीज-निशास्ता-मुनेहसेचु
केकेबीज-गिलेअर्मनी-बंसलोचन-बबूलका गोंद-सबको सिवे
यअसपगोलके कूटके मिलावे १॥माशेरोग़नगुलयाबादामसे
चिकनाकरके गुलाबकेसाथफंकावे॥

सुफ़ूफ़तेरातेज़क

तेरातेज़क को एक राति दिन अंगूरके सिरकेमें भिगोवे
और थोडासा जौका आटा उसमें मिलाकर गूंधे और चौसीग
गके तन्नूर में रोटी उसकी पकावें कि जलन जावें और सूख
जावे फिर उस रोटीमें से १॥० माशेले-और संभालूके बीज-३
सपूलूक न्दरीयून-बिजके जड़कीछाल-अजवापत्येक १॥
माशे-गन्दने के बीज-जीरा-किरमानी-कि एकराते सिरके में
भिगोके भूनलियाहो प्रत्येक २॥ माशे सबको कूटछानके फं
कीबनाले॥

मंजनदांतोंकापुख्तकरने वाला

गुलनार-फिटकरी-आमला-अक़ाकिया-बराबरलेके
मंजनबनावें॥

दूसरामंजन यहहै-मुर-तूतिया-फिटकरी-गर्द सिमाक-गु
लाबके फूल-खट्टे अनारके छिलके-आमलेका उसारा-माज़ू-
गुलनारफ़ाज-बराबर लेके कूटछानके मंजनबनावें॥

कूटकेतेलकोदूसरीरीति

तेज २१माशे-सुरमक्की-सारचोवाप्रत्येक १४०माशे-कडूआकूर ३५०माशे-सबको कुचलके गुलाबमें एक रातिदिन भिगोवें फिर औटाके औरछानके तिलोंयाजैत के तेलमें जोपानीसे तिगुनाहो मिलाके औटावें कि निरातेल रहजावें ॥

सुरतोजान

खट्टे और मीठे अनार के छिलके प्रत्येक १०५ माशे-माजू-गुलनार-फिटकरी-जलाहुआकागज-अकरकरा-प्रत्येक ३५माशे-सिमाक़ ५२॥माशे-नमक-नौशादर प्रत्येक १७॥माशे-कूटछान के इस्बुल आसके सिरके में गूंधके टिकियाबनाके सुखारक्खें ॥

शर्बतवर्दमुकर्रर

गुलाबके फूल ताज़े खुशबूदार ज़ीरा औरसब्जी निकालके १सेर भरले और पांचसेर पानी में ओटावें-यहांतककि रंग और स्वाद और गंध उसकी पानीमें आजावें-फिरमलके उसका फोक निकालडालें और उतनेहीनये फूलडालके ओटावें-और उसकाभी फोक निकालडालें-इसीप्रकारसे जितनीवार चाहेंनये फूलबदलतेजावें-फिरछानके पानीके बराबर शक्कर मिलाके क़िवामकरलें और १च्यार तोले पीवें ॥

शर्बतइफसंतीन

इफसंतीनरूमी १७॥मासे-गुलावके फूल २८मासे-३५ हरपानीमें भिगोके ओटावें जब चौथाई रहजावे तो-मलके-छान केशकर मिलाके क़िवाम बांधें ॥

शर्बतगूफ़ा

सूरवाज़ूफाईबल निकालके २०३मासेलें-और३ससेदुग नेपानीमें भिगोवें-फिर ओटाके १०२मासेकंद और४०५मासेश हदडालके क़िवामकरलें ॥

शर्बतरवशरवाश

पोस्तरवशरवाशदोनों समेत १००लें- उन्हें कुचलकेर सेर पानीमें ओटावें फिर १॥सेरकंद मिलाके क़िवामकरलें ॥

शर्बत पोदीना

रवट्टे अनारका रस एक हिस्सालें-औरहरेपोदीनेकारसअ टके आधा हिस्सालें फिरदोनोंको मिलाके ओटावें औरउसकेबरा बरकंद डालके क़िवामकरलें ॥

शर्बतदीनार

रेवंद १८मासे-कुसूसकेवीज१७॥मासे-गुलावकेफूल ५२॥मासे-कासनीके बीज८८मासे-कासनी की जड़ १०५ मासे-रे वंदको कुचलके पोटली में बांधके और औषधोंके साथ भिगो दें और हलकी आंचपर ओटावें फिरछान के कंद सपेद ८०५मा शेडालके क़िवामकरलें- और३५मासे-से ४५मासे-और५२॥ मासे-तक पीवें ॥

शर्वतहब्बुलआस

हब्बुल आसहरा ४०५ माशेकुचलके औरहरामाजूउसके बराबरकुचलके मिलाके ७ दिन तक पानीमें भिगोवें-फिर औटाके बराबर कंद डालके क़िवाम करलें ॥

शर्वतअंजवार

अंजवारकी जड़ और छिलके औरडाली ६ तोलेसे ७ तो लेतक लें औरकुचलके एक रात दिन गरम पानी में भिगोवें और हलकी आंचपर ओटावें और मलके छानके ४०५ माशे क़न्दमें मिलाके किवाम करें और चाहेंतो १॥ तोले खट्टे अनार के दाने भी मिलाले ॥

शर्वतगावज़ुबां

हरीगावज़ुबांकारस निकालके औरकन्द सफेद मत्ये का १ सेरभरलेके और मिलाके औटावें और कफ़ अर्थात झाग निकालडाले फिर गुलाव २० माशेडालके क़िवाम करलें ॥

शर्वतबालंगू

बालंगूके हरेपत्ते कूटके रस निकालें-एक हिस्सालेके दूनीकन्द डालके क़िवामबनालें ॥

शर्वतनीलोफ़र

नीलोफ़रके फूलहरे २०३ माशेचौगुने पानीमें १ रातदिन भिगोयें फिर औटावें जब तिहाई रहजावे तोमलके साफ़करलें

और २०३ माशे क़न्द मिलाके क़िवाम करलें ॥
यही रीति शर्वत बनफशा बनाने कीहै ॥

शर्वतसन्दल

सफेद चन्दन काचूरा खुशबूदार नवचे ९० माशेलेके ४०५ माशे. गुलाव में दो राति दिन भिगोवें फिर गुलाव अग लग निकाल लें और चन्दन में थोड़ा पानी डाल के औटावे फिर वह पानी और गुलाव मिलाके ८१० माशे कंद में क़िवाम करलें ॥

शर्वत उन्नाब

उन्नाव एक हिस्से चार हिस्से पानी मे भिगोके औटा वें जब चौथाई जल जावे तो दुगनी शक्कर डालके क़िवाम १ बनालें ॥

शर्वत के बड़े कोभी यही रीति है-उसकी बाल को औटा नाचाहिये ॥

शर्वत फिंजनोश

कचचे अंगूर का रस ४३० माशे- सिमाक- माजू- गुलना र-गुलावके फूल- कुन्दुर- सातर- मोचा-प्रत्येक ३५ माशे- केसर फिटकरीप्रत्येक ३॥ माशे- लोहेकामैल १३५ माशे- दवाओंको कूटके अंगूरके रसमें औटावें- जब तिहाई रहजाय तोमाफ़कर के रखछोड़े ॥

शियाफ़कुन्दुर

कुंदुर ३५ माशे - उशक - इंज़रूत प्रत्येक १७॥ माशे - केसर ७ माशे - मेथीके लुआब में शियाफ़ बनावें - और जब अवश्य होतो उसे टपकावें - और जो घाव और फुंसियों को पकाना होतो यहीभी बांधें ॥

शियाफ़अबियज़कुन्दुरी

कतीरा - बबूलका गोंद प्रत्येक १०॥ माशे - निशास्ता ३॥ माशे - कुन्दुर - ८ जो पीसछानके ईसबगोलके लुआबमें बनावें ॥

शियाफ़अहमरलीन

धुलाहुआ शांदना ३५ माशे - जलाहुआ तांबा २८ माशे - बबूलका गोंद - कतीरा - सुरमक्की प्रत्येक ७ माशे - बुसुद - कहरुबा - मोती - तेजपात प्रत्येक १४ माशे - दम्मुल अखवैन - केसर प्रत्येक ३॥ माशे इसीप्रकारसे बनालें ॥

शियाफ़ज़ंगार

जंगार - बबुलका गोंद - सफेदा प्रत्येक ७ मासे - पीसके बनालें ॥

शियाफ़गर्ब

सलुआ - कुन्दुर - इंजरूत - दम्मुल अखवैन - गुलनार - सुरमा - फिटकरी - प्रत्येक १ तोला जंगार - ३ माशे पीसके बनालें ॥

कुर्स माज़रीयून

माज़रीयून सुदंस्तूर-पीलीहड़के छिलके-गोंदआम बराबर लेके शकर मिलाके कुर्स बनावें और ७॥ माशे शर्बत गुल केसाथ खावें ॥

कुर्स अनीसून

इज़्ख़रतीन रूमी-आसारोन-करफ़सके बीज-बादाम-अनीसून-कूटछान के पानीमें गूंधके बनावें और सिकंज बीनके साथ दें ॥

कुर्स बिज़

ज़राबंद तवील ७ माशे बिज़के जड़की छाल उशक प्रत्येक १४ माशे-सम्भालूकेबीज-गोलमिरचें प्रत्येक २१ माशे उशकको पुराने सिरकेमें घोलके और औषधोंको कूटछानके मिलादें और ४॥ माशे सिकंजबीनके साथ खावें ॥

कुर्स कौकब

बाळछड़-जुन्दवेदस्तर-तज-तीमुलवहीग-बेलके छिलके-मुरमक्की-प्रत्येक १४ माशे अफ़ीम-केसर-मीठाकूट-जलालुआ अलरब्बू-प्रत्येक १७॥ माशे-सफ़ेद खशखाशकूक-अनीसून-सीसालियूस-खुरासानी अजवायन-सुखामी करफसके बीज प्रत्येक २१ माशे-गोंदको पानीमें घोलके औरसब औषधोंको पीसछानके शहदसे गूंधके कुर्सबनाके कामें सुखावें ॥

कुर्ससुम्बुल

वालछड़- फिटकाई - सरकंडेकीजड़ - तज-जरावन्द त
वील-दारचीनी- चिरायता-प्रत्येक १०॥ माशे-केसर- अनीसून-
मुरमक्की- कड़ुवाकूट-कालीमिर्चे प्रत्येक ३॥ माशे- गूगल-
मस्तगी-प्रत्येक ७ माशे- उशक १॥ माशे- पहिले गूगलको गुला
बमें घोलें फिर और औषधोंको कूट छानके मिलालें और सात
माशे खावें॥

कुर्सएलाउस

कासकेबीज- अनीसून प्रत्येक ५२॥ माशे- इफ़संती
न ७ माशे - तज ७ माशे - मुरमक्की- काली मिर्चे- चुन्दे- अफीम-
प्रत्येक ५॥ माशे- सबको कूटछानके पानीमें कुर्सबनावें और ५
माशे खावें॥

कुर्सकुहल

सुरमा- धोयाहुआ- शादना- दम्मुलअखवैन प्रत्येक
१०॥ माशे- गुल्नार- माजू प्रत्येक ७ माशे- गैंनिकासींग जलाहुआ
अकाकिया प्रत्येक ३॥ माशे- छादन केसर प्रत्येक १॥ माशे- इं
सराज ५॥ माशे- कूटछानके हरे बारतंग के पानीमें गूंधके बना
वें- और ३॥ माशे लार तंग और कुलफे के पानी के साथ खावें

कुर्सगुल

वंसलोचन- इफसंतीन- वालछड़ प्रत्येक ७ माशे
तुरंजवीन १०॥ माशे- गुलाब के फूल - मुलैटी- प्रत्येक १० माशे

छान के गुलाव में बनावें. और ३ माशे या उससे अधिक ॥

कुर्सकहरुवा

कहरुवा-बुसुद-मोती-जलीहुईकोड़ी-कासींगजलाहुआ-धोयाहुआशादना-प्रत्येक १०॥ माशे-गुलावके फूल-कुलफेके वीज-धनियां-सिमाक-सुनाहुआनिशास्त और बबूलका गोंद-गुल्नार-प्रत्येक १७॥ माशे-वंसलोचन अक्राकिया-बरगद की डाढ़ीका उसारा प्रत्येक ७ माशे-कूट छानके वार तंग के पानी में गूंधके गोलियां बनावें और ७ मा शेखावें ॥

-५ ल्गीर-

कुर्सकाकनज

ककड़ीके बीज ३५ माशे-काकनज १०॥ माशे-कर्फ सके बीज-भंग गिलेअर्मनी-बबूलकागोंद-द्रसुल अखैन वजरुलवनज प्रत्येक ७ माशे-अफीस-३॥ माशे-कूटछानकेवना वें और १॥ माशे खावें ॥

कुर्सजियाबितुस

बंसलोचन-मुलहटीकासत प्रत्येक १७॥ माशे-कुल फे और काहूके वीज-गुलावके फूल-गिले अर्मनी-अत्येक ५२॥ माशे-धनियां-चूकेके बीज-प्रत्येक १०॥ माशे-सफेदचंदन-गु ल्नार-सिमाक-बबूलकागोंद अत्येक ७ माशे-कपूर १॥ माशे कूटछानके कुलफे और काहूके पानीमें बनावें ॥

कुर्सबौलुद्दम

ककडीके बीज ३४ माशे. निशास्ता. कतीरा. गुलनार खुब्बा. दम्मुल अखवैन. बबूलका गोंद प्रत्येक ३॥ माशे. कूटछान के कुलफे. या बारतंगके बीजमें बनावें ॥

कुर्सनफसुद्दम

गिलें अर्मनी. काहरुवा. बबूलकागोंद. दम्मुलअखवैन. वंसलोचन. निशास्ता. कतीरा. अकाकिया. गुलनार. बरगद की डाढी. बराबर लेके बारतंग और कुलफे के पानी में एथके बनावें ॥

कुर्सतबाशीरमुलय्यन

निशास्ता. बबूलका गोंद. सफेद खशखाश. कतीरा प्रत्येक ३॥ माशे. खीरककडी कद्दूके बीज प्रत्येक ९ माशे तुरंजबीन १॥ माशे. सफेद वंसलोचन १४ माशे कूटछानके ईसबगोलके लुआबमें बनावें और ४॥ माशे खावें ॥

कुर्सतबाशीरकाबिज

वंसलोचन १४ माशे. कुलफेके बीज भुनेहुये ७ माशे गुलाबके फूल २४॥ माशे. सफेद चन्दन. बबूलका गोंद. कतीरा निशास्ता. शाहबुलूत. चूकेके बीज सब भुनेहुये. गुलहगिकासत. जरिशक प्रत्येक ७ माशे गुलनार अकाकिया १

प्रत्येक ३॥माशे कूट छानके सेवयाज़रिश्क के पानी में बनावें और ४॥ माशे खावें ॥

कुर्सकाफ़ूर

कपूर २ माशे- गुलाब के फूल- तुरंजबीन- प्रत्येक ३१ माशे- खीरे ककड़ी के बीज- बंसलोचन- मुलहटी प्रत्येक १७ माशे- काहू के बीज- २८ माशे- कुलफे के बीज २१ माशे- कासनी के बीज ७ माशे- कद्दू के बीज १४ माशे- मुलहटी का सत ११ माशे- कूट छान के ईसबगोल के लुआब में बनावें और ७ माशे तक खावें ॥

कमूनी

ज़ीरा- सदब्बर- सुहाग- सौंठ- काली मिर्चें- नमक अर्मनी को शहद में मिलाके माजून बनालें ॥

कोहलुलजवाहिर

इसकी दो रीते हैं- एक यह कि लाल फीरोज़ा- मारकशीशा- सफेदा- निशास्ता- प्रत्येक ७ माशे- धोया हुआ आशादना रसोत- शियाफ़ मामीसा- केंकड़े जले हुये- इक़लीमिया- प्रत्येक ३॥ माशे- तूतिया- बंसलोचन- दहनाफरंग- प्रत्येक ४॥ माशे- अंज़रूत १४ माशे- सुरमा ७० माशे- कपूर- सोंठ प्रत्येक १६ नौ १७॥ माशे काचके अंगूर के रस में घोटें ॥

दूसरी रीति यह है- सुरमा २४॥ माशे- मारकशीशी १७॥ माशे- इक़लीमिया ज़हबी घुली हुई- वुसुद- मोती प्रत्येक

माशे. शादना ७माशे. केसर १॥माशे. सुरमाबनावें॥

कुहल अज़ीज़ी

+ जलाहुआ सुरमा १७॥माशे. सोने और चांदीकी इक्लीमिया. शादना. तूतिया. जलाहुआ तांबा प्रत्येक ७ मा.पीलीहड़के छिलके. तेजपात. काली मिरचें. दारफ़िलफ़िल. नोशादर. एलुआ. रसोत. केसर. केंकड़ा प्रत्येक ३॥माशे. सोंठ १॥माशे कपूर ८ जौ. मुश्क तीनजौ. लौंग बत्तीसजौ. पीसके सुरमा बनावें॥

कलकलानजगरम

+ रेवन्द. उसारा ग़ाफ़िस. अनीसून. वालछड़. प्रत्येक सात मासे. ईरसा १०॥माशे. माज़रीयून मुदव्वर. ग़ारीक़ून. पीलीहड़. सिकबीनज प्रत्येक १७॥माशे. कूट छान के शहद में मिलाके माजून बनावें. और १०॥माशे. से चौदह माशे तक खावें॥

कलकलानजठंडी

+ गुलाबके फूल. मुलैठी. कासनी और ककड़ीके बीज मुलहटीका सत प्रत्येक ७माशे. उसारा इ फ़संतीन १॥माशे. माज़रीयून मुदव्वर. पीलीहड़ प्रत्येक १७॥माशे. तुरंजबीन. अमलतास. सफ़ेद कन्द प्रत्येक ५२॥माशे. माजून बनावें और सात माशे से १०॥माशे तक खावें॥

लाजवर्दके धोनेकीरीति

लाजवर्दको पीसके सुरमाकरलें - और पानी में डालें - और थोडासा ज़ैतून का तेल डालें फिर नितारें फिर बहुतसा पानी डालके होले होले घोलें - और रंगीन पानी अलग बर्तन में निकाल के ढक दें घड़ी भर पीछे तलछट बैठजायगी वही तलछट कामकी है - इसप्रकार से फिर उस पहिले लाजवर्द को बहुत सा पानी डालके बैठालें यही तलछट सुरमाके काममें लावें ॥

माजून फिलासफा

काली मिरचें. दारफिलफिल. सोंठ. दारचीनी. आमला बहेडा. शैतरज हिंदी. ज़रावन्द मुदहरज. खुसियतुस्सालिब. चिलगोजेके बीज. बालूनेकीजड़. दरयाईनारियल प्रत्येक ३॥ माशे बाबूनेके बीज १७॥ माशे. मुनक्के १०५ माशे. दुगने शहद के किवाममें माजून बनावें और १ दिन पीछे खावें ॥

माजून नुजाह

काबिलीहडके छिलके. कालीहड़. बहेडेके छिलके छिलेहुए आमले प्रत्येक ३५ माशे. तुरबुद सफेद. बिसफायजड़ फ़ीसून. उस्तखुद्दूस प्रत्येक १७॥ माशे. कूटछानके दुगने शहद के किवाम में माजून बनावें ॥

लोहेकेमैलकीमाजून

कालीहड़-आमला-कालीमिरचें-सोंठ-दारफिलफिल-मोथा-शैतरज-बालछड़-प्रत्येक३५मासे-गंदने औरसोयेकेबीज प्रत्येक१४मासे-लोहेका-मैल धुलाहुआ-३५०मासे-कूटछानके रोग़नबादाम मिलाके शहदमें मिलावें फिरमुश्क७मासेमिला केचीनीकेबर्तनमेंरक्खें॥

लोहेकेमैलकेधोनेकी

रीति

मैलको १८दिन अंगूरकेसिरकेमें भिगोवें-औरमिट्टीउसमेंन गिरनेदें- फिरउसे सुखाके काममें लावें॥

माजूनलबूब

बादाम-अखरोट-हब्बुलकर्तम-हब्बुलखतम-हब्बेसुनोबर-हब्बेग़लग़ल-फ़िन्दक-पिस्ता-नारियलताज़ा-हब्बुलफिलफिल इनसबकी मींगी-खशखाशसफेद-दोनोतोदरी औरबहमनें-छिलेहुयेतिल-खरबूजे-जिरजीर-पियाज़-शलगम-रतवा-फिलफिल इनसबकेबीज-औरसोंठ-दारफिलफिल-कबाबा-तज-दारचीनी शकाकुल-कुलींजन सबकोबराबरलेके कूटछानके-तिगुनेशहदमें माजून बनावें॥

माजूनबुजूर

गाजर-शलगम-पियाज-मूली-छिलयून-रतव-बीज-हब्बसुनोबर-हब्बफिलफिल-व्यालतोदरी-पीलीतोदरीकेबीज-लिसानुलअसाफीर-शकाकुल-बहमन-चूबीदनामीठाकूट-सोंठ-दारफिलफिल-हींग-सबबराबरलेके शहदमेंबनावें और १०।।माशेताजेदूधके ।।

बिच्छूकीमाजून

जलाहुआबिच्छू १२।माशे-जिन्तयाना ४।माशे-सोंठ-३।।मासे-दारफिलफिल-कालीमिर्चे प्रत्येक ७ माशे-कालान्जन १२। -जुन्दबेदस्तर १४ माशे-कूटछानके शहदमें और १६ जौखावें-और लडकेको ८ जौदें ।।

बिच्छूकेजलानेकीरीति

मोटाशीशाकपडौतीकरके-बिच्छूको उसमेंछोडदें-करके गरम तनूर में एकरात उसे रक्खें-और सवेरे निकाले ।।

माजूनहजरुलयहूद

कद्दू-खीरे-ककडी और खरबूजेके बीजोंकी ११।।माशे-हजरुलयहूद असील १७५ माशे-कूटछानके शहद मिलावें-और ७ माशे से १०।।माशेतकखावें।।

माजूनकसीला

कसीला.आंवलीहड़-वहेडा-आमला-तुरबुद-सोंठ-बराबरलेके कूटछानके तिगुनेशहद मेंयाकंदके क़िवाममेंमि लाकेबनावें और सातमाशेखावें॥

सतबूस्व मुलय्यन

उन्नाव-लहसोडे-नीलोफर-खैरूके बीज-बनफ़शेऔर बाबूनेके फूल-अमलतासकागीरा-तुरंजबीन-रोग़नबादामप नीमें औटाके मलके छानके पिलावें॥

मुफ़र्रिहसग़ीर

गावजुवां-मूंगेकीजड़-धनियां-मोती-सफेदबहमनदुरु नके छिलके-कहरुवा-रेशम सफेद जलाहुआ-कुलफेकेबीज प्रतोले-कपूर ६माशे-कूटछानके-छडकेमुरब्बैके शीरे मेंसून बनावें और ७माशे खावें॥

मुफ़र्रिहदिलकुशा

मूंगेकीजड़-कहरुवा-कवाचूर-दरोनज-प्रत्येक२॥ माशे-कचियामद ४॥ माशे-काबिलीहड-औरपिस्ते औरतुरंजके छिलके-कच्चारेशम कटाहुआ-मोतीप्रत्येक७माशे-धनियां बंसलोचन-प्रत्येक१०॥माशे-दोनोंबहमनें प्रत्येक१७॥माशे-गावजुवां-शाहतरा-बालंगू-सबकोकूट छानके-अनार-चूका-औरज़रिशकका पानी प्रत्येक ३५माशेलेकर सफेद कन्द शर्बत

वनफ़शाप्रत्येक ४०५मासे मिलाके क़िवास बनावें - फिर डालके माजून बनावें ॥

मुलय्यनमुबारिक

अमलतास - इमली - कासनीकेपानीयाजोंके पानीमें पिलावें - औरथोड़ासाज़ोरोग़नबादम या रोग़नगुलेमिलालेंतो अतिलाभदायकहोगा ॥

मरहमबासलीकून

राल - मोम - ज़िफ़्त - चर्बीबराबरलेके - देवक ॥

मरहमरसुल

आबशीर - जंगार - गन्दाबिरोज़ा - मुरसक्की - ७मासे - कुन्दुर - ज़रावंद तवील - प्रत्येक १०॥मासे - १५॥मासे - उश्क़ २४॥मासे - गूगल - सफ़ेद मोम - रातीनज १४मासे - गूगलको सिरकेमें घोलके औरबाक़ी तेलमेंजो ६०८मासेहो पिघलाके सबको मिलाके ॥

चूनेकामरहम

चूनेकोपानीमें घोलें - फिर निथारके दूसरा इसीप्रकार ७बार करें - फिर सुखाके रोग़नगुल याति तेलमें मिलाके मुलतानी मिट्टीडालके मरहमबनावें ॥

मरहमकाफूर

सफैदेके मरहम मेंकपूर मिलादेनेसे बनजाताहै ॥

सिरकेकामरहम

मुर्दासंग१॥तोले पीसके २तोले अंगूरके सिरके औरदो तोलेजैतके पुराने तेल में डालके हल्की आगपर पकावें और घोंटते रहें कि मुरदासंगजमनेन पावे-जब वह जलके कालाहो जावे और मरहम का किवाम ठीकहोतो उसे निकालें ॥

मरहमसफैदा

रोगन गुल ४तोले-मोम एक तोले पिघलाके थोड़ा सा सफेदा मिलावें इतना किरोगन और मोमको उबालें-फिर अंडेकी सफेदी मिलावें-और कभी थोड़ासा कपूर भी मिलाले तेहैं ॥

दूसरी रीति इसकी यहहै-कि सफैदा और सफैदमोम रोगनगुल मिलाके मरहमबनालें ॥

मसूरकामरहम

मसूर-बाबूनेके फूल-नाखूना-खैरू-सबको पानीमें औटावें जब गाढाहोजावे तो अंडेकीजरदी और मुरगीकीचर्बी मि लाके मरहमबनावें ॥

मुरदासंगकामरहम

मुरदासंग-सफेदा-केसर-फिटकरीपीसके रोगनव दाममें मोम पिघलाके वह औषधें मिलावें ॥

कालामरहम

झैतकातेल १२१४ माशेलें ३ समें मुरदासंग २तोलेपीसके मिलावें और औटावें कि कालाहोजावे-फिरकुंदुर-दम्मुल अखवैन-इंजरूत-प्रत्येक ४माशे. पीसके मिलावें ॥

मरहमजंगार

इंजरूत-उशक प्रत्येक ६माशे-जंगारतोलाभर-सिरकेमें पीसके शहद मिलावें ॥

नोशदारू

गुलाबके फूल २१माशे-सौंदकूफी १९॥माशे-लौंग-मुस्तगी-तगर-बालछड़ प्रत्येक १०॥माशे-नरम्य-वसवासा-छोटी औरबड़ी इलायचीके दाने-जायफल-कंज-केसर-प्रत्येक ७माशे कूटछानके अलगरक्खें और ताज़े आमले दूधमेंतीन रात दिन भिगोवें और हररोज़ दूध बदल डालाकरे-फिर पानीसे धोके ताज़े पानी सें औटावें-जब भलीभांति गलजावें तोकपड़ेमें बांधके सारापानी निचोडडालें-और भलीभांति

पीसके उनमें से एक सेर भरले फिर दो सेर शहद याक़न्दके वि
वास में मिलाके पकावें फिरवह औषधें पिसीछनी हुई उसमें मिला
वें औरचीनीयाचांदीके वरतनमें रक्खें- और४० दिनतक रखछोड़े
फिर३॥माशेसे१०॥मं.तक खावें और इसकादोवर्षतक रहताहै.
जबतकनहीं विगड़ता॥

नकूहामिज़

वनफशेकेफूल१७॥माशे- इमली छिलीहुई ३५ माशेती
नफूलनीलोफ़रके- सातवड़े आलू- पीले आलू और उननाव मत्ये
क१५ पानीमें भिगोके छानके पिलावें॥

बनीहुईऔषधेंसमाप्तहुईं

औषधियोंकीकैफियत

—— ❦ ——

अब हम तुम्हें कैफियत उन औषधोंकी बतलाते हैं - जो इस पुस्तकमें बहुत काम आईहैं - परंतु तुम्हें इतना समझ लेना चाहियेकि औषधकी कैफियत वही औषधकी गरमी ठंड और तरी खुश्की हैं - हकीमोंने इन चारोंके चार दरजे ठहराये हैं ॥

जो थोडे पीने से कुछ न मालूम हो परंतु बार बार या अधिक खाने से गरमी ठंड आदि मालूम हो तो यह पहिला दरजाहै इसकी जगह हमने १ का अंक लिखाहै ॥

और जो असर मालूम हो परंतु मनुष्य के किसी काममें हानि न करें - वह दूसरा दरजाहै - उसकी जगह २ का अंक लिखा हैं ॥

और जो मनुष्यके कामों में हानि हो परंतु मार न डाले यह तीसरा दरजाहै - इसकी जगह ३ का अंक लिखाहै ॥

जो कामों में हानि हो और मारभी डाले तो चौथा दरजाहै इसकी जगह ४ का अंक लिखाहै ॥

और हर दरजेमें तीन २ रुतबे हैं - आदि - मध्यम अन्त. परंतु हर औषध में इन रुतबोंको जानना कठिन है - और जो औषधें बाहर लगाई जातीहैं - उनमें तो अत्यंत ही कठिन हैं ॥

तर औषधोंकी गरमी पहिले दरजे से नहीं बढ़ती क्योंकि

जोगरमी अधिक होजावेगी तो तरीजाती रहेगी- और यहसीध्या न रखनाचाहिये कि दरजे और रुतवे जो अपरलिखे गयेहैं उन में हकीमलोग आपससें कुछ अंतरभी रखतेहैं॥

हिन्दीवैद्योंने औषधोंके दोही दरजे ठहरायेहैं-पहिला स्थूल जिसमे पहिला और दूसरा दरजा आगया॥

और दूसरा महा जिसमें- तीसरा और चौथा दरजाआ जाताहै॥

इसके आगे गरमकी जगह (ग) और ठंडेकी जगह- (ठ) और तर कीजगह (त) और खुश्ककी जगह (ख) लिखाहै॥

पहिलेदरजेकीगरमऔषधें

चना-लादन-राख-चौडीजंगली-शाहतरा-सलुआ-इक्लीन-बावूना-तेंदुआ-कतंकेबीज-आदि॥

दूसरेदरजेकीगरम औषधें

कारफस-कुंदुर-मस्तगी-गर्बकीजड़-सफैद-औरकाली माजरीयून की जड़-बादरूज-जरावंद तवील और मुदहरज-आ इद-चिरायता-केसर-गनसल-सौया-विरंजासफ-नमक-फासियून-गंधक-सेलारस-शहदकेछतेकामैल-इसकाकास-विलसान-उटंगनकेबीज-सेपी-कुरफाउल-छिनार काअरसारा-दुन्द के पेडकीछाल-आदि॥

सान-ज़रावंद-ग्रिस्-शैलम-शाहदानज-चिरायता-कारसना-व
रस्व-मकड़ीकाजाला-जावशीरकादूध-आदि ॥

तीसरेदरजेकीखुश्कऔषधें

लहसन-अनीसून-इफ़ीमून-तगर-जलनार-हींग-च
ना-जूफा-तज-संद्‌दीनामकरवा-जामन-जायफल-सातर-बु
लूत-अकाक़िया-हुफसंतीन-अमल-साकरीयूनकीजड़-बिल
सान-नमक-हाशा-चूका-उतरूज-ज़रशीशआन-जतद्धवरी-
मूलीकातेल-जलाहुआकोड़ा-सरसा-वासीसुहाव-जलीहुई
फिटकरी-कलोंजी-जलेहुयेबाल-एलुआ-सिम्‌मक-फादा
निया-कैसूर-करोया-बच-सराकत्तरामशी-अजवायन-आदि

चौथेदरजेकीखुश्कऔषधें

राई-सुदाववर्री-गन्दना-अफ़रीवीयून-कुतरान-
अफ़ीम-धतूरकाफ़लआदि ॥

पहिलेदरजेकीतरऔषधें

रोग़नगुल-काहू-पालक-गावजवां-खुसयतुस्सालि
व-शफ़तालू-बनफ़्शेके पत्ते-चिरोंजी-इंनीरआदम-तोदरी-
सीसनेका उसारा ॥

दूसरेदरजेकीतर औषधें

कुल्फ़ा-लोनिया-तरबूज़-कद्दू-मिशमिश-अस्पगोल पलवल॥

अ, इ, उ,

अस्पग़ोल ~ ठ-२-त-२- पित्तोंकोठीककरताहैं।
अनीसून ~ ग-२-ख-२- कफ़कोठीककरताहैं।
सुलहटी ~ ग-२-ख-१- कफ़कोठीककरताहै।
इंजीर ~ ग-१-त-२- सौदाकोठीककरताहै।
इरफ़ाज़- ~ ग-१-ख-२-
इंज़रूत ~ ग-२ अंत-ख-२ आदिसें।
अक़ाकिया ~ ठ-२-ख-२ या-ठ-१ ख-२ रुधिरकेदस्तोंको लाभकरताहै॥
उस्तखुद्दूस ~ ग-१-ख-१- सौदाकाजुल्लाबहै।
इफसंतीन ~ ग-१-ख-२ पित्तोंकाजुल्लाबहै।
इज्जास ~ ठ-१-त-२ पित्तोंकाजुल्लाबहै।
इफ़ीसून ~ ग-२-ख-२ सौदाकाजुल्लाबहै।
आमला ~ ठ-२ ख-२ आदिसें-सौदाकाजुल्लाबहै।
इसफानारव अर्थात पालक ~ ठ-१-त-१ आदिमें-उलटीमें पित्तोंकोनिकालताहै
अवइल ~ ग-२-ख-२

बाविरंग- गर- खर अंतमें।
बारुज्जव- अर्थात गोहकीवीट- गर खर जोनामू (१७)

प.

परसियावशो अर्थात हंसराज- मोतदिल- गरव (१)

त.

तुरल्मकुशूस- ग.१ ख-२ सडेहुये कफको रगों से निकालता है

{ तुरल्मवानकोकहते है- इसकीजगहरु २लिखाहै }
तु-खरबूजा- ग१- तर सौदाको ठीक करताहै।
तु- मेरू- ग२- तर- सौदाकोठीककरताहै।
तु- सोया- ग३ अन्त खर आदि- उलटीमें कफको निकालताहै
तु- गाजा- ग-२- त-२
तु- मूली- ग२- खर उलटीमें कफको निकालताहै।
तुरुवुल- ग२ आदि- ख २ अंतमें कफकोजुल्लावहै।
तमर हिन्दी अर्थात इमली- ठ-१- ख-२ पितो काजुल्लाव है.

तुरनवीन- ग१- त१-
तम्बोल अर्थातपान- ग२- खर
तरबूज- ठ१ आदि- ग२ अंत (१७)

ज.च.

जुंदबेदस्तर अर्थात दरयाई कुत्तेका फोता- ग३ अंत ख-२

जौ-त१- खर आदि।

जलनार अर्थात गुलनार- ठर- खर आदिमे

जदवार अर्थात निरबिसी- गर- ख३ आदि में दिलका पुष्ट औ रप्रसन्नकरतीहै

जायफल- गर अंत- ख३ जिगरको पुष्टकरताहै।

जाफरान अर्थात केसर- गर- ख१

जूफासूखा गर- खर अंतमें

जंजबील अर्थात सोंठ- ग३- खर

जरम्बाद अर्थात नरकचूर- गर खर अंत- दिलको पुष्ट और प्रसन्नकरताहै

जाक- ग-३- ख२

जिफ़्त- ग- ख

जरीनज अर्थात हरताल- पीली- ग३- ख-३- और लाल ग४- ख४

{११}

चिनार- ठ- त

ह

हुजज अर्थात रसौत- गरमी और ठंडमें मोत दिल है ख२

हिलती अर्थात हींग ग४ आदि ख२ अंत

हब्बुलमुलूक दूधउसका ग३ ख३ और पते और दानेउस के- ग३ ख३ अंतमे

हब्बुलनील अर्थात कालादाना- ग३ ख३ कफ़का जुल्लाबहै।

हुरमुल अर्थात इसपंद- ग-३ ख.२ कफ़का जुल्लाबहै॥

हजरलाजवर्द- ग१ ख२ सौदाकाज़ुल्लावहै।
हजरअरमनी - ग२ ख२ सौदाकाज़ुल्लावहै।
हस्सासा- ग३- ख३ जिगरको पुष्टकरताहै।
हब्बविलसान- ग२- ख२- अन्तमें जिगरको पुष्टकरता
{है
हजरुलयहूद- ग१-ख२
हलैलाजर्द - ठ१ अंत- ख२ पित्तोंकाज़ुल्लावहै।
हलैलाकाविली- मोत दिल ठंड में- ख-१- सौदाकाज़ुल्ला
{वहै
हलैलाकाली- ठ१ मध्य-ख२ सौदाकाज़ुल्लावहै-हलै
लाहइकीकहतेहैं। (१३७

ख.

खुरफा अर्थात कुलफा- ठ-२-त-२- पित्तोंको ठीककर
{ताहै
ख्यारैन अर्थात खीरेककडीके बीज- ठ-२ त-२ पित्तोंको
{ठीककरताहै
खरबक अर्थात कुटकी- ग-२-ख२
खिश्त अर्थात ईंट- ग२- ख४
ख्यारशूम्बर अर्थात अमलतास- ग१त-१
खिसकदानाअर्थातकड़- ग-२ ख१ अंत में कफ़काज़ुल्ल
{वहै
खैरू- त-ठ-
खिसक अर्थात गोखरू - ग-ख- या-ठ-ख- या मोतदि
{ल॥

खूबकला- ग- त- (१)

द.

दरूमुल अखवैन- ठ२ खं २
दमाग़जानवरोंका- ठ- त- भेजेकोपुष्टकरताहै
दुर्राज अर्थात तीतर- ग- ख१ भेजेको पुष्टकरताहै
दरोनज- ग२ ख२ दिलको पुष्ट और प्रसन्नकरतीहै (४)

र.

रैहां (तुलसीयानाज़्बो) ग१- ख२
रेत- ख- २
रोग़नकेसर- ग- २- ख- १ भेजेको पुष्टकरताहै
रैवास- ठ२ ख२ दिलको पुष्ट और प्रसन्नकरताहै
रोग़नज़र्द (घी) ग- १ त- १ अंतमें पुराने में खुश्की आजातीहै (५)

स.

सुम्बुलुततीब (बालछड़) ग२ ख- २ अंत- कफकोतीकार {तीहै
सिपिस्तां (लहसोड़ा) मोतदिल गरमी और ठंडमें- त- १ सौदाको (टीकाकरताहै।
सबूस (भूसी) ग१- ख१
सिरका- ठ२- ख२
सुरंजान- ग२- ख२
सोद (मोथा) ग२- ख२

सक़ामूनियाँ-ग-२-ख२अंत-पित्तोंकाजुल्लाबहै।

सनायमक्की- ग२ अंत-ख१सौदाकाजुल्लाबहै।

सुद्दाब-ग-२- ख२

सलीखा (तज) ग-२-ख-२-भत्त= जिगरको पुष्ट करती है

साजिज (तेजपात) ग२-ख२मेदेको पुष्टकरताहै।

सफाल-ख४-ग१-

सरेश-ग२- ख२

सरतां- (केंकडा) ठ-२-त२

संगयशम-त२- ख२

सरो-ग१-ख२

सल्खड़ेया (केंचली) ग२-ख२ अंत

सन्दल- सफ़ेद और पीला-त२-ख२ और लाल ठ२-ख२ पित्तों कोटीकाकरताहै।

सिन्न-(एलुआ) ग-ख

सातर- ग२-ख२ अंत

समग़ (बबूलकागोंद) ग-ख२

सावन ग-२-ख२

वंसलोचन- ठ-२-ख२- दिलको पुष्ट और प्रसन्न करता है {२३}

श.

शूनीज़ (कलौंजी) ग२-ख२

शिब (फिटकरी) ग२-ख२

शाहतरा-ग- ख-२

शफाई-गर-खर
शीरखिश्त-ग१ अंत और मोत दिल-त-ख
शहमेलकायन-ग४-खर कफाको गुल्लावहे
शकर-ग१-त१ अंतमें और पुरानी-ख
शीरभेड़-ग-त भेजेको पुष्टकरताहै
शकाकुल-ग-१-त-२- दिल को पुष्ट और प्रसन्न करता है

शादना-ठ-१ अंत-खर

ग.

गारीकून-ग१-खरकफ़काजुल्लाबहै
गालिया-ग-खभेजेको पुष्टकरताहै
गाफिस-ग१-ख२ जिगरको पुष्टकरताहै
गावजवां-ग१-खसौदाको ठीक करतीहै
गुलखुनफशा-ठ१-त१
गुलाब-ठयाग
गुलाबके फूल-ठ१-खर भेजेको पुष्टकरताहै
गज़मानिज (माऊ) ठ१खर
गावरस (वाजरा) ठ१-खर
गुलनीलोफ़र-ठ१-तर
गिलमख़तूम-ठ-२-ख-२ दिल को पुष्ट और प्रसन्न करती है
गिलसुल्तानी-ग-ख

फ.

फिरंजमुश्क (रामतुलसी) ग२-ख२ दिलको पुष्ट औरप्रसन्न (करतीहै

फंदानिया -गरम- दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरतीहै

फ़रफ़ियून- ग३-ख३

फिंजन किशत (संभालू) ग२-ख२

क.

क़ाक़ला (इलायची) वडी ग१-ख२-छोटी-ग२-ख२कफ (कोटीकाकरतीहै।

क़रनफ़ल (लोंग) ग३-ख३

कुस्त (कूट) ग३- ख३

क़लक़तार- ग३-ख३

कान्तूरीयून-वडी-ग२ अंत- ख३-छोटीग२-ख२कफकोगुल (र वहै

43 क़ाशरउतरुज (छिलके विजोडेके) ग१-ख२ दिलकोपुष्टऔर (प्रसन्नकरतीहै

84 कुसाउल हिमार- झुल्लावकी औषधहै

कागीला- ग२-ख२

कासनी-त२-ख२ पित्तोंकोटीकाकरतीहै

किशनीज़-(धनिया) त२-ख२पित्तो कोटीकाकरतीहै

काहू-त३- ख३ अंत पित्तोंकोटींकरताहै

कमून (ज़ीरा) ग२-ख३कफ़कोटीकाकरतीहै

काफूर- ग१-ख१

कुन्दुरा-ग२-ख२ अन्त

काहू-ठ२-त२

काविचन-ठ२-ख२

कवावा-ग२-ख२

कहरुवा-मोतदिल गरमी और ठण्ड में-ख-दिलको पुष्टऔ
रप्रसन्नकरतीहै (२०)

कास्व-ग१-ख२

करोया.ग२-ख२ मेदेको पुष्टकरताहै

ल.

लवलाव-ठ२-ख२ पितोंकाजुल्लावहै

लोबिया-लाल-ग१ अंत-त२ मोरो

लोवियासपेद-मोतदिल गरमी औरठंडमें

लाख-ग२ ख२-या-ग१-ख२

लागिया-ग-४-ख४

लोवतवरवरी-ग२-ख२

म.

मामीरा-ग२-ख२ अंत

मुनक्का-ग२-त१ कफकोढीककरतीहै

मुश्क-ग२-ख२ ×

मुर-ग२ अन्त-ख२ अन्त

मारजनजूरा-(दोनागरुवा) ग२ अन्त-ख१

माहीज़हरज-ग२-ख२ कफकाजुल्लावहै-इसमेंसंखालवांप
लातीहै॥

मस्तगी- ग२- ख२ अंत

मिलह निफ़्ती-(नमकदुर्गंधवाला) ग३-ख३काफ़औरसौद (कोनिकालताहै

मोम- ग२ आदिमें

मोती-ठ२- ख२ अन्त-दिल और भेजेको पुष्ट और प्रसन्न कर (तेहैं

मुर्ग़ी-ग१अंत- मोतदिलतरोमें भेजेको पुष्टकरताहै

मिशक़तरामशी (पहाडीपोदीना) ग२ अन्त- मेदेको पुष्टक (रताहै

मुरदासंग- ग३ - ख३ विषहै- ऊपर लगाने से अच्छा मांसउ (त्पन्नहोता

न-

नमक- ग२-ख३

नानक़ुलाग़ (खुब्बाज़ी) ट१-त१

नानख्वाह-(अजवायन) ग३-ख३ आदि में

नारंज-पीले छिलके और फूलउसके- ग२-ख२

नारंजकी खटाई-ठ२ अन्त ख१

नारंजके छिलके और बीज- ग-२-ख-२ भेजेको पुष्ट कर (तेहै

नारदीन- ग२-ख२ जिगरको पुष्ट करताहै।

नौसादर-ग३- ख३ भोजन को पचाताहै-और मेदे और आंतोंसे सवाद निकालताहै।

व.

वरक़ चांदीके- ठ-१- ख१- दिलको पुष्ट और प्रसन्न कर(तेहै

वरक़ सोनेके- मोत दिल और गर्मी भी रखतेहैं- दिलकोपुष्ट औरप्रसन्नकरतेहैं।

य.

याकूत- मोत दिल गर्मी और ठंडमें-ख२- दिलकोपुष्टऔर प्रसन्नकरताहै।

इतिसम्पूर्णम्

दवादेनेकाबर्णन

—※—

रोगीके हाल रुतु और शरीरके स्थानके अनुसार औष
धदेनी चाहिये- और जो वस्तु भोजन में खानेके योग्य हों उन्हें
भोजन में खानाचाहिये - और जोदवा की तरह पर खाने पीने
और लगाने के लिये हो उन्हें उसी प्रकार से काम
यैं अर्थात जो औषध खाने कीहो- उसको लगाने से कुछला
नहोगा ॥

वह औषधें जो रुधिरके बिगाड़कोदोर

करें ॥

चाहै वह बिगाड़ केवल रुधिरमेंहो-या किसी औरर
सके मिलने सेहो ॥

रुधिरके औटनेकोरोकनेवालीऔषधें

कासनी औरकाहूके बीज- धनियां गुलाबके फू
लकारस- सिकंजबीन- उन्नाव चन्दन और केवडेका श

गाढ़ रुधिरको पतलाकरनेवाली औषधें

आलूबुखारेका पानी- सौंफका शर्बत- शाहतरेव
सिकंजबीन- माउलअस्ल ॥

पतले रुधिरको गाढ़ा करनेवाली औषधें

विल्लीलोटन - रेहांके बीज - इंसराज - काविलीहड - औ रवाकी औषधें रुधिरकी ठीक करने वाली यहहैं - बिर्मैंडडी - आ बनूस और शीशम की लकड़ी - नीमके फूल और पत्ते - नीलोफर और बनफ़शेके फूल - गाजरका शर्बत - मुन्डी - मेंहदी - कचनाल नीलकंठी ॥

पित्तोंकी ठीककरनेवाली औषधें

ईसबगोल - बीदाना - कुलफा - कासनी - खीरेककड़ी केबीज - धनियां - सफ़ैदचन्दन - कपूर - काहूके बीज - बनफ़शे गावज़बां नीलोफर और चन्दनका शर्बत - कुर्सकाफूर - कुर्सतबाशी रसुलख्यन - कुर्सतबाशीर काबिज़ ॥

कफ़की ठीककरनेवाली औषधें

सौंफ - अनीसून - छिलीहुई मुलहटी - ज़ीरा - दारचीनी - सु नबके - बालछड़ - रेवंद - खुल्जानी - इलायची - बिरंजासफ़ - म जून सीर - माजून फ़िलासफ़ा - सोंठकी माजून - जवारिश जालीनूस ॥ (१५)

सौदाकी ठीककरनेवाली औषधें

लहसोड़ा - गावज़बां - खरबूज़ेके बीज - मुलहटी - इंजीर मुनक्के - इफ़तीमून - कनौचेके बीज - सिकंजबीन - इफ़तीमून माजून मुफ़रह याकूतीवू अली - नोशदारू - मुफ़र्रह दिलकुशा शर्बत बालंगू - शर्बत गावज़बां ॥ (१५)

गाढ़ेमवादको पतलाकरनेवाली औषधें

अवहल-इसकील-चूका-सिरका-उस्तखुद्दूस-हुब्ब बिलसान-उर्कहवान-इजीर-जुन्दवेदस्तर-राई-करतम लहसन-सरकंडेकीजड़-संभालू-बावूना-दारचीनी-सोय जादा-वज-सूरबाजूफा-कूट-सातर-पोदीना-ज़रावन्द-अजवायन-उटंगन-शोरा-शकरकारा सिकावीनज-सुदाव-नम्मा म-ईरसा-हुर्मुल-हुर्फ़-मशकत्तरामशी-बिल्लीलोटन-क़रदमाना-कमाज़रीयूस ॥

सुझिशें.

वह औषधेंहैं-जो विगड़ेहुये सवादको पकावे निकालनेके योग्य करदें-अर्थात पतलेको गाढ़ाकरें-जैसेखशखाश और काहूकेबीज-या गाढ़ेको पतलाकरें-जैसे सूरवेज़ूफ़ा और हाशाकाजुशांदा-याकडे औरजमेहुयेकोनरमकरें-जैसे अलसी और मेथीकेलेपसेकाफ़ा और सौदाकी सूजननरम होजातीहै ॥

पित्तोंकीसुझिशें.

उन्नाव-गुलाबकेफूल-जनफशे और नीलोफरकेफूल-शाहतरा-कासनीकेबीज औरजड़-मकोह-सिकंजवीन-तुरंजबीन-लालशकर-शर्वत आलू-गुलकान्द आफतावी ॥

कफकीसुझिशें.

मुनक्के-खेरूकेबीज-सौंफ़-अनीसून-मुलहटी-

हंसरान-शक़ाई- पीलाइंजीर-गुलाब के फूल- गुलकन्द-सिकंजबीन॥

सौदाकीमुंजिशें

लहसोड़ा-उन्नाव-गावजवां-बिल्लीलोटन-छिलीड़ई-मुलहटी-हंसराज-उस्तखुद्दूस-शाहतरा-शक़ाई-बादावर्द-सौंफ़-तुरंजबीन-गुलकन्द॥

जुल्लाबोंकीऔषधें

यह औषधें बुरे मवादको पैखाने से निकालदेतीहैं

पित्तोंकेजुल्लाब.

इमली-आलूबुखारा-तुरंजबीन-शीरखिश्त-सनायके पत्ते-पीलीहड़-बनफ़शे और गुलाबके फूल-खुर्फ़सकेबीज अमलतास-इफ़संतीन-सक़मूनियां-शाहतरा-सलुआ-ल्हबलाब-शिबरम-माज़रीयून॥

कफ़केजुल्लाब.

बकायन-कन्तूरीयून-माहीज़हरज-गारीकून-कालादाना-तुर्बुदहसुर्ल-रिवसकादाना-बिसफायज-कलोंजी-शक़ाई-सीगीसुरंजान-रेवन्दचीनी-सोंठ-सूराल-बेदइंजीरकेबीजोंकी गिरी और तेल-अमलतास-हब्बअयारिज़-हब्बुसलातीन-फ़रफ़ियून-माहूदाना-कुसा उलहिमार॥

सोदाकेजुल्लाब

इफ़तीमून-उस्त खुद्दूस-चिल्लीलोटन-आमला-ल जवर्द-हज्र अर्मनी-काविलीहड़-कालीहड़-सनामक्की-कुशूस-विसफायज-गारीकून-कालादाना-अयारिज फ़ीकरा-रेवन्दखताई ॥

मूत्रलानेवालीओषधें

यह ओषधें पतले और बुरे मवादको मूत्र में निकालतीहैं ॥

ठंढी.

खीरे ककड़ी और कुल्फेकेबीज-खैरूके फूल-खारखिसक-कद्दूककड़ी और तरबूज़कापानी-खरबूजे औरचिरचिरेकेबीज-अलसीकेबीज-आशजो-कासनीकापानी औरबीज औरजड़ काकनज-नीबूका अर्क मिलाहुआ-शोरा-सिकंजबीन ॥

गरम

करफसकेबीज-सौंफ़-अनीसून-त्रिंजासफ़-सूखाजूफा-कबावा-अजवायन-सुहागा-गाजरकेबीज-हंसराज-बालछड़-अमलतास-मीठाकूट-केसर-तज-तगर-अदविलसान-उवहल-कद्दूकेबीजोंकी मींगी-कलोंजी-पोदीना-खुब्बाजी-चनोंकापानी ॥

मोतदिल.

इंगराज-खरबूजेके बीज-गरम और ठंडी औषधको मिलाके पीना॥

हैज़बहाने वाली औषधें

तज-कलौंजी-अवहुल-हुरसुल-जुन्दबेदस्तर-वावि डंग-बिरंजासफ़-कर्दमाना-बाबूना-सीराकूट-कबाबचीनी इंसराज-फरासीयून-अंद-फादानियां-जिन्तियाना-अजवा यन-जावशीर-जादा-सुद्दाब-केसर-तगर-नम्माम-सूख सूफ़ा-करफस-दोनासरुवा-कमाज़रीयूस-चुन-मशक तरामशी-चनोंका पानी-अमलतासके छिलके-मोथा तुरमुस॥

वीर्यनिकालनेवालीऔषधें

करफस-इफसंतीन-सौंफ़-तुर्मुस-दरमनातुरकी सुद्दाब॥

उलटीलानेवालीऔषधें

{जो मेदे और उसके आसपास सेमवादकेउल्टीमेनिकालतीहैं}

मूली-सोये-कडुबेबादाम का पानी और बीज-खरबू जेकीगड-बिनीछिलीमुलहटी-शहद-सिकंजबीन-लालश कर-नमक-गरमपानी-अरजोरके बीज-कुन्दुश-सनीज़ज साउलअस्ल-भेडकादूध-माज़रीयूनके बीज-लाललोबिया अशतरग़ार॥

उलटीलानेवालीपुष्टऔषधें

कुटकी-राई-जौंजुलकौ-कंकारज़द-ज़िविलहक़॥

भेजेकीपुष्टकरनेवालीऔषधें

(ठंढीऔरतर)

मोती-आमला-विहीसेब और अमरूदके ताज़े फूल गुलाब और गुलाबके फूल-नारंज॥

गरम

वलादुर-फिन्दक़-बिल्लीलोटन-सोंठ-सोया-वालछड़-मुश्क-उद-अम्बर-गालिया-लौंग-कुन्दुर-रोग़न अनहर-जानवरोंके भेजे-मुर्ग़ी-तीतर-भेड़कादूध॥

× औरबाक़ी यह हैं-इड़का मुरब्बा-सेब-बिही-अमरूद-नाशपाती-फिरंजमुश्क-जायफल-केसर-उस्त खुद्दूस-चमेली-कद्दू और कद्दूके बीज-सफेद चन्दन-बादाम-कवा-शर्वतनरंज॥

दिलकीपुष्टऔरप्रसन्नकरनेवालीऔ०

(ठंढी)

अमरूद-नाशपाती-अनार-आमला-इमली-सेव-चंदन-वंसलोचन गिलेमख्तूम-रैवास-बुसुद-कहरुवा-कपूर-गावज़वां-धनियां-गुलावकेफूल-मोती-नीलोफर-

हड़-याकूत-चांदीकेवर्क ॥

(गरम)

सोनेकेवर्क-उतरुजकेछिलके-उस्तखुद्दूस-रेशम-यह्मनें-बिसफायज-बिल्लीलोटन-बादरूज-जदवार-दारचीनी-नरकचूर-दरोनज-केसर-सुम्बुल-मोथा-तज-शकाकुल-अदरकी-अम्बर-फिरंजमुशक-फादानियां-इलायची-लाजवरद-नाना ॥

बाकीयहहैं-छडीला-इज़फारुत्तीब-आलू-धनियां-मूंगा-मूंगेकीजड़-नीलोफर-बज़रुलहुम्मास-पान-हड़-सोसन-जद-अम्बर-याकूत-फिरंजमुश्क-मुश्क॥

जिगरकीपुष्टकरनेवालीऔषधें

(सर्दी)

कासनी-नरिश्क-अनार-और अनकेपत्ती-लुआब-ईसब-गोल-शर्बतसन्दल-सिकंजबीन॥

(गरम)

छडीला-इज़फारुत्तीब-जायफल-हम्मामा-इज्वीलसान-दारचीनी-माफिस-लौंग-तज-कुरूस-रूमीमस्तगी-नारदीन-सौंफ-कर्फसकेबीज-गुलकन्द असली-असारानिया-दवाउलकरबास ॥

औरबाकीयहहैं-इज़रखीन-नरकचूर-सोया

कौनज- तगर- इलायची- पिस्ते- ज़रावंद- बिल्लीलोटन-सुन
-गुलाबके फूल- निशास्ता- मेहकाशानी- अदहिन्दी ॥

मेदेकी पुष्टकरनेवाली औषधें

(ठंडी)

आमला- अनारदाना- सिमाक़- बहेड़ा-
- बिहीदाना- बंसलोचन- गुलाबके फूल ॥

(गरम)

सरकंडेकीनड़- तुरंजके छिलके- बिल्लीलोटन-
- दारचीनी- नरकचूर- सोया- तज- तेजपात- लौंग-
- कुन्दुर- करोया- रूमीमस्तगी- मशकतरामशी
- अदरकी ॥
बाकीयहहैं- कचचेआलू- जामन- तगर- गोलमि
रच- ऊंटिनीकादूध- छडीला- कचनाल- पोदीना- अदहिन्दी
संगदान मुर्ग़- दही- हुम्मासा ॥

जिगरकोहानिकारकऔषधें

ठंढापानी- नारंगी- छुआरा- इंजीरतर- इंजीर
- सिरका- नितरबाना- जाडेकाशहद- कालीहड
- हब्बुलवान- दारशीशआन ॥

मेदेकी हानिकारक औषधें

तिली-मसूर-माउश्शईर-हालमकोबीज-मीठेआलू उन्नाव-अलसीकेबीज-गुअसफरकोफूल-अदरक-बौरक इंजीर-साफ़सिया-जादा-हसरम-हम्मामा-पुरानापनीर-गरमपानी -गौकाघी-मिठाई॥

मेदेकीढीलाकरनेवालीऔषधें

हब्बुलबान-हजरअर्मनी-पेठेकेबीज-सज्जी-लोबियेकासाग-नारियलकादूध॥

भेजेकीहानिकारकऔर पीडाउत्पन्न करनेवाली

इज़्फारुत्तीबकीधूनी-वज़रुलबनज-कुन्दुर-गंदना-सोया-लहसन-पियाज़-गेरूकेफूलसूंघना-मसूर-मेथी-अलसीकेबीज-बैंगन-मूली-खूबकलां-ज़्तुरंज-तूत-इफसंतीन-पालक-संभालू-सरकंडेकीजड-तदर्व-कुलूत-जादा-सुलूर-जायफल-लुबान-पैवन्दमरियम-हींग-खशखाश-इज्ज़ार अस्तरंगार-काविलीहड़-तम्बाकू-सरशफ॥

पेटकीनरमकरनेवालीऔषधें

मूली-पालक-करम्ब-बिनौला-चुकन्दर-गन्नेका

रस. शाहदंकाफ़ समेत-शफ़तालू- सिरका अंसिली. हव्वुस्सम ना-चुल्फ़े और वथुयेका साग- भेड़काट्ध-बकरीकाटूध मक्खनबहुत खाना-तरी-सौंफ़-जड़-सना-इमली-गुल्लाब तुरंजवीन-सौंफकीजड़ और अर्क़-गुलकान्द ॥

पेटबन्दकरनेवाली औषधें

बकरी और भेड़का कलेजा भुनाहुआ-भुनाहुआबा कला-अंगबारकी जड़-जौकासत्तू-कल्लेपाये भुनेहुये-काब लोल-ज़ीरा-सिमाक-रेहांकेबीज-ईसबगोल-कनोचा-बार तंग-बेलगिरी-हव्वुलआस-इलायची-सौंफ़-अनीसून-निश स्ता-गिलेअर्मनी-ज़हरमुहरा ॥

सुद्दा और बायदूरकरनेवाली औषधें

सरकन्डेकीजड़-शाहतरा-ग़ारीकून-सौंफ़-अफीम-तुफसंतीन-सातर-बसर्बसा-संभालू-नानख़ीर-करफ़स-उस्त खुद्दूस-कुफतीसून-जिन्तियाना-औराकिरमानी-ईरसा-अज वायन-हालों-गाजरकेबीज-सोंठ-दारफिलफिल-सुहाव-दारचीनी-केसर-दोनामरुवा-जरावन्द-कवाबचीनी-कुष्ट राईस्पंद-अनीसून-अद-तुरमुस-हाशा-सलारस-कंतूरीयून करसना ॥

कब्ज़करनेवाली औषधें

तुरंजके छिलके- संगदानमुर्गी...
पिस्तेके वाहरके छिलके- ज़रिश्क-हब्बुलआस...
सलोचन- दम्मुल अखवैन- गुलनार- बुसुद- अखरो...
का-मसूर- बारतंग- सरकन्डेकीजड़- सरोंके फल- जामुन...
आमकी गुठली की मींगी- मस्तगी- चना- चांवल- माई- माजू-
कुंदुर- तीनअखतूस-ईसबगोल भुनाहुआ- सोनेकेवर्क-अम
रूद- कहरुवा- रैहांकेबीज- निशास्ता- ग़ारूं-गावरस-नार
दीन- कुनारकी गुठलीकी मींगी॥

नींदलानेवालीऔषधें

खशखाश और पोस्तका वरेडा- खशखाशके फूल सू
घना- सोया सिरहाने रखना- केसर- सुअंसफरके फूल- कलप
शेके फूल- हराधनियां- आशगो- वादामका शीरा- औररोगन-
रोगनगुल- रोगननीलोफ़र- हाथपांवमलना- पानीकी आवाज़
गाना- हवासे पत्तोंके हिलनेकी आवाज़- काहूका साग- कद्दूकी
मिंगी सोतेहुये आदमीके मुंहपर छिड़कना- अफीम- तुख़्म-
हस्मामा- वाबूना॥

नींदखोनेवालीऔषधें

पोदीना- सिरका- राई- लोंग- सिरऔरमाथे औरका
नपटीपरलगाना- गोलमिरचें मुश्कनमक सिरकाकपूर और
गुलावके फूल सूंघना- अयारिजफ़ीकरा सेकुल्लीकरना- फ़ा
ख़्ताया विमगादड़कीवीट सिरपर वांधना- चायऔरकुनपीन

पीसके मांने की मलाई से लगाना - चंद्रमाकी ओरदेखना - सिरका ॥

वह औषधें जोमवाद को आंखपरन गिरनेदें ॥

तरबूजके छिलके - काफुर - कारनुलइक्लदकीक - आबनूस - बंगसल्लबनज - केसरइस्त्रीकेदूधमें मिलीहुई - वरकशा - खलखाब - छालियां - तिग्याकफारूका - इजरूत - मकोइ - खिरी - मसूर - बादरूज - सफेदसंदल - बकायन - फिसकगरबेरद - अकाकिया - जो - सिमाक - अमरूद - बुर्दद - तूतियाखोत - कुरान ॥

दृष्टिकीहानिकारक

खारीभोजन - गरमपानी सिरपरडालना - सूरजकोदेखना - वैरी अर्थात्शत्रुकोदेखाकरना - मसूर - कुलफा - चूका - खसखस - काहू - चिरचिरा - गन्दना - विषयकी अधिकता - धूपमें और आगके पासबैठना - चमकीलीवस्तुदेखना ॥

विषयकीचाहना को पुष्टकरनेवाली औषधें।

खकार्दयो, खीकाउचपा - मुर्गी - तीतर - ख्च्छली - अण्डे - चिड़िया - सलगम - गाजर - मूली - प्याज - गोश्त ॥

-गाय और भेड़ का दूध- गायकाघी- खीर- छुना।
-फिन्दक़- हब्बुलसमना- पिस्त- चिलगोज़ा- सालव-
- कुलीजन- बूज़ीदान- गोखरू- बहमन- तोदरी-
तिली- हाली- चिरचिरेकेबीज- केवांचकेबीजोंकी मिंगी-
-मूसलीअकरकरा- मस्तगी- गांदनेकेबीज-
-ज़ार पिल फ़िल- खशखाश सफैद- सोंठ- उशना- तगर- च
-वाकली- इन्द्रजौ- लौंहेकामैल- रेगमाही- माहीरोबि
-माही सक्नकूर- मुश्क- मोती- चिड़ियां और अन्डे उसके
अगर- जरफस- बसबासा- कतीरा- अखरोट- पनीर- सायीसा
-जिरजीर- हब्बुल्ज़लम- हींग- सुरंजान- फ़िस्तक- तज-
-भेडके बचचे का भेजा- हिलयूलकेबीज- लोबिया- ना
गिरी- इंजीर॥

कीचाहना की खोनेवाली और हा

निवारक औषधें

फिरंजमुश्क- कासनी- कॉहू- उन्नाब- ईरसा-
-सडोडफली- धनियां- मकोह- कचचालहसन-
-कालीखशखाश- कपूर- पानी
पीछे पानी पीना- खटाई- इमली- आलूबुखारा-
-काम तोड़ने वाली वस्तु- चूका- बकलाय मानि
॥

पीसके मांने की सलाई से लगाना-चंद्रमाकी ओरदेखना-सिरका॥

वह औषधें जोसवाद को आंख परसे गिरादें॥

तरबूजके छिलके-कुन्दुर-कारसुलईबलदकीक-शाबनूस-कंजरालखनज-केसरइस्त्रीकेदूधमें मिलीहुई-कफ़शा-दम्लवाब-छालियां-तिग्यािकफारसूवा-इजरूत-मकोइ-मिट्टी-मसूर-बादरूज-सफेदसंदल-बकायन-फितफ़जरबेरद-अकाकिया-जौ-सिमाक-अमरूद-बुरुंद-तूतियारसौत-कुतरान॥

दृष्टिकीहानिकारक

खारीभोजन-गरम पानी सिरपरडालना-सूरजकोदेखना-वैरी अर्थात शत्रुकोदेखाकरना-मसूर-कुलथा-चूवारम्ब-काहु-चिरचिरा-गन्दना-विषयकी अधिकता-धूपमें और आगके पास बैठना-चमकीलीवस्तुदेखना॥

विषयकीचाहनाको पुष्टकरनेवाली औषधें।

एकवर्षकाक-उरीकान-चचा-मुर्गी-तीतर-रंच्छली-बत्ते-चिड़िया-मछली-गाजर-मूली-प्याज-औरलन-

लिंगकोबढ़ानेवालीओषधें

फैंचुये- अकारकरा-सफेदकनेरकीजड़कीछाल-घोड़ेके सुम-लौंग-जायफल-दारचीनी-केसर-रोगनगैतचितमल्ला-कफेसके पानीसेकईवारधोना-बकरीके घीसेकईवार चिकनाना-केंचुये औरजोंक सूखेहुये सोसनके तेलमें पीसकेमलना॥

भगकोतंगकरनेवालीओषधें

बकायन और अनारकी छाल-मौलसिरीकीछाल-कोपोसके कपड़ेमें लगाके रखना-माजूफल-औरकपूर और शहद मिलाके भगमें लगाना-बबूल-इसफंन-कालीतिली-गोरवरू-इमलीकेबीज-बीरबहुटी॥

नीचे लिखीहुई ओषधों सेबच्चाजल्दीजनाजाताहै.

गूगल-नत्र-गुलनार-बकायनकीछाल-नीलोफरकीजड़-मोथा-वारतंग और मकोहका उसारा-कालीखरवामलवाना-चुम्बक पत्थरका बड़ाटुकड़ा उलटे हाथमें पकड़ना-सुदसीधी जांघपर बांधना-दारचीनी-खाना-तिलीकातेल गलसीके लुआबमें मिलाके भगमें लगाना॥

...यें उत्पन्नकरनेवालीऔषधें

गन्दनेकेबीज- शकाकुल- मीठासुरंजान- काड़को ...जोंकीसींगी- पियाज- गौकोदूध- कटनीकादूधबूरा मिल... हुआ- बतख- मुर्ग- हब्बुल्खलस- बूलीदान- बहमन- बादा... म- पिस्ता- शलजम- छालो- चना- इन्द्रजौ- सुरास- नारिय... ल- तोदरी- अलसीकेबीज- छडीला- तुरंजबीन- सोंठ- मुश्क... केसूर॥

बिषयकरनेमें अधिकठहरानेवाली औषधें.

अफ़ीम- जायफल- बीरबहुटी- गूगल- धतूरेकेबी... ज- औरपत्ते- खुरासानी अजवायन- लोंग- कालीमिरच- बस... बासा- केसर- मस्तगी- दारचीनी- सोंठ- कापूर- मुश्क- अकर... करा- बबूलकेफूल- गोमाके बीज- गिलोकासत॥

बिषयकरनेमेंमज़ादेनेवालीऔषधें

लोंग- दारचीनी- कबाबा- अकरकरा- मबोजनकुच... लकेऔर सोंठशहद से भिगोकेथूकके साथ लिंगपर मलकेबि... षयकरना। सिरकेबाल पीसके चमेलीके तेलमें मिलाके लिं... परमलके विषयकरना- बीरबहुटी- पारा- केसर- कापूर- कबूतरकीबीट॥

लिंगकोबढ़ानेवाली औषधें

कैंचुये- अकरकरा- सफ़ेद कनेर कीजड़ कीछाल घोडेके सुम- लौंग- जायफल- दारचीनी- केसर- रोग़नगैतनि तमलना- कफ़सके पानी सेकई वार धोना- बकरीके घीसेकई वार चिकनाना- केंचुये औरजोंक सूखेहुये सौसन के तेलमें पीसकेमलना ॥

भगकीतंगकरनेवाली औषधें

बकायन और अनारकी छाल- मौलसिरीकीछाल कोपीसके कपडेमें लगाके रखना- माजूफल- औरकपूर और शहद मिलाके भगमें लगाना- बबूल- इसफ़ंज- कालीतिली गोखरू- इमलीकेबीज- बीरबहुटी ॥

नीचेलिखीहुई औषधोंसेबच्चाजल्दी जनाजाताहै-

गूगल- तज- गुलनार- बकायनकीछाल- नीलोफ़र कीजड़ - मौया- वारतंग और मकोहका उसारा- काबीरखरवा मलगाना- चुम्बक पत्थरका बडाटुकड़ा उलटेहाथमेंपकडना बुसुदसीधी जांघपर बांधना- दारचीनी- खाना- तिलीका तेल मलसीके लुआबमें मिलाके भगमेंलगाना ॥

मरेहुयेबच्चेकोनिकालनेवालीओ०

ज़रावन्द- अवहल- अलसी- तज- गोलमिरच- वूज़ीदान- हंसराज- कालीकुटकी- कालाज़ीरा- माजूपीसके पीना- कलौंजी- हरीमहंदीकीछाल- बांसके पत्ते ओटाकेपीना- पीपलामूलओरकालीकुठकी पीसके विरोज़ा मिलाके टूंडीपर लेपकरना- पिसाहुआ जुन्दुशशहद से मिलाकेटूंडी यापेडू परलेपकरना॥

मशीमाकीनिकालनेवालीओ०

हंसराज- करम्बकेबीज- कबूतरकीबीट- तज- कलौंजी- बिरंजासफ़- जुन्दवेदस्तर- ईरसा- पिसाहुआ अवहलरहमसें टपकाना- ओर पीना- बावूना- हव्वुलकाली॥

मसाने ओरगुरदेकी पथरीकीतोड़ने वालीओषधें.

तगर- बिरंजासफ़- समग़ आलू- खरबूज़ेके बीज- गोखरू- हंसराज- सौंफ़- कालेचने- इजरुल यहूद- संगसरमही- हव्वुल किल्त- कडुवाबादाम- सोया- सिकबीनज- बिच्छूकीराख॥

सूजनकीटपकानेवालीऔषधें

कामाज़रीयूस- गाज-हाशा-ज़रावन्द-नाखूना
वन-खस्तूहरा-हज़ार जिशान-जादा-जावशीर-उशक़हस
राज-जंगली पियाज़-वावूना-बिरंजास्फ़-सरकान्डेकीजड़-
वाक़ला-तगर- उकहवान-खेरू-जिफ़-बतमकागोंद-ल
दन-नम्माम-मुलहटी-तुरमुस-कुसाउलहिमार-दोनाम
वा-ग़ाफिस- किन्ना-फोदनी-खुरू-जुन्दवेदस्तर-आई-
दारहल्द-खैरी-दारचीनी- केवड़ा-सोया-सलुआ॥

सूजनकीनरमकरनेवालीऔ.

गोंद-वैहून-बज़रुलवनज-गूगल-सोथा-वेद
इंजीरऔर विनौला और खुरूकातेल- बतककीचर्वी-नल
कागूदा-ईसबगोल-खेरूऔर बनोच-जिफ़-इक्लुलमुल्क
म-ईरसा-सलारस-नाखूना-कास्व-अम्बर-मोम-मुर-
लादन-सुक-अलसी- मिंहदी-॥

सूजनकीपकानेवालीऔषधें

नाखूना-ईरसा-वारस्व-बतमकागोंद-अम्बर
लादन-सलारस-मोम-खेरूके बीज-मुर-सुक॥

सूजनकोफोडनेवालीऔषधें

जंगलीपियाजु- गंधक- हरीज़ाज़- कुर्फ़- पेडोंकादूध काबूतरकीबीट- चना- कूट- फ़रफ़ियून- साबन- कल्कतास- गनजार- ज़रारीह॥

बुरेमांसकोगलादेनेवालीऔषधें

इंजिलूत- उशनान- नमक- मुरदासंग- तांबेकाऊरद्र- सपेदा- सेन्दूर- जलीहुईसीपी- जंगार- तूतिया- चून

साफ़करनेवालीऔषधें

गवहल- ज़िफ़- शोग- नमक- मिस्री- आबकासईरसा- शहद- गंधक- इब्बनिलसान- इंजरूत॥

कीडेमारनेवालीऔषधें

बाबिडंग- इफ़सन्तीन- जादा- सूखानूफ़ा- कारीया- कुर्फ़- पोदीना- कलौंजा- मोंह- कलौंजी- शफ़तालूकेपत्ते- तुरमुस॥

घावकोभरनेवाली

मुर्गा- समग़आलू- इंजरूत- इस्फंज- वर्कमुल्लत दम्मुलअखवैन जिफ़ अरावन्द- वारंग- कालाज़ीरा- ईरसा सलूआ गिलेमख्तूम संगजिराहत- राल- कतीरा गुलनार सफ़ेदकनेर सफ़ेदमोम- गौकादूधधोयाहुआ-

लिसानुलहमलकापानी॥

घावकोसुखानेवाली

जलीहुई सीपी और छुआरा और घोड़े गधेकासुम-इंज़िरूत- छड़ीला- सुरदासंग- खलुआ- धोयाहुआचूना-तूतिया- सुन्दरूस॥

नाकमुंह और दस्तोंके रुधिरकोरोकने वालीऔ-

दम्मुलअखवैन- मस्तगी- कत्तूरीयून- सरोकेफल धनियां- ज़रिश्क- कुसुद- रसौत- ज़ीरा- कापूर- अंजवारकीज ड़-पोदीना- गेरू- बादरूज- सुरमा- कुल्फ़त- वारतंग- काहरुवा- निशास्ता- बज़रुलवनज- शादना- गुलनार- कुन्दुर- माज़ू- गिलेअर्मनी- बरगदकीडाढ़ी- पत्थर- रेवन्दचीनी- माज़काफल- पेठेकेबीज॥

जुन्दबेदस्तर- साफ़सिया- मवादकीरोकनेवालीहैं॥

नूरा- गंधकसफैद- राखकापानी- बालउड़ानेवालीहैं॥

मोम- निशास्ता- काहरुबा- कतीरा- जमानेवालीहै

इंज़रूत- छड़ीला- घुलाचूना- तूतिया- खलुआ- जलीहुईसीपी- साफ़करनेवालीहैं॥

मकोह इसबगोल-गुलनार-छलियां-धनियां-मक़दको रोकना जिगह नहीं गिरनेदेती ॥

अफ़ीम-अफरीबीयून-बछनाग-निफ़-मारडालनेवालीहैं ॥

राई-फौदनज-हंजीर-लालानोनानी-लालकरनेवालेहैं ॥

अफीम-इस्पन्द-कुचला-ज़र्वकीजड़-शाहतरेकीजड़-तम्बाकूके पत्ते औरबीज-कुन्दुर-शूकरान-लोंग-धतूरेकाफल-बनरुलबन्ज-काकनज-यबरूजुस्सनम-सुनकरनेवालीहैं ॥

अफीम-चतरवकीचरबी-यबरूजुस्सनमकीजड़-अंडेकीसफेदी-निशास्ता-कतीरा-बबूलकागोंद-पीडाकेरोकनेवाले हैं ॥

उक़हुवान-इसतरक-हम्मामा-केसर-सोया-शकायक़-काहू-लफाह-शाहसफ़रम-सुलानेवाले और सुनकरनेवालेहैं ॥

तगर-हब्बुलकिल्त-हाशा-शाहतरा-बादावर्द-बनफ़शेकीजड़-हजरुलगाफातीस-फेंफडेकोहानिदेतीहैं

तम्बाकू-नकछिकनी-छींकलानेवालीहैं ॥

बबूलकागोंद-निशास्ता-कतीरा-धोयाचूना-चिपकनेवाली और सुद्दा उत्पन्नकरनेवालीहैं ॥

अनीसून-इज़खिसून-बसवासा-गाजरकेबीज-संभालू-नानख़्वाह-हम्मामा-दारफिलफिल-कालीमिरच-ज़ीरा-क़ारदमामा-सोंठ-नरकचूर-ज़रावन्द-सुद्दाव-सोया-सातरकन्दर-कारफस-अजवायन-पेटफूलने औरवायुको लाभ